SRI

# BRUHAT-
# STOTRARATNAKARA

## VOL 1

SECOND PART.

(Ganapati, Subramanya & Siva Stotras.)



V. RAMASWAMY SASTRULU & SONS
292, SUBHASH CHANDRA BOSE
ROAD, MADRAS. 1.

*All Rights Reserved.*] [*Prise Rs.10 0 0.*

PRINTED BY
V. VENKATESWARA SASTRULU
of V. RAMASWAMY SASTRULU & SONS
AT THE 'VAVILLA' PRESS
MADRAS—1955.

# ॥ बृहत्स्तोत्ररत्नाकरः ॥

गणपति - सुब्रह्मण्य - शिवादिस्तोत्राद्यात्मकः

प्रथमसम्पुटात्मकः

॥ द्वितीयभागः ॥



चेन्नपुर्याम्

वाविळ्ळ रामस्वामिशास्त्रुलु अण्ड् सन्स्

इत्येतैः प्रकटितः

1955

चेन्नपुर्याम्
वाविळ्ळ मुद्रणालये
मुद्रितः—१९५५.

॥ श्रीरस्तु ॥

# ॥ स्तोत्राणामकाराद्यनुक्रमणिका ॥


| स्तोत्राणि | पृष्ठसंख्या |
|---|---|
| अ | |
| अगस्त्याष्टकम् | १२ |
| अङ्गारककवचः | ४ |
| अङ्गारकमन्त्रः | ६ |
| अङ्गारकस्तोत्रम् | ७ |
| अङ्गारकाष्टोत्तरशतनाम-स्तोत्रम् | ९ |
| अट्टालसुन्दराष्टकम् | १४ |
| अर्धनारीश्वराष्टकम् | १९९ |
| अनामयस्तोत्रम् | १६ |
| अपराधस्तोत्रम् | १७० |
| अभिलाषाष्टकम् | १८६ |
| आ | |
| आत्मपञ्चकम् | १८९ |
| आत्मसमर्पणम् | ४९४ |
| उ | |
| उमामहेश्वरस्तोत्रम् | २४५ |
| क | |
| केतुमन्त्रः | ३५६ |
| केतुकवचः | ३५७ |
| केतुस्तोत्रम् | ३५८ |
| ग | |
| गणेशपञ्चचामरस्तोत्रम् | १७९ |
| गणेशाक्षरमालिकास्तोत्रम् | ४६५ |
| गुरुस्तुतिः | ४९५ |
| गुहपञ्चरत्नम् | ४९१ |
| च | |
| चन्द्रकवचः | २५ |
| चन्द्रमन्त्रः | २०० |
| चन्द्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् | २०१ |
| ज | |
| जयघोषगद्यम् | ४९३ |
| त | |
| तीक्ष्णदंष्ट्रकालभैरवाष्टकम् | ३११ |

| स्तोत्राणि | पृष्ठसंख्या |
|---|---|
| द | |
| दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् | २२१ |
| दक्षिणामूर्तिनवरत्नमालिका-स्तोत्रम् | ३१ |
| दुर्वासनाप्रतीकारदशकम् | ३३ |
| देवदानवशङ्करस्तुतिः | ६३ |
| देवकृतशिवस्तोत्रम् | १०६ |
| न | |
| नवग्रहमङ्गळश्लोकाः | ३६ |
| प | |
| पतञ्जलिकृततापडवस्तोत्रम् | २७ |
| परमशिवाक्षरमालिका-स्तोत्रम् | ४७९ |
| परमेश्वरस्तुतिसारस्तोत्रम् | २०४ |
| परापूजास्तोत्रम् | २१० |
| पशुपत्यष्टकम् | २११ |
| पार्वतीवल्लभाष्टकम् | ४६ |
| पार्थिवलिङ्गपूजाविधिः | ४३८ |
| प्रदोषाष्टकम् | ४८ |
| प्रार्थना | ४९४ |
| ब | |
| बिल्हणकृतशिवस्तोत्रम् | १२९ |
| बुधकवचम् | २१२ |
| बुधस्तोत्रम् | २१४ |
| बुधमन्त्रः | २१७ |
| बुधाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् | २१८ |
| बृहस्पतिस्तोत्रम् | ३४० |
| बृहस्पत्यष्टोत्तरशतनाम-स्तोत्रम् | ३४१ |
| बृहस्पतिमन्त्रः | ३४८ |
| बृहस्पतिकवचः | ३५० |
| ब्रह्मादिकृतमहादेवस्तुतिः | ३२६ |
| ब्रह्माण्डविजयकवचम् | ३५२ |
| म | |
| महेश्वरपञ्चरत्नस्तोत्रम् | ३१४ |
| मृत्युञ्जयस्तोत्रम् | ५२ |
| र | |
| रत्नद्वयम् | ३१७ |
| राहुमन्त्रः | ३१६ |
| राहुकवचः | ३१७ |
| राहुस्तोत्रम् | ३१९ |
| रुद्रस्तुतिः | ३२१ |
| रुद्रकवचम् | ३२३ |

| स्तोत्राणि | पृष्ठसंख्या |
|---|---|
| ल | |
| लिङ्गाष्टकम् | ५८ |
| व | |
| वसिष्ठकृतपरमेश्वरस्तोत्रम् | २०८ |
| विष्णुकृतमहालिङ्गस्तुतिः | ३०६ |
| व्यपोहनस्तवः | २६८ |
| श | |
| शन्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् | २३५ |
| शनैश्चरसहस्रनामस्तोत्रम् | ४३८ |
| शनैश्चरमन्त्रः | २२५ |
| शनैश्चरकवचः | २२६ |
| शनैश्चरस्तोत्रम् | २२८ |
| शक्तिस्तुतिः | ४९२ |
| शिवस्तोत्रम् (असितकृतम्) | १०५ |
| शिवस्तोत्रम् (रतिदेवीकृतम्) | १०४ |
| शिवस्तोत्रम् (श्रीकृष्णकृतम्) | ९५ |
| शिवस्तोत्रम् (मार्कण्डेय कृतम्) | ४१४ |
| शिवस्तोत्रम् (कल्किकृतम्) | १०३ |
| शिवस्तोत्रम् (मल्हणकृतम्) | १२१ |
| शिवस्तोत्रम् (उपमन्युकृतम्) | ९३ |
| शिवस्तोत्रम् (वरुणकृतम्) | ९९ |
| शिवस्तोत्रम् (विष्णुकृतम्) | ११० |
| शिवस्तोत्रम् (हिमालयकृतम्) | १०१ |
| शिवकवचम् | २३८ |
| शिवस्तवराजः | २५१ |
| शिवस्तुतिः | ९० |
| शिवामृततरङ्गिणी | १३७ |
| शिवाष्टकम् | १६३ |
| शिवमहिमकलिकास्तुतिः | ६५ |
| शिवभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम् | ६९ |
| शुक्रमन्त्रः | ८५ |
| शुक्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् | ८६ |
| शुक्रकवचः | १६८ |
| श्रीगणेशविलासस्तुतिः | १७२ |
| श्रीगणेशप्रभावस्तुतिः | १८२ |
| श्रीगणेश भुजङ्गस्तुतिः | १८४ |
| श्रीगणेशार्यामानसिकपूजास्तोत्रम् | १९१ |

| स्तोत्राणि | पृष्ठसंख्या |
|---|---|
| श्रीगणेशगीता | १ |
| श्रीगुरुभुजङ्गस्तोत्रम् | ३८५ |
| श्रीविष्वसेनास्तुतिः | ४५३ |
| श्रीनृसिंहकृतशिवाष्टोत्तर-शतनामस्तुतिः | १६५ |
| श्रीपरमेश्वरमातृकावर्णमाला-स्तोत्रम् | ३९ |
| श्रीमहागणपति मङ्गल-मालिकास्तोत्रम् | ५० |
| श्रीवल्लीस्तुतिः | ४९२ |
| श्रीशिवमीडेस्तवः | ७७ |
| श्रीशिवमानसपूजास्तोत्रम् | ८८ |
| श्रीशिवात्मार्पणस्तुतिः | ३२७ |
| श्री शिवपदमणिमाला | ४९५ |
| श्रीसाम्बसदाशिव भुजङ्ग-प्रयातस्तोत्रम् | २५७ |
| स | |
| सदाशिवाष्टकम् | २५४ |
| सङ्किलकृतोमामहेश्व-राष्टकम् | ३४७ |
| सगुण अर्पणम् | ४९५ |
| सनकादिकृतविश्वरूप-परमेश्वरस्तुतिः | ५९ |
| सुब्रह्मण्याक्षरमालिका-स्तोत्रम् | ४७२ |
| सुब्रह्मण्यप्रसन्नमालामन्त्राः | ४८६ |
| सूर्यकवचम् | २६० |
| सूर्यस्तोत्रम् | २६२ |
| सूर्याष्टोत्तरशतनाम-स्तोत्रम् | २६४ |
| सूर्यमन्त्रः | ३६० |
| सूर्यसहस्रनामस्तोत्रम् | ३६१ |
| सोमसुन्दराष्टकम् | २८३ |
| ह | |
| हाटकेश्वरस्तोत्रम् | ३०२ |
| हलायुधस्तोत्रम् | २८५ |
| हालास्येशाष्टकम् | ३०३ |


(समुदितस्तोत्रादीनि—१२०)



# ॥ बृहत्स्तोत्ररत्नाकरः ॥

## [ द्वितीयभागः ]

### ॥ श्रीगणेशगीता ॥

के प्रासूत कदा त्वां गौरी नप्रामाण्यं तव जनने ।
विप्राः प्राहुरजं गणराजं यः प्राचमपि पूर्वतनः ॥ १
नासि गणपते शङ्करात्मजो भासि तद्वदेवाखिलात्मकः ।
ईशतातवानीशता नृणां केशवेरिता साशयोक्तिभिः ॥२
गजमुखतावकमन्त्रमहिम्ना सृजति जगद्विधिरनुकल्पम् ।
भजति हरिस्तां तदवनकृत्ये यजति हरोपि विरामविधौ॥
सुखयति शतमखमुखसुरनिकरानखिलक्रतुविघ्नान्नोयं ।
निखिलजगज्जीवनदस्सखलु यतः पर्जन्यात्मा ॥ ४
प्रारम्भे कार्याणां हेरम्बं यो ध्यायेत् ।

पारं यात्येव कृतेरादाप्नोति सुखम् ॥ ५

गौरीमूनोः पादाम्भोजे लीना चेतोवृत्तिर्मे ।
घोरे संसारण्येवा वासः कैलासे वास्तु ॥ ६

गुहगुरुपदयुगमनिशमभयदम् ।
वहसि मनसि यदि शमयसि दुरितम् ॥ ७

जयजयशङ्करवरसूनो भयहरभजतां गणराज ।
नय ममचेतस्तवचरणं नियमय धर्मेन्तःकरणम् ॥ ८

चलसि चित्त किञ्चु विषमविषयकानने
कलय वृत्तिममृतदातृकरिवरानने ।
तुलय खेदमोदयुगळमिदमशाश्वतं
विलयमयमलङ्घ्यमेव जन्मनि स्मृतम् ॥ ९

सोमशेखरसूनवे सिन्दूरसोदरभानवे
यामिनीपतिमौळ्ये यमिहृदयविरचितकेळ्ये ।
मूषकाधिपगामिने मुख्यात्मनोन्तर्यामिने
मङ्गळं विघ्नाद्विषे मत्तेभवक्त्रज्योतिषे ॥ १०

अवधीरितदाडिमसुमसौभगमवतुगणेशज्योतिर्माम-
वतु गणेशज्योतिः । हस्तचतुष्टयधृतवरदाभयपुस्तक-
बीजापूरं धृतपुस्तकबीजापूरम् ॥ ११

रजिताचलवप्रक्रीडोत्सुकगजराजास्य मुदारं भजश्री
गजराजास्य मुदारं । फणिपरिकृतकटिवलयाभरणं कृणु-
रेजनहृदिंकारणं तव कृणुरे जनहृदिकारणम् ॥ १२

यः प्रगे गजराज मनुदिन मप्रमेय मनुस्मरेत् ।
सप्रयाति पवित्रताङ्गो विप्रगङ्गाद्यधिकताम् ॥ १३

सुब्रह्मण्यमनीषिविरचिता त्वब्रह्मण्यमपाकुरुते ।
गणपतिगीता गानसमुचिता सम्यक्पठतां सिद्धान्तः ॥

इति श्रीसुब्रह्मण्ययोगिविरचिता श्रीगणेशगीता ॥

## ॥ अङ्गारक कवचः ॥

ओं अस्य श्रीअङ्गारककवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य विरूपाक्षऋषिः । गायत्री छन्दः । अङ्गारको देवता । अं बीजं । गं शक्तिः । रं कीलकं । मम अङ्गारकग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । आं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ईं तर्जनीभ्यां नमः । ऊं मध्यमाभ्यां नमः । ऐं अनामिकाभ्यां नमः । औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः । ध्यानम्—नमाम्यङ्गारकं देवं रक्ताङ्गं वरभूषणं । जातुस्थं वामहस्ताभ्यां चापेषुवरपाणिनम् ॥ चतुर्भुजं मेषवाहं वरदं वसुधाप्रियं । शक्तिशूलगदाखड्गं ज्वालपुंजोर्ध्वकेशकम् ॥ मेरुं प्रदक्षिणं कृत्वा सर्वदेवात्मसिद्धिदं । अङ्गारकश्शिरो रक्षेत् मुखं वै धरणीसुतः । कर्णौ रक्ताम्बरः पातु नेत्रे मे रक्तलोचनः । नासिकां मे शक्तिधरः कंठं मे पातु भौमकः ॥ भुजौतु रक्तमाली च हस्तौ शूलधरस्तथा ।

चतुर्भुजो मे हृदयं कुक्षिं रोगापहारकः ॥ कटिं मे भूमिजः पातु ऊरू पातु गदाधरः । जानुजङ्घे कुजः पातु पादौ भौमस्सदा मम ॥ सर्वाणि यानि चाङ्गानि रक्षेन्मे मेषवाहनः । य इदं कवचं दिव्यं सर्वशत्रुविनाशनम् । भूतप्रेतपिशाचानां नाशनं सर्वसिद्धिदं । सर्वरोगहरं चैव सर्वसम्पत्प्रदं शुभम् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणां सर्वसौभाग्यवर्धनं । रणबन्धनमुक्तिर्वै सत्यमेव न संशयः ॥ स्तोत्रपाठस्तु कर्तव्यो देवस्याग्रे समाहितः । रक्तगन्धाक्षतैः पुष्पैर्धूपदीपगुडोदनैः ॥ मङ्गळं पूजयित्वा तु मङ्गळेऽहनि सर्वदा । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाच्चतुरो द्वादशाथवा ॥ अनेन विधिना यस्तु कृत्वा व्रतमनुत्तमम् । व्रतं तदेवं कुर्वीत सप्तवारेषु वा यदि ॥ तेषां शस्त्राण्युत्पलानि वह्निस्याच्चन्द्रशीतलः । नचैनं व्यथयंत्यस्मान्मृगपक्षिगजादयः ॥ महान्धतमसेप्राप्ते मार्ताण्डस्योदयादिव । विलयं यान्ति पापानि शतजन्मार्जितानि वै ॥

इति अङ्गारककवचः ॥

## ॥ अङ्गारकमन्त्रः ॥



*ॐ अस्य श्रीमदङ्गारकमहामन्त्रस्य विरूपाक्षऋषिः। गायत्री छन्दः। अङ्गारको देवता। मम अङ्गारकग्रह-प्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः। अङ्गारकाय अंगु-ष्ठाभ्यां नमः। धरणीसुताय तर्जनीभ्यां स्वाहा। रक्त-वाससे मध्यमाभ्यां वषट्। रक्तलोचनाय अनामि-काभ्यां हुं। शक्तिधराय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। कर्म-भावनाय करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिन्यासः भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥ ध्यानम्—रक्तमाल्यां-बरधरं मेषारूढं चतुर्भुजम्। शक्तिशूलगदापद्मान् धार-यन्तं कराम्बुजैः॥ लमित्यादिपञ्चपूजा। मूलमन्त्रः। अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयं। अपागूं-रेतागूंसिजिन्वति। इति मन्त्रः॥

---

## ॥ अङ्गारकस्तोत्रम् ॥

ऋणग्रस्तस्य ऋणविमोचनार्थं अङ्गारकस्तोत्र मन्त्रः । स्कन्द उवाच—ऋणग्रस्तनराणां तु ऋणमुक्तिः कथं भवेत् । ब्रह्मोवाच—वक्ष्येऽहं सर्वलोकानां हितार्थं हितकामदम् । श्रीअङ्गारकस्तोत्रमहामन्त्रस्य गौतमऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः । अङ्गारको देवता मम ऋणविमोचनार्थे जपे विनियोगः । ध्यानं—रक्तमाल्याम्बरधरः शूल-शक्ति गदाधरः । चतुर्भुजो मेषगतो वरदश्च धरासुतः ॥ मङ्गळो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ताधनप्रदः । स्थिरासनो महा-कायो सर्वकामफलप्रदः ॥ लोहितो लोहिताक्षश्च साम-गानां कृपाकरः । धरात्मजः कुजो भौमो भूमिदो भूमि-नन्दनः । अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः । वृष्टेः कर्ताच हर्ताच सर्वदेवैश्च पूजितः ॥ एतानि कुजना-मानि नित्यं यः प्रयतः पठेत् । ऋणं न जायते तस्य धनं प्राप्नोत्यसंशयः ॥ अङ्गारक महीपुत्र भगवन् भक्त-

वत्सल । नमोऽस्तु ते ममाशेष ऋणमाशु विनाशय ॥ रक्तगन्धैश्च पुष्पैश्च धूपदीपैर्गुडोदनैः । मङ्गळं पूजयित्वातु मङ्गल्यहनि सर्वदा ॥ एकविंशतिनामानि पठित्वातु तदन्तिके, ऋणरेखाः प्रकर्तव्याः अङ्गारेण तदग्रतः ॥ ताम्र प्रमार्जयेत्पश्चात् वामपादेन संस्पृशन् । मूल-मन्त्रः—अङ्गारक महीपुत्र भगवन् भक्तवत्सल । नमोऽस्तुते ममाशेषऋणमाशु विमोचय । एवंकृते न सन्देहो ऋणं हित्वा धनी भवेत् । महतींश्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ॥ अर्घ्यम्—अङ्गारक महीपुत्र भगवन् भक्तवत्सल । नमोऽस्तु ते ममाशेषऋणमाशु विमोचय ॥ भूमिपुत्र महातेजस्त्वेदोद्भव पिनाकिनः । ऋणार्तस्त्वां प्रपन्नोऽस्मि गृह्णार्घ्यं नमोस्तु ते ॥

इति अङ्गारकस्तोत्रम् ॥

## ॥ अङ्गारकाष्टोत्तर शतनामस्तोत्रम् ॥



महीसुतो महाभागो मङ्गळो मङ्गळप्रदः ।
महावीरो महाशूरो महाबलपराक्रमः ॥ १

महारौद्रोमहाभद्रोमाननीयो दयाकरः ।
मानदोऽमर्षणः क्रूरस्तापपापविवर्जितः ॥ २

सुप्रतीपस्सुताम्राक्षस्सुब्रह्मण्यस्सुखप्रदः ।
वक्रस्तम्भादिगमनो वरेण्यो वरदस्सुखी ॥ ३

वीरभद्रोविरूपाक्षः विदूरस्थो विभावसुः ।
नक्षत्रचक्रसञ्चारी क्षत्रूपः क्षात्रवर्जितः ॥ ४

क्षयवृद्धिविनिर्मुक्तः क्षमायुक्तो विचक्षणः ।
अक्षीणफलदश्चक्षुर्गोचरश्शुभलक्षणः ॥ ५

वीतरागो वीतभयो विज्वरोविश्वकारणं ।
नक्षत्रराशिसञ्चारो नानाभयनिकृन्तनः ॥ ६

कमनीयो दयासारः कनत्कनकभूषणः ।
भयघ्नो भव्यफलदो भक्ताभयवरप्रदः ॥ ७

शत्रुहन्ता शमोपेतः शरणागतपोषकः ।
साहस्रसद्गुणाध्यक्षरसाधुस्समरदुर्जयः ॥ ८
दुष्टदूरीश्शिष्टपूज्यस्सर्वकष्टनिवारकः ।
दुश्चेष्टावारकोदुःखभञ्जनो दुर्धरो हरिः ॥ ९
दुस्स्वप्नहन्ता दुर्धर्षो दुष्टगर्वविमोचकः ।
भरद्वाजकुलोद्भूतो भूसुतो भव्यभूषणः ॥ १०
रक्ताम्बरो रक्तवपुर्भक्तपालनतत्परः ।
चतुर्भुजो गदाधारी मेषवाहोऽमिताशनः ॥ ११
शक्तिशूलधरश्शक्तश्शास्त्रविद्याविशारदः ।
तार्किकस्तामसाधारस्तपस्वी ताम्रलोचनः ॥ १२
तप्तकाञ्चनसङ्काशो रक्तकिंजल्कसन्निभः ।
गोत्राधिपो गोमध्यचरो गुणविभूषणः ॥ १३
असृग्व्यवहारकोऽवन्तिदेवाधीशो जनार्दनः ।
सूर्ययाम्यप्रदेशस्थो यौवनो याम्यदिङ्मुखः ॥ १४
त्रिकोणमण्डलगतस्त्रिदशाधिपसम्नुतः ।
शुचिश्शुचिकरश्शूरो शुचिवश्य श्शुभावहः ॥ १५

मेषवृश्चिकराशीशो मेधावी मितभाषणः ।
सुखप्रदस्सुरूपाक्ष स्सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥ १६
अङ्गारकमहस्यैवं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥

इति अङ्गारकाष्टोत्तर शतनामस्तोत्रम् ॥

## ॥ अगस्त्याष्टकम् ॥

अद्य मे सफलं जन्म चाद्य मे सफलं तपः ।
अद्य मे सफलं ज्ञानं शम्भो त्वत्पाददर्शनात् ॥ १
कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं महेश्वर ।
अद्य ते पादपद्मस्य दर्शनाद्भक्तवत्सल ॥ २
शिवश्शम्भु शिवश्शम्भु शिवश्शम्भु शिव-
[शिवः
इति व्याहरतो नित्यं दिनान्यायान्तु यान्तु मे ॥ ३
शिवे भक्ति शिवे भक्ति शिवे भक्तिर्भवेभवे ।
सदा भूयात्सदा भूया त्सदा भूयात्सुनिश्चला ॥ ४
आजन्म मरणं यस्य महादेवान्यदैवतम् ।
माजनिष्यत मद्वंशे जातो वा द्राग्विपद्यताम् ॥ ५
जातस्य जायमानस्य गर्भस्थस्यापि देहिनः ।
माभून्मम कुले जन्म यस्य शम्भुर्नदैवतम् ॥ ६
वयं धन्या वयं धन्या वयं धन्या जगत्त्रये ।
आदिदेवो महादेवो यदस्मत्कुलदैवतम् ॥ ७

हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ ।
शिवशङ्कर सर्वात्मन्नीलकण्ठ नमोस्तु ते ॥ ८

अगस्त्याष्टकमेतत्तु यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ९

इत्यगस्त्याष्टकम् ॥

## ॥ अट्टालसुन्दराष्टकम् ॥



[illegible] उवाच—

कल्याणाचलकोदण्डकान्तदोर्दण्डमण्डितम् ।
कवळीकृतसंसारं कलयेऽट्टालसुन्दरम् ॥ १

कालकूटप्रभाजालकळङ्कीकृतकन्धरम् ।
कलाधरं कलामौळिं कलयेऽट्टालसुन्दरम् ॥ २

कालकालं कळातीतं कलावन्तं च निष्कळम् ।
कमलापतिसंस्तुत्यं कलयेऽट्टालसुन्दरम् ॥ ३

कान्तार्धं कमनीयाङ्गं करुणामृतसागरम् ।
कल्किकल्मषदोषघ्नं कलयेऽट्टालसुन्दरम् ॥ ४

कदम्बकाननाधीशं कांक्षितार्थसुरद्रुमम् ।
कामशासनमीशानं कलयेऽट्टालसुन्दरम् ॥ ५

सृष्टानि मायया येन ब्रह्माण्डानि बहूनि च ।
रक्षितानि हतान्यन्ते कलयेऽट्टालसुन्दरम् ॥ ६

स्वभक्तजनसन्ताप पापापङ्कक्षतत्परम् ।
कारणं सर्वजगतां कलयेऽट्टालसुन्दरम् ॥ ७
कुलशेखरवंशोत्थभूपानां कुलदैवतम् ।
परिपूर्णं चिदानन्दं कलयेऽट्टालसुन्दरम् ॥ ८
अट्टालवीरश्रीशम्भोरष्टकं वरमिष्टदम् ।
पठतां शृण्वतां सद्यस्तनोतु परमां श्रियम् ॥ ९

इति श्रीहालास्यमाहात्म्ये विक्रमपाण्ड्यकृतं अट्टालसुन्दराष्टकम् ॥

# अनामयस्तोत्रम् ॥

तृष्णातन्त्रे मनसि तमसा दुर्दिने बन्धुवर्ती मादृग्जन्तुः कथमधिकरोत्यैश्वरं ज्योतिरग्र्यं । वाचस्स्फीता भगवति हरेस्तन्निकृष्टात्मरूपास्तुत्यात्मानस्स्वयमिव मुखादस्य मे निष्पतन्ति ॥ १

वेधा विष्णुर्वरुणधनदौ वासवो जीवितेशश्चन्द्रादित्यौ वसव इतियादेवता भिन्नकक्ष्याः । मन्ये तासामपि नभजते भारती ते स्वरूपं स्थूलेत्वंशे स्पृशति सदृशं तत्पुनर्मादृशोऽपि ॥ २

तन्नस्थाणोस्तुतिरति भरा भक्तिरुच्चैर्मुखीचेद्व्राम्यस्तोता भवति पुरुषः कश्चिदारण्यकोवा । नोचेद्भक्तिस्त्वयि च यदि वा ब्रह्मविद्यात्वधीते नानुध्येयस्तव पशुरसावात्मकर्मानभिज्ञः ॥ ३

विश्वं प्रादुर्भवति लभतेत्वामधिष्ठायकं चेन्नेद्युत्पत्तिर्यदि जनयिता नास्ति चैतन्ययुक्तः । क्षित्यादीनां

भवनिजकळावत्तया जन्मवत्ता सिध्यत्येवं सति भगवत स्सर्वलोकाधिपत्यम् ॥ ४

भोग्यामाहुः प्रकृतिमृषयश्चेतनाशक्तिशून्यां भोक्ता चैनां परिणमयितुं बुद्धिवर्ती समर्थः । भोगोप्यस्मिन् भवति मिथुने पुष्कलस्तत्रहेतु र्नीलग्रीव त्वमसि भुवनस्थापनासूत्रधारः ॥ ५

भिन्नावस्थं जगति बहुना देशकालप्रभेदाद्वाभ्यां पापान्यभिगिरि हरन् योनवद्यः क्रमाभ्यां । प्रेक्ष्यारूढस्सृजति नियमादस्य सर्वं हि यत्तत्सर्वज्ञत्वं त्रिभुवन स्वजा यत्र सूत्रं नकिंचित् ॥ ६

चारूद्रेके रजसि जगतां जन्मसत्वे प्रकृष्टे यात्रां भूयस्तमसि बहुळे बिभ्रतस्संहृतिं च । ब्रह्माद्यैतत्प्रकृतिगहनं स्तम्भपर्यन्तमासीत्क्रीडावस्तु त्रिणयनमनोवृत्ति मत्रानुगं ते ॥ ७

कृत्तिश्चित्रा निवसनपदे कल्पिता पौण्डरीकी वासागारं पितृवनभुवं वाहनं कश्चिदुक्षा । एवं प्राहुः प्रलघु

हृदया यद्यपि स्वार्थपोषं त्वां प्रत्येकं ध्वनति भगवन्नीश इत्येषशब्दः ॥ ८

कृपाकल्पः किमयमशिवैरस्थिमुख्यैः पदार्थैः कस्यादस्य स्तनकलशयोर्भारनम्रा भवानी । पाणौ खण्डः परशुरिदमप्यक्षसूत्रं किमस्ये त्याचक्षाणो हरकृत-धियामस्तु हास्यैकवेद्यः ॥ ९

यत्का पालव्रतमपि महद्दृष्टमेकान्तघोरं मुक्तेरध्वा सपुनरमलः पावनः किंन जातः । दाक्षायण्यां प्रिय-तमतया वर्तते योगमाया सास्याश्चत्तेमिथुनचरितं वृद्धि-मूलं प्रजानाम् ॥ १०

कश्चिन्मर्त्यः क्रतुकृशततुर्नीलकण्ठ त्वया चेद्दृष्टि-स्निग्धस्सपुनरमरस्त्रीभुजाग्राह्यकण्ठः । अप्यारूढस्सुर-परिवृतं स्थानमाखण्डलीयं त्वंचेत्क्रुद्ध स्सपति निरा-लम्बनो ध्वान्तजाले ॥ ११

शब्दाल्यं शरवणभवं षण्मुखं द्वादशाक्षं तेजो यत्ते कनकनलिनीपद्मपत्रवादातं । विस्मार्यन्ते सुरयुव-

तयस्तेन सेन्द्रावरोधा दैत्येन्द्राणामसुरजयिनां बन्धनागारवासम् ॥ १२

वेगाकृष्टप्रहरविशशिव्यश्रुवानन्दिगन्तान्न्यकुर्वाणं प्रळयपयसामूर्मिभङ्गावलेपं । मुक्ताकारं हरतव जलूबद्धसंस्पर्शिसद्यो जज्ञे चूडाकुसुमसुभगं वारि भागीरथीयम् ॥ १३

कल्माषस्ते मरकतशिलाभङ्ग कान्तिर्नकण्ठे न व्याचष्टे भुवन विषयीं त्वत्प्रसादप्रवृत्तिं । वारां गर्भस्सहि विषमयो मन्दरक्षोभजन्मा नैवं रुद्धो यदि नभवति स्थावरं जङ्गमं वा ॥ १४

सन्धायास्त्रं धनुषि नियमोन्माथिसम्मोहनाख्यं पार्श्वेतिष्ठन् गिरिशसदृशे पञ्चबाणो मुहूर्तं । तस्मादूर्ध्वं दहनपरिधौ रोमदृष्टि प्रसूते रक्ताशोकस्तबकितइवप्रान्त धूमद्विरेफः । १५

लङ्कानाथं लवण जलधि स्थूलवेलोर्मिदीर्घैः कैलासंते निलय नगरीं बाहुभिः कम्पयन्तं । आक्रोशद्भि-

वमितरुधिरैरानननैरप्रुताक्षैरापातालादनयदलसाबद्ध मङ्गु-
ष्ठकर्म ॥ १६

ऐश्वर्यं तेप्यनृणत पतन्नेकमूर्धावशेषः पादद्वन्द्वे दशमुख शिरः पुण्डरीकोपहारः । येनैवासावधिगत फलो राक्षसश्रीविधेयश्चक्रे देवासुरपरिषदो लोक-पालैकशत्रुः ॥ १७

भक्तिर्त्राणासुरमपि भवत्पादपद्मं स्पृशन्तं स्थान चन्द्राभरण गमयामास लोकस्य मूर्ध्नि । नह्यस्यापि भ्रुकुटिनयनादग्निदंष्ट्राकरालं द्रष्टुं कश्चिद्वदनमशकद्देव दैत्येश्वरेषु ॥ १८

पादन्यासान्नमति वसुधापन्नग स्कन्ध लग्ना बाहुक्षे-पाद्वहगगयुतं घूर्णते मेघवृन्दं । उत्साद्यन्ते क्षणमिव दिशो हुंकृतेनातिमात्रं भिन्नावस्थं भवति भुवनं त्वय्यु-पक्रान्तनृत्ते ॥ १९

नोर्ध्वं गम्यं सरसिजभुवो नाप्यधश्शार्ङ्गि पाणे-रासीदन्तस्तव हुतवहस्तं भमूर्त्या स्थितस्य । भूयस्ताभ्या-

मुपरिलघुना विस्मयेन स्तुवद्भ्यां कण्ठे कालं कपिल-
नयनं रूपमाविर्बभूव ॥ २०

श्लाघ्यां दृष्टिं दुहितरि गिरेर्न्यस्य चापोर्ध्वकोट्यां
कृत्वा बाहुं त्रिपुर विजयानन्तरं ते स्थितस्य । मन्दा-
राणां मधु सुरभयो वृष्टयः पेतुरार्द्रास्स्वर्गोद्यानभ्रमर-
व्रनितादत्तदीर्घानुयाताः ॥ २१

उद्धृत्यैकं नयनमरुणं स्निग्धतारापरागं पूर्णेधाद्यः
परमसुलभे दुष्कराणां सहस्रे । चक्रं भेजे दहनजटिलं
दक्षिणं तस्य हस्तं बालस्यैव द्युतिवलयितं मण्डलं
भास्करस्य ॥ २२

विष्णुश्चक्रे करतलगते विष्टपानां त्रयाणां दत्ता-
श्वासो दनुसुतशिरश्छेददीक्षां बबन्ध । प्रत्यापन्नं तदपि
नयनं पुण्डरीकानुकारि श्लाघ्या भक्तिस्निनयनभव-
त्यर्पिता किं न सूते ॥ २३

सव्ये शूलं त्रिशिखमपरे दोष्णि भिक्षाकपालं सोमो-
मुग्धशिरसि भुजगः कश्चिदंसोत्तरीयः । कोयं वेषस्नि-

नयन कुतोदृष्ट इत्यद्रिकन्या प्रायेण त्वां हसति भगवन् प्रेमनिर्यन्त्रितात्मा ॥ २४

आर्द्रं नागाजिनमवयवग्रन्थिभद्रिभ्रदंसे रूपं प्रावृड्घनरुचि महाभैरवं दर्शयित्वा । पश्यन् गौरीं भयचलकरालम्बितस्कन्धहस्तां मन्ये प्रीत्या दृढ इति भवान् वज्रदेहोपि जातः ॥ २५

व्याळाकल्पा विषमनयना विद्रुमाताम्रभासो जाया मिश्रा जटिलशिरसश्चन्द्ररेखावतंसाः । नित्यानन्दा नियतललितास्निग्धकल्माषकण्ठाः देवारुद्राध्वतपरशवस्ते भविष्यन्ति भक्ताः ॥ २६

मन्त्राभ्यासो नियमविधयस्तीर्थयात्रानुरोधे ग्रामे भिक्षाचरणमुटजे बीजवृत्तिर्वने वा । इत्यायासे महति रमतामप्रगल्भः फलार्थं स्मृत्वेवाहं तव चरणयोर्निर्वृतिं साधयामि ॥ २७

आस्तान्तावत्स्नपनमुपरि क्षीरधाराप्रवाहैस्स्नेहाभ्यङ्गो भवनकरणं गन्धधूपार्पणं वा । यस्ते कश्चित्किरति

कुसुमान्युद्दिशन् पादपीठं भूयो नैष भ्रमति जननीगर्भ-कारागृहेषु ॥ २८

मुक्ताकारं मुनिभिरनिशं चेतसि ध्यायमानं मुक्ता-गौरं शिरसि जटिले जाह्नवीमुद्वहन्तं । नानाकारं नव-शशिकळाशेखरं नागहारं नारीमिश्रं धृतनरतिरो-माल्यमीशं नमामि ॥ २९

तिर्यग्योनौ त्रिदशनिलये मानुषे राक्षसे वा यक्षा वासे विषधरपुरे देव विद्याधरे वा । यस्मिन् कस्मिन् सुकृतनि लये जन्मनि श्रेयसे वा भूयाद्युष्मच्चरणकमल ध्यायिनी चित्तवृत्तिः ॥ ३०

वन्दे रुद्रं वरदममलं दण्डिनं मुण्डधारिं दिव्यज्ञानं त्रिपुर दहनं शङ्करं शूलपाणिं । तेजोराशिं त्रिभुवनगुरुं तीर्थमौळिं त्रिनेत्रं कैलासस्थं धनपतिसखं पार्वतीनाथ-मीशम् ॥ ३१

योगी भोगी विषभुगमृतश्शस्त्रपाणी तपस्वी शान्तः क्रूरश्शमितविषयश्शैलकन्यासहायः । भिक्षावृत्ति-

त्रिभुवनपतिश्चुद्धिमानस्थिमाली शक्यो ज्ञातुं कथमिव
शिव त्वं विरुद्धस्वभावः । ३२

उपदिशति यदुच्चैर्ज्योतिराम्नायविद्यां परम परम
दूरंदूरमाद्यन्तशून्यां । त्रिपुरजयिनि तस्मिन् देवदेवे
निविष्टां भगवति परिवर्तोन्मादिनी भक्तिरस्तु ॥ ३३

इति विरचितमेतच्चारुचन्द्रार्धमौळेर्ललितपदमुदारं
दण्डिना पण्डितेन । स्तवनमवनकामेनात्मनोऽनाम-
यार्थ्यं भवति विगतरोगो जन्तुरेतज्जपेन ॥ ३४

स्तोत्रं सम्यक्परमविदुषा दण्डिना वाच्यवृत्ता-
न्नन्दाक्रान्तान् त्रिभुवनगुरोः पार्वतीवल्लभस्य । कृत्वा
स्तोत्रं यदि सुभगमाप्नोति नित्यंहि पुण्यं तेन व्याधिं हर
हर नृणां स्तोत्रपाठेन सत्यम् ॥ ३५

इति दण्डिविरचितं अनामयस्तोत्रम् ॥

## ॥ चन्द्रकवचः ॥

अस्य श्रीचन्द्रकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य । गौतम-ऋषिः । गायत्रीछन्दः । सोमो देवता । रं बीजम् । संशक्तिः ओं कीलकम् । मम सोमग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । वां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । वीं तर्जनीभ्यां नमः । पूं मध्यमाभ्यां नमः । वैं अनामिकाभ्यां नमः । वौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः । ध्यानम्—सोमं द्विभुजपद्मं च शुक्लाम्बरधरं शुभम् । श्वेतगन्धानुलेपं च मुक्ताभरणभूषितम् ॥ श्वेताश्वरथमा-रूढं मेरुं चैव प्रदक्षिणम् । सोमं चतुर्भुजं देवं केयूर मकु-टोज्ज्वलम् ॥ वासुदेवस्य नयनं शङ्करस्य च भूषणम् । एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं चन्द्रस्य कवचं मुदा ॥ शशी पातु शिरोदेशे फालं पातु कलानिधिः । चक्षुषी चन्द्र-माः पातु श्रुती पातु कलात्मकः ॥ घ्राणं पक्षकरः पातु

मुखं कुमुदबान्धवः । सोमः करौ तु मे पातु स्कन्धौ पातु सुधात्मकः ॥ ऊरू मैत्रीनिधिः पातु मध्यं पातु निशाकरः । कटिं सुधाकरः पातु उरः पातु शशन्धरः॥ मृगाङ्को जानुनी पातु जङ्घे पात्वमृताब्धिजः । पादौ हिमकरः पातु पातु चन्द्रोऽखिलं वपुः ॥ एतद्धि कवचं पुण्यं मुक्तिमुक्तिप्रदायकम् । यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

इति श्रीब्रह्मवैवर्ते महापुराणे दक्षिणखण्डे चन्द्रकवचः ॥

## ॥ पतञ्जलिकृत ताण्डवस्तोत्रम् ॥



सदञ्चित मुदञ्चित निकुञ्चितपदं झलझलञ्चालित मञ्जुकटकं पतञ्जलि दृगञ्जन मनञ्जन मचञ्चल पदं जननभञ्जनकरं । कदम्बरुचिमम्बरवसं परममम्बुद कदम्बक विडङ्गाळं चिदंबुधिमणिं बुधहृदम्बुजरविं पर-चिदम्बरनटं हृदि भज ॥ १

हरं त्रिपुरभञ्जनमनन्त कृतकङ्कण मखण्डदय-मन्तरहितं विरिञ्च सुरसंहति पुरन्दर विचिन्तित पदं तरुणचन्द्रमकुटं । परम्पदविखण्डितयमं भासित-मण्डिततनुं मदनवञ्चनपरं चिरन्तनमिमं प्रणत सञ्चित-निधिं परचिदम्बरनटं हृदि भज ॥ २

अवन्त मखिलं जगदभङ्ग गुणतुङ्ग ममतं धृत विधुं सुरसरि त्तरङ्ग निकुरुम्बधृति लम्पटजटं शमन डम्बर-हरं भवहरं, शिवं दशदिगन्तर विजाम्भितकरं करल

सन्मृगशिशुं पशुपतिं हरं शशि धनञ्जय पतङ्गनयनं परचिदम्बरनटं हृदि भज ॥ ३

अनन्त नवरत्न विलसत्कटक किङ्किणिझलं झलझलं झलरवं मकुन्द विधिहस्तगतमद्दळ लयध्वनि धिमिद्धिमित नर्तनपदं । शकुन्तरथबर्हि रथनन्दि मुखदन्ति मुखषट्टिरिटि सङ्गनिकटं सनन्द सनक प्रमुखवन्दितपदं परचिदम्बरनटं हृदि भज ॥ ४

अनन्तमहसं त्रिदशवन्द्यचरणं मुनिहृदन्तरवसन्तममलं कबन्धवियदम्बवानिगन्धवहवन्हिमखबन्धुरविमध्युवपुषं । अनन्तविभवं त्रिजगदन्तरमणिं त्रिणयनं त्रिपुरखण्डनपरं सनन्द मुनिवन्तिपदं सकरुणं परचिदम्बरनटं हृदि भज ॥ ५

अचिन्त्यमळिबृन्दरुचिबन्धुरगळं कुरितकुन्दनिकुरुम्ब धवळं मुकुन्दसुरबृन्दवलहृन्तृकृतवन्दनलसन्तमहि - कुण्डलधरं । अकम्पमनुकम्पितरतिं सुजनमङ्गळनिधिं गजहरं पशुपतिं धनञ्जयनुतं प्रणतरञ्जनपरं परचिदम्बरनटं हृदि भज ॥ ६

परं सुरवरं पुरहरं पशुपतिं जनित दन्तिमुख षण्मुख
ममुं मृडं कनकपिङ्गलजटं सनकपङ्कजरविं सुमनसं हि-
मरुचिं । असङ्गमनसञ्जलधिजन्मगरलं कबलयन्तमतुलं
गुणनिधिं स नन्दवरदं शमितमिन्दुवदनं परचिदम्बर-
नटं हृदि भज ॥ ७

अजं क्षितिरथं भुजगपुङ्गवगुणं कनकशृङ्गिधनुषं
करलत्कुरङ्गपृथुटङ्क परमसुरुचिकुंकुमरुचिं डमरुकं च द-
धतं । मुकुन्दविशिखं नमदवन्द्यफलदं निगमबृन्दतुरगं
निरुपमं स चण्डिकममुं झडितिसंहृतपुरं परचिदम्बरनटं
हृदि भज ॥ ८

अनङ्गपरिपन्थिनमजं क्षितिधुरंधरमलङ्करणयन्त-
मखिलं ज्वलन्तमनलं दधतमन्तकरिपुं सततमिन्द्रसुर-
वन्दितपदं । उदञ्चदरविन्दकुलबन्धुशतबिम्बरुचिसंहति
सुगन्धिवपुषं पतञ्जलिसुतं प्रणवपञ्जरशुकं परचिदम्बर-
मटं हृदि भज ॥ ९

इति स्तवमसुं भुजगपुङ्गवकृतं प्रतिदिनं पठति यः कृतमुखस्सदः प्रभुपदद्वितयदर्शनपदं सुलळितं चरण-शृङ्गरहितं । सरःप्रभवसम्भव हरित्पति हरिप्रमुख दिव्यनुत शङ्करपदं स गच्छति परं नतु जनुर्जलनिधिं परमदुःखजनकं दुरितदम् ॥ १०

इति श्रीपतञ्जलिकृतं ताण्डवस्तोत्रम् ॥

## ॥ दक्षिणामूर्ति नवरत्नमालिका स्तोत्रम् ॥



तेजः किञ्चित्काञ्चनटङ्की कपिशाभान् बिभ्रद्भ्रूनु-
द्भटकापर्दकलापान् । भस्मालेपस्मेरललाटं वटमूले दृष्टं
दृष्टापस्मृतिहारि स्मरहंतृ ॥ १

न्यग्रोधधो धिक्कृतधाराधरधीरग्रीवाभोगं भोगिकुला-
कल्पमनल्पम् । मुग्धाकारं मुग्धनिशानाथवतंसं मुग्ध-
स्मेरं मोहविरामं विमृशामः ॥ २

नासाद्यत्तालोकनयानाव्यसरोरुट्टिक्किल्कालिपिङ्ग
जटाजूटकवत्या । प्रौढापस्मारस्मयिताघस्मरशक्त्या चित्री-
भूतं चित्कळया मामकमन्तः ॥ ३

विद्यारूपे वेदगिरामेकविमृग्ये नद्यामौळौ नर्तन-
शीलालकचूडे । आलीनं मे मानसमालीढमनोभूगाढा-
हङ्कारांकुर लालाटकृशानौ ॥ ४

वैयाघ्रत्वक्चित्रपटीकृपकटीकाटीकाकारज्ञान समुद्रा-
निगमोक्तेः । मुक्तेर्माता मूलमपारस्य महिम्नश्चिद्वैदग्धी
काचन चित्ते मम भाति ॥ ५

इन्दूत्तंसं कालिमकण्ठं शिखिनेत्रं सिन्दूरोष्ठं शुद्धतनुं बद्धफणीन्द्रं । भाधीशाभा भासुरहासं भवमन्तश्चार्दूलत्वग्वाससमीशं वरिवस्ये ॥ ६

मुद्रा काचित् ज्ञानमयी यं मुनिशंसन्मोहध्वान्तोत्कर्तनवैकर्तनमूर्तेः, आर्तिं भिन्द्यादाशयलग्नामनिशं नो नैयग्रोधीं मूलभुवं चाधिशयाना ॥ ७

नीहारांभोहारसितैरावतगङ्गापाटीराली भूतिसुधातद्धौवल्यम् । सद्रुद्राक्षस्रग्धरमुद्राक्षमनक्षःस्पन्दं मन्दस्मेरमनादिं गुरुमन्तः ॥ ८

घोरापस्मृत्युत्कटपृष्ठे विनिविष्टो यस्यैकोङ्घ्रिस्तत्पृथुलास्थितिरन्यः । वस्तुध्यानादुद्भूत निष्पन्दशरीरं शान्तं तेजस्तन्महिमानं समुपासे ॥ ९

एतां मालां नवमणिरूपामादिगुरोर्भक्त्या नित्यं पठति च यो जाड्यविमुक्तः । अष्टाचत्वारिंशतिसाहस्रसमत्वं गत्वा तस्मिन् विलयमुपैत्येव स धन्यः ॥ १०

इति श्री नवनाथसिद्धकृत दक्षिणामूर्ति नवरत्नमालिकास्तोत्रम् ॥

## ॥ दुर्वासनाप्रतीकारदशकम् ॥

प्रातर्वैदिककर्मतस्तदनु सद्वेदान्तसंचिन्तया
पश्चाद्भारत मोक्षधर्ममननाद्वासिष्ठरामायणात् ।
सायंभागवतार्थदिव्यकथया रात्रौ निदिध्यासनात्
कालो गच्छति नश्शरीरभरणं प्रारब्धकण्ठार्पितम् ॥ १

अज्ञानं त्यज हेमनोऽपिचसदा ब्रह्मात्मसद्भावनात्
सङ्कल्पानखिलानपित्यज जगन्मिथ्यात्वसद्भावनात् ।
कामान्साधनसाध्यदुःखनिवहध्यानादजस्रं त्यज
क्रोधं तु क्षमयासदाजहिबलाल्लोभं तु सन्तोषतः ॥ २

जिह्वोपस्थसुखभ्रमंत्यजमनः पर्यन्तदुःखेक्षणात्
पारुष्यंमृदुभाषणात्त्यज वृथालापश्रमं मौनतः ।
दुस्सङ्गं त्यजसाधुसङ्गमबलाद्वर्वतुभङ्गेक्षणात्
निन्दादुःखमनिन्द्यदेवमुनिदुर्निन्दाकथासंस्मृतेः ॥ ३

निद्रांसात्विकवस्तुसेवकतया स्वप्नं सदाजागरात्
रोगान्जीर्णमिताशनाज्जहिसदा दैन्यं महाधैर्यतः ।

अर्थानर्थपरिग्रहंत्यजवृथा संसर्गसन्त्यागत-
स्त्रीवाञ्छांत्यजदोषदर्शनबलात् दुःखंसुखात्मेक्षणात् ।
दारासक्तिमनादरात्सुतधनासक्तित्वनित्यत्वतः
स्नेहंमोहविवर्जनात्करुणया नैष्ठुर्यमन्तस्त्यज ।
औदासीन्यमुपाश्रय त्यजसुहृन्मित्रादिदुर्वासनाः
सर्वानर्थकरान्दशेन्द्रियरिपूनेकान्तसंवासतः ॥ ५

आलस्यंत्वरयाश्रमंशमधिया तन्द्रां समुत्थानतः
भेदभ्रान्तिमभेददर्शनबलान्मिथ्यात्मतांसत्यतः ।
नर्मोक्तिंनिजमर्मकर्मकथया द्रोहं स्वसाम्येक्षणात्
आक्रोशंकुशलोक्तितस्त्यजमनः छिन्द्यप्रमादाद्भयम् ॥ ६

भूतार्थस्मरणं वृथाश्रमधिया प्राप्तंतु हानेक्षणात्
भाव्यर्थव्यसनंसदात्यजमनः प्रारब्धचोद्येक्षणात् ।
शिष्टाशिष्टजनक्रियास्त्यज वृथा कष्टानुसन्धानतः
स्नेहद्वेषकथास्सदात्यज जने भस्मान्तता संस्मृतेः ॥ ७

अध्यात्मानुभवान्मनस्त्यजमहत्पापस्वभावेक्षणात्
वैषम्यंसमभावतःपरकथाविक्षेपमक्षोभतः ।

धिक्कारादिभवंतुदुःखमनिशं तद्योग्यताभावनात्
तज्जाता अशुचःक्षमस्वकृपया कर्मक्षयात्ताडनम् ॥ ८
आयुर्गच्छतिपेटिकाजलमिव त्यक्त्वैव देहंजवात्
गच्छन्तीन्द्रियशक्तयोऽपिकुलटा यद्वन्नरं निर्धनं ।
प्रज्ञागच्छतिदावदाहसमये नीडंमृगीणामिव
ज्ञात्वासत्वरमाश्रयात्मपदवीं देहं वृथामाकृथाः ॥ ९
धैर्यैरावतशान्तिधेनुदमसन्मन्दारबृन्दंसदा
मैत्र्याद्यप्सरसं विवेकतुरगं सन्तोषचिन्तामणिं ।
आत्मज्ञानमहामृतं समरसं वैराग्यचन्द्रोदयं
वेदान्तार्णवमाश्रयन्ननुदिनं सेवस्व मुक्तिश्रियम् ॥ १०
प्रसादाद्दक्षिणामूर्तेः श्रुत्वाचार्यप्रसादतः ।
दुर्वासनाप्रतीकारदशकं रचितं मया ॥ ११

श्रीशङ्कर भगवत्पादविरचितं दुर्वासनाप्रतीकारदशकम् ॥

## ॥ नवग्रहमङ्गलश्लोकाः ॥



भास्वान् काश्यपगोत्रजोऽरुणरुचिर्यस्सिंहपोऽर्कस्समि-
त्वद्त्रित्थोऽदशशोभनोगुरुशशी भौमास्सुमित्रास्सदा ।
शुक्रोमन्दरिपुः कलिङ्गजनपश्चाग्नीश्वरौ देवते
मध्येवर्तुलपूर्वदिग्दिनकरः कुर्यात्सदा मङ्गळम् ॥ १

चन्द्रःकर्कटकप्रभुस्तितनिभश्चात्रेयगोत्रोद्भव-
श्चात्रेयश्चतुरश्रवारुणमुखश्चापे उमाधीश्वरः ।
षट्सप्ताभिदशैकशोभनफलो नोरिर्बुधाकौं प्रियौ
स्वामी यामुनजश्च पर्णसमिधः कुर्यात्सदा मङ्गळम् ॥ २

भौमोदक्षिणदिङ्निकोणयमदिग्विन्ध्येश्वरः खादिरः
स्वामी वृश्चिकमेषयोस्सुरगुरुश्चार्कश्शशीसौहृदः ।
ज्ञोऽरिष्वत्रिफलप्रदश्चवसुधास्कन्दौ क्रमाद्देवते
भारद्वाजकुलोद्वहोऽरुणरुचिः कुर्यात्सदामङ्गळम् ॥ ३

सौम्यः पीतउदङ्मुखस्समिदपामार्गोऽत्रिगोत्रोद्भवो

बाणेशानदिशस्सुहृद्रविसुतश्शेषास्समाश्शीतगोः ।
कन्यायुग्मपतिर्दशाष्टचतुरष्षण्णेत्रगश्शोभनो
विष्णुर्दैव्यधिदेवते मगधपः कुर्यात्सदा मङ्गळम् ॥ ४

जीवश्चाङ्गिरगोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तराशास्थितः
पीतोऽश्वत्थसमिच्च सिन्धुजनितश्चापोऽथमीनाधिपः ।
सूर्येन्दुक्षितिजाः प्रियाबुधसितौ शत्रूसमाश्चापरे
सप्तद्वेनवपञ्चमे शुभकरः कुर्यात्सदा मङ्गळम् ॥ ५

शुक्रोभार्गवगोत्रजस्सितरुचिः पूर्वामुखःपूर्वदिक्
पाञ्चालस्थवृषस्तुलाधिपमहाराष्ट्राधिपौदुम्बरः ।
इन्द्राणीमघवाबुधश्च रविजो मित्रोर्कचन्द्रावरी
षष्ठत्रिर्दशवर्जितेभृगुसुतः कुर्यात्सदामङ्गळम् ॥ ६

मन्दःकृष्णनिभःसपश्चिममुखः सौराष्ट्रपःकाश्यप-
स्स्वामीनक्रसुकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रौ कुजेन्दूद्विषौ ।
स्थानंपश्चिमदिक्प्रजापतियमौ देवौ धनुष्यासनौ
षट्त्रिस्थश्शुभकृच्छमीरविसुतः कुर्यात्सदामङ्गळम् ॥ ७

राहुर्सिंहबलेशपोनिऋऋतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनः
यःपैठीनसगोत्रसम्भवसमिद्दूर्वामुखोदक्षिणः ।
सर्पःप्रत्युदैवतोऽखिलगतस्वाम्याद्विशेषप्रद-
ष्षट्त्रिंस्थशुभकृच्चसिंहकसुतः कुर्यात्सदामङ्गळम् ॥ ८

केतुर्नैर्मिनिगोत्रजःकुशसमिद्वायव्यकोणे स्थितः
चित्राङ्कध्वजलाञ्छनोहिभगवान्यो दक्षिणाशामुखः ।
ब्रह्माचैवतुचित्रगुप्तपतिमान्प्रीत्याधिदेवस्सदा
षट्त्रिंस्थशुभकृच बर्बरपतिः कुर्यात्सदा मङ्गळम् ॥ ९

इति नवग्रहमङ्गळश्लोकाः ॥
इति श्रीमदादित्यादि नवग्रहमङ्गळाष्टकम् ॥

---

## ॥ श्रीपरमेश्वरमातृकावर्णमालास्तोत्रम् ॥



अ। अद्भुतविग्रह अमराधीश्वर अगणितगुणगण
[अमृतशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव
[साम्बशिव ॥ १

आ। आनन्दामृत आश्रितरक्षक आत्मानन्द
[महेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २

इ। इन्दुकळाधर इन्द्रादिप्रिय सुन्दररूप सुरेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३

ई। ईशसुरेश महेशजनप्रिय केशवसेवितपादशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४

उ। उरगादिप्रियभूषण शङ्कर नरकविनाश नटेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ५

ऊ। ऊर्जितदानवनाश परात्पर आर्जितपापविनाशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ६

ऋ। ऋग्वेदश्रुतिमौळिविभूषण रविचन्द्राग्नि त्रिनेत्रशिव
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ७
ॠ। ॠषमनादि प्रपञ्चविलक्षण तापनिवारण
[तत्त्वशिव
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ८
ऌ। लिङ्गस्वरूप सर्वबुधप्रिय मङ्गळमूर्ति महेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ९
ॡ। ॡताधीश्वर रूपप्रियशिव वेदान्दप्रियवेद्यशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ १०
ए। एकानेकस्वरूप विश्वेश्वर योगिहृदिप्रियवासशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ११
ऐ। ऐश्वर्याश्रय चिन्मयचिद्घन अच्युतानन्तमहेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ १२
ओ। ओंकारप्रिय उरगविभूषण ह्रींकारादि महेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ १३
औ। औरसलालित अन्तकनाशन गौरिसमेत
[गिरीशशिव।

साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ १४

अं। अम्बरवास चिदम्बरनायक तुम्बुरुनारदसेव्यशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ १५

अः। आहारप्रिय आदिगिरीश्वर भोगादिप्रिय पूर्णशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ १६

क। कमलाक्षार्चित कैलासप्रिय करुणासागर
[कान्तिशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ १७

ख। खड्गशूलमृग ढक्काद्यायुध विक्रमरूपविश्वेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ १८

ग। गङ्गागिरिसुतवल्लभ गुणहित शङ्करसर्वजनेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ १९

घ। घातकभञ्जन पातकनाशन गौरिसमेत गिरीशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २०

ङ। ङङाश्रितश्रुतिमौळिविभूषण वेदस्वरूप विश्वेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २१

च। चण्डविनाशन सकलजनप्रिय मण्डलाधीश
[महेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २२

छ। छत्रकिरीटसुकुण्डलशोभित पुत्रप्रिय भुवनेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २३

ज। जन्मजरामृतिनाशनकल्मषरहिततापविनाशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २४

झ। झङ्कारश्रय भृङ्गिरिटिप्रिय ओङ्कारेश महेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २५

ञ। ज्ञानाज्ञानविनाशक निर्मल दीनजनप्रिय दीप्तशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २६

ट। टङ्काद्यायुधधारण सत्वर ह्रीङ्कारादि सुरेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २७

ठ। ठङ्कस्वरूपासहकारोत्तम वागीश्वर वरदेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २८

ड। डम्भविनाशन डिण्डिमभूषण अम्बरवास
[चिदीशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ २९
ढ। ढंढंडमरुक धरणीनिश्चल ढुंढिविनायक सेव्यशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३०
ण। नळिनविलोचन नटनमनोहर अळिकुलभूषण
[अमृतशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३१
त। तत्त्वमसीत्यादिवाक्यस्वरूपक नित्यानन्द महेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३२
थ। स्थावरजङ्गमभुवनविलक्षण भावुकमुनिवर
सेव्यशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३३
द। दुःखविनाशन दलितमनोन्मन चन्दनलेपितचरण
[शिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३४
ध। धरणीधरशुभ धवळविभास्वर धनदादिप्रियदानशिव।

साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३५

न। नानामणिगणभूषण निर्गुण नटनजनप्रियनाट्यशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३६

प। पन्नगभूषण पार्वतीनायक परमानन्द परेशशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३७

फ। फालविलोचन भानुकोटिप्रभ हालाहलधर
[अमृतशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३८

ब। बन्धविनाशन बृहदीशामर स्कन्दादिप्रिय कनकशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ३९

भ। भस्मविलेपन भवभयनाशन विस्मयरूप विश्वेश
[शिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४०

म। मन्मथनाशन मधुपानप्रिय मन्दरपर्वतवासशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४१

य। यतिजनहृदयनिवासित ईश्वर विधिविष्ण्वादि
[सुरेशशिव।

साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४३

र। रामेश्वर रमणीयमुखाम्बुज सोमशेश्वर सुकृतशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४३

ल। लङ्काधीश्वर सुरगणसेवित लावण्यामृतलसितशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४४

व। वरदाभयकरवासुकिभूषण वनमालादिविभूषशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४५

श। शान्तिस्वरूप जगत्त्रयचिन्मय कान्तिमतीप्रिय
[कनकशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४६

ष। षण्मुखजनक सुरेन्द्रमुनिप्रिय षाड्गुण्यादि
[समेतशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४७

स। संसारार्णवनाशन शाश्वतसाधुहृदिप्रियवासशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४८

ह। हरपुरुषोत्तम अद्वैतामृत पूर्णमुरारि सुसेव्यशिव।

साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ४९

ळ। ळालितभक्तजनेशनिजेश्वर कालिनटेश्वर कामशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ५०

क्ष। क्षररूपादि प्रियान्वितसुन्दर साक्षिजगत्त्रय
स्वामिशिव।
साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव ... ... ॥ ५१

इति साम्बसदाशिवमातृकावर्णमालिकास्तोत्रम् ॥

---

## ॥ पार्वतीवल्लभाष्टकम् ॥

नमो भूतनाथं नमो देवदेवं नमः कालकालं नमो दिव्यतेजम्। नमः कामभस्मं नमश्शान्तशीलं भजे पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ १

सदा तीर्थसिद्धं सदा भक्तरक्षं सदा शैवपूज्यं सदा-
शुभ्रभस्मम्। सदा ध्यानयुक्तं सदा ज्ञानतल्पं भजे ...

श्मशाने शयानं महास्थानवासं शरीरं गजानां सदा-
चर्मवेष्टम् । पिशाचं निशोचं पशूनांप्रतिष्ठं भजे... ॥

फणीनागकण्ठे भुजङ्गाद्यनेकं गळे रुण्डमालं महा-
वीरशूरम् । कटिव्याघ्रचर्मं चिताभस्मलेपं भजे... ॥

शिरश्शुद्धगङ्गा शिवावामभागं बृहद्दीर्घकेशं सदा मां
त्रिणेत्रम् । फणीनागकर्णं सदा बालचन्द्रं भजे ... ॥५

करे शूलधारं महाकष्टनाशं सुरेशं वरेशं महेशं
जनेशम् । धनेशामरेशं ध्वजेशं गिरीशं भजे ... ॥६

उदासं सुदासं सुकैलासवासं धरानिर्धरं संस्थितं
ह्यादिदेवम् । अजाहेमकल्पद्रुमं कल्पसेव्यं भजे ... ॥

मुनीनां वरेण्यं गुणं रूपवर्णं द्विजैस्संपठन्तं शिवं
वेदशास्त्रम् । अहो दीनवत्सं कृपालुं शिवं हि भजे ...

सदा भावनाथं सदा सेव्यमानं सदा भक्तिदेवं
सदा पूज्यमानम् । मया तीर्थवासं सदा सेव्यमेकं भजे
पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ ९

इति श्रीमच्छङ्करयोगीन्द्रविरचितं पार्वतीवल्लभाष्टकम् ॥

## ॥ प्रदोषाष्टकम् ॥

सत्यं ब्रवीमि परलोकहितं ब्रवीमि सारं ब्रवीम्युप-
निषद्धृदयं ब्रवीमि । संसारमुल्बणमसारमवाप्यजन्तोः
सारोयमीश्वरपदांबुरुहस्य सेवा ॥ १

ये नार्चयंति गिरिशं समये प्रदोषे येनार्चितं शिव-
मपि प्रणमन्ति चान्ये । एतत्कथां श्रुतिपुटैर्न पिबन्ति
मूढा स्ते जन्म जन्मसु भवन्ति नरा दरिद्राः ॥ २

ये वै प्रदोषसमये परमेश्वरस्य कुर्वन्त्यनन्यमन-
सोङ्घ्रिसरोजपूजाम् । नित्यं प्रवृद्धधनधान्यकळत्रपुत्र
सौभाग्यसंपदधिकास्त इहैव लोके ॥ ३

कैलासशैल भ(मु)वने त्रिजगज्जनित्रीं गौरीं निवेश्य
कनकाञ्चितरत्नपीठे । नृत्यं विधातुमभिवांछति शूल-
पाणौ देवाः प्रदोषसमयेनु भजन्ति सर्वे ॥ ४

वाग्देवी धृतवल्लकी शतमखो वेणुं दधत्पद्मज
स्तालोन्निद्रकरो रमा भगवती गेयप्रयोगान्विता । विष्णु-

स्सान्द्र मृदङ्ग वादनपटुर्देवारसमन्तात् स्थिता रसेवंते तमनु प्रदोषसमये देवं मृडानीपतिम् ॥ ५

गन्धर्वयक्षपतगोरग सिद्धसाध्य विद्याधरामर वराप्सरसां गणाश्च । येन्ये त्रिलोक निलयास्सह भूत-वर्गाः प्राा(प्ते)प्य प्रदोषसमये हरपार्श्वसंस्थाः ॥ ६

अतः प्रदोषे शिव एकएव पूज्योथ नान्ये हरिपद्म-जाद्याः । तस्मिन्महेशे विधिनेज्यमाने सर्वे प्रसीदन्ति सुराधिनाथाः ॥ ७

एष ते तनयः पूर्वजन्मनि ब्राह्मणोत्तमः ।
प्रतिग्रहैर्वयो नित्यं न दानाद्यैस्सुकर्मभिः ॥ ८
अतो दारिद्र्यमापन्नः पुत्रस्ते द्विजभामिनि ।
तद्दोषपरिहारार्थं शरणं यातु शङ्करम् ॥ ९

इति श्रीस्कान्दपुराणे प्रदोषस्तोत्राष्टकम् ॥



## ॥ श्रीमहागणपति मङ्गळमालिकास्तोत्रम् ॥

श्रीकण्ठप्रेमपुत्राय गौरीवामाङ्कवासिने ।
द्वात्रिंशद्रूपयुक्ताय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ १

आदिपूज्याय देवाय दन्तमोदकधारिणे ।
वल्लभाप्राणकान्ताय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ २

लम्बोदराय शान्ताय चन्द्रगर्वापहारिणे ।
गजाननाय प्रभवे श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ ३

पञ्चहस्ताय वन्द्याय पाशांकुशधरायच ।
श्रीमते गजकर्णाय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ ४

द्वैमातुराय बालाय हेरम्बाय महात्मने ।
विकटायाखुवाहाय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ ५

पृथ्विशृङ्गायाजिताय क्षिप्राभीष्टार्थदायिने ।
सिद्धिबुद्धिप्रमोदाय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ ६

विलम्बि यज्ञसूत्राय सर्वविघ्ननिवारिणे ।
दूर्वादळसुपूज्याय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ ७
महाकायाय भीमाय महासेनाग्रजन्मने ।
त्रिपुरारिवरोद्धात्रे श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ ८
सिन्दूररम्यवर्णाय नागबद्धोदरायच ।
आमोदाय प्रमोदाय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ ९
विघ्नकर्त्रे दुर्मुखाय विघ्नहर्त्रे शिवात्मने ।
सुमुखायैकदन्ताय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ १०
समस्तगणनाथाय विष्णवे धूमकेतवे ।
त्र्यक्षाय फालचन्द्राय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ ११
चतुर्थीशाय मान्याय सर्वविद्याप्रदायिने ।
वक्रतुण्डाय कुब्जाय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ १२
धुंडिने कपिलाख्याय श्रेष्ठाय ऋणहारिणे ।
उद्दण्डोद्दण्डरूपाय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ १३
कष्टहर्त्रे द्विदेहाय भक्तेष्टजयदायिने ।
विनायकाय विभवे श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ १४

सच्चिदानन्दरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
वटवे लोकगुरवे श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ १५
श्रीचामुण्डासुपुत्राय प्रसन्नवदनायच ।
श्रीराजराजसेव्याय श्रीगणेशाय मङ्गळम् ॥ १६
श्रीचामुण्डाकृपापात्र श्रीकृष्णेन्द्रविनिर्मिताम् ।
विभूतिमातृकारम्यां कल्याणैश्वर्यदायिनीम् ॥ १७
श्रीमहागणनाथस्य शुभां मङ्गळमालिकाम् ।
यः पठेत्सततं वाणीं लक्ष्मीं सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ १८

इति श्रीमहागणपति मङ्गळमालिकास्तोत्रम् ॥

## ॥ मृत्युञ्जयस्तोत्रम् ॥

नन्दिकेश्वर उवाचः—

कैलासस्योत्तरे शृङ्गे शुद्धस्फटिकसन्निभे ।
तमोगुणविहीने तु जरामृत्युविवर्जिते ॥ १
सर्वतीर्थास्पदाधारे सर्वज्ञानकृतालये ।
कृताञ्जलिपुटो ब्रह्मा ध्यानशीलस्सदाशिवम् ॥ २

पप्रच्छ प्रणतो भूत्वा जानुभ्यामवनिं गतः ।
सर्वार्थसम्पदाधारो ब्रह्मा लोकपितामहः ॥ ३

ब्रह्मोवाचः—

केनोपायेन देवेश चिरायुर्लोमशोऽभवत् ।
तन्मे ब्रूहि महेशान लोकानां हितकाम्यया ॥ ४

श्रीसदाशिव उवाचः—

शृणुब्रह्मन्प्रवक्ष्यामि चिरायुर्मुनिसत्तमः ।
सञ्जातो वर्मणा येन व्याधिमृत्युविवर्जितः ॥ ५
तस्मिन्नेकार्णवे घोरे सलिलौघपरिप्लुतेः ।
कृतान्तभयनाशाय स्तुतो मृत्युञ्जयश्शिवः ॥ ६
तस्यसङ्कीर्तनान्नित्यं मर्त्यो मृत्युविवर्जितः ।
त्वमेवकीर्तयब्रह्मन्मृत्युं जेतुं न संशयः ॥ ७

लोमश उवाचः—

ओं । देवादिदेव देवेश सर्वप्राणभृतां वर ।
प्राणिनामपि नाथस्त्वं मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ ८
देहिनां जीवभूतोसि जीवो जीवस्य कारणम् ।

जगतां रक्षकस्त्वं वै मृत्युञ्जय नमोस्तुते ॥ ९
हेमाद्रिशिखराकार सुधावीचिमनोहर ।
पुण्डरीक परंज्योति मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ १०
ध्यानाधार महाज्ञान सर्वज्ञानैककारण ।
परित्रातासि लोकानां मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ ११
निहता येन कालेन सदेवासुरमानुषाः ।
गन्धर्वाप्सरसश्चैव सिद्धविद्याधरास्तथा ॥ १२
साध्याश्च वसवो रुद्रा स्तथाश्विनिसुतावुभौ ।
मरुतश्च दिशो नागाः स्थावरा जङ्गमास्तथा ॥ १३
ये ध्यायन्ति परां मूर्तिं पूजयन्त्यमराधिप ।
न ते मृत्युवशं यान्ति मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ १४
त्वमोङ्कारोसि वेदानां देवानां च सदाशिवः ।
आधारशक्तिश्शक्तीनां मृत्युञ्जय नमोस्तु ते॥ १५
स्थावरे जङ्गमे वापि यावत्तिष्ठति मेदिनी ।
जीवत्वित्याह लोकोयं मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ १६
सोममूर्याग्निमध्यस्थ व्योमव्यापिन्सदाशिव ।

कालत्रय महाकाल मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ १७
प्रबुद्धे चाप्रबुद्धे च त्वमेव सृजसे जगत् ।
सृष्टिरूपेण देवेश मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ १८
व्योम्नि त्वं व्योमरूपोसि तेजस्सर्वत्र तेजसि ।
प्राणिनां ज्ञानरूपोसि मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ १९
जगज्जीवो जगत्प्राणः स्रष्टा त्वं जगतः प्रभुः ।
कारणं सर्वतीर्थानां मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २०
नेता त्वमिन्द्रियाणां च सर्वज्ञानप्रबोधकः ।
सांख्ययोगश्च हंसश्च मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २१
रूपातीतस्सुरूपश्च पिण्डस्थः पद्मेवच ।
चतुर्विधफलाधार मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २२
रेचके वह्निरूपोसि सोमरूपोसि पूरके ।
कुम्भके शिवरूपोसि मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २३
क्षयं करोति पापानां पुण्यानामपि वर्धनम् ।
हेतुस्त्वं श्रेयसान्नित्यं मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २४
सर्वमायाकलातीत सर्वेन्द्रियपरावर ।

सर्वेन्द्रियकलाधीश मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २५
रूपं गन्धो रसः स्पर्श शब्दस्संस्कार एवच ।
त्वत्तः प्रकाश एतेषां मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २६
चतुर्विधानां सृष्टीनां हेतुस्त्वं कारणेश्वर ।
भावाभावपरिच्छिन्न मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २७
त्वमेको निष्कळो लोके सकलं भुवनत्रयम् ।
अतिसूक्ष्मातिरूपस्त्वं मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २८
त्वं प्रबोधस्त्वमाधार स्त्वद्बीजं भुवनत्रयम् ।
सत्त्वंरजस्तमस्त्वं हि मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २९
त्वं सोमस्त्वं दिनेशश्च त्वमात्मा प्रकृतेःपरः ।
अष्टत्रिंशत्कलानाथ मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ ३०
सर्वेन्द्रियाणमाधारस्सर्वभूतगणाश्रयः ।
सर्वज्ञानमयस्सत्त्वं मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ ३१
त्वमात्मा सर्वभूतानां गुणानां त्वमधीश्वरः ।
सर्वाननमयाधार मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ ३२
त्वं यज्ञ स्सर्वयज्ञानां त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
शब्दब्रह्म त्वमोङ्कारो मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ ३३

श्रीसदाशिव उवाचः—

एवं सङ्कीर्तयेद्यस्तु शुचिस्तद्गतमानसः ।
भक्त्या शृणोति यो ब्रह्मन्नस मृत्युवशो भवेत् ॥
न तु मृत्युभयं तस्य प्राप्तकालं च लङ्घयेत् ।
अपमृत्युभयं तस्य प्रणश्यति न संशयः ॥ ३५
व्याधयो नोपपद्यन्ते नोपसर्गभयं भवेत् ।
प्रत्यासन्नान्तरे काले शतैकावर्तने कृते ॥ ३६
मृत्युर्नजायते सत्यं रोगान्मुच्यति निश्चितम् ।
पञ्चम्यां वा दशम्यां वा पौर्णमास्यामथापिवा ॥ ३७
शतमावर्तयेद्यस्तु शतवर्षं स जीवति ।
तेजस्वी बलसम्पन्नो लभते श्रियमुत्तमाम् ॥ ३८
त्रिविधं नाशयेत्पापं मनोवाक्कायसम्भवम् ।
आभिचारणि कर्माणि कर्माण्यथर्वणानिच ॥ ३९
इदं रहस्यं परमं देवदेवस्य शूलिनः ।
दुःस्वप्ननाशनं पुण्यं सर्वविघ्नविनाशनम् ॥ ४०

इति श्रीनृसिंहपुराणे शिवब्रह्म संवादे मार्कण्डेयकृतं मृत्युञ्जयस्तोत्रम् ॥

## ॥ लिङ्गाष्टकम् ॥



ब्रह्म मुरारि सुरार्चितलिंङ्गं निर्मलभासितशोभित-
लिंङ्गम् । जन्मज दुःख विनाशकलिंङ्गं तत्प्रणमामि
सदाशिवलिंगम् ॥ १

देवमुनि प्रवरार्चित लिंगं कामदहं करुणाकर
लिंगम् । रावणदर्पविनाशन लिंगं त ... २

सर्वसुगन्धसुलेपितलिंगं बुद्धिविवर्धनकारणलिंगम् ।
सिद्ध सुरासुर वन्दितलिंगं त ... ... ३

कनकमहामणि भूषितलिंगं फणिपति वेष्टित शोभित-
लिंगम् । दक्षसुयज्ञ विनाशन लिंगं त ... ॥ ४

कुंकुम चन्दन लेपित लिंगं पङ्कज हार सुशोभित-
लिंगम् । सञ्चितपापविनाशनलिंगं त ... ५

देवगणार्चितसेवितलिंगं भावैर्भक्तिभिरेवच लिंगम् ।
दिनकरकोटि प्रभाकरलिंगं त ... ... ६

अष्टदळोपरि वेष्टितलिंगं सर्वसमुद्भव कारणलिंगम् ।
अष्ट दरिद्र विनाशनलिंगं त ... ... ॥ ७

सुरगुरुसुरवरपूजितलिंगं सुरवनपुष्पसदार्चित-
लिंगम् । [1]परमपतिं परमात्मकलिंगं त ... ८

लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ९

इति लिंगाष्टकम् ॥

---

## ॥ सनकादिकृत विश्वरूप परमेश्वरस्तुतिः ॥

ऋषयः—

त्वामेकमीशं पुरुषं पुराणं प्राणेश्वरं रुद्रमनन्त-
योगम् । सर्वे नमामो हृदि सन्निविष्टं प्रचेतसं ब्रह्ममयं
पवित्रम् ॥ १

1 परात्परम् ।

त्वां पश्यन्ति मुनयो ब्रह्मयोनिं श्रान्ता श्शान्ता-
हृदये रुक्मवर्णम् । ध्यात्वात्मस्थमचलं ते शरीरे कविं
परेभ्यः परमं परं च ॥ २

त्वत्तःप्रसूता जगतः प्रसूतिस्सर्वात्मभूस्त्वं पर-
मात्मभूतः । अणोरणीयान् महतो महीयान् त्वामेव
सर्वे प्रवदन्ति सन्तः ॥ ३

हिरण्यगर्भो जगदन्तरात्मा त्वत्तो हितः पुरुषः
पुराणः । स जायमानो भगवान्विसृष्टो यथा विधानं
सकलं ससर्ज ॥ ४

त्वत्तो वेदास्सकलास्सम्प्रसूतास्त्वय्येवान्ते सांस्थितिं
ते लभन्ते । पश्यामस्त्वां जगतो हेतुभूतं नृत्यंतं स्वे
हृदये सन्निविष्टम् ॥ ५

ब्रह्मैवेदं भ्राम्यते ब्रह्मचक्रं मायावी त्वं जगता मेक-
नाथः । नमामस्त्वां शरणं सम्प्रसन्ना स्संवित्पतिं दिव्य-
नृत्ते प्रवृत्तम् ॥ ६

पश्यामस्त्वां परमाकाशमध्ये नृत्यन्तं ते महिमानं स्मरामः । सर्वात्मानं बहुधा सन्निविष्टं ब्रह्मानन्दं चानुभूयानुभूय ॥ ७

ओंकारस्त्वं वाचको मुक्तिबीजं त्वमक्षरं प्रकृतौ गूढरूपः । तत्वातीतं प्रवदन्तीह सन्त स्स्वयंप्रभं भवतो पश्य रूपम् ॥ ८

स्तुवन्ति त्वां सर्वतस्सर्ववेदाः नमन्ति त्वामृषयः क्षीणदोषाः । शान्तात्मानं सत्यसन्धं वरिष्ठं विशन्ति त्वां यतयो ब्रह्मनिष्ठाः ॥ ९

एको वेदो बहुशाखो ह्यनन्तो त्वामेवैकं बोधयत्येकरूपम् । वेद्यंतं त्वां शरणं ये प्रपन्ना स्तेषां मुक्तिश्शाश्वती नेतरेषाम् ॥ १०

भवानीशोऽनादिमांस्तेजसात्मा ब्रह्मा विष्णुः परमेष्ठी वरिष्ठः । स्वात्मानन्दमनुभूयानुभूय शेते स्वयं ज्योतिरचलो नित्यमुक्तः ॥ ११

एको रुद्रस्त्वं करोषीह विश्वं त्वं पालयस्यखिलं विश्वरूपः। त्वय्येवान्ते विलयं विन्दतीदं नमामस्त्वां शरणं सम्प्रपन्नाः ॥ १२

त्वामेकमाहुः कविमेकरुद्रं प्राणं बृहन्तं हरिमग्निमीशम्। इन्द्रं मृत्युमखिलं चोकितानं धातारमादित्यमेकरूपम् ॥ १३

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्। त्व मव्यय श्शाश्वत धर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषोत्तमोसि ॥ १४

त्वमेव विष्णुश्चतुराननस्त्वं त्वमेव रुद्रो भगवानपीशः। त्वं विश्वनाभिः प्रकृतिः प्रतिष्ठा सर्वेश्वरस्त्वं परमेश्वरोसि ॥ १५

त्वामेकमाहुः पुरुषं पुराणमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। चिन्मात्रमव्यक्तमनन्तरूपं त्वं ब्रह्मशून्यं प्रकृति र्गुणश्च ॥ १६

यदन्तरा सर्वमिदं विभाति यदप्ययं निर्मलमेकरूपम् । किमस्य चिन्त्यं तव रूपमेतत्तदन्तरा यत्प्रतिभाति तत्त्वम् ॥ १७

योगेश्वरं रुद्रमनन्तशक्तिं परायणं ब्रह्मतनुं पुराणम् । सर्वे नमामश्शरणार्थिनस्त्वां प्रसिद्ध भूतेशपते महेश ॥ १८

त्वत्पादपद्मस्मरणादशेषसंसारबीजं विलयं प्रयाति । मनो नियम्य प्रणिधाय कायं प्रसादयामो वयमेकमीड्यम् ॥ नमोस्तु रुद्राय कपर्दिने ते नमो महादेव नमश्शिवाय ॥

इति श्रीकूर्मपुराणे उत्तरभागे सनकादिकृत श्रीविश्वरूपशिवस्तुतिः ॥

## ॥ देवदानव शङ्करस्तुतिः ॥

देवदानवाः—

नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्ते तिग्मचक्षुषे ।
नमः पिनाकहस्ताय धन्विने कामरूपिणे ॥ १

नमस्ते शूलहस्ताय दण्डहस्ताय धूर्जटे ।
नमस्ते ऽव्यक्तनाथाय भूतग्रामशरीरिणे ॥ २
नमस्पुरारिहन्त्रे च सोमार्कानलचक्षुषे ।
ब्रह्मणे चैव रुद्राय नमस्ते विष्णुरूपिणे ॥ ३
ब्रह्मणे वेदरूपाय नमस्ते विश्वरूपिणे ।
सांख्ययोगाय भूतानां नमस्ते शम्भवायते ॥ ४
मन्मथाङ्गविनाशाय नमः कालक्षयङ्कर ।
रंहसे देवदेवाय नमस्ते वसुरेतसे ॥ ५
एकवीराय सर्वाय नमः पिङ्गकपर्दिने ।
हर्त्रे कर्त्रे नमस्तुभ्यं नमस्त्रिपुरघातिने ॥ ६
शुद्धबोधप्रबुद्धाय मुक्तिकैवल्यरूपिणे ।
लोकत्रयविधात्रे च वरुणेन्द्राग्निरूपिणे ॥ ७
ऋग्यजुस्सामवेदाय पुरुषायेश्वराय च ।
अम्राय चैव चोग्राय विप्राय श्रुतिचक्षुषे ॥ ८
रजसेचैव सत्वाय नमस्ते तामसात्मने ।
अनित्यनित्यभासाय नमो नित्यचरात्मने ॥ ९

व्यक्ताय चैवाव्यक्ताय व्यक्ताव्यक्तात्मने नमः ।
भक्तानामार्तिनाशाय प्रियनारायणाय च ॥ १०
उमाप्रियाय शर्वाय नन्दिवक्त्राङ्कितायच ।
ऋतु मन्वन्तकल्पाय पक्षमासदिनात्मने ॥ ११
नानारूपाय मुण्डाय वरूथपृथुदण्डिने ।
नमः कपालहस्ताय दिग्वासाय शिखण्डिने ॥ १२
धन्विने रतिने चैव यतये ब्रह्मचारिणे ।
शिवाय देवदेवाय नमस्तुभ्यं नमोनमः । १३
एवं सुरासुरैरस्थाणुस्तुतस्तोषमुपागतः ।
उवाच वाक्यं भीतानां स्मिताङ्कितशुभाक्षरम् ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणान्तर्गत देवदानवकृतशिवस्तोत्रम् ॥

## ॥ शिवमहिमकलिका स्तुतिः ॥

यत्सर्वक्रतुफलदं यदखिलयज्ञादिकामहितम् ।
यत्सकलदेवरूपं ज्योति स्तदुपास्महे सोमम् ॥ १

अविरकास्सोमभवा नखिलागम विनुतसकल मन्त्राङ्गः ।
ब्रह्माद्यास्तु गवादिवदमरास्सर्वे विकारास्ते ॥ २
सहवेदे पठ्यन्तां सहस्र मिष्ट्यादिवत्तया त्रिदश ।
न्यायविदो बुध्यन्ते तेषां सोमप्रधानं त्वाम् ॥ ३
सर्वेश्वरनामैव स्फुटयति सर्वाधिपत्यमीश तव ।
वाजिन इव सोमपदं स्तुत्यर्थं केवलं तदन्यत्र ॥ ४
नामेदं त्वयि शिक्षयाह्यन्यसुरत्यागहेतुपरमुदितम् ।
नह्यत्रेतिवदीश्वरहेतुपरं नाविवक्षितस्वार्थम् ॥ ५
त्वत्तः किल जायन्ते प्रतिकल्पं ब्रह्मविष्णु रुद्रेन्द्राः ।
तेष्वपकृष्टेषु विभो न स्युस्तदधस्तनाः किमपकृष्टाः ॥ ६
आवापोद्वापाभ्यां प्रतिकल्पं देवताः पृथक् कुर्वन् ।
दुरधिगम विविधशक्ति र्विहरसि देवप्रतीष्टिवेद इव ॥ ७
त्वच्छक्ति विलासेन स्वस्वपदे देवताइति प्रथिताः ।
यागा इव शब्दविधौ न स्वव्यापारतश्शिवत्रिदशाः ॥ ८
यदुपहतशक्तिः कः किलपुरहर शक्नोति किमपि विधातुम्।

मन्त्रस्थ यजत्यादिवदमरगणः कस्ततस्त्वदधिकस्यात् ॥
त्वच्छक्त्यधिष्ठितत्वात्परभावस्स्फुरति पद्मजाद्येषु ।
वेदाक्षरमिश्रत्वाद्वेदत्वं ननु विभाति कल्प्येषु ॥ १०
त्वयि यागवत्प्रधाने स्थितेऽपि भगवन् धियैवसंवेद्ये ।
स्थूलदृशां होमेष्विव गुणमूर्तिषु भासतेप्रधानत्वम् ॥
नपरंगुणमूर्तिभ्यो विदन्ति दुर्दर्शरूपमबुधास्त्वां ।
हाविरन्तराळयुक्तं विधिमिव विष्ण्वादिवाक्येभ्यः ॥१२
ज्योतिर्मये त्वयि सति त्रिदशगणोहर्गण इवास्माकं ।
नोपचयार्थमुपास्यश्शतोक्थ्यगानामिवोक्थ्यानां ॥ १३
आश्रित्यहि लब्धपदा ज्योतिष्टोममिव सर्वफलदं त्वाम् ।
किंचित्किंचित्फलमिहसंस्था इवदेवताः प्रयच्छन्ति ॥
आकाङ्क्षितं लभन्तां सोमसुरास्त्वत्प्रदिष्टमखिलमपि ।
नगवादिवल्लभन्ते त्वदेयफलप्रदानसामर्थ्यम् ॥ १५
त्वामतियजेत भगवन् यदि कुलदैवं द्विजातिकुलजातः ।
उभयभ्रष्टो नश्येदभ्युदयो पांशुयाजवत्सजडः ॥ १६

ब्रह्मकुले जातोऽपि त्वद्भजनं निजमपास्य यो विकृतः ।
नत्राह्मणरसभगवन्नहमन्त्रोमन्त्रमध्यगो व्यूहः ॥ १८
ज्योतिष्टोममिव त्वां नित्यं यस्स्वर्ग सद्भाव्यम् ।
अतिलङ्घ्येतरयजनं कुरुते नततोस्ति निरयभागन्यः ॥
अन्याद्याविष्ण्वन्ताःसर्वे देवाः परिग्राह्याः ।
सोम त्वामधिगन्तुं तपश्च नियमाश्च भूयांसः ॥ १९
दीक्षाभिरभिसमेतो विपश्चिदखिलाङ्ग जातगोचरया ।
सोम त्वद्भावनयादुःखमसम्भिन्नसुखमुपैति पदम् ॥२०
तन्त्राण्यङ्गानि तव स्वामिन् दीक्षाप्रधानानि ।
तन्निष्ठः क्रमशस्त्वामहीन मुख्येप्रसादधनमुपैति ॥ २१
धर्मानुग्रहलाभाद्ब्राह्मणवर्गस्य वर्णसाम्याच्च ।
त्वद्धर्माः परमुचिताशिवाज्यधर्मा मधूदकरसेत्रा ॥ २२
अनृतादिदूषितोहं विना तव परिग्रहं विरूपाक्ष ।
तव धर्मे तत्परतां नलभेय विधेरिवार्थवादांशः ॥ २३
अपराधनिरस्तमपि स्वीकुरु करुणानिधे पुनश्शिवमाम् ।

विधितः प्रपद्यमानं हविरभ्युद्यच्च दर्शवत्स्वामिन् ॥२४
नाथ तव महिमकलिकाककुभश्रुत्यन्तपारिजातभवा ।
सुरभयतु करुणया तव मीमांसान्यायपरिमळोल्लासैः॥२५
इति श्रीमदप्पय दीक्षितविरचित श्री शिवमहिमकलिकास्तुतिः॥

## ॥ शिवभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम् ॥

गळद्दान गण्डं मिळद्भृङ्गषण्डं चलच्चारुशुण्डं गजत्राणशौण्डम् । लसद्दन्तकाण्डं विपद्भङ्गचण्डं शिवप्रेमपिण्डं भजे वक्रतुण्डम् ॥ १

अनाद्यन्तमाद्यं परं तत्वमर्थं चिदाकाशमेकं तुरायं त्वमेयम् । हरिब्रह्ममृग्यं परब्रह्मरूपं मनोवागतीतं महश्शैवमीडे ॥ २

स्वशक्त्यादिशक्त्यन्तसिंहासनस्थं [1]नमन्हारि सर्वाङ्गरत्नादिभूषम् । जटाहिन्दुगङ्गा [2]विराजत्सुमौळिं परं शक्तिमित्रं नमः पञ्चवक्त्रम् ॥ ३

1 मनोहारि. 2 स्थिरशश्यर्कमौळिं.

शिवेशानतत्पूरुषाघोरवामादिभिः [1]पञ्चभिर्हृन्मुखैः षड्भिरङ्गैः । अनौपम्य षट्त्रिंशतिं तत्वविद्यामतीतं परं त्वां कथं वेत्ति कोवा ॥ ४

प्रवालप्रवाहप्रभाशोणमर्धं मरुत्वन्मणिश्रीमहः श्यामममर्धम् । गुणस्यूतमेकं वपुश्चैनमन्तः स्मरामि स्मरापत्तिसम्पत्तिहेतुम् ॥ ५

स्वसेवासमायात देवासुरेन्द्रा नमन्मौलिमन्दारमाला-भिषिक्तम् । नमस्यामि शम्भो पदाम्भोरुहं [2]ये भवांभोधिपोतं भवानी विभाव्यम् ॥ ६

जगन्नाथ मन्नाथ गौरीसनाथ प्रपन्नानुकम्पिन्विपन्नार्तिहारिन् । म[3]हासोममूर्ते समस्तैकबन्धो नमस्ते नमस्ते पुनस्ते नमोस्तु ॥ ७

महादेव देवेश देवादिदेव स्मरारे पुरारे यमारे हरेति । ब्रुवाणः स्मरिष्यामि भक्त्या भवन्तं ततो मे दयाशील देव प्रसीद ॥ ८

---

1 ब्रह्मभिः. 2 ते. 3 हस्तो.

विरूपाक्ष विश्वेश विद्यादिकेश त्रयीमूल शम्भो शिव त्र्यम्बकत्वम् । प्रसीद स्मर त्राहिपश्यावपुष्य क्षमस्वाप्रुहीति [1]प्रभो प्रार्थयामः ॥ ९

त्वदन्यश्शरण्यः प्रपन्नस्य नेति प्रसीद स्मरन्नेव हन्यास्तु दैन्यम् । नचेत्ते भवेद्भक्तवात्सल्यहानिस्ततो मे दयाळो दयां सन्निधेहि ॥ १०

कयं दानकालस्त्वहं दानपात्रं भवान्नाथ दाता त्वदन्यं न याचे । भवद्भक्तिमेव स्थिरां देहि मह्यं कृपाशील शम्भो कृतार्थोस्मि तस्मात् ॥ ११

पशुं वेत्सि चेन्मां त्वमेवाधिरूढः कलङ्कीति वा मूर्ध्नि तस्मै त्वमेव । द्विजिह्वः पुनस्तेऽपि ते कण्ठभूषा त्वदङ्गीकृताश्शर्व सर्वेपि धन्याः ॥ १२

न शक्नोमि कर्तुं परद्रोहलेशं कथं प्रीयसे त्वं नजाने गिरीश । तदाहि प्रसन्नोसि कस्यापि कान्ता सुतद्रोहिणोवा पितृद्रोहिणोवा ॥ १३

---

1 क्षपा हि क्षपामः

स्तुतिं ध्यानमर्चां यथाव द्विधातुं भजन्नप्य जान-
न्महेशाऽवलम्बे । त्रसन्तं सुतं त्रातुमग्रे मृकण्डोर्यम-
प्राण निर्वापणं त्वत्पदाब्जम् ॥ १४

अकण्ठे कळङ्का दनङ्गे भुजङ्गा दपाणौ कपाला दफा-
लेऽनलाक्षात् । अमौळौ शशाङ्का दवामे कळत्रादहं देव-
मन्यं नमन्ये नमन्ये ॥ १५

शिरोदृष्टि हृद्रोग शूलप्रमेह ज्वराशों जरायक्ष्महिक्का
गदार्तान् । त्वमाद्यो भिषग्भेषजं भस्मशम्भो त्वमुल्लङ्घ-
याऽस्मान् वपुर्लाघवाय ॥ १६

यदा कर्णरन्ध्रं व्रजेत्कालवाहद्विषत्कण्ठघण्टाघण-
त्कारनादः । वृषाधीशमारुह्य देवोपवाह्य स्तदावत्स मा
भैरिति प्रीणय त्वम् ॥ १७

दरिद्रोऽस्म्यभद्रोऽस्मि भग्नोऽस्मि दूये विषण्णोऽस्मि
भिन्नोऽस्मि खिन्नोऽस्मि चाहम् । भवान् प्राणिनामन्त-
रात्मासि शम्भो ममाधिं नवेत्सि प्रभो रक्ष मां त्वम् ॥

त्वदक्ष्णोः कटाक्षः पतेत्त्र्यक्ष यत्र क्षणं तत्र लक्ष्मी-

स्वयं तं वृणोति । किरीटस्फुरच्चामर च्छत्रमालाकलाची गजक्षौमभूषाविशेषैः ॥ १९

भवान्यै भवायापि मात्रे च पित्रे मृडायाप्यघघ्ने । मखघ्ने शिवांग्यै शिवाङ्गाय कुर्मस्त्रिशवायै शिवायाम्बिकायै नमस्त्र्यम्बकाय ॥ २०

भवद्गौरवं मल्लघुत्वं विदित्वा प्रभो रक्ष कारुण्य-दृष्ट्यानु[1]कंप्या । शिवात्मानुभावस्तुतावक्षमोहं स्वशक्त्या कृतं मेऽपराधं क्षमस्व ॥ २१

यदा दारुणा भाषणा भीषणा मे भविष्यन्त्युपान्ते कृतान्तस्य दूताः । तदा मन्मनस्त्वत्पदाम्भोरुहस्थं कथं निश्चलं स्या न्नमस्तेस्तु शम्भो ॥ २२

यदा दुर्निवारव्यथोऽहं शयानो लुठन् [2]मस्तको निःपृहस्त्यक्तपांगिः । तदा जह्नुकन्याजलालंकृतं ते जटामण्डलं मन्मनो मन्दिरं स्यात् ॥ २३

यदा पुत्रमित्रादयो मत्सकाशे रुदन्तोस्य हा की-

---

1 गं माम्. 2 निश्वसन्निस्सृता व्यक्तवाणिः.

दर्शीयं दर्शेति । तदा देवदेवश गौरीश शम्भो नमस्ते शिवायेत्यजस्रं ब्रवाणि ॥ २४

यदा यातना देहसन्देहवाही भवेत्तदात्मदेहेन मोहो महान्मे । तदाकाशशीतांशुसङ्काशमीश स्मरारेव वपुस्ते नमस्ते स्मराणि ॥ २५

यदा [1]लूनपङ्खाभवस्थानमद्रिर्जनैर्वा विहीनं गमिष्यामि दूरम् । तदा तं निरुद्धं कृतान्तस्य मार्गं महादेव मह्यं मनोज्ञं प्रयच्छ ॥ २६

यदा रौरै [2]वे हा स्मरन्नेव भीत्या व्रजाम्यत्र मोहं महादेव घोरम् । तदा मा महो तात कस्यायति भ्रांत्युदीर्णं पराधीन मर्धेन्दुमौळे ॥ २७

यदा [3]पादमात्रं यतेर्लङ्घशक्तिः कृतान्ता[4]द्भवान् भक्त[5]दाक्षिण्यभावः । तदा पाहि मां पार्वतीवल्लभान्यं न पश्यामि पातारमेतादृशं मे ॥ २८

---

1 पारमच्छा यमस्थान. 2 वादि. 3 श्वेतपत्रायतालङ्घशक्तेः. 4 ऋषं. 5 वात्सल्यभावात्.

इदानीमिदानीं मृतिर्मे भवित्रीत्यहो सन्ततं चिन्त या पीडितोऽस्मि । कथं मे हि मा भून्मृतौ भीतिरेषा मनस्तेऽगतीनां गते नीलकण्ठ ॥ २९

अमर्यादमेवापमाबालवृद्धं हरन्तं कृतान्तं समीक्ष्यास्मि भीतः । मृतौ तावकांघ्रयब्जदिव्यप्रसादाद्भवानीपते निर्भयोऽहं भवानि ॥ ३०

जराजन्मगर्भादिवासादिदुःखान्यसह्यानि हन्या - ज्जगन्नाथ देव । भवन्तं विना मे गतिर्नैव शम्भो दयाळो न जागर्ति किं वा दया ते ॥ ३१

शिवायेति शब्दो नमः पूर्व एष स्मरन् मुक्तिकृन्मृत्युहा तत्ववाची । महे[1] शेत्थमारान्मनस्तापशस्त्रं सदामह्यमेतत्प्रदानं प्रयच्छ ॥ ३२

त्वमप्यम्ब मां पश्य शीतांशुमौळिप्रिये भेषजं त्वं भवव्याधिशान्तौ । बहुक्लेशभाजं पदाम्भोजनेत्रे भवाब्धौ निमग्नं नयस्वाद्य पारम् ॥ ३३

---

1 शानमागान्मनस्तोवचस्तः.

अनेन स्तवेनादरादम्बिकेशं परां भक्तिमासाद्य यं ये नमन्ति । मृतौ निर्भयास्ते जनास्तं भजन्ते हृदम्भोज-मध्ये सदासीनमीशम् ॥ ३४

महादेव शम्भो गिरीश त्रिशूलिन् त्वयेदं समस्तं बिभातीति यस्मात् । शिवादन्यथा दैवतं नाभिजाने शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहम् ॥ ३५

किरीटे निशेशो ललाटे हुताशो भुजे भोगिराजो गले कालिमा च । [1]अहो देवमन्यं महादेवसाम्यं नजाने नजाने नजाने नजाने ॥ ३६

भुजङ्गप्रियाकल्पशम्भो मयैवं भुजङ्गप्रयातेन वृत्तेन कृतम् । नरास्तोत्रमेतत्पठित्वोरुभक्त्या सुपुत्रायुरारोग्य-मैश्वर्यमेति ॥ ३७

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं श्रीशिवभुजङ्गप्रयातस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

---

1 तनौ कामिनी यस्य तत्तुल्यदेवं.

## ॥ श्रीशिवमीडेस्तवः ॥



वैलक्षण्यं धामसु यस्य त्रिषु सिद्धं भोज्याद्भोक्तु-
र्भोगवतएवं त्रिविधाच्च । यस्माच्छ्रुत्या नास्तिच कश्चि-
द्व्यतिरिक्त स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकं शिवमीडे ॥ १

एको ध्येयस्त्वात्मतयेति हि वेदान्ते योन्यत्सर्वं
श्रूयत एषच सन्त्यज्य । सर्वव्यापी भातिच भगवान्यो-
देव स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकं ... ... ॥ २

आकाशोयं स्याद्यदि दहरो नानन्दः कोह्येवान्या-
त्प्राणभृदत्र गतः प्राण्यात् । भूमानन्दः प्रत्यगभिन्न-
स्सकलात्मा तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकं ... ... ॥ ३

आदित्यान्तर्यामिणमीश्वरमात्मेच्छुर्गायत्र्यैवानन्य -
मिहान्वहमाराध्य । प्राप्नोत्याराद्विष्णुपदं तच्छिवसंज्ञं
तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकं ... ... ॥ ४

दुःखस्यान्त मभीप्सव एनं सद्रूपं ब्रह्माभिख्यं स्वात्म-

तया हृदि यं मत्वा । मुक्तिं यान्तीत्यत्र तु नान्योस्तिच पन्था स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकं ... ... ॥ ५

सत्यज्ञानानन्तरसोऽस्त्यपि चा स्थूलो ह्रस्वोऽजोयो-णुत्वविहीनो नच दीर्घः । अद्वैतात्मकपूर्णशिवोयो ब्रह्माख्यस्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकं ... ... ॥ ६

ध्यातृ ध्यानध्येयाभेदां यः परिहृत्य स्वस्थो भूत्वा केवलएकः परिशिष्टः । स्वानन्यत्वं पश्यति यज्ज्ञ स्सम-भक्तस्तं चिन्मात्रं ... ... ॥ ७

यस्यैवैकं पादममुं वै भुवनाख्यं त्यक्त्वा नानाकारत-यैव त्रिभिरन्यैः । ऐक्यं लब्ध्वा भातिच योगी क्रमशो-स्मिन् तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकं ... ... ॥ ८

सर्वात्मस्थं स्वात्मतया सम्प्रतिपन्न स्वस्थंवै सर्व-तयाच प्रतिपन्नः । पूर्णानन्दो भादृगनन्तः पुरुषस्यात्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ९

सर्वज्ञत्वं मायिकमीशे सन्त्यक्त्वा किञ्चिज्ज्ञत्वं तद्व-दमुष्मिन्नपि जीवे। चिन्मात्रैक्यं पश्यति योगी लक्षणया तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ १०

सर्वज्ञोपिस्वाधिकहीनो सकलज्ञः किंचिज्ज्ञोपि स्वयमिहहीनो किंचिज्ज्ञः । ज्ञानाज्ञानाभ्यामपि चान्यः परमात्मा तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ११

ओंकारार्थो हंसरहस्यः परिपूर्णः प्रत्यग्रूपो भातिच पञ्चाक्षरगम्यः । ईशस्सोस्मीत्येव समाध्या विदितस्स्यात्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ १२

शैवागम्यो वैष्णवगम्यश्शिवएकः सर्वैरन्यैर्वेदमतस्थैर्नचगम्यः । शैवाद्वैतध्यातृभिरेव तु सङ्गम्यस्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ १३

ज्योतिर्लिंगं स्वात्मनि दृष्ट्वा देहादीन् लोकान्हित्वा खण्डमनन्तं परिपश्यन् । जीवन्मुक्तोऽहंकृतिहीन शिवयोगी तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ..... ॥ १४

नित्यं शान्तं निर्गुणमार्यं निटलस्थं दीपाकारं सद्गुरुतोयं मुद्रिकया । दृष्ट्वा नित्याभ्यासवशाद्यः परिपूर्णस्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ १५

अक्षिण्येनं दक्षिणईशं शशितुल्यं यं व्योम्न्येकीकृत्य शिवे तं परमेच । सर्वात्मानस्संसृतिपाशद्विमुक्ता-स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ १६

दृश्यो देहो नायमहं सत्सुखमात्रं चिद्रूपोस्मीत्यैक्य-मुपेत्योपरि येन । संसारोत्थं शोकमनन्तं विजहाति तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ १७

आकाशादीन् भूतविकारानपलाप्य स्वाधिष्ठानं शेषितमस्मीत्यचिरेण । ज्ञात्वा युक्त्या मुञ्चति चान्या इह वाचस्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ १८

ज्ञाते यस्मिन् सर्वमिदं स्याद्विदितं स्यादज्ञातेऽस्मिन्नैव समस्तं विदितं स्यात् । नानुध्यायाद्यद्विदसत्सद्बहुशब्दां स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ १९

वाचं त्यक्त्वा सद्गुरुवक्त्राच्छ्रुतिवाक्याद्वक्तारं यं प्रत्यगभिन्नं परिपूर्णम् । लोकातीतं नैव विजानन् भवभाक्स्यात्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ॥ २०

योवै भूमा यस्सुखरूपः परमात्मा द्यावापृथ्वीचापि

यदन्तर्गुणहीनः । प्राण प्राणो देहइहाहं पदलक्ष्य स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ॥ ... ... ॥ २१

प्रागोङ्कारं षोडशधैव प्रविभज्य स्वस्वेनास्तान् भाग चतुष्कतुर्यैशां । सम्यक्पश्यंस्तत्रच तुर्यं पदमेवं तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ २२

यस्मिन्नोतं प्रोतमितीत्थं जगदेतत्तात्पर्येणैवोपनिषद्भिः प्रतिपादे । सोहं नान्यः कश्चन मत्तो विदुरेवं तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ २३

अव्यक्तादप्यस्ति परोयः पुरुषोन्ते यस्मिन्नेतत्कल्पित-मन्यैरश्रुतिहीनैः । ज्योतीरूपं भेदविहीनं परमार्थं तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ २४

तत्त्वं त्वं तत्सोहमहं सोऽस्म्यखिलात्मेत्यैक्यं विद्वा-नत्र विदित्वा विमलात्मा । स्वात्मारामो खण्डरसात्मा श्रुतिसिद्ध स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ २५

द्युभ्वादीनामायतनं यस्सकलानामात्मैतेषां प्राणभृता-मप्यखिलात्मा । जीवेभ्योऽन्योऽप्यत्र यदन्येनच जीवा-स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ २६

आनन्दो हि स्यात्प्रचुरोयं मयडन्तः पुच्छब्रह्मेत्याहु-
रसत्तच्छ्रुतिहानेः । नायं जीवः पञ्चमकोशोऽतीतत्वा-
त्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ २७

कौक्षेयाग्निर्नैव च वैश्वानरशब्दो भूताग्निर्वानापि
तदीयो न च देवः । शारीरो वा नासि तु विमलः कूटस्थ
स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ २८

जीवाजीवावत्र शरीरे वसतो द्वावेकोभुङ्क्ते कर्मफलं
यस्त्वितरोस्मात् । ईशोऽनश्नन् पाययतीतीतरवाक्ये तं
चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ॥ २९

छान्दोग्ये हि श्रूयत एवं तत्सत्यं तत्वं पुत्रायारुणि-
वाक्यं निरवद्यम् । तन्निष्ठस्यात्र तथा मुक्त्युपदेशात्तं
चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ३०

अव्यक्तस्येवेक्षति कर्मानुपपत्तेस्सांख्योक्तस्याशब्द -
तयापिच जाड्येन । न ज्ञेयत्वं यस्य तु नोक्तानुपपत्ति-
स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ३१

लीलारूपा लोकवदेषा खलु सृष्टिस्त्वीशस्यास्यां

नैव फलं परित्यस्य । कर्मापेक्षं ज्ञानिषु लोके विषमत्वं तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ३२

औदासीन्यं वास्तवमात्मनि संसिद्धं स्रष्टृत्वादि ईशक्ति-गधर्मोप्युपपन्नः । नाव्यक्तादेरित्युपदेशादि सकृद्वै तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ३३

जीवस्यैवोत्क्रान्तिरमुष्माद्गतिरेनं लोकं प्रत्युप्यागति-रन्यस्य तु भूम्नः । निश्चेष्टत्वान्नापिच बुद्धेर्जडताया स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ३४

संज्ञामूर्त्योः कृप्तिरधीशस्य हि कर्म त्रेधैकैकां कुर्वत एवं श्रुतिशब्दात् । यस्माज्जीवोऽनन्यइतीहाभ्युपगम्य स्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ३५

भूतैर्जीवोऽनन्तरदेह प्रतिपत्तौ रंहत्येवं कर्मफलाना-मुपभुक्त्यै । रेतस्सिग्योगोऽथ भविष्यत्यहयस्मात्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ३६

विद्याभेदो वेद्यभिदापि श्रुतिशीर्षैं नैवोच्येत प्राकृत-

दृष्टे स्सगुणास्यात् । अन्या शैवी निर्गुणरूपा यदधीना तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ३७

कार्योत्कर्षात्सर्वपदार्थे शिवदृष्टिस्तम्बान्तेऽस्मिश्छा-स्तिचशास्त्रं सदयं यम् । विन्नो वेदोत्कर्षमनन्योप्यपकर्षं तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ३८

भूमानन्द स्सैन्धवतुल्योस्त्यविनाशः कूटस्थात्माह्यक्षर-रूपो क्षरगम्यः । यस्य ब्रह्माक्षत्रमपि स्यादशनार्थं तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ३९

पुरुषस्यास्मिन्वागपि चित्ते चित्तं च प्राणे प्राणस्तेजसि तेजो विदुषोस्मिन् । यद्रूपं तद्देहवियोगे परिलीनं तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ॥ ४०

न्यूनाधिक्यं नोत्तरदक्षिणसंज्ञाभ्यामुत्क्रान्तस्या-प्यत्रविदेसादयनाभ्याम् । भित्वादित्यं गच्छति सिद्धं ब्रह्मस्थं तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ४१

उत्पत्यादि व्याहृतिवर्जं त्वणिमादि स्यादैश्वर्यं मुक्त-

भवानां विदुषां च । नावर्तन्ते लोकमिमं ते खलु
शब्दात्तं चिन्मात्रं साक्षिणमेकम् ... ... ॥ ४२

इति श्रीगुरुज्ञान वासिष्टे चतुर्थपादे षष्ठाध्याये ऋतुकृत शिवमीडेस्तवः ॥

---

## ॥ शुक्रमन्त्रः ॥

---

ओम् अस्य श्रीशुक्रमहामन्त्रस्य भरद्वाजऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । शुक्रोदेवता । मम शुक्रग्रहप्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । दानवपूजिताय अंगुष्ठाभ्यां नमः । दैत्याचार्याय तर्जनीभ्यां नमः । वरदाय मध्यमाभ्यांनमः । श्वेतवस्त्राय अनामिकाभ्यां नमः । शुक्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । कमण्डलुधराय करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सु-वरोमिति दिग्बन्धः ॥ ध्यानम्—जटिलं साक्षसूत्रंच वरदण्डकमण्डलुम् । श्वेतवस्त्रावृतं शुक्रं ध्यायेद्दानव-

पूजितम् ॥ लमित्यादि पञ्चपूजा मूलमन्त्रः—प्रवश्रुकाय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्नये सुपूजितम् । योदैव्यानि मानुषाजनुगँ ष्यन्तर्विशानि विश्वनाजिगाति । इति मन्त्रः ॥

---

## ॥ शुकाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

शुक्र श्रुचि श्रुभगुण श्रुभद श्रुभलक्षणः । शोभनाक्षश्रुभ्ररूपश्रुद्धस्फटिकभास्वरः ॥ दीनार्तिहारको दैत्यगुरुर्देवाभिनन्दितः । काव्यासक्तः कामपालः कविः कल्याणदायकः ॥ भद्रमूर्तिर्भद्रगुणो भार्गवो भक्तपालनः । भोगदोभुवनाध्यक्षो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः ॥ चारुशीलश्चारुरूप श्चारुचन्द्रनिभाननः । निधिर्निखिलशास्त्रज्ञो नीतिविद्याधुरन्धरः ॥ सर्वलक्षणसम्पन्न स्सर्वावगुणवर्जितः । समानाधिकनिर्मुक्तस्सकलागमपारगः ॥

भृगुर्भोगकरो भूमीसुरपालनतत्परः । मनस्वी मानदो मान्यो मायातीतो महाशयः ॥ बलिप्रसन्नोऽभयदो बली बलपराक्रमः । भवपाशपरित्यागो बलिबन्धविमोचकः ॥ घनाशयो घनाध्यक्षो कम्बुग्रीवः कळाधरः । कारुण्यरससम्पूर्णः कल्याणगुणवर्धनः ॥ श्वेताम्बरश्श्वेतवपुश्चतुर्भुजसमन्वितः । अक्षमालाधरोऽचिन्त्य अक्षीणगुणभासुरः ॥ नक्षत्रगणसञ्चारो नयदो नीतिमार्गदः । वर्षप्रदो हृषीकेशः क्लेशनाशकरः कविः ॥ चिन्तितार्थप्रदश्शान्तमतिश्चित्तसमाधिकृत् ॥ आधिव्याधिहरो भूरिविक्रमः पुण्यदायकः ॥ पुराणपुरुषः पूज्यः पुरुहूतादिसन्नुतः । अजेयोविजितारातिर्विविधाभरणोज्ज्वलः ॥ कुन्दपुष्पप्रतीकाशो मन्दहासोमहामतिः । मुक्ताफलसमानाभो मुक्तिदो मुनिसन्नुतः ॥ रत्नसिंहासनारूढो रथस्थोरजतप्रभः । सूर्यप्राग्देशसञ्चारस्सुरशत्रुः सुहृत्कविः ॥ तुलावृषभराशीशो दुर्धरो धर्मपालकः । भाग्यदो भव्यचारित्रो भवपाशविमोचकः । गौडदेशे

श्वरो गोप्ता गुणी गुणविभूषणः । ज्येष्ठानक्षत्रसम्भूतो ज्येष्ठः श्रेष्ठः शुचिस्मितः ॥ अपवर्गप्रदोऽनन्तस्सन्तान-फलदायकः । सर्वैश्वर्यप्रदस्सर्वगीर्वाणगणसंनुतः ॥

इति शुक्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

## ॥ श्रीशिवमानसपूजास्तोत्रम् ॥

रत्नैः कल्पित मासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् । जाजी-चम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथादीपं देव दया-निधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १

सौवर्णे मणिखण्डरत्नखचिते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं [1]स्वादुदम् । शाकनाम-युतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २

1 पानकम् ।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं वीणा भेरि मृदङ्ग काहळकला गीतंच नृत्यं तथा । साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा एतत्समस्तं मया सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ ३

आत्मा त्वं गिरिजा मति स्सहचराः प्राणाश्शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः । सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वागिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ ४

करचरणकृतं वा कर्म वाक्कायजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् । विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व शिवशिव करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ५

इति श्रीशिवमानसपूजास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



## ॥ शिवस्तुतिः ॥

गले कलितकालिम प्रकटितेन्दुफालस्थले विनाटित-
जटोत्करं रुचिरपाणि पाथोरुहे । उदञ्चित कपालजं
जघनसीम्नि सन्दर्शित द्विपाजिन मनुक्षणं किमपि धाम
वंदामहे ॥ १

वृषोपरि परिस्फुर द्धवळदामधाम श्रिया कुबेर गिरि
गौरिमप्रभवगर्वनिर्वासि तत् । क्वचित्पुनरुमाकुचोप-
चितकुंकुमै रञ्जितं गजाजिन विराजितं वृजिनभङ्ग-
बीजं भजे ॥ २

उदित्वरविलोचनत्रय विसृत्वर ज्योतिषा कला
करकलाकर व्यतिकरेण चाहर्निशम् । विकासित जटा-

टवी विहरणोत्सवप्रोल्लसत्तरामर तरङ्गिणीतरल चूड-
मीडे मृडम् ॥ ३

विहाय कमलालया विलसितानि विद्युन्नटी विडंबन-
पटूनि मे विहरणं विधत्तां मनः । कपर्दिनि कुमुद्वती-
रमणखण्डचूडामणौ कटीतटपटीभवत्करटि चर्मणि
ब्रह्मणि ॥ ४

भवद्भुवन देहली विकटतुण्ड दण्डाहति त्रुटन्मुकुट
कोटिभिर्मघवदादिभिर्भूयते । व्रजेम भवदन्तिकं
प्रकृतिमेत्य पैशाचकीं किमित्यमरसम्पदः प्रमथनाथ
नाथामहे ॥ ५

त्वदर्चन परायण प्रमथ कन्यकालुण्ठित प्रसून
सफलद्रुमं कमपि शैलमाश्रास्महे । अलं तटवितर्दिका-
शयितसिद्धसीमन्तिनी प्रकीर्ण सुमनो मनो रमण मे
रुणा मेरुणा ॥ ६

नजातु हर यातु मे विषयदुर्विलासं मनो मनोभव
कथास्तु मे नच मनोरथातिथ्यभूः । स्फुरत्सुरतरङ्गिणी

तटकुटीर कोटावसन्नये शिव दिवानिशं तव भवानि पूजापरः ॥ ७

विभूषण सुरापगा शुचितराल वालावळी वलद्वृहल सीकर प्रकरसेक संवर्धिता । महेश्वर सुरद्रुम स्फुरित सज्जटा मञ्जरी नमज्जन फलप्रदा ममनु हन्त भूयादियम् ॥ ८

बहिर्विषय सङ्गति प्रति निवर्तिताक्षावलेस्समाधि कलितात्मनः पशुपते रशेषात्मनः । शिरस्सुरसरित्तटी-कुटिलकल्प कल्पद्रुमं निशाकर कळामहं वटुविमृष्यमाणां भजे ॥ ९

त्वदीय सुरवाहिनी विमलवारिधारावलज्जटागहन गाहिनी मतिरियं मम क्रामतु । सुरोत्तम सरित्तटी विटपितावटी प्रोल्लसत्तपस्वि परिषत्तुला ममल मल्लिकाभ प्रभो ॥ १०

इति लङ्केश्वरविरचिता शिवस्तुतिः ॥

## ॥ उपमन्युकृतशिवस्तोत्रम् ॥



जय शङ्कर पार्वतीपते मृड शम्भो शशिखंडमंडन ।
मदनान्तक भक्तवत्सल प्रियकैलास दयासुधाम्बुधे ॥ १
सदुपायकथास्वपण्डितो हृदये दुःखशरेण खण्डितः ।
शशिखण्डशिखण्डमण्डनं शरणं यामि शरण्यमीश्वरम् ॥
महतः परितः प्रसर्पतस्तमसो दर्शनभेदिनो भिदे ।
दिननाथ इव स्वतेजसा हृदयव्योम्नि मनागुदेहि नः ॥
न वयं तव चर्मचक्षुषा पदवीमप्युपवीक्षितुं क्षमाः ।
कृपयाभयदेन चक्षुषा सकलेनेश विलोकयाशु नः ॥ ४
त्वदनुस्मृतिरेवपावनी स्तुतियुक्ता न हि वक्तुमीश सा ।
मधुरं हि पयस्स्वभावतो ननु कीदृक्सितशर्करान्वितम् ॥
सविषोप्यमृतायते भवां च्छवमुण्डाभरणोपि पावनः ।
भव एव भवान्तकस्सतां समदृष्टिर्विषमेक्षणोऽपिसन् ॥
अपिशूलधरो निरामयो दृढवैराग्यरतोऽपि रागवान् ।

अपिभैक्ष्यचरेमहेश्वरश्चरितं चित्रमिदं हिते प्रभो ॥ ७
वितरत्यभिवांछितं दृशा परिदृष्टः किल कल्पपादपः ।
हृदये स्मृतएव धीमते ननुतेऽभीष्टफलप्रदो भवान् ॥ ८
सहसैव भुजङ्ग पाशवा न्विनिगृह्णाति न यावदन्तकः ।
अभयं कुरु तावदाशु मे गतजीवस्य पुनः किमौषधैः ॥
सविषैरिव भीमपन्नगै र्विषयैरेभिरलं परिक्षतम् ।
अमृतैरिव सम्भ्रमेण मामभिषिंचाशुदयावलोकनैः ॥१०
मुनयो बहवोऽद्य धन्यतां गमितास्त्वाभिमतार्थदर्शिनः ।
करुणाकर येनतेन मामवसन्नं ननु पश्य चक्षुषा ॥११
प्रणमाम्यथ यामि चापरं शरणं कं कृपणाभयप्रदम् ।
विरहीव विभो प्रियामयं परिपश्यामि भवन्मयं जगत् ॥
बहवोभवतानुकम्पिताः किमितीशान नमानुकम्पसे ।
दधता किमु मन्दराचलं परमाणुः कमठेन दुर्धरः ॥
अघृणिं यदि मानुमन्यसे किमिदं मूर्ध्नि कपालदामते ।
उतशौच्यमसाधुसङ्गिनं विषलक्ष्मासिन किं द्विजिह्वधृक् ॥

क्व दृशं विदधामि किङ्करोम्यनुतिष्ठामि कथं भयाकुलः ।
क्वनुतिष्ठसि रक्ष रक्ष मामयि शम्भो शरणागतोस्मि ते ॥
विलुठाम्यवनौ किमाकुलः किमुरो हन्मि शिरश्छिनद्मि-
वा । किमुरोदिमि रारटीमि किं कृपणं मां नय दीक्षसे
प्रभो ॥ १६

शिव सर्वग शर्व शर्मद प्रणतो देवदयां कुरुष्व मे ।
नम ईश्वर नाथ दिक्पते पुनरेवेश नमोनमोस्तु ते ॥१७
शरणं तरुणेन्दुशेखरश्शरणं मे गिरिराजकन्यका ।
शरणं पुनरेव तावुभौ शरणं नान्यदुपैमि दैवतम् ॥१८
उपमन्युकृतं स्तवोत्तमं जपतश्शम्भुसमीपवर्तिनः ।
अभिवांछित भाग्य सम्पदः परमायुः प्रददाति शङ्करः॥
उपमन्युकृतं स्तवोत्तमं प्रजपेद्यस्तु शिवस्य सन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्य सोचिरात्सह तेनैव शिवेन मोदते ॥

इत्युपमन्युकृतशिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

## ॥ श्रीकृष्णकृतशिवस्तोत्रम् ॥

श्रीकृष्णः—

प्रणम्य देव्या गिरिशं सभक्त्या स्वात्मन्यथात्मान मसौ विचिन्त्य । नमोस्तुते शाश्वत सर्वयोने ब्रह्माधिपं त्वां मुनयो वदन्ति ॥ १

त्वमेव सत्त्वं च रजस्तमश्च त्वामेव सर्वं प्रवदन्ति सन्तः । तत्त स्त्वमेवासि जगद्विधायकस्त्वमेव सत्यं प्रवदन्ति वेदाः ॥ २

त्वं ब्रह्मा हरिरथ विश्वयोनिरग्निस्संहर्ता दिनकर मण्डलाधिवासः । प्रागस्त्वं हुतवह वासवादिभेदस्त्वा मेकं शरणमुपैमि देवमीशम् ॥ ३

सांख्यास्त्वामगुणमथाहुरेकरूपं योगास्त्वां सततमुपा सते हृदिस्थम् । देवास्त्वामभिदधतीह रुद्रमग्निं त्वामेकं शरणमुपैमि देवमीशम् ॥ ४

त्वत्पादे कुसुममथापि पत्रमेकं दत्वासौ भवति विमुक्त

विश्वबन्धः । सर्वार्घं प्रणुदति सिद्धयोगजुष्टं स्मृत्वा ते पद्युगळं भवत्प्रसादात् ॥ ५

यस्याशेषविभागहीनममलं हृद्यन्तरावस्थितं तत्त्वं ज्योति रनन्तमेकममरं सत्यं परं सर्वगम् । स्थानं प्राहु-रनादिमध्यनिधनं यस्मादिदं जायते नित्यं त्वामनुयामि सत्यविभवं विश्वेश्वरं तं शिवम् ॥ ६

ओं नमो नीलकण्ठाय त्रिणेत्राय च रंहसे ।
महादेवाय ते नित्यमीशानाय नमोनमः ॥ ७

नमः पिनाकिने तुभ्यं नमो दण्डाय मुण्डिने ।
नमस्ते वज्रहस्ताय दिग्वस्त्राय कपर्दिने ॥ ८

नमो भैरवनाथाय हराय च निषङ्गिणे ।
नागयज्ञोपवीताय नमस्ते वह्नितेजसे ॥ ९

नमोस्तु ते गिरीशाय स्वाहाकाराय ते नमः ।
नमो मुक्ताट्टहासाय भीमाय च नमोनमः ॥ १०

नमस्ते कामनाशाय नमः कालप्रमाथिने ।
नमो भैरवरूपाय कालरूपाय दंष्ट्रिणे ॥ ११

नमोस्तु ते त्र्यम्बकाय नमस्ते कृत्तिवाससे ।

नमोम्बिकाधिपतये पशूनां पतये नमः ॥ १२

नमस्ते व्योमरूपाय व्योमाधिपतये नमः ।
नरनारीशरीराय सांख्ययोगप्रवर्तिने ॥ १३

नमो दैवतनाथाय नमो दैवतलिङ्गिने ।
कुमारगुरवे तुभ्यं देवदेवाय ते नमः ॥ १४

नमो यज्ञाधिपतये नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
मृगव्याधाऽधिपतये ब्रह्माधिपतये नमः ॥ १५

नमो भवाय विश्वाय मोहनाय नमोनमः ।
योगिने योगगम्याय योगमायाय ते नमः ॥ १६

नमोनमो नमस्तुभ्यं भूयोभूयो नमोनमः ।
मह्यं सर्वात्मना कामान् प्रयच्छ परमेश्वर ॥ १७

एवं हि भक्त्या देवेशमभिष्टुत्य च माधवः ।
पपात पादयोर्विप्रा देवदेवस्य दण्डवत् ॥ १८

उत्थाप्य भगवान् सोमः कृष्णं केशिनिषूदनम् ।
बभाषे मधुरं वाक्यं मेघगम्भीरनिःस्वनम् ॥ १९

इति श्रीकूर्मपुराणे श्रीकृष्णकृतशिवस्तुतिः ॥

## ॥ वरुणकृत शिवस्तोत्रम् ॥

कल्याणशैलपरिकल्पितकार्मुकाय मौर्वीकृताखिल-महोरगनायकाय । पृथ्वीरथाय कमलापतिसायकाय हालास्यमध्यनिलयाय नमश्शिवाय ॥ १

भक्तार्तिभञ्जन पराय परात्पराय कालाभ्रकान्ति गर-ळाङ्कितकन्धराय । भूतेश्वराय भुवनत्रयकारणाय हालास्यमध्यनिलयाय नमश्शिवाय ॥ २

भूदारमूर्तिपरिमृग्यपदाम्बुजाय हंसाब्जसम्भव सुदूर सुमस्तकाय । ज्योतिर्मय स्फुरितदिव्यवपुर्धराय हालास्यमध्यनिलयाय नमश्शिवाय ॥ ३

कादम्बकाननननिवास कुतूहलाय कान्तार्धभाग कम-नीयकळेबराय । कालान्तकाय करुणामृतसागराय हालास्यमध्यनिलयाय नमश्शिवाय ॥ ४

विश्वेश्वराय विबुधेश्वरपूजिताय विद्याधिशिष्टविदि-

तात्मसुवैभवाय । विद्याप्रदाय विमलेन्द्रविमानगाय हालास्यमध्यनिलयाय नमश्शिवाय ॥ ५

सम्पत्प्रदाय सकलागममस्तकेषु सङ्घोषितात्म विभवाय नमश्शिवाय । सर्वात्मने सकलदुःखसमूलहन्त्रे हालास्यमध्यनिलयाय नमश्शिवाय ॥ ६

गङ्गाधराय गरुडध्वजवन्दिताय गण्डस्फुरद्भुजगमण्डलमण्डिताय । गन्धर्व किन्नर सुगीतगुणात्मकाय हालास्यमध्यनिलयाय नमश्शिवाय ॥ ७

पाणिं प्रगृह्य मलयध्वजभूपपुत्र्याः पाण्ड्येश्वरस्वयमभूत्परमेश्वरो यः । तस्मै जगत्प्रथितसुन्दरपाण्ड्यनाम्ने हालास्यमध्यनिलयाय नमश्शिवाय ॥ ८

गीर्वाणदेशिकगिरामपि दूरगं यद्वक्तुं महत्त्वमिह को भवतः प्रवीणः । शम्भो क्षमस्व भगवच्चरणारविन्दभक्त्या कृतां स्तुतिमिमां मम सुन्दरेश ॥ ९

इति श्रीहालास्यमाहात्म्ये वरुणकृतशिवस्तोत्रम् ॥

## ॥ हिमालयकृत शिवस्तोत्रम् ॥

त्वं ब्रह्मा सृष्टिकर्ता च त्वं विष्णुः परिपालकः ।
त्वं शिवश्शिवदोऽनन्तस्सर्वसंहारकारकः ॥ १

त्वमीश्वरो गुणातीतो ज्योतीरूपस्सनातनः ।
प्रकृतः प्रकृतीशश्च प्राकृतः प्रकृतेः परः ॥ २

नानारूपविधाता त्वं भक्तानां ध्यानहेतवे ।
येषु रूपेषु यत्प्रीतिस्तत्तद्रूपं बिभर्षि च ॥ ३

सूर्यस्त्वं सृष्टिजनक आधारस्सर्वतेजसाम् ।
सोमस्त्वं सस्यपाता च सततं शीतरश्मिना ॥ ४

वायुस्त्वं वरुणस्त्वं च त्वमग्निस्सर्वदाहकः ।
इन्द्रस्त्वं देवराजश्च काले मृत्यु र्यमस्तथा ॥ ५

मृत्युञ्जयो मृत्युमृत्युः कालकालो यमान्तकः ।
वेदस्त्वं वेदकर्ता च वेदवेदाङ्गपारगः ॥ ६

विदुषां जनकस्त्वं च विद्वांश्च विदुषां गुरुः ।
मन्त्रस्त्वं हि जपस्त्वं हि तपस्त्वं तत्फलप्रदः । ७

वाक्त्वं वागधिदेवस्त्वं तत्कर्ता तद्गुरुस्स्वयम् ।
अहो सरस्वतीबीजं कस्त्वां स्तोतुं महेश्वर ॥ ८
इत्येवमुक्त्वा शैलेन्द्रस्तस्थौ धृत्वा पदाम्बुजम् ।
तदोवाच तमाबोध्य चावरुह्य वृषाच्छिवः ॥ ९
स्तोत्रमेतन्महापुण्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो भयेभ्यश्च भवार्णवे ॥ १०
अपुत्रो लभते पुत्रं मासमेकं पठेद्यदि ।
भार्याहीनो लभेद्भार्यां सुशीलां सुमनोहराम् ॥ ११
चिरकालगतं वस्तु लभते सहसा ध्रुवम् ।
राज्यभ्रष्टो लभेद्राज्यं शङ्करस्य प्रसादतः ॥ १२
कारागारे श्मशाने च शत्रुग्रस्तेतिसङ्कटे ।
गभीरेतिजलाकीर्णे भग्नपोते विषादने ॥ १३
रणमध्ये महाभीतौ हिंस्रजन्तुसमन्विते ।
सर्वतो मुच्यते स्तुत्वा शङ्करस्य प्रसादतः ॥ १४

इति श्रीब्रह्मवैवर्ते महापुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डे
हिमालयकृतं शिवस्तोत्रम् ॥

## ॥ कल्किकृत शिवस्तोत्रम् ॥

गौरीनाथं विश्वनाथं शरण्यं भूतावासं वासुकी कण्ठभूषम् । त्र्यक्षं पञ्चास्यादिदेवं पुराणं वन्दे सान्द्रानन्दसन्दोहदक्षम् ॥ १

योगाधीशं कामनाशं कराळं गङ्गासङ्गक्लिन्नमूर्धानमीशम् । जटाजूटाटोपरि क्षिप्तभावं महाकालं चन्द्रफालं नमामि ॥ २

श्मशानस्थं भूतवेताळसङ्गं नानाशस्त्रैः खड्गशूलादिभिश्च । व्याघ्रात्युग्रा बाहवो लोकनाशे यस्य क्रोधोद्भूतलोकेऽस्तमेति ॥ ३

यो भूतादिः पञ्चभूतैस्सिसृक्षुस्तन्मात्रात्मा कालकर्मस्वभावैः । प्रहृत्येदं प्राप्य जीवत्वमीशो ब्रह्मानन्दे रमते तं नमामि ॥ ४

स्थितौ विष्णुस्सर्वजिष्णु स्सुरात्मा लोकान्साधून्

धर्मसेतून् बिभ(र्ति) र्षि । ब्रह्माद्यंशे योभिमानी गुणात्मा शब्दाद्यङ्गैस्तं परेशं नमामि ॥ ५

यस्याज्ञया वायवो वाति लोके ज्वलत्यग्नि स्सविता-पाति [1]नाके । शीतांशुः खे तारका संग्रहश्च प्रवर्तन्ते तं परेशं प्रपद्ये ॥ ६

यस्य श्वासात्सर्वधात्री धरीत्री देवो वर्षत्यम्बुकालः प्रमाता । मे(रु) रोर्मध्ये भुवनानां च भर्ता तमीशानं विश्वरूपं नमामि ॥ ७

इति श्रीकल्किपुराणे कल्किकृत शिवस्तोत्रम् ॥

---

1 तप्यन्।

## ॥ असितकृत शिवस्तोत्रम् ॥

असित उवाचः—

जगद्गुरो नमस्तुभ्यं शिवाय शिवदाय च ।
योगीन्द्राणां च योगीन्द्र गुरूणां गुरवे नमः ॥ १

मृत्योर्मृत्युस्वरूपेण मृत्युसंसारखण्डन ।
मृत्योरीश मृत्युबीज मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ॥ २

कालरूपः कलयतां कालकालेश कारण ।
कालादतीत कालस्थ कालकाल नमोस्तु ते ॥ ३

गुणातीत गुणाधार गुणबीज गुणात्मक ।
गुणीश गुणिनां बीज गुणिनां गुरवे नमः ॥ ४

ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मज्ञ ब्रह्मभावनतत्पर ।
ब्रह्मबीजस्वरूपेण ब्रह्मबीज नमोस्तु ते ॥ ५

इति स्तुत्वा शिवं नत्वा पुनस्तस्थौ मुनीश्वरः ।
दीनवत्सोऽश्रुनेत्रश्च पुलकाञ्चितविग्रहः ॥ ६

असितेन कृतं स्तोत्रं भक्तियुक्तश्च यः पठेत् ।
वर्षमेकं हविष्याशी शङ्करस्य महात्मनः ॥ ७
स लभेद्वैष्णवं पुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम् ।
भवेद्धनाढ्योऽदुःखी च मूको भवति पण्डितः ॥ ८
अभार्यो लभते भार्यां सुशीलां च पतिव्रताम् ।
इह लोके सुखं भुक्त्वा यात्यन्ते शिवसन्निधिम् ॥ ९
इदं स्तोत्रं पुरा दत्तं ब्रह्मणा च प्रचेतसे ।
प्रचेतसा स्वपुत्रायासिताय दत्तमुत्तमम् ॥ १०

इति श्रीब्रह्मवैवर्ते महापुराणे असितकृतं शिवस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ देवकृतशिवस्तोत्रम् ॥



देवा ऊचुः—

नमो देवादिदेवाय त्रिणेत्राय महात्मने ।
रक्तपिङ्गळनेत्राय जटामकुटधारिणे ॥ १

भूतवेताळजुष्टाय महाभोगोपवीतिने ।
भीमाट्टहासवक्त्राय कपर्दिस्थाणवे नमः ॥ २

पूषदन्तविनाशाय भगनेत्रहने नमः ।
भविष्यद्वृषचिह्नाय महाभूतपते नमः ॥ ३

भविष्यत्त्रिपुरान्ताय तथान्धकविनाशिने ।
कैलासवरवासाय करिकृत्तिनिवासिने ॥ ४

विकराळोर्ध्वकेशाय भैरवाय नमोनमः ।
अग्निज्वालाकराळाय शशिमौळिकृते नमः ॥ ५

भविष्यत् कृतकापालिव्रताय परमेष्ठिने ।
तथा दारुवनध्वंसकारिणे तिग्मशूलिने ॥ ६

कृतकङ्कणभोगीन्द्र नीलकण्ठ त्रिशूलिने ।
प्रचण्डदण्डहस्ताय वडवाग्निमुखाय च ॥ ७

वेदान्तवेद्याय नमो यज्ञमूर्ते नमोनमः ।
दक्षयज्ञविनाशाय जगद्भयकरायच ॥ ८

विश्वेश्वराय देवाय शिव शम्भो भवाय च ।

कपर्दिने कराळाय महादेवाय ते नमः ॥ ९
एवं देवैस्तुतश्शम्भु रुग्रधन्वा सनातनः ।
उवाच देवदेवोयं यत्करोमि तदुच्यते ॥ १०

इति श्रीवराहपुराणे देवकृत शिवस्तोत्रम् ॥

## ॥ रतिदेवीकृत शिवस्तोत्रम् ॥

नमश्शिवायास्तु निरामयाय नमश्शिवायास्तु मनोमयाय । नमश्शिवायास्तु सुरार्चिताय तुभ्यं सदा भक्तकृपावराय ॥ १

नमो भवायास्तु भवोद्भवाय नमोस्तु ते ध्वस्तमनोभवाय । नमोस्तु ते गूढमहाव्रताय नमस्स्वमायागहनाश्रयाय ॥ २

नमोस्तु शर्वाय नमश्शिवाय नमोस्तु सिद्धाय पुरान्तकाय । नमोस्तु कालाय नमः कलाय नमोस्तु ते ज्ञानवरप्रदाय ॥ ३

नमोस्तु ते कालकलातिगाय नमो निसर्गामलभूषणाय । नमस्त्वमेयान्धकमर्दनाय नमश्शरण्याय नमोगुणाय ॥ ४

नमोस्तु ते भीम गुणानुगाय नमोस्तु नानाभुवनादिकर्त्रे । नमोस्तु नानाजगतां विधात्रे नमोस्तु ते चित्रफलप्रयोक्त्रे ॥ ५

सर्वावसाने ह्यविनाशनेत्रे नमोस्तु चित्राध्वरभागभोक्त्रे । नमोस्तु कर्त्राप्रभवस्य धात्रे नमस्सधात्रे भवसङ्गहर्त्रे ॥ ६

अनन्तरूपाय सदैव तुभ्यमसह्यकोपाय नमोस्तु तुभ्यम् । शशाङ्कचिह्नाय नमोस्तु तुभ्यममेयमानाय नमोस्तु तुभ्यम् ॥ ७

वृषेन्द्रयानाय पुरान्तकाय नमः प्रसिद्धाय महौषधाय । नमोस्तु भक्ताभिमतप्रदाय नमोस्तु सर्वार्तिहराय तुभ्यम् ॥ ८

चराचराचारविचारवर्यमाचार्यमुत्प्रेक्षितभूतसर्गम् ।

त्वामिन्दुमौलिं शरणं प्रपन्ना प्रियाप्रमेयं महतां महेशम् ॥ ९

प्रयच्छ मे कामयशस्समृद्धिं पुनः प्रभो जीवतु कामदेवः । वैधव्यहर्त्रे भगवन्नमस्ते प्रियं विना त्वां प्रियजीवितेषु ॥ १०

त्वत्तो परः को भुवनेष्विहास्ति प्रभुः प्रियायाः प्रभवः प्रियाणाम् । त्वमेव चैको भुवनस्य नाथो दयालुरुन्मीलितभक्तभीतिः ॥ ११

इति श्रीमत्स्यपुराणे रतिदेवीकृत शिवस्तोत्रम् ॥

## ॥ विष्णुकृतशिवस्तोत्रम् ॥

महेशानन्ताद्य त्रिगुणरहितामेय विमल-
स्वराकारापारामितगुणगणाकारविवृते ।
निराधाराधाराम्बरवरनिराकारपरम
प्रभापूराकारापरवरनमोवेदशिव ते ॥ १

नमो वेदावेद्याखिलजगदुपादानमयत-
स्स्वतन्त्रासामन्तानवधृतनिजाकारविरचिते ।
निवर्तन्ते वाचाश्शिवमजरमप्राप्य मनसा
यतोऽशक्तास्तोतुं सकृदपि गुणातीत शिव ते ॥ २

त्वदन्यद्वस्त्वेकं न हि भुवि समस्तं न भवतो
विहीनं विश्वात्मन्न च परमस्तीश भवतः ।
ध्रुवं मायातीतस्त्वमसि सततं नात्र विशयो
न ते कृत्यं किंचित्कचिदपि नमोवार्य शिव ते ॥ ३

त्वयैवेमं लोकं निखिलममलं व्याप्य सततं
तथैवान्यं लोकं स्थितमनघ देवोत्तम विभो ।
त्वयैवैतत्सृष्टं जगदखिलमीशान भगव-
न्विलासोयं कश्चित्तव शिव नमोऽमोघ शिव ते ॥४

जगत्सृष्टं पूर्वं यदशिव उमाकान्त सततं
त्वया लीलामात्रात्तदपि सकलं रक्षितमभूत् ।
तदेवाग्रे फालप्रकटनयनाग्न्यद्भुतकणै-
र्जगद्दग्धा स्थास्यस्यज हर नमो वर्ष्यशिवते ॥ ५

विभूतीनामन्तो भव न भवतो भूतिविलस-
न्निजाकार श्रीमन्न तव गुणसीमाप्यपगता ।
असद्यावृत्त्या च त्वयि सकलवेदाश्च चकिता
भवन्त्येवासाभप्रकृतिक नमोवर्ष्यशिव ते ॥ ६

विराड्रूपं यत्ते सकलनिगमागोचरमभू-
त्तदेवेदं रूपं भवति किमिदं भिन्नमथवा ।
न जाने देवेश त्रिगयन सुराराध्यचरण
त्वमोङ्कारो वेदस्त्वमसि हि नमोघोर शिव ते ॥ ७

यदन्तस्तत्त्वज्ञा मुनिवरगणा रूपमनघं
तवैवं सञ्चिन्त्य स्वमनसि सदा सङ्गविरताः ।
ययुर्दिव्यानन्दं तदिदमथवा किन्नु न तथा
किमेतज्जानेहं शरणद नमश्शर्व शिव ते ॥ ८

यया शक्त्या सृष्ट्वा जगदथच संरक्ष्य बहुधा
ततस्संहृत्यैतन्निवससि तदाधारमथवा ।
इदं ते किं रूपं निरुपम न जाने हर विभो
निसर्गः को वा ते तमपि हि नमो भव्य शिव ते ॥

तवानन्तान्याहु श्रुचिपरमरूपाणि निगमा-
स्तदन्तर्भूतं सत्सदसदनिरुक्तं त्विदमपि ।
निरुक्तं छन्दोभिर्निलयनमिदं चानिलयनं
न विज्ञातं ज्ञातं सकृदपि नमोज्येष्ठ शिव ते ॥ १०

तवाभूत्सत्यं चानृतमपिच सत्यं ऋतमभू-
दृतं सत्यं सत्यं ऋतमुभयथा रूपमकलम् ।
यतस्सत्यं सत्यं सममपि समस्तं तव विभो
ऋतं सत्यं सत्यं ऋतमपि नमो रुद्र शिव ते ॥११

तवामेयामेयं यदपि तव मेयं विरचितं
नवामेयं मेयं रचितमपि मेयं विरचितम् ।
न मेयं मेयं चेन्नखलु परमेयं परमयं
न मेयं नामेयं परमपि नमोदेव शिव ते ॥ १२

तवाहारं हारं विदितमपि हारं विहरसे
नवा भारं हारी हरसि हर हारं न हरसि ।
नवाहारं हारं परतरविहारं परतरं
परं पारं जाने नहि खलु नमो विश्व शिव ते ॥१३

यदेतत्तत्त्वं ते सकलमपि तत्त्वे सुविदितं
न ते तत्त्वं तत्त्वं विदितमपि तत्त्वेन विदितम् ।
न चैतत्तत्त्वं चे न्नियतमपि तत्त्वं किमु भवे-
न्नते तत्त्वं तत्त्वं यदपिच नमो वेष्टय शिव ते ॥

इदं रूपं रूपं सदसदमलं रूपमिति चे-
न्नजाने रूपं तत्परममविभिन्नं परतरम् ।
यतो नान्यद्रूपं निरतमपि वेदैर्निगदितं
न जाने सर्वात्मन्कचिदपि नमोनन्त शिव ते ॥

महद्भूतं भूतं यदपिच न भूतं तव विभो
सदाभूतं भूतं किमु न भवतो भूतविषयैः ।
यदाभूतं भूतं न भवति च भूतं च भवितुः
प्रभाभूतं भूतं भवति हि नमोधिष्ण्य शिव ते ॥

वशीभूता भूतास्सततमपि भूतात्मकतया
न ते भूताभूतास्तव यदपि भूता विभुतया
यतो भूताभूता स्तव तु नहि भूतात्मकतया
नवाभूताभूताः कचिदपि नमो भूत शिव ते ॥ १७

न ते मायामाया सततमपि मायामयतया
ध्रुवं मायामाया त्वयि पर नमायामयमयी ।
यदा मायामाया त्वयि नखलु या साधिकतया
नमाया मायावी परमियमतस्ते शिव नमः ॥ १८

यदन्तस्संवेद्यं विदितमपि वेदैर्न विदितं
नवेद्यं वेद्यं चे न्नियतमपि वेद्यं न विदितम् ।
तदेवेदं वेद्यं विदितमपि वेदान्तनिकरैः
करावेद्यं वेद्यं जितमिति नमोतर्क्य शिव ते ॥ १९

शिवं शैवं भावं शिवमपि शिवाकारमशिवं
न सत्यं शैवं तच्छिवमपि शिवं शैवमनिशम् ।
शिवं शान्तं मत्वा शिवपरमतत्त्वं शिवमयं
न जाने तत्तत्त्वं शिवमिति नमो वेद्य शिव ते ॥

यदज्ञात्वा तत्त्वं सकलमपि संसारपतितं
जगज्जन्मावृत्तिं वहति सततं हीननिलयाम् ।
यदेतत् ज्ञात्वैवावहति च निवृत्तिं परतरां
न जाने तत्तत्त्वं परमिति नमो रेम्य शिव ते ॥

तदेवं यद्रूपं निगमविषयं मङ्गळकरं
न सृष्टिं केनापि ध्रुवमिति विजाने शिव विभो ।
ततश्चित्ते शम्भो नहि मम विषादोऽद्य विकृतिः
प्रयत्नालभ्येस्मिन्न किमपि नमः पूर्णशिव ते ॥ २२

तवाकण्ठं गूढं यदि परमचक्षुश्श्रुतिपरं
तदेवासीदं सन्नयनपदवीं नात्र तनुते ।
कदाचित्किञ्चिद्वा स्फुरति कृपया चेतसि तव
स्फुरद्रूपं भव्यं भवहर नमो वाद्य शिव ते ॥ २३

त्वमिन्दुर्भानुस्त्वं हुतभुगसि वायुश्च सलिलं
त्वमेवाकाशोसि क्षितिरसि तथात्मासि भगवन् ।
ततस्सर्वाकारस्त्वमपि भवतो भिन्नमणु वा
न तत्सत्यं सत्यं त्रिणयन नमोऽनन्त शिव ते ॥२४

विषं धत्से नित्यं किरसि मृदु कण्ठेपि गरळं
नवं नागाहारं सहितममलं भासुरतनौ ।
करे शूलं फाले ज्वलनमनिशं तत्किमिति ते
न तत्त्वं जानेहं भवहर नमः कृप्य शिव ते ॥२५

तवापाङ्गस्पन्दो यदि भवति भव्यश्शुभकरः
कदाचित्कस्मिं श्चिल्लघुतरवरेपि प्रभवति ।
स एवैतल्लोकान् विरचयितुमल्पोपि स महान्
कृपाधारो धत्ते सुरवर नमोऽनन्त शिव ते ॥ २६
भवन्तं देवेशं शिवमितरगीर्वाणसदृशं
प्रमादाद्यः कश्चि द्यदि वदति चित्तेपि मनुते ।
स दुःखं लब्ध्वान्ते नरकमपि याति ध्रुवमिदं
ध्रुवं देवाराध्यामितगुण नमोऽनन्त शिव ते ॥ २७
प्रदोषे रत्नाढ्ये मृदुलतरसिंहासनवरे
भवानीमारूढामसकृदपि संवीक्ष्य भवता ।
अतस्सम्यङ्नाट्यं प्रथितमपि वेदोपि वदति
प्रभावः को वाच्यं तव हर नमो द्वीप्य शिव ते ॥
श्शशाने सञ्चारस्तव किल न ते कापि गमन
यतो विश्वं व्याप्याखिलमपि सदा तिष्ठति भवान् ।
विभुर्नित्यं शुद्धं शिवमयमतो व्यापकमिति
श्रुतिस्साक्षाद्वक्ति स्वयमपि नम स्सूद्य शिव ते ॥

धनुर्मेरुश्शेषो धनुवरगुणो यानमवनि-
स्तवेनेन्दू चक्रे निगमनिकरा वाजिनिकराः ।
पुरो लक्ष्यं यन्ता विधिरिषुरहं चेति निगमः
किमेवं त्वय्येषो निगदति नमः पण्ये शिव ते ॥३०

मृडं सत्त्वोपेतं भवमनमयुक्तं च रजसा
तमोयुक्तं शुद्धं हरमपि शिवं निष्कळमिति ।
वदत्येषो वेदस्त्वमसि तदुपास्यं ध्रुवमिदं
त्वमोङ्काराकारो ध्रुवमिति नमोनन्त शिव ते ॥ ३१

जगत्सूक्तिं बोधं व्रजति भवतो निर्गतमपि
प्रवृत्तिव्यापारं पुनरपि सुषुप्तिं च सकलम् ।
त्वदन्यं त्वत्प्रेर्यं व्रजति शरणं नेति निगमो
वदत्यद्धा सर्वं शिव इति नमः स्तुत्य शिव ते ॥

त्वमेको लोकानामधिपतिरुमानाथ जगतां
शरण्यः प्राप्यस्त्वं जलनिधिरिवानन्तपयसाम् ।
त्वदन्यो निर्वाणं न वितरति निर्वाणपतिर-
प्यतस्सर्वोत्कृष्ट स्त्वमसि हि नमो नीप्य शिवते ॥

तवैवांशो भानु स्तपति विधुरप्येति पवनः
पवत्येषो वह्नि र्ज्वलति सलिलं च प्रवहति ।
तवाज्ञाकारित्वं सकलसुरवर्गस्य सततं
त्वमेकस्स्वातन्त्र्यं वहसि हि नमोऽनन्त शिव ते ॥
स्वतन्त्रोयं सोमस्सकलभुवनैकप्रभुरयं
नियन्ता देवानामयमिह नियन्तास्य न परः ।
शिवश्शुद्धो मायारहित इति देवो विवदति
स्वयं त्वामाशास्यं भयहर नमो रथ्य शिव ते ॥
नमो रुद्रानन्ता मखहर नमश्शङ्कर विभो
नमो गौरीनाथ त्रिणयन शरण्याङ्घ्रिकलन ।
नमश्शर्व श्रीमन्नघ महदैश्वर्यनिलय
स्मरारे पापारे जय जय नमस्सेव्य शिव ते ॥ ३६
महादेवामेयानघगुणगणग्राम सततं
नमो भूयोभूयः पुनरपि नमस्ते पुनरपि ।
पुरारते शम्भो पुनरपि नमस्ते शिव विभो
नमो भयोभय शिवशिव नमोऽनन्त शिव ते ॥

कदाचिद्वर्ण्यन्ते निविडनिपतद्वृष्टिकणिकाः
कदाचिन्नक्षत्राण्यपि सिकतलेशाः कुशलिना ।
अनन्तैरेकल्पं शिव तव गुणाश्चारुलपनै-
र्नशक्यन्ते नूनं गणयितुमुचित्वापि सततम् ॥ ३८
मया विज्ञावेशानिशमपि कृता ये तु मनसा
सकामेनामेयास्सततमपराधा बहुविधाः ।
त्वयैव क्षन्तव्याः क्वचिदपि शरीरेण वचसा
कृता नैते नूनं शिवशिव कृपासागर विभो ॥ ३९
प्रमादाद्ये केचिद्विततमपराधा विधिहताः
कृतास्सर्वे तेपि प्रशममुपयातु स्फुटतरम् ।
शिव श्रीमन् शम्भो शिवशिव महेशेतिच जपन्
क्वचिद्विज्ञाकारे शिव हर वसामि स्थिरतरम् ॥ ४०
इति स्तुत्वा शिवं विष्णुः प्रणम्य च मुहुर्मुहुः ।
निर्विण्णो न्यवसत्तत्र कृताञ्जलिपुटश्चिरम् ॥ ४१
सदाशिवश्शिवं रूपमादायोवाच सर्वगः ।
भीषयन्निखिलान् भूतान् घनगम्भीरया गिरा ॥४२

मदीयं रूपममलं कथं ज्ञेयं भवादृशैः ।
यन्न वेदैरपि ज्ञातमित्युक्त्वान्तर्दधे शिवः ॥ ४३

ततः परं विधिस्तत्र तपस्तप्तुं समारभे ।
विष्णुश्च शिवतत्त्वस्य ज्ञानार्थमतियत्नतः ॥ ४४

इति श्री शिवरहस्ये सप्तमांशे शिवगौरीसंवादे काशीमाहात्म्ये पशुपतीश्वरेतिहासकथनं नाम दशमोध्यायः ॥

---

## ॥ मल्हणकृतशिवस्तोत्रम् ॥



कान्ताकचप्रचय पुष्पसुगन्धि गन्धलुब्ध भ्रमद्भ्रमर कर्बुर कन्धराय । गन्धर्व यक्ष सुरसिद्धकिरीट कोटि-सङ्घट्टघृष्टचरणाय नमश्शिवाय ॥ १

न ब्रह्म विष्णुवचसामपि गोचरस्त्वमस्मद्विधस्य किमहो तदवैमि सर्वं । भक्तिस्तथापि शिव मां मुखरी-करोति युष्मत्स्तुतौ कथय किं करवाणि देव ॥ २

ये त्वां मरीचिचयचामर चारुचन्द्र चूडामणे स्तुतिवचोभिरिहार्चयन्ति । मायाप्रपञ्च रचना निचयं विलङ्घ्य गच्छन्ति ते शिवपुरं रुचिरैर्विमानैः ॥ ३

उर्वी समीर यजमान जलानलार्क सोमाम्बरादिभिरहो भवतस्तनूभिः । व्याप्तं समस्तभुवनं समवेक्ष्य विद्वान्कुर्यान्नथोऽत्र भगवंस्त्वयि पक्षपातम् ॥ ४

ब्रह्मेन्द्रविष्णुसुरदानवलोकपालैरन्यैश्च देव मुनिभिः परिपूजितं त्वां । दृष्ट्वापि यस्तु पुनरिच्छति देवमन्यं संसारिणो नरकहेतुरयं विमोहः ॥ ५

त्वं पासि हंसि विदधासि तिरस्करोषि मुक्तिं परां नयसि नित्यमशेषलोकान् । त्वं सर्वदोसि शिव सर्व करस्त्वमेव मत्वा विकल्पमिति जन्तुरलेपकस्स्यात् ॥ ६

शाठ्ये नयेपि भगवन्तमनन्तशक्तिं शम्भो भवन्त ममवं भविनो नमन्ति । तेऽप्यन्धकारमतिघोर कृतान्तदन्त यन्त्रान्तरालगहनं न पुनर्विशन्ति ॥ ७

कस्यापरस्य मकराहत घोरनक्रचक्र क्रमक्रमणलोल-जला च गङ्गा । हुंहेन्दु कोटिकरकोदकभार भाजि बभ्राम बभ्रुणि जटापटले विमूढा ॥ ८

भेरीमृदङ्गसुरदुन्दुभि शङ्खनादैर्देवाङ्गनाकलकला कुल दिङ्मुखेषु । क्रीडन्ति दिव्यभवनेषु सहाप्सरोभिर्भक्त्या कृतं तव पुरोमुखवादनं यैः ॥ ९

प्रोत्तुङ्ग पीवर घनस्तनभारनम्र विद्याधरी भुजलता युगपाशबद्धाः । ते पर्यटन्ति भगवन् गगने विमानैर्यै-रर्चितो हरनरैरुमया युतस्त्वम् ॥ १०

शम्भोप्रसिद्ध विबुधादिप्रसिद्ध साध्य विद्याधरा हरिपितामहलोकपालाः । अन्येपि साधुविधिना सुखिनो भवन्तमाराध्य जग्मुरमराः परमामरत्वम् ॥ ११

गौरीप्रदानसमये कथिते चलेन गोत्रं तवेश किमिति क्षणजातचित्तं । धन्यैः पितामह पुरन्दर लोकपालैर्दृष्टं निरन्तरमुखं हसतोऽभवद्धि ॥ १२

झङ्कार बम्भरविराजि जराकुलेषु कैलासमेरुगिरि कन्दरनिर्झरेषु । ते प्राप्नुवन्ति सुरसिद्धवधूरतानि ये नीलकण्ठ तव पादयुगं नमन्ति ॥ १३

अन्येऽरविन्द मकरन्द हृताळिबृन्द मन्दार कुन्ददळ-दामभिरिन्दुमौळे । पूजां विधाय भवतो विलसन्ति देवदेवेन्द्र मन्दिरवरैस्सह सुन्दरीभिः ॥ १४

गर्जत्प्रचण्ड घनघर्घर मेघसङ्घसङ्घट्ट घोषघनघोर-रवेण कोऽन्यः । श्वेतं नयन्तमतिघोरकराळकालं भस्मावशेषमकरोद्धरहुंकृतेन ॥ १५

ये जीवनाय शिवभस्मजटास्थिमाला मायाविनो दधति तेऽपि भवन्ति शम्भो । कर्णाट लाटभटहेमकिरीट कोटि सङ्घट्ट घृष्टचरणा भुवि भूमिपालाः ॥ १६

क्रीडाप्रपञ्चनिरतादिशशवो भवन्तमाराधयन्ति भुवि पुष्पजलैस्तृणाद्यैः । देवादिदेव दिवि दिव्यविमान-गानां तेऽपि प्रियत्वमुपयान्ति सुराङ्गनानाम् ॥ १७

पातालळोक फणिदानवकामिनीभिरालिङ्गिता मकर-

केतुशरातुराभिः । ते शेरते ध्वज पटाकुल मन्दिरेषु येषां त्वमेव शिव पुण्यवतां प्रसन्नः ॥ १८

स्वर्गे विचित्रसुरपादपमञ्जरीभिर्मन्दाकिनी कनक-पङ्कजयोजिताभिः । इन्द्राप्सरोभि रमरैरसुरैरुपेतः पूजां विधाय भवतः प्रणतो महेश ॥ १९

ध्यायन्ति योगनिरता मुनयो भवन्तमाराधयन्ति विविधेषु वनेषु देवाः । सिद्धास्समस्तकुलशैलमहो-दरेषु विद्याधरा मलयमम्बर कन्दरेषु ॥ २०

हे देव हेमपुररम्यरसातलेषु नागाङ्गनाभिरसुरेन्द्र-नितम्बिनीभिः । नित्यं नितम्बभरमन्दरगामिनीभि-राराध्यसे च हरमन्मथ विह्वलाभिः ॥ २१

दिव्यौषधीरसरसायन धातुवादा योगा वशीकरण गारुड खन्यवादाः । पातालखड्ग वुटिकाञ्जन मन्त्रवादा-स्सिध्यन्ति तस्य शिव यस्य भवान् प्रसन्नः ॥ २२

ज्ञानं त्रिकालविषयं गगने चरत्वमैश्वर्यमष्टगुणितं श्रवणं च दूरात् । उत्क्रान्ति मुक्ति परकाय पुरप्रवेशा-

शम्भो भवन्ति भविनां भवतःप्रसादात् ॥ २३

त्वां दीप्यमानमकुटोत्कट चारुहार केयूरकुण्डलधरा गिरिगह्वरेषु । गन्धर्वलोकललनालालितैर्वचोभिरुच्चैः-कृताञ्जलिपुटा भगवन् स्तुवन्ति ॥ २४

उक्तं शिवेति शिव येन दिवा च रात्रावुत्कण्ठया हरहरेति वृथापि येन । सत्यं ब्रवीमि सुरनाथ सपक्षपाता-न्मूढोऽपि घोरनरकात्स बिभेति कस्मात् ॥ २५

चर्यावबोधरहित शिवभक्तिमात्रान्नीतस्त्वया शिव पुरं यदहो किरातः । यात स्मरन् कपटकापुरुषामरत्वं यद्देव मुक्तिरसमा भवतः प्रसादात् ॥ २६

तस्यैकदन्नमतिभीकरमप्रमेयं मूढेन शङ्कर मया यद-कारि पापं । सत्यं पशुष्विति मदंश ममाशु छिन्दि-च्छिन्दि प्रसह्य भवसम्भव पाशजालम् ॥ २७

त्वत्पादपूजनरता मुनयो वनेषु तिष्ठन्ति मूलफल कन्दजलाशिनो ये । ते यान्ति मुक्तिपद मीश्वर तावदास्तां धन्यास्तु ते तव मुखान्यवलोकयन्ति ॥ २८

स्फीतप्रथिम्नि जघने घनपाटलिम्नि बिम्बाधरे कुच-युगे द्युतिपिञ्जरिम्णि । स्त्रीणां महेश विलसन्ति कुतो नरास्ते यैर्नार्चितोऽसि न समोऽसि न संस्तुतोऽसि ॥२९

प्रोद्दामकाममदिरा मदलोलनेत्रा रत्नावळीझणझणा-रवरम्यगात्राः । ते यक्षलोकवनिता स्सुचिरं रमन्ति ये त्वां स्तुवन्ति सततं मकरध्वजारे ॥ ३०

एतद्विभाग परिकल्पन कल्पितेषु सम्यग्भवन्ति विविधेषु शिवव्रतेषु । ते चारुतुङ्गघनकुंकुमपिञ्जरेषु स्त्रीणां महेश विलसन्ति कुचान्तरेषु ॥ ३१

मूढो विवेकविकलस्सकृदूर्ध्वबाहुः खिन्नश्शृणुष्व यदहं हर ते ब्रवीमि । मा तन्त्रकर्मणि नियोजय देवदेव ससारचक्रगहनं न पुनर्विशामि ॥ ३२

मायाप्रपञ्चरचनाचतुरा समस्तवस्तुप्रभेदभिदुराशिव सर्वकर्त्री । संसारपाशविषयछिदुरा नराणां मोहान्ध-कार भिदुरा च तवैव शक्तिः ॥ ३३

हत्वा समस्तमशुभं भवपापराशिमीशप्रकाशमनिशं

स्वबलादिना मे । तेजोनिधानममलं भगवन् प्रयच्छ सर्वज्ञतायुतमशेषकरं शिव त्वं ॥ ३४

अन्धस्य मे हृतविवेकमहाधनस्य चोरैः प्रभो बलिभिरिन्द्रियनामधेयैः । मोहान्ध कूप कुहरे विनिपातितस्य देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम् ॥ ३५

ये वा सुरापगुरुतल्पगहेमचोर ब्रह्मघ्नगोघ्न परदारगपातकाश्च । ते नीलकण्ठ परमेश्वर पादलग्न निर्धूतपापशिखिनिर्मलशुद्धदेहाः ॥ ३६

स्तोत्रं मया कृतमिदं भवतो गणेश वृत्तैर्वसन्ततिलकैरिशवमल्हणेन । आयातमत्र भगवन् कथिते दुरुक्तिं भक्तिं प्रमाणमिति सर्वमिदं क्षमस्व ॥ ३७

॥ इति मल्हणकृत शिवस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ बिल्हणकृत शिवस्तोत्रम् ॥

सन्तु सहस्रं देवास्तद्गुणदोषोक्तिभिः किमस्माकं ? ।
शिवमेव वर्णयामः पुनरपि शिवमेव शिवमेव ॥ १

धत्से मूर्ध्नि सुधामयूखशकलश्लाघ्ये कपालस्रजं वक्षस्यद्रिसुताकुचागुरुरजस्सान्द्रे चिताभस्म च । तद्वाणादि कविप्रणीतललितस्तोत्रप्रबन्धप्रिये त्वत्कर्णे लभतामयं मम गिरां गुम्भोपि सम्भावनाम् ॥ २

पञ्चब्रह्म षडङ्ग भीममुखर प्रासाद पञ्चाक्षर व्योम व्यापि पुरस्सरेषु मनुषु प्रौढिः कुतो मादृशां । ओङ्कारादि नमोन्तमुद्रितभवन्नामावळीकल्पितं सर्वं मन्त्रतया प्रभो परिणमत्यन्तर्बहिर्योगयोः ॥ ३

सर्वेषां हृदि विद्यसे शिव ततस्त्वद्ज्ञानयोगेन किं विश्वस्योपरि वर्तसे यदि तदा त्वत्पादमूले नतिः । त्रैलोक्यं त्वयि लीयते यदितदा त्वत्प्राप्त्युपायैरलं सत्यप्यायतने तनौ किमपरं दैवं न रोचिष्यते ॥ ४

फणन्ति चेतः चपलस्वभावं जल्पन्ति दोषान् कवयो गुणाय । तद्यत्रकुत्रापि विलीयमानं कदा च न त्वय्यपि धावतीति ॥ ५

एनांसि मानसिककायिकानि कुर्मस्तथापि चरणं शरणं ददीथाः । यो दोषवन्तमपि रक्षति रक्षितासौ कोवा न रक्षति निरागसमिन्दुमौळे ॥ ६

प्रासादैस्तव किं श्मशानवसतेस्स्नानैः किमस्थि-स्पृशः किं वक्षैश्च दिगम्बरस्य भसितालेपस्य गन्धैश्च किं । किंधूपैश्शवधूमधूम्रवपुषः किं कालकूटाशिनो नैवेद्यै-रिति भक्तिमात्रसुलभं त्वां देव सेवामहे ॥ ७

आयुषि महति विलम्बो भवति भवत्पादपङ्कजप्राप्त्यै । हीने भवदाराधनविघात इत्युभयथापि किं कुर्मः ॥ ८

पुंसामायुर्निटलफलकेष्वक्षरैर्लिख्यमानं निश्चिन्वानो विधिरवधिना पूर्यमाण स लुंपेत् । नैतत्कर्तुं प्रभवति मम त्वत्पादाम्भोजपीठप्रत्यासन्नक्षितिनतिकिणामृष्टफा-लाक्षरस्य ॥ ९

श्मशाने भूतानां पतिरिति विजानन्नपि मनो नृणां भस्मान्यस्थीन्यपि किमपि तीर्थं गमयति । भवद्देहाश्लेषं भवदघनारोहणमपि स्वयं लब्ध्वान्येषां सुकृतपरिपाको नभवति ॥ १०

प्रेततामनरतां च बिभ्रतीं त्वद्भुजीष्य पदवीं लभामहे । दुष्कृतस्य सुकृतस्य चोभयोर्नान्तरं तदवधारयामहे ॥ ११

ब्रह्मोत्तमाङ्गलवितुर्नृकपालबोद्धुः श्रीकण्ठपादकमलं वरिवस्यतान्ते । हिंसाप्यशौचमपि नागसि कारणं नस्वामीव सेवक इति प्रवदन्ति लोके ॥ १२

जटाजूटे गङ्गा निटल निकटे शीतकिरणं पुनर्देहे देवीं तुहिनगिरिपुत्रीं घटयते । अतश्शङ्के लोकत्रितयपरितापापहरणं विधातुं सन्नाहो वरद भवता भावित इति ॥ १३

वित्तेशस्य कुबेरता नविरता नीहारभानुः क्षयी हेरंबस्य महोदरं न गलितं दैत्यारिरुच्चैर्गदः । अङ्गं भृङ्गि-

रिटेऽथ पाण्डु भृशमित्यास्तामीषां कथा त्वं शूलीति विगीयसे कथमहो भक्तस्तवानामयः ॥ १४

गृह्णन्तां वसनेषु चर्मभुजगो हारेषु यानेषु गौर्दुत्तूरं कुसुमेषु नात्र रुदिमः किंत्वत्र कम्पारुहे । अब्धौ-कौस्तुभकालकूटकमलाकल्पद्रुमोच्चैश्रवः पीयूषादिषु सत्सु तात भवतायःकालकूटग्रहः ॥ १५

उत्तरङ्ग मथिमस्तकगङ्गावारिधारयसिवारिजगन्धि । किंपयश्चुलुकबिल्वदलैस्ते भिक्षुरुज्झति कक्षाचलनाभम् ॥

सस्यारोपणरक्षणाक्षमतया भिक्षाटनं निर्मितं कच्छ-ग्रन्थनमोचनालसतया वासोदिशः कल्पिताः । शाणा-न्वेषण घर्षणासहतया भस्माङ्गरागः कृतः विश्वोत्पादन-रक्षणापहरणायासस्त्वया नेक्षितः ॥ १७

दुत्तूराणि शिवस्रजं पितृवनं वासं विषं भोजनं सर्पाश्चाभरणानि भस्मतिलकं वृद्धाक्षमारोहणं । प्रेतान्पारिषदान् विधाय ममृजे दुर्मेधसो वेधसस्त्रैलोक्या-नुपयोगवस्तुरचना वैपुल्यदोषस्त्वया ॥ १८

वाणीपङ्कजरुहाननस्य गृहिणीत्यास्थायिमानव्रतं लक्ष्मी-स्सागरशायिनः प्रियतमेत्यग्राहि भिक्षाटनं । इत्थं स्वामि-निषिद्धसेवकवधूसम्भोगबीभत्सया पञ्चास्येविषतत्वया-धृतिदयादान्तिक्षमामुक्तयः ॥ १९

भिक्षां देहि गृहाण कीदृशमभिप्रेतं प्रतिज्ञा दृढा बाढं पृच्छ हिमाचलं नगृहिणीभिक्षां व्रती पृच्छति । तद्भिक्ष-स्तनयामियं त्रिणयनायत्ता प्रतिज्ञा मृषेत्यन्तश्छद्मपरी-क्षिताचलवधूभावाय तुभ्यं नमः ॥ २०

नस्त्वंमी जगतां सभा धनपतेस्सेव्यस्सुराणामिति श्रुत्वा तुभ्यमुमांप्रति श्रुतवतीमेनांमुनीनां पुरः । त्वामा-शावसनं पिशाचसुहृदं प्रेतावृतं प्राङ्गणे दृष्ट्वा चित्रशिख-ण्डिभिः प्रहसितं मेने नटैर्नाटकम् ॥ २१

शूलानिक्षुहिलोहकारडमरून्मातङ्ग संहृत्यच व्याळान् जाङ्गलिक प्रयच्छ शबर व्याघ्राजिनान्यानय । खट्वाङ्गा-न्यपि सूत्रधार घटयेत्युद्वाहकोलाहले दण्ड्यन्ते हिम-त्पुरे भवदनुज्ञातैर्गणैः कारवः ॥ २२

श्वभूस्त्रीडमेषा मिषति न विहितः कङ्कणस्यापि मौक्षः कोसावुद्धूळनस्यावसर इति भवान्मातृभिर्वारितोपि । निर्वृत्तो मादुपर्को विधिरिति गिरिजासिद्धिसिद्धान्तवादी निर्वाणस्य स्वपाणिग्रहणजहुतभुग्भस्मलिप्तो ननर्त ॥ २३

हारं त्यक्ताक्षसूत्रे श्रवसि मणिसरं च्छिन्नमौञ्जीगुणायां कट्यां श्रीखण्डपङ्कं विगळितभसिते कक्षतुंबीकरण्डे । मौक्ष्यवुत्तारितास्थि स्रजमपि मकुटं मुक्तभिक्षाकपाले पाणौ शैलेन्द्रदत्तं शिव तव दधतो मुग्धता धूर्तता वा ॥ २४

किं स्थानं त्रिजगत्सु सन्तु वरं हे पद्मवासे कुतो हे पद्मासन पद्ममीश्वर शिरोलङ्कार मारोहणे । इत्थं तन्निय-मार्चनप्रणयिभिर्महेश्वरैर्मर्स्तितौ मन्ये वार्धिशयस्य तावभवतां हृत्पद्मिपद्मासनौ ॥ २५

त्वत्पादयोरब्जसहस्रपूजां नेत्राब्जपूर्णां कृतवत्यु-

पेन्द्रे । त्रिनेत्रनेत्राब्जसहस्रपूजां कुर्वन्निवेन्द्रः प्रणतो विभाति ॥ २६

नेत्रानले कामकरीषदीप्ते कृतान्तकाष्ठज्वलितेपिनाकिन् । मूलाहुतीन् त्रीणि पुराणि हुत्वा पूर्णाहुतिं विश्वमिदं जुहोषि । २७

आरोप्य वायुमपिखेचरतां लभन्ते हुत्वा हुताशमपि वासवतां भजन्ते । शम्भो भवच्चरणपद्ममनर्चयन्तो मर्त्याः कथंचिदपि नाश्नुवते भवन्तम् ॥ २८

छित्वात्रह्मशिरोयदिप्रथयति प्रेतेषु सख्यं यदि क्लीबः क्रीडति मातृभिर्यदि रतिं धत्ते श्मशाने यदि । सृष्ट्वा संहरति प्रजायदि तदाप्यादाय भक्त्यामनस्तं सेवे करवाणिकिं त्रिजगती शून्यास्स वेश्वरः ॥ २९

व्याळेभ्योस्तु नमः पिशाचसदसे न्यस्तः प्रणामांजलिर्नम्रास्स्मो नृकपालदामनि चिताभस्माभिवन्दामहे । जानुभ्यां प्रणिपत्य चाटुवचनैस्सन्तोषयामो वृषं किंकुर्मः परमेश्वरस्य चरितं विज्ञाय वर्तामहे ॥ ३०

धत्तां भास्मन मङ्गरागमजिनं वस्त्रं च तारक्षवं कापालीं स्रजमाबिभर्तु कटकं चाहेयमामुञ्चतु । भूयश्चापि शिवेतराणि भजतां देवस्तथापि स्वयं सत्स्वन्येष्वपि दैवतेषु शिव इत्येकस्समाम्नायते ॥ ३१

अपिकुशलिनः प्रेतावासस्थलीसहवासिनः प्रमथपत्तयः कश्चिज्जीर्णस्सुखी तव शाकरः । अपिचसुलभाभिक्ष्वावृत्तिर्जगत्त्रयनाथ ते नखलुशिथिलप्रान्तः किं ते गजाजिनकम्बळ ॥ ३२

भो भो कैतक पुष्पसौरभनिधे खेदं वृथा माकृथाः दृष्टामूर्ध्निमहेश्वरस्य रचतामर्कप्रसूनावळीं । अस्थिष्वाभरणस्पृहां विदधतः हीरानुलिप्राकृतेर्नम्रीभूयचनृत्यतोस्य चरितं सर्वं सखे तादृशम् ॥ ३३

भजेम भवदन्तिकं प्रकृतिमेत्य पैशाचिकीं किमित्यमरसम्पदः प्रमथनाथ नाथामहे । भवद्भुवनदेहळीनिकटतण्डुदण्डाहति त्रुटन्मकुटकोटिभिर्मघवदादिभिर्भूयसे ॥

अर्थानर्थनिरूपणव्यसनिता मौढ्यस्तुतिव्यग्रतामे-

णाक्षीकुचलालन प्रणयिता मद्यापि वर्तामहे । त्वद्ध्यान-व्यवधानहेतुषु मनस्त्वच्चाटुकाव्येषु वात्त्वत्पूजाविधुरेषु कर्मसुकर श्रीकण्ठ नोत्कण्ठते ।। ३५

ये बिल्हणाह्वयकवीश्वरसम्प्रणीतामेतां स्तुतिं शिव-मुदेन्वहमामनन्ति । ते प्राप्नुवन्ति पुरुषायुषमात्मविद्या-मारोग्यमष्टतनयानखिलेष्टसिद्धिम् ।। ३६

इति बिल्हणकृत शिवस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ शिवामृततरङ्गिणी ॥

---

सनत्कुमारः—

निवर्तन्तेवाचोयतइतिवदन्तस्तुमनसा
श्रुतिंयत्रत्वस्येत्यपिचममसञ्चित्यहृदयं ।
तवस्तोत्रेस्वामिंश्चकितमपि गङ्गाधरविभो
प्रसीदस्तोष्येहंकथमपिसमारोप्यगुणिताम् ।। १

स्वयंचिन्मात्रोपित्रिपुरहरमारुण्यजलधे
त्वमेवंहि स्वोपासकजनफलायैव विविधाः ।
गृहीत्वामूर्तीरित्यवसिखलुसर्वत्रविदितं
ततत्स्तुत्यस्तोत्रैर्नचभवति वाचो वितथता ॥ २

अलंस्तोत्रैर्नानागुणगणकृतैर्यन्मनसिते
गृहाणाभीष्टं तद्वदसि यदि सद्यस्त्वमिति मां ।
नप्रष्टुंशक्तोमिस्वयमपितुयद्देयमिह मां
भवाम्भोधौ देहित्रिनयनसमालोच्यपतितम् ॥ ३

फलं देयं त्वस्यस्तुतिकरणसामर्थ्यमखिलं
समालोक्य स्वान्ते यदि तदनुसारीतिकुरुषे ।
नतत्किञ्चिद्वापिह्यनुसरतिपक्षांशिवसतां
पितामूकेऽपि खलुसमः पोषणविधौ ॥ ४

उमाजानेजानेसदसदधुनानाहमपितु
प्रकुर्वेन्तर्यामीप्रभुरिहयथाप्रेरयसि मां ।
नपुण्यैःपापैर्वामसमभवतिसङ्कोचयदितु मे
फलं दासस्यान्यत्किमपि शिवदेयं हि भवता ॥ ५

नयुक्तन्तेपृथ्वीधरवरसुतावल्लभविना
ममज्ञानंमोक्षंनहियदिददामीतिवदसि ।
हरिब्रह्माणौ तावपि सकलविज्ञानचतुरौ
नशक्तौत्वांज्ञातुं किमुतशिवकीटोहमबलः ॥ ६

पुराणानां वक्ता कमलनयनांशस्सकलवित्
स्फुटंब्रूतेव्यासः परमशिवमाहात्म्यमधिकं ।
तदज्ञात्वाकंचिद्वचनशकलंकेचनविदः
प्रजल्पन्तिभ्रान्ताहरिहरविरिञ्चाइति समाः ॥ ७

स्वनेत्रंपादाब्जे शशिशकलमौळे तवहरि-
स्समर्च्यस्वाभीष्टंखलुपरमवापेतिविदितं ।
तथापूजाकर्तुर्निजहृदयपूर्तिस्त्वितरथा
नभूयादित्येवं यदिनियतमेषोस्मिनिहतः ॥ ८

असारे संसारे जनिमृतिजरादुःखनिविडे
वसन्नेषस्वामिन्नहमिहपरिभ्रान्तहृदयः ।
त्वदीयैर्ध्यानाद्यैरविरतकृतैर्निश्चलहृदा
फलंमुक्त्याख्यं तत्कथमनुभवेयंवदविभो ॥ ९

यथात्मानन्दस्ते परमशिववाचामविषय-
स्तथाक्लेशस्वामिन्मम भवतिवाचामविषयः ।
इतीदं न ज्ञातं यदि सकलवेत्ता च भवता
मयावाच्यं ज्ञात्वास्थितवतिशिवेकिंनुकथनम् ॥ १०

स्मरामित्वद्दास्यं सुकृतिसुलभंचात्मनियत-
स्ततस्वामिन् जन्मान्तरविषयशङ्कामगता ।
इदंप्रारब्धोत्थं निरवधिकदुःखन्तुभगव-
न्नसह्यन्तन्न्याय्यं यदिभवतुदासस्यममभो ॥ ११

सुखंदुःखंयद्यत्प्रभवतिच पुंसस्तदखिलं
समंयःकोवा नास्वनुभवतिबन्धुस्सहिभवेत् ।
तथाभूतंबन्धुं कनु परमलब्ध्वामयिशिवं
प्रपन्नेयद्येवंतव विषमता का मम गतिः ॥ १२

त्वमेवाहं स्वामिन्निति परशिवात्मैक्यमसकृ-
द्ब्रवीम्येकस्सत्वं शिवइति परेभ्यश्च सुतरां ।
तथैवैक्यंध्यायाम्यनुभवमथप्राप्यचदृढ-
प्रबोधोप्येषोहंप्रबलभवदुःख्यस्मिकिमहो ॥ १३

श्रुतौविष्ण्वादीनां जनक इति संगुण्यसउमा-
पतेत्वंतत्सत्यंखलु विषमनेत्रः परशिवः ।
उदासीनस्त्वं चेन्मयिपरमदुःखास्पदइदं
कथं कस्मिन् वाच्यं सकलजननिन्दास्पदतमम् ॥
स्वलीलार्थं जीवोद्भवकरणमेतत्किमुचितं
तवश्रीकण्ठाम्बा सहचरदयाळो मम शिशोः ।
भवल्लीलारूपं भवजनितदुःखंनकुरुये
दधीचाद्यैरेशप्राजगतिशिवतेषांसमुचितम् ॥ १५
श्रुतिस्मृत्याद्युक्तश्रवणमननध्यानकरणे
यमाद्यष्टाङ्गे वानहिभवतियोगे मम रतिः ।
परन्तुस्वैरं येविषमविषयास्सन्ति भुवने
पदार्थेष्वासक्तिर्भवति भव मुक्तिर्मम कथम् ॥ १६
विवेकप्रध्वंस प्रबलतरवीर्या मनसिजाः
प्रवर्धन्ते स्वामिन् सततमपि कामादिरिपवः ।
उपायःकोवास्यान्मम रिपुजिगीषोस्त्रिनयन
त्वदीयांघ्रिद्वन्द्वग्रहणबलमेतस्यतुविना ॥ १७

चतुर्थमन्यन्ते शिवमितिच शान्तं श्रुतिरियं
तथैवान्याध्येयशिव इतिशिवाद्वैतविषया ।
तथासंत्यन्यानिस्मृतिबहुपुराणादिविविध-
प्रमाणान्यद्वैते त्वयि विषमभूते कनु गतिः ॥ १८

इमान्युद्भूतानि त्रिपुरहरभूतानि च यतः
तथाजीवन्त्येवं प्रळयमपि यान्त्येव परमे ।
अखण्डानन्दाब्धौ सकलभवदुःखक्षयकरे
शिवेसिन्नद्वैते त्वयि विषमबुद्धेश्च न गतिः ॥ १९

त्वदायत्ते जन्तौ जनिमृतिजरादुःखविकले
नकर्तव्यःक्रोधोमयिसकलनिन्दास्पदगुणे ।
तृणं स्यात्किं कालानलविषयएकेशकृपया-
प्यसह्याः क्षन्तव्याशिव मदपराधास्तु भवता ॥

वशीकुर्याच्चित्तं कथमिहदृगाद्यैश्च करणै-
स्सदाक्षुब्धं मायाजनितविषयस्थैर्यसहितैः ।
कियन्तं वा कालं परमशिवकामादिविवशो
वृथानेष्यास्येवं गिरिशमयि दासे कुरु कृपाम् ॥ २१

अनेकब्रह्माण्डानुडुपतिकला चूडविविधा-
ननायसेनैव त्वमवसिचसङ्कल्पत इति ।
न सन्देहोल्पोपि श्रुतिनिगदितेर्थेत्र भगवं-
स्तवायासः कोवा मदवनविधौ शङ्कर वद ॥ २२

रविंवह्निंवेन्द्रं द्रुहिणमथविष्णुंगणपतिं
षडास्यं शक्तिं वा यजतिभुविदेवांस्तदितरान् ।
फलावाप्तिस्त्वत्तो भवतिनियतंतस्ययजनै-
स्त्वमेवप्रीतोसि त्रिभुवनमहेशोखिलगुरुः ॥ २३

सवाच्योंकारेणांबुज भवउकारेणमुरजि-
न्मकारेण व्यक्षस्तदुपरितुमात्रार्धगणिता ।
तयातुर्यस्त्वंहिकचिदसिच साम्बस्त्रिनयनः
कचिच्चिद्रूपोसि स्फुटमिदमनन्तश्रुतिगतिम् ॥ २४

शिवावोराजानं विशदमितिरुद्रैकविषयं
जनाश्रुत्यर्थं ये जगति नविजानन्तिमखिनः ।
नतेषांवक्तव्यं किमिहकलयन्त्वात्मनिकृते
हरिब्रह्मेन्द्राग्निप्रबलसुरदक्षाध्वरकथाम् ॥ २५

विनाशैवीभक्तिं क कथमविनाशित्वमचिरा-
दतस्साम्बध्यानं सततमपि कुर्वन्तुविबुधाः ।
नतर्कांद्यैरशास्त्रैर्घटपटवचोमात्रविषयैः
भवापायोजिह्मा हृदयगळगण्डश्रमकरैः ॥ २६

शिवध्यानानन्दप्रवहदमृतास्वादनपरा
महान्तो योगीन्द्रागिरिविपिनसञ्चारकुतुकाः ।
पृथिव्यादौ सन्तीत्यपिविदितवन्तं गिरिपते
करिष्यस्येनं मां सकलभवमुक्तिं किमुतथा ॥ २७

पृथिव्यप्तेजोवाय्वचलवियदन्तानिभुवना-
न्यतद्रूपाण्येवं मुहुरपिच यान्त्येव विलयं ।
उमाकान्त त्वन्तु स्वयमधिकमालोक्यकुतुका-
त्प्रनृत्यस्येकान्ते सहगिरिजयाचिद्विभवतिहि ॥ २८

नकाम्योदेशेन त्रिपुरहर ते स्तोत्ररचना
मदीयेयं नैवाधिकृतिवशतः प्राप्तविधिना ।
नवैसाहित्यादिप्रबलतरनैपुण्यविशदी-
क्रियाहेतोः किंतु स्थित भवविषादक्षतिकृते ॥ २९

सिरास्थित्वङ्मज्जारुधिरमलमूत्रादिविकले
महारोगग्रस्ते जडवपुषि षड्भावसहिते ।
स्थितिर्मास्तुस्वामिंश्छशिशकलचूडालभगवं-
स्त्वदीयात्मध्यानामृतरससुखास्वादरहिता ॥ ३०

पुराभूद्यद्दुःखं बहुळ जननीगर्भशयने
तथाबाल्याद्यास्वप्यधिगतमवस्थासुसततं ।
तदद्यस्मृत्वामेमनसि भयचिन्ताकलुषिते
प्रसन्नोभूत्वा त्वं स्वयमवशरण्योस्तिनपरः ॥ ३१

प्रसादं लक्ष्मीशद्रुहिणसुरसम्प्रार्थितमुमा-
पतेःपुण्यैर्लभ्यं प्रबलशिवपूजादिजनितैः ।
अनिच्छन्संसारोदधितरणवांछाकुलमना-
स्त्वदन्यान् गौरीशप्रतिदिनमुपास्ते हतमतिः ॥ ३२

अशक्यं किं वाश्रीशिवचरणपाथोरुहरजः-
कणोद्दीव्यन्मूर्ध्नामिह भवति पुंसामुपरिवा ।
अथान्येषां वा श्रीपरमशिवपादाम्बुजरजः-
कणोद्दीव्यन्मूर्धाश्रयजनपदाब्जाश्रयवताम् ॥ ३३

त्वमंगुष्ठाकारः परिमितइतित्वय्यपिजनाः
परिच्छेदं मायापरवशधियःकेचनजडाः ।
वदन्तिश्रुत्यर्थाविद इहतुसर्वस्य जगतः
प्रभुःप्रीणातीशस्त्वयमपि विभोविश्वभुगिति ॥ ३४
महर्षिस्त्वं शम्भो जयसि खलुविश्वाधिकइति
श्रुतेर्विश्वाकारोहरिरितिविधिर्वेतिविदितं ।
तथेशानस्वामिंश्छ्रुतिगदितसत्यादिनिखिल-
स्वविद्यानांब्रह्माधिपइतिच भूतेश्वरइति ॥ ३५
समष्टौव्यष्टौवादहरनळिनान्तर्विजयसे
सभायामानन्दस्फुरणनटनानन्दविवशः ।
त्वदावासस्थाने हृदयकुहरेवेदकथिते
त्वदन्यं संस्थाप्य क्व शिव यजतांमुक्तिरचला ॥३६
विधिर्विष्णुरशम्भुस्तदुपरि शिवोथापिचशिव-
स्ततोबिन्दुर्नादस्तदुपरि पराशक्तिरथच ।
शिवस्सर्वाण्येतान्यपिचनवतत्वानिपरमे
विलीयन्तेस्वामिंस्त्वयिनटनलोलेकिमितरैः ॥ ३७

हरिब्रह्मेशाख्यं परमशिवपुत्रत्रयमभू-
त्तवस्वामिन् पार्श्वद्वयहृदयजातंत्रिगुणिच ।
जगत्कार्यन्तेन प्रभवति तथा तिष्ठति तथा
लयंयातीत्यस्मात्त्वयि भवतिकावामलिनता ॥ ३८

सहस्रैर्ग्रन्थैर्वा बहुभिरथसंख्याविरहितैः
प्रसिद्धोस्तु श्रीमान् हरिरपि तदंशाअपि परे ।
सदात्वत्पादाब्जस्मरणसुखलोलाहिकथिता-
स्ततस्त्वामेवैकं निटलनयनं चेतसि भजे ॥ ३९

अहंतासम्मूढत्रिदशपतिहेतोः प्रकटितं
प्रभावन्ते को वास्मरतिशिववाग्व्यभ्रिविदितं ।
तथाहंतामूढद्रुहिणहरिमध्येप्रकटितं
प्रभावं वाज्योतिर्मयमखिलमाद्यन्तरहितम् ॥ ४०

कपालित्वे स्वामिंस्तव वदति हानिं नरपशु-
र्नतुच्छित्वाशीर्षं करनखमुखेनाब्जजनुषः ।
कपाले तस्मिंस्त्वं मुरहरवपुर्निस्सृतमसृ-
क्प्रवाहं शूलात्प्राक्परशिवगृहीत्वापिबतइति ॥ ४१

मृकण्डोः पुत्रंतं विषमयमपाशाकुलतनुं
स्वलिङ्गार्चाध्यानाचरणसमये रक्षसि पुरा ।
समाविर्भूयत्वं परमशिवलिङ्गाद्ददतरं
यमन्तंहत्वात्वत्पदनलिनसंताडितहृदम् ॥ ४२

नकोप्यस्त्याक्षेपोगिरिशभवदुत्कर्षविषये
श्रुतिस्मृत्याद्यष्टादशविधपुराणोक्तिविदुषां ।
परन्तुस्वैरं ये विषयमृगतृष्णाकुलधियो
महाशापग्रस्तास्स्फुरतु सचतेषामविदुषाम् ॥ ४३

त्रिमूर्तीनां साम्यंभवतु परतत्वेनभगवन्
कथं मूर्तित्वेन त्रिगुणजनितेनापिभवति ।
नकोपिब्रूयाद्वापरशिवतमस्सत्त्वरजसां
समत्वंरुद्रेतो जयसि खलुसत्त्वैकविषयः ॥ ४४

कदाचिद्विस्मृत्या त्रिणयन तवोत्कर्षवचसां
महान्व्यासोजल्पन्नपिमुररिपोर्नेतिचपरः ।
बभूवेतिस्तब्धस्वकररसनोनन्दिवदना-
त्तदैतिह्यं नालङ्किमुशिवतवैकङ्किमितरैः ॥ ४५

हरिब्रह्मादीनामखिलभुवनानामपिमहा-
भयं चक्रे हालाहलइति च दुग्धोदधिभवः ।
अनायासात्त्वंतंगरळमपिभुक्त्वापह्नुगणा-
नरक्षश्चेत्येतद्वदति पशुरीर्ष्याकुलवचाः ॥ ४६

गुरुत्वे ते स्वामिन् वटविटपिमूलेचविदिते
नचाधिक्यंब्रूतेतवमलिनचित्तः परगुरोः ।
मुनीनांत्वंप्रीत्योपदिशसितुसाक्षाद्धरिमयं
सदातत्वंचेतिप्रवदतिन शिष्यं हरिमहो ॥ ४७

उपास्तेविष्णुस्त्वां परमशिवकाश्यांस्फुटतरं
महालिङ्गाकारं निजशिरसि कृत्वाञ्जलिमपि ।
तथान्यत्रापीशप्रथितमपि शिष्यत्वमधिकं
हरेःकोवाशक्तश्रुतिगतमपह्नोतुमिहवा ॥ ४८

रहस्ये त्वत्तत्वे चरमजनिलोकैकसुलभा
पराभक्तिस्स्वामिन् बहुजननभोगार्हजगतां ।
नजायेतेत्येवंकथमपि विजानन्नयमहं
क्षमस्व त्वत्प्रेम्नातवगुणगणान्वचम्यकृतिनाम् ॥४९

उमाकान्तंकान्तं चितिवियतिभान्तं परशिवं
स्तवासक्तं शक्तंनमदधिकभक्तं त्रिणनयनं ।
सदातुष्टं शिष्टं मुनिहृदयकृष्टं प्रभुवरं
सुखाराध्यं राध्यं श्रुतिनिचयशोध्यं हृदिभजे ॥ ५०

मतानां षण्णामप्युपरिपरतत्वंशिवविदु-
ष्षडाधाराणामप्युपरिपरमानन्दनटनं ।
तथाषड्भावानामुपरिचपरिच्छेदरहितं
षडूर्मीणामेकंस्वयमुपरि शान्तं त्रिणयनम् ॥ ५१

इयत्तातीतस्तेपरमशिवसत्यं हिमहिमा
श्रुतेरेतावानित्यपितुभगवन्नस्यमहिमा ।
नतात्पर्यं तादृग्बहुविधमहिम्नां परिमिता-
वविद्वद्बोधार्थं स्वयमपिविभक्तोसि पदशः ॥ ५२

प्रसिद्धं भोक्तृत्वं मम भवति ते भोजयितृता
नवाच्यंभोज्यानां परमशिव वैरस्यमधिकं ।
नदोषःपक्तुर्यप्ययमथविभो पाचयितरि
द्वयोस्त्वद्रूपत्वान्मयितुविभगेवक्तुमुचितः ॥ ५३

अहोकिं वक्ष्ये ते परमशिवसौलभ्यमचिरा-
त्सकृच्चिन्तामात्रात्सकलजननिन्द्योपिपुरुषः ।
अखण्डैश्वर्यंत्वद्भुविजयति लब्ध्वासुखनिधिं
नृपद्वारिक्षीणायुष उदरहेतोर्बत बुधाः ॥ ५४

यथार्थाभिख्यः प्राक्परशिवशतानन्दइति य-
त्पदाम्भोजद्वन्द्वस्मरण महिमालम्बनबलात् ।
षडक्षर्यावाचानरकपतितंसङ्गिरमहो
कुतर्काचारक्षत्तवविभवक्वेत्तास्ति, क इह ॥ ५५

अनल्पायासोस्मिन् विषमविषयप्राप्तिविषये
फलंत्वल्पाद्दल्पं नचभवतिशम्भोसुविदितं ।
नचायासस्त्वल्पोप्यविषय शिवप्राप्तिविषये
त्वनल्पाच्चानल्पं फलमपिनधीरत्र जगताम् ॥ ५६

चतुश्शास्त्रज्ञो वा भुवि महद्दविद्यापरवशो
नरस्सर्वज्ञो वासुर उपरिमायापरवशः ।
नतादृग्भ्यःप्राप्तं भवति ममसन्तृप्तिजनकं
त्वविद्यामायेशात्स्वगतबहुशक्तेः परशिवात् ॥ ५७

कचिद्रागैस्तीव्रैरहमधिकमार्तस्मररिपो
कचिद्वाणैस्त्वत्तोप्यधिगतफलैरशम्बररिपोः ।
कचिच्छिष्याद्यैश्च स्वकहृदय पूतीच्छुभिरहो
कथंत्वत्पादाब्जस्मरण सुखलाभो मम भवेत् ॥ ५८

उमाबद्धं शुद्धं परमसुखबद्धं पुरहरं
जगद्रक्षंत्र्यक्षंभयहरणदक्षं स्मरहरं ।
चिदाकाशं वीशङ्कतसकलकोशं यमहरं
हताशेषं शेषं धृतनिखिलवेषं हृदि भजे ॥ ५९

अहोप्रारब्धाख्याश्रुतिशिरसिनिष्ठं चपुरुषं
महान्तं मायाते परशिवभृशंविह्वलयति ।
तथा त्रय्यन्तस्थं स्मृतिषुचपुराणेषुविविध-
प्रपञ्चेष्वेतेषुध्रुवमपितु न त्वां स्पृशति सा ॥ ६०

शिवाद्वैतंसत्यंतदितरदसत्यं च सकलं
समस्तश्रुत्यैवं विदितमपिनिस्संशयमहो ।
भवन्मायाक्रान्ताश्श्रुति शिरशि निष्ठाअपिजना-
स्त्वदन्यान् सेवन्ते बतगिरिशसत्यत्वमनसा ॥ ६१

जगद्दृष्टं सर्वंह्यनृतजडदुःखात्मकमिदं
त्वयित्वंचास्मिन्नित्यपिबहुलमानं चविदितं ।
असङ्गस्त्वं नित्यो जयासि शिवसच्चित्सुखनिधिः
प्रसिद्धंचैतत्किन्त्रिपुरहरवक्ष्येद्भुतमहम् ।। ६२

शिवाधिक्यंब्रूते श्रुतिरखिलमानोत्तमतमः
तथातन्निष्टास्तेमुररिपुविधीन्द्रा अपि सुराः ।
वदन्त्याचार्येन्द्रा यतिमखिमुनीन्द्राश्च भगवं-
स्त्वदाधिक्येसूया भवति यदितं धिङ्नरखरम् ।।६३

पुरःपश्यन्लिङ्गं सित भसितरुद्राक्षवपुषा
करे विल्वं धृत्वा वचसिशिवनामामृतरसं ।
मनस्यप्यानन्दाद्भुतनटनमूर्तिं तव वहन्
परस्मिंश्चिन्मात्रे सुखमिहविलीयेशिवकदा ।। ६४

कटाक्षानुज्ञाताविधिहरिमहेशा बहुविध-
प्रपञ्चानां सृष्टिस्थितिलयविधानेषु चतुराः ।
तवैवोल्लासश्चेत्स्वत इहमदीयावनविधौ
किमन्यत्सम्प्राप्यं ममभवतिकस्मात्कनुकदा ।। ६५

नसोढुंशक्नोति त्रिपुरहरनाबुद्बुदसम-
स्वभार्याविण्मूत्रास्पदतनुवियोगोद्भवशुचं ।
कथंशक्तोहं स्यां स्वयममलनित्याचलभव-
द्वियोगोसह्यस्सम्भवतियदितद्दुःखमधुना । ६६
मयाकालक्षेपः क्रियत इह संसारविषये
सदात्वद्ज्ञानदौक्षणमपितु नैवाचलपते ।
गतिःकानिर्गीर्णाभवतिमम दुष्टस्य भवता
नजानेमामेनं परमकृपया पालय विभो ।। ६७
शिवादन्यत्सर्वं जगदनृतमित्येव सुदृढः
कृतस्सिद्धान्तोयंगिरिवरसुतावल्लभमया ।
नरोदेवोवामुं श्रुतिगदितमेवान्यथयितुं
समर्थश्चेदर्थं मम धुरि तदंघ्री शिव भजे ।। ६८
महामोहग्राहप्रवरमुखसंग्रस्तनिखिल-
स्वबुद्ध्यूहापोहप्रशममुख सर्वस्वतनयः ।
नलोकंप्राप्नोति त्रिणयनतवेशस्यपुरुषो
नलोकोपुत्रस्त्वेत्यपि वदति वेदश्च भगवन् ।। ६९

शिवध्यानस्तोत्रप्रणति पदपूजादिविमुख-
स्वचेतोवाग्वक्षः करमुखनिकृष्टावयववान् ।
हरिब्रह्मेन्द्राग्नि प्रमुखसुरसङ्घाद्भुततपो
विशेष्यप्रापश्रीशिवचरणसेवां न लभते ॥ ७०

सुखासीनश्शान्तोविजनवसतिर्भक्तिसहितः
प्रणम्यस्वाचार्यं प्रथममथसञ्चिन्त्यहृदये ।
सरोजं तन्मध्ये तरुणदिनकृत्कोटिसदृश-
प्रभं सांबं ध्यायन् क्षणमपि सधन्योहिपुरुषः ॥७१

मनश्चेलंसूक्ष्मं विषयबलवत्कण्टकगतं
गृहीत्वा यत्नात्संकुचितमनपायंमृदुयथा ।
तवालङ्काराय त्रिणयनमयैवार्चितमहो
किमर्थंत्वंत्यक्त्वा विहरसि पुनश्चर्मवसनः ॥ ७२

पिपासोस्त्वत्तत्वामृतरसमिहात्यद्भुततमं
ममस्वामिन्नेवं विषयमृगतृष्णागतिरभूत् ।
कथंजीवाम्यस्मिन् सुखगमयिताकोनुजगति
त्वदन्यःपाह्येमं परमकृपयापाङ्गभवया ॥ ७३

मनोवाक्कायाख्यं त्रिकरणमुमानाथभवते
समर्प्य स्वाराज्यंजगतिलभते पूरुषवरः ।
अहंत्वेवंनानाविधभवविषायैव तदहो
समर्प्याहोरात्रं विहतइहकावाममगतिः ॥ ७४

अचिंत्येयद्यत्प्राग्गिरिशजननीगर्भकुहरे
मयामुक्त्यैकर्मस्वयमपिचजातिस्मरतया ।
अनुष्ठेयत्वेन प्रचुरमथसंचिन्तित मभू-
त्तदद्य त्वन्माया परवशतया विस्मृतमहो ॥ ७५

भवन्मायोद्भूतं मम भवतिदुःखंमहदिति
ब्रवीम्येवाहं त्वं त्वनुवदसितेकर्मजमिति ।
द्वयोरास्तामैक्यात्तदपितवसर्वेश्वरतया
त्वयैवक्षीयेत्तद्यदिहममदुःखायकिमपि ॥ ७६

अमुंमन्यन्तेमां जगतिशिवकेचिद्भवगतं
भविष्यज्जन्माहँ यमभवनशिक्षार्हमपिच ।
अहंतुत्वद्दास्याद्धरिविधिदुरापाद्भुतभव-
त्पदार्हंमन्येत्वं त्रिपुरहरकिंमन्यसइह ॥ ७७

शरद्राकाशीतांश्वतिधवळदध्यन्नरसव-
त्स्वजिह्वालीढोद्यन्मृदुल कमनीयाधरदळं ।
मुहुर्भार्यापुत्रद्वयमुख समालोकनपर
स्वनेत्रंतन्मन्दस्मित मुखमिदन्ते शिवभजे ।। ७८

चिदाकाशेसत्येहरिहतमृदङ्गध्वनियुतं
समुत्फुल्लास्याम्बाकरनळिनताळध्वनियुतं ।
अनुस्यूतस्वान्त द्रुहिणहतझर्झर्यनुगत
कणन्मञ्जीरांघ्रेर्नटनमहमद्राक्षमभयम् ।। ७९

समस्तश्रुत्यन्त प्रकटित महिम्नोहरिविधि-
स्तुतस्य श्रीकण्ठप्रणतजनकष्टापहविभो ।
तव श्रीपादेनाप्युपहति मलभ्यामुपगतौ
यमापस्मारौ तौ कठिनतरचेष्टावपि परौ ।। ८०

शिवादन्योनाम्नासकृदपि च नाम्नायतइति
स्वयंधन्याः केचिन्नियमसहितास्सन्तिधरणौ ।
अधन्याअन्येतन्नियमरहिताः क्षुब्धहृदया-
स्ततस्साम्बशम्भुर्हृदि वचसिनित्यंजयतुमे ।। ८१

अमन्दानन्दाब्धौ सितकिरणचूडालभगवन्
स्थितंनीलग्रीवं हिमगिरिसुतालिङ्गिततनुं ।
त्रिनेत्रं त्वां दृष्ट्वा परवशमनाएवमभवं
कृतार्थोहं बाष्पोत्पुलकजटिलस्विन्नवपुषा ॥ ८२

कचित्सौभाग्यं मे प्रकटयतिदौर्भाग्यमपिच
कचिद्वाणीत्येतत्समुचितमुमाधीनहृदयः ।
स्वतन्त्रश्चासित्वं परमशिवतद्भद्भवभवौ
विचिन्त्यद्वैविध्यं वचसि ममबाधो न च ततः ॥८३

द्रवीभूतं चित्तं प्रकटयतिनेत्राम्बुमुखजं
तवान्तर्यामित्वं प्रकटयतिचित्त्वंच हृदयं ।
त्वमेकश्रीकामाक्ष्यपहृतविभागत्वमखिल-
श्रुतीड्यत्वं नित्यं प्रकटयसि कल्वेवमधुना ॥ ८४

इहानन्दःकेषांचिदुपरितुदुःखंमहदुप-
र्यथानन्दःकेषांचिदिहबहुदुःखंभवतिच ।
इहामुष्मिन् केषांचिदपिपरमानन्दइहमे
त्वमुष्मिन्नप्येवं कलुषमनसोदुःखमहह ॥ ८५

अपाराभक्तिश्चेत्परमशिव पादाब्जयुगळे
हरौविद्वेषस्स्यादिति जगतिकेचित्तुमनुजाः ।
स्वयुक्त्यामन्यन्ते नभवतितथामादृशमतौ
नृणांभूपप्रीतेर्भवति सचिवेप्रीतिरधिका ॥ ८६

रमाकान्तब्रह्मा श्रितनिजपुरोभागममरो
ज्वलत्पश्चाद्भागं प्रमथवृतपार्श्वद्वयमपि ।
समुद्यन्मध्याह्नद्युमणिशतकान्तिप्रचुरव-
द्विमानञ्चारुह्य त्रिणयनपदं यातिसुकृती ॥ ८७

मनोवृक्षे संख्या भवविषयसङ्कल्पविटपाः
प्रजायन्तेनानाभुवनवियदन्ताश्चविविधाः ।
कथंविच्छिन्नास्स्युस्स्वयमचिरमेकेनभवता
ततोहङ्काराख्यं सुलभमिहमूलं विदळय ॥ ८८

अहंमूलोच्छेदे हृदयतरुसङ्कल्पविषय-
स्वशाखापत्राणांगिरिशभृशशैथिल्यतइदं ।
स्वरूपार्थज्योतिर्विशदमनुसर्वत्रजयतु
स्वयंगच्छत्वन्तं सतरुरिहतच्छिन्धिममताम् ॥ ८९

कभक्तिमाह्यस्त्वं कच विषयसक्तोहमधुना
कतेप्रज्ञारूपं कचिरमहमज्ञानविहतः ।
प्रपञ्चातीतस्त्वं कनुगतिमगः कचपशु-
स्ततस्त्वामिन्नारात्परमकृपयामांस्वयमव ॥ ९०

कुलेशैलेजन्मप्रतिदिनमुमानाथभजनं
सुशुश्रूषासक्तस्मितमुखकलत्रं च परमं ।
सदासेवातद्वत्परमशिव भक्तांघ्रिकमल-
द्वयस्यैतत्सर्वं भवति भुवियस्यैषसुकृती ॥ ९१

पितृभ्यां सानन्दं सितभसितरुद्राक्षविलस-
च्छरीराभ्यां दृष्टं सुतहृतमृदङ्गध्वनियुतं ।
सुतागीत्यायुक्तं स्मितवदनभार्याकलितया
युतंझल्यांचित्सदसिनटनं यस्य समहान् ॥ ९२

प्रसन्नास्यान् दारान् करकलितझल्यनुरतान्
स्ववामस्थान्वामेतरगतसुतंमर्दलयुतं ।
बहूंश्चिछष्यांश्छत्रव्यजनबहुवाद्यांश्चनिकटे
समाहूयस्वामिंश्चरतिशिलवृत्तिंससुकृती ॥ ९३

विषमन्वानानां शिवभजनपीयूषमनिशं
महोल्लासोद्भूताद्भुतनटनकालेप्रहसतां ।
विरक्त्यानन्दोत्थामपिच शिलवृत्तिं प्रलपतां
जनानांदारिद्र्यादिति भवतुनो सङ्ग इहमे ॥ ९४

नजानेसंसारोत्तरणकरणोपायमधुना
नशक्नोम्युक्तं चेदपिचतमनुष्ठातुमुचितं ।
कथसाध्या मुक्तिरिशवचरणधूलिर्ममगति-
स्तयानाहं तीर्णो यदि शिव माहात्म्यविहतिः ॥ ९५

महाघौघाद्रीन्द्र त्रुटनपविवेदान्तगदित-
प्रभावस्निग्धश्रीधवळभसितोद्धूळनविधौ ।
त्रिपुण्ड्रे रुद्राक्षे परमशिवनाम्न्येककुचव-
त्यथाप्येकश्मश्रुण्यपिवपुषिनित्यास्तुममधीः ॥ ९६

त्वदीयाध्यानोत्थामृतरसपिपासोर्ममाशिशो-
स्सकृद्ध्यानेनैव त्रिपुरहरसंतृप्तिरभवत् ।
तथापिप्रारब्धाज्जनितबहुदुःखक्षयकृते
सदैकामूर्तिस्ते स्फुरतु हृदि साम्बा त्रिनयना ॥ ९७

अतर्क्यानन्दात्मस्फुरणजनितापारनटन-
प्रभिन्नब्रह्माण्डायुतमधिकपुण्यैकसुलभं ।
चतुर्बाहुं कुर्ब्वीकृतपदममुं देहमधुना
सुखान्मे प्राप्तस्य त्रिनयनकिमर्थंवपुरिदम् ॥ ९८

अशैवेक्रोधोमेभवति शिवतन्न्याय्यमधुना
सुमन्येऽन्ये प्राहुः प्रबलतरदोषास्पदमिति ।
प्रशान्तव्यापारप्रणतजनकारुण्यजलधे-
स्तवापि स्वामिन् खल्वशिवतमदक्षेक्रुदजनि ॥ ९९

क्रमात्सालोक्यं च त्रिपुरहरसारूप्यमचिरा-
दहं सामीप्यं च स्वयमथ च सायुज्यमिहते ।
मनोभावात्प्राप्य स्फुटमिदमिदानीं निजपदं
कृतार्थोस्मि स्वामिन् पुनरपि कृतार्थोपिभगवन् ॥

शिवामृततरङ्गिणीत्यतिविशुद्धनामाङ्किता
स्तुतिर्जयतु शम्भवी जगति शोकमोहापहा ।

इमांश्रितवतांनृणां भुवि सनत्कुमारोदितां
नसंस्मृतिभयं क्वचिन्न च विधिर्शिवान्यस्तुतौ ॥

इति शिवामृततरङ्गिणी ॥

---

## ॥ शिवाष्टकम् ॥

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं जगन्नाथनाथं सदा-
नन्दभाजाम् । भवद्भव्य भूतेश्वरं भूतनाथं शिवं शङ्करं
शम्भुमीशानमीडे ॥ १

गळे रुण्डमालं तनौ सर्पजालं महाकालकालं गणे-
शादिपालम् । जटाजूटगङ्गोत्तरङ्गैर्विशालं शिवं शङ्करं
शम्भुमीशानमीडे ॥ २

मुदामाकरं मण्डनं मण्डयन्तं महामण्डलं भस्मभूषा-
धरं तम् । अनादिं ह्यपारं महामोहमारं शिवं शङ्करं
शम्भुमीशानमीडे ॥ ३

व(त)टाधोनिवासं महाट्टाट्टहासं महापापनाशं सदा-सुप्रकाशम् । गिरीशं गणेशं सुरेशं महेशं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ४

गिरीन्द्रात्मजासंगृहीतार्धदेहं गिरौ संस्थितं सर्वदा सन्नगेहम् । परब्रह्मब्रह्मादिभिर्वन्द्यमानं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ५

कपालं त्रिशूलं कराभ्यां दधानं पदाम्भोजनम्राय कामं ददानम् । बलीवर्दयानं सुराणां प्रधानं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ६

शरच्चन्द्रगात्रं ग(गु)णानन्दपात्रं त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम् । अपर्णाकलत्रं[1] सदासच्चरित्रं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ७

हरं सर्पहारं चिताभूविहारं भवं वेदसारं सदा निर्विकारम् । श्मशाने वसन्तं मनोजं दहन्तं शिवं शङ्करं शम्भु मीशानमीडे ॥ ८

1 चरित्रं विचित्रं.

स्वयंय[1]ः प्रभाते नरश्शूलपाणेः [2]पठेत् स्तोत्ररत्नं त्विह प्राप्य रत्नं । सु[3]पुत्रं[4]सुधान्यं सुमित्रं कळत्रं विचित्रैस्समा[5]राध्य मोक्षं प्रयाति ॥ ९

इति श्रीकृष्णजन्मखण्डे शिवाष्टकस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

---

## ॥ श्रीनृसिंहकृतशिवाष्टोत्तरशतनामस्तुतिः ॥

श्रीनृसिंहः :—

नमोरुद्राय शर्वाय महाग्रासायविष्णवे ।
नम उग्राय भीमाय नमःक्रोधाय मन्यवे ॥ १
नमो भवाय शर्वाय शङ्कराय शिवायते ।
कालकालाय कालाय महाकालाय मृत्यवे ॥ २
वीराय वीरभद्राय क्षयद्वीराय शूलिने ।
महादेवाय महते पशूनां पतये नमः ॥ ३

---

1 स्तवं. 2 पठेत्सर्वदाभर्गभावानुरक्तः. 3 स. 4 धनं धान्यमित्रं. 5 साध्य.

एकाय नीलकण्ठाय श्रीकण्ठाय पिनाकिने ।
नमोनन्ताय सूक्ष्माय नमस्ते मृत्युमन्यवे ॥ ४
पराय परमेशाय परात्परतरायते ।
परात्पराय विश्वाय नमस्ते विश्वमूर्तये ॥ ५
नमोविष्णुकळत्राय विष्णुक्षेत्राय भानवे ।
कैवर्ताय किराताय महाव्याधाय शाश्वते ॥ ६
भैरवाय शरण्याय महाभैरवरूपिणे ।
नमो नृसिंह संहर्त्रे कामकालपुरारये ॥ ७
महापापौघसंहर्त्रे विष्णुमायान्तकारिणे ।
त्र्यम्बकाय त्र्यक्षराय शिपिविष्टाय मीढुषे ॥ ८
मृत्युञ्जयाय शर्वाय सर्वज्ञाय मखारये ।
मखेशाय वरेण्याय नमस्ते वह्निरूपिणे ॥ ९
महाघ्राणाय जिह्वाय प्राणापानप्रवर्तिने ।
त्रिगुणाय त्रिशूलाय गुणातीताय योगिने ॥ १०
संसाराय प्रवाहाय महायन्त्रप्रवर्तिने ।
नमश्चन्द्राग्निसूर्याय मुक्तिवैचित्र्यहेतवे ॥ ११

वरदायावताराय सर्वकारणहेतवे ।
कपालिने कराळाय पतये पुण्यकीर्तये ॥ १२
अमोघायाग्निनेत्राय लकुळीशाय शम्भवे ।
भिषक्तमाय मुण्डाय दण्डिने योगरूपिणे ॥ १३
मेघवाहाय देवाय पार्वतीपतये नमः ।
अव्यक्ताय विशोकाय स्थिराय स्थिरधन्विने । १४
स्थाणवे कृत्तिवासाय नमः पञ्चार्थहेतवे ।
वरदायैकपादाय नमश्चन्द्रार्धमौळये ॥ १५
नमस्तेऽध्वरराजाय वयसां पतये नमः ।
योगीश्वराय नित्याय सत्याय परमेष्ठिने ॥ १६
सर्वात्मने नमस्तुभ्यं नमस्सर्वेश्वराय ते ।
एक द्वि त्रि चतुः पञ्च कृत्वस्तेस्तु नमोनमः ॥ १७
दशकृत्वस्तु सहस्र कृत्वस्तेच नमोनमः ।
नमोपरिमितं कृत्वोऽनन्तकृत्वोनमोनमः ॥ १८
नमोनमो नमोभूयः पुनर्भूयो नमोनमः ।

सूतः :—

नाम्नामष्टशतेनैवं स्तुत्वामृतमयेन तु ॥ १९
पुनस्तु प्रार्थयामास नृसिंहश्शरभेश्वरम् ।

इति श्रीमहापुराणे लैङ्गे श्रीनृसिंहकृतं परमेश्वराष्टोत्तर-शतनामस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ शुक्रकवचः ॥

ओम् अस्य श्री शुक्रकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः । भगवान् शुक्रो देवता । अंबीजं । गंशक्तिः । वंकीलकं । मम शुक्रग्रहप्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । भां अंगुष्ठाभ्यां नमः । भीं तर्जनीभ्यां नमः भूं मध्यमाभ्यां नमः । भैं अनामि-काभ्यां नमः । भौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । भः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरो-

मिति दिग्बन्धः ॥ ध्यानम्—शुक्लं चतुर्भुजं देवं अक्ष-
माला कमण्डलुम् । दण्डहस्तं च वरदं भानुज्वालाङ्ग-
शोभितम् ॥ शुक्लाम्बरं शुक्लमाल्यं शुक्लगन्धानुलेपनम् ।
वज्रमाणिक्यभूषाढ्यं किरीटमकुटोज्ज्वलम् । श्वेताश्वरथ-
मारूढं मेरुंचैव प्रदक्षिणम् । मृणाळकुन्देन्दुपयोहिमप्रभं
सिताम्बरं स्निग्धवळक्षमालिनम् । समस्तशास्त्रश्रुतितत्व-
दर्शिनं ध्यायेत्कविं वांछितवस्तुसम्पदे ॥ शिरो मे
भार्गवः पातु फालं पातु ग्रहाधिपः । नेत्रे दैत्यगुरुः
पातु श्रोत्रे श्रीचन्दनद्युतिः । पातु मे नासिकां काव्यो
वदनं दैत्यवन्दितः । रसनामुशनाः पातु कण्ठं श्रीकण्ठ-
भक्तिमान् ॥ भुजौ तेजोनिधिः पातु वक्षो योगविदां
वरः । अक्षमालाधरो रक्षेत् कुक्षिं मे चक्षुषाङ्करः ॥
कटिं मे पातु विश्वात्मा सक्थिनी सर्वपूजितः । जानु-
नीतु भृगुः पातु जङ्घे मे महतां वरः ॥ गुल्फौ गुण-
निधिः पातु पादौ मे पाण्डुराम्बरः ॥ सर्वाण्यङ्गानि

मे पातु शुक्रः कविरहर्निशम् ॥ य इदं कवचं दिव्यं पठेच्च श्रद्धयान्वितः । न तस्य जायते पीडा भार्गवस्य प्रसादतः ॥

इति श्रीस्कान्देमहापुराणे शङ्करसंहितायां शुक्रकवचः ॥

---

## ॥ अपराधस्तोत्रम् ॥

परिपूर्ण परानन्द परचित्सत्यविग्रह ।
सुन्दरेश्वर सर्वज्ञ त्राहि मामपराधिनम् ॥ १
फालाक्षिजातज्वलनलेलिहानमनोभव ।
जीवन्मुक्तिपुरीनाथ त्राहि मामपराधिनम् ॥ २
पारिजातगुणातीत पादपङ्कजवैभव ।
कदम्बकाननाध्यक्ष त्राहि मामपराधिनम् ॥ ३
भक्तप्रार्थितसर्वार्थ कामधेनो पुरान्तक ।
करुणावरुणावास त्राहि मामपराधिनम् ॥ ४

कैवल्यदाननिरत कालकूटभयापह ।
कन्यकानगरीनाथ त्राहि मामपराधिनम् ॥ ५
कमलापतिवागीश शचीश प्रमुखामरैः ।
परिपूजितपादाब्ज त्राहि मामपराधिनम् ॥ ६
पञ्चास्य पन्नगाङ्काभ परानन्दप्रदायक ।
पर्वताधीशजामातस्त्राहि मामपराधिनम् ॥ ७
परात्पर पदाम्भोज परिध्यानरतात्मनाम् ।
कांक्षितार्थप्रद स्वामिन् त्राहि मामपराधिनम् ॥ ८
सुन्दरेश्वर सर्वेश स्मरसौभाग्यसिद्धिद ।
श्रीमन् सुन्दरपाण्ड्येश त्राहि मामपराधिनम् ॥ ९
अपराधाष्टकं स्तोत्रं यः पठेत्तव सन्निधौ ।
तस्यानन्तापराधं च क्षमस्व करुणाम्बुधे ॥ १०

इति हालास्यमाहात्म्यान्तर्गतापराधस्तोत्रम् ॥



## ॥ श्रीगणेशविलासस्तुतिः ॥

वामदेवतनूभवं निजवामभागसमाश्रितं वल्लभामा-
श्लिष्यतन्मुखवल्गुवीक्षणदीक्षितम् । वातनन्दनवांछि-
तार्थविधायिनं सुखदायिनं वारणाननमाश्रये वन्दारु-
विघ्न निवारणम् ॥ १

कारणं जगतां कलाधरधारिणं शुभकारिणं काय-
कान्तिजितारुणं कृतभक्तपापविदारणम् । वादिवाक्सह-
स्कारिणं वाराणसीसञ्चारिणं वार ... ॥ २

मोहसागरतारकं मायाविकुहनावारकं मृत्युभयपरि-
हारकं रिपुकृत्यदोषनिवारकम् । पूजकाशापूरकं पुण्या-
र्थसत्कृतिकारकं वार ... ॥ ३

आखुदैत्यरथाङ्गमरुणमयूखमर्थिसुखार्थिनं शेखरी-
कृतचन्द्ररेखमुदारसुगुणमदारुणम् । श्रीखनिं श्रित-
भक्तनिर्जरशाखिनं लेखावनं वार ॥ ··· ॥ ४

तुङ्गमूषकवाहनं सुरपुङ्गवारिविमोहनं मंगळायतनं
महाजनभङ्गशान्तिविधायिनम् । अङ्गजान्तकनन्दनं सुख-
भृङ्गपद्मोदंचनं वार ··· ॥ ५

राघवेश्वररक्षकं रक्षौघदक्षणशिक्षकं श्रीघनं श्रित-
मौनिवचनामोघतासम्पादनम् । श्लाघनीयदयागुणं मघ-
वत्तपःफलपूरणं वार ··· ॥ ६

कञ्चन श्रुतिगोप्यभाव मकिञ्चनांश्च दयारसै स्सिंच-
तानिजवीक्षणेन समञ्चितार्थसुखास्पदम् । पञ्चवक्त्रसुतं
सुरद्विड्वंचनादृतकौशलं वार ··· ॥ ७

यच्छतक्रतुकामितं प्रायच्छदर्चितमादराद्यच्छतच्छ-
दसाम्यमन्वनुगच्छतीच्छतिसौहृदम् । तच्छुभंयुकराम्बुजं
तव दिक्पति श्रियमर्थिने वार ··· ॥ ८

राजराजकिरीटिकोटिविराजमानमणिप्रभापुञ्जरञ्जित

मञ्जुलांघ्रिसरोजमज्जनावहम् । भञ्जकं दिविषद्विषा-
मनुरञ्जकं मुनिसन्तते र्वार ... ॥ ९

शिष्टकष्टनिघर्हणं सुरजुष्ट निजपदाविष्टरं दुष्टशिक्षण-
पूर्वहं मुनिपुष्टितुष्टिप्रदम् । अष्टमूर्तिसुतं सुकरुणा-
निष्टमविनष्टादरं वार ... ॥ १०

मुण्ठमुष्कवितर्कहरणाकुण्ठशक्तिदमर्थिने शाट्य-
विरहितवितरणं श्रीकण्ठकृतसम्भाषणम् । काठकश्रुति-
गोचरं कृतमाठपत्यपरीक्षणं वार ... ॥ ११

पुण्डरीककृताननं शशिखण्डकलिताशिखण्डं कुण्ड-
लीश्वरपाण्डितोदरमण्डजेशाभीष्टदम् । दण्डपाणिभयापहं
मुनिमण्डलीपरिमण्डनं वार ... ॥ १२

गूढमाम्नायाशयं परिलीढमर्थिमनोरथैर्गाढमाश्लिष्टं
गिरीश गिरीशजाभ्यां सादरम् । प्रौढसरसकवित्वसिद्धि-
समूढनिजभक्तावनं वार ... ॥ १३

पाणिधृतपाशांकुशं गीर्वाणगणसन्दर्शकं श्रोणदी-

धितिमप्रमेयमपर्णयापरिपोषितम् । काणखञ्जकुणीष्टदं
विश्राणितद्विजनामितं वार ... ॥ १४

भूतभव्यभवद्विभुं परिधूतपातकमीशसञ्जातमंघ्रि-
वेलासजितकञ्जातमजितमरातिभिः । शीतरश्मिरवीक्षणं
निर्गीतमाम्नायोक्तिभिर्वार ... ॥ १५

प्रार्थनीयपदं महात्मभिरर्थितं पुरवैरिणाऽनाथवर्ग
मनोरथानपि सार्थयन्तमहर्निशम् । पान्थसत्पथदर्शकं
गणनाथमस्मदैवतं वार ... ॥ १६

खेदशामकसुचरितं स्वाभेदबोधकमद्वयं मोदहेतुगुणा-
करं वाग्वादविजयदमैश्वरं । श्रीदमनुपमसौहृदं सम्भेदकं
रिपुसन्तते वार ... ॥ १७

मुग्ध मौग्ध्यनिवर्तकं रुचिमुग्धमुर्वनुकम्पया दिग्ध-
मुद्धृतपादनतजनमुद्धरन्तमिमं च माम् । शुद्धचित्सुख
विग्रहं परिशुद्धवृत्त्यभिलक्षितं वार ... ॥ १८

सानुकम्पमनारतं मुनिमानसाब्जमराळकं दीनदैन्य-
विनाशकं सितभानुरेखाशेखरम् । गानरसविद्गीतसुच-
रितमेनसामपनोदकं वार ... ॥ १९

कोपतापनिरासकं सामीप्यदं निजसत्कथालापिनां मनुजापिजनतापापहरमखिलेश्वरम् । सापराधिजनाय शापदमापदां परिहारकं वार ... ॥ २०

रिष्फगेषु खगेषुजातो दुष्फलं समवाप्नुयात्सत्फलाय गणेशमर्चतु निष्फलं नतदर्पणम् । यः फलीभूतः क्रतूनां तत्फलानामीश्वरं वार ... ॥ २१

अम्बरं यद्वद्विनिर्मलमम्बुदैराच्छाद्यते बिम्बभूतमुमुष्य जगतस्साम्ब सुतमज्ञानतः । तं बहिस्संगूहितं हेरम्बमालम्ब्य सतां वार ... ॥ २२

डम्भकर्माचरणकृतसौरम्भयाजिमुखेमनुस्तम्भकारिणमङ्गनाकुचकुम्भपरिरम्भातुरैः । शम्भुनुतमाराधितं कृतिसम्भवायच कामिभि र्वार ... ॥ २३

स्तौमि भूतगणेश्वरं सप्रेममात्मस्तुतिपरे कामितप्रदमर्थिने धृतसोममभयदमाश्विने । श्रीमतानवरात्रदीक्षो दामवैभवभावितं वार ... ॥ २४

आयुरारोग्यादिकामितदायिनं प्रतिहार्यनं श्रेयसे

सर्वैर्युगादौ भूयसे सम्भावितम् । कायजीवियोग कालापायहरमन्त्रेश्वरं वार ··· ॥ २५

वैरिषट्कनिरासकं कामारिकामितजीवितं शौरि-चिन्ताहारकं कृतनारिकेळाहारकम् । दूरनिर्जितपातकं संसारसागरसेतुकं ··· ॥ २६

कालकालकलाभवं कलिकालिकाघविरोधिनं मूल-भूतममुष्य जगतः श्रीलतोपन्नायितम् । कीलकं मन्त्रादि-सिद्धे पालकं मुनिसन्तते ··· ॥ २७

भावुकारंभावसरसम्भावितं भर्गोप्सितं सेवका वन-दीक्षितं सहभावमोजस्तेजसोः । पावनं देवेषु सामस्ताव-केष्टविधायकं वार ··· ॥ २८

काशिकापुरकळितनिवसति मीशमस्मच्चेतसः पाशि-शिक्षा पारवश्यविनाशकं शशिभासकम् । केशवादि-समर्चितं गौरीशगुप्तमहादनं वार ··· ॥ २९

पेषकं पापस्य दुर्जनशोषकं सुविशेषकं पोषकं सुज-

नस्य सुन्दरवेषकं निर्दोषकम् । मूषकं त्वधिरुह्य भक्त-
मनीषितप्रतिपादकं वार ... ॥ ३०

वासवादिसुरार्चितं कृतवासुदेवाभीप्सितं भासमान-
मुरुप्रभाभिरुपासकाधिकसौहृदम् । ह्रासकं दुरहंकृतु
र्निर्यासकं रक्षस्तते वार ... ॥ ३१

बाहुलेयगुरुं त्रयी यं प्राह सर्वगणेश्वरं गूढं मुनि-
मानसैरव्याहताधिकवैभवम् । आहिताग्निहितं मनीषिभि-
रूहितं सर्वत्र तं वार ... ॥ ३२

केळिजितसुरशाखिनं सुरपालिपूजितपादुकं व्याळ-
परिवृढकङ्कणं भक्तालिरक्षणदीक्षितम् । कालिकातनयं
कळानिधिमौळिमान्नायस्तुतं वार ... ॥ ३३

दक्षिणेन सुरेषु दुर्जनाशिक्षणेषु पटीयसा रक्षसामप-
नोदकेनमहोक्षवाहस्रेयसा । रक्षिता वयमक्षराष्टकलक्ष-
जप्तो येनवै वार ... ॥ ३४

रत्नगर्भगणेश्वरस्तुतिनूत्नपद्यततिं पठेद्यत्नवान्यः प्रति-

दिनं द्राक्प्रत्नवाक्सदृशार्थदाम् । रत्नरुक्मसुखोच्छ्रयं सारत्नविरहितमाप्नुया द्वार ··· ॥ ३५

सिद्धिनायकसंस्तुतिं सिद्धान्ति सुब्रह्मण्य हृच्छुद्धये समुदीरितां वाग्बुद्धिबलसन्दायिनीम् । सिद्धये पठतानु-वासरमीप्सितस्य मनीषिणः श्रद्धया निर्विघ्नसम्पद्बृद्धिरपि भविता यतः ॥ ३६

इति श्रीसुब्रह्मण्ययोगिविरचितं रत्नगर्भं गणेशविलासस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ गणेशपञ्चचामरस्तोत्रम् ॥

नमो गणाधिपाय ते त्वयाजगद्विनिर्मितं निजेच्छया चपाल्यतेऽधुनावशे तव स्थितम् । त्वमन्तरात्मकोऽस्य-मुष्य तन्मयिस्थितः पुनीहि मां जगत्पतेम्बिकातनूज नित्यशाङ्करे ॥ १

गणेश्वरः कृपानिधिर्जगत्पतिः परात्परः प्रभुस्स्वलीलयाभवच्छिवान्मदावळाननः । गिरीन्द्रजातनूभवस्तमेव सर्वकर्मसु प्रपूजयन्ति देहिनस्समाप्नुवन्तिचेप्सितम्. २

चतुःपुमर्थदायिभिश्चतुष्करैर्विलम्बिना सहोदरेण सोदरेण पद्मजाण्डसन्ततेः । पदद्वयेन चापदां निवारकेण भासुरं भजे भवात्मजं प्रभुं प्रसन्नवक्त्रमद्वयम् ॥ ३

बलिष्ठमूषकाधिराजपृष्ठनिष्ठविष्टरप्रतिष्ठितंगणप्रवर्हपारमेष्ठ्यशोभितम् । गरिष्ठमात्मभक्तकार्यविघ्नवर्गभञ्जने पटिष्ठमाश्रितावने भजामि विघ्ननायकम् ॥ ४

भजामि शूर्पकर्णमग्रजं गुहस्य शङ्करात्मजं गजाननं समस्तदेववृन्दवन्दितम् । महान्तरायशान्तिदं मतिप्रदं मनीषिणां गतिं श्रुतिस्मृतिस्तुतं गणेश्वरं महीश्वरम् ॥ ५

यदंघ्रिपल्लवस्मृतिर्निरन्तरायसिद्धिदा यमेव बुद्धिशालिनस्स्मरन्त्यहर्निशं हृदि । यमाश्रितस्तरत्यलंघ्यकालकर्मबन्धनं तमेवचित्सुखात्मकं भजामि विघ्ननायकम्॥

कराम्बुजस्फुरद्वराभयाक्षसूत्र पुस्तक स्तृणिस्सबीज-
पूरकं जपाशदन्त मोदकान् । वहन्किरीटकुण्डलादि
दिव्यभूषणोज्वलो गजाननो गणाधिपः प्रभुर्जयत्यह-
र्निशम् ॥ ७

गिरीन्द्रजामहेशयोः परस्परानुरागजं निजानुभूत-
चित्सुखं सुरैरुपास्यदैवतम् । गणेश्वरं गुरुं गुहस्य विघ्न-
वर्गघातिनं गजाननं भजाम्यहं नदैवमन्यमाश्रये ॥ ८

गणेशपञ्चचामरस्तुतिं पठध्वमादरात् मनीषितार्थ-
दायकं मनीषिणः कलौ युगे। निरन्तराय सिद्धिदं चिरन्त-
नोक्तिसम्मतं निरन्तरं गणेशभक्ति शुद्धचित्तवृत्तयः ॥९

इति श्रीसुब्रह्मण्ययोगिविरचितं श्रीगणेश पञ्चचामरस्तोत्रम् ॥

## ॥ श्रीगणेशप्रभावस्तुतिः ॥

ओमित्यादौ वेदविदो यं प्रवदन्ति ब्रह्माद्या यंलोकविधाने प्रणमन्ति । योन्तार्यामी प्राणिगणानां हृदयस्थस्तं विघ्नेशं दुःखविनाशं कलयामि ॥ १

गङ्गागौरी शङ्करसन्तोषकवृत्तं गन्धर्वाळीगीतचरित्रं सुपवित्रम् । यो देवानामादिरनादिर्जगदीशस्तं ... ॥ २

गच्छेत्सिद्धिं यन्मनुजापी कार्याणां गन्तापारं संसृतिसिन्धोर्यद्वेत्ता । गर्वग्रन्थेर्यः किल भेत्ता गणराजस्तं...॥

तारुण्येत्युच्चैर्वर्णजपादौ पूजार्थं यद्यंत्रान्तःपश्चिमकोणे निर्दिष्टं । बीजं ध्यातुः पुष्टिदमाथर्वणवाक्यैस्तं ... ॥४

पद्भ्यां पद्म श्रीमदहृद्भ्यां प्रत्यूषे मूलाधरान्भोरुहभास्वद्भानुभ्यां । योगी यस्य प्रत्यहमजपार्पणदक्षस्तं ... ॥ ५

तत्वं यस्य श्रुतिगुरुवाक्यै रधिगत्य ज्ञानी प्रारब्धानु-

भवान्तो निजधाम । शान्ताविद्या तत्कृतबोधस्त्वय-
मीयात्तं ... ॥ ६

येये भोगा लोकहितार्थास्सपुमर्था येये योगास्साध्य-
सुलोकास्सुकृतार्थाः । ते सर्वे स्युर्यन्मनु जपतः पुरु-
षाणां तं ... ॥ ७

नत्वा नित्यं यस्य पदाब्जं मुहुरर्थी निर्द्वैतात्माखण्ड-
सुखस्स्याद्धतमोहः । कामान्प्राप्नोतीति किमाश्चर्यमिदानीं
तं ... ॥ ८

मस्तप्रोद्यद्बन्द्रकिशोरं करवक्त्रं पुस्ताक्षस्रक्पाशसृणी
स्फीतकराब्जं । शूर्पश्रोत्रं सुन्दरगात्रं शिवपुत्रं तं ...॥

सिद्धान्तार्थं सिद्धिगणेश स्तुतिमेनां सुब्रह्मण्याह्वय-
सूर्युक्तां मनुयुक्तां । उक्त्वा श्रुत्वापेक्षितकार्यं निर्विघ्नं
मुक्त्वा मोहं बोधमुपेयात्तद्भक्तः ॥ १०

इति श्रीसुब्रह्मण्ययोगिविरचिता श्रीगणेशमन्त्रप्रभावस्तुतिः ॥

## ॥ श्रीगणेशभुजङ्गस्तुतिः ॥



श्रियः कार्यसिद्धेर्धियस्सत्सुखर्धेः पतिं सज्जनानां गतिं दैवतानाम् । नियन्तारमन्तस्स्वयं भासमानं भजे विघ्नराजं भवानीतनूजम् ॥ १

गणानामधीशं गुणानां सदीशं करीन्द्राननं कृत्तकन्दर्पमानं । चतुर्बाहुयुक्तं चिदानन्दसक्तं भजे ... ॥

जगत्प्राणवीर्यं जनत्राणशौर्यं सुराभीष्टकार्यंसदाक्षोभ्यधैर्यं । गुणिश्लाघ्यचर्यं गणाधीशवर्यं भजे ... ॥

चलद्भक्तुण्डं चतुर्बाहुदण्डं मदस्राविगण्डं मिळच्चन्द्रखण्डम् । कनद्दन्तकाण्डं मुनित्राणशौण्डंभजे ... ॥

निरस्तान्तरायं परिध्वस्तमायं चिदानन्दकायं सदामत्सहायम् । अजस्रानपायं त्वजञ्चाप्रमेयं भजे ... ॥

वरं चाभयं पाशपुस्ताक्षसूत्रस्रृणीन्बीजपूरं करैः पङ्कजंच । दधानं सरोजासनं शक्तियुक्तं भजे ... ॥ ६

महामूषकारूढमाधारशक्त्या समाराधितांघ्रिं महा-

मातृकाभिः । समावृत्य संसेवितं देवताभिर्भजे ... ॥७

श्रुतीनां शिरोभिस्तुतं सर्वशक्तं पतिं सिद्धिबुद्ध्योर्गतिं भूसुराणाम् । सुराणां वरिष्ठं गणानामधीशं भजे ...॥

गणाधीशसाम्राज्यसिंहासनस्थं समाराध्यमब्जासनाद्यैस्समस्तैः । फणाभृत्समाबद्धतुण्डं प्रसन्नं भजे ... ॥

लसन्नागकेयूरमञ्जीरहारं भुजङ्गाधिराजस्फुरत्कर्णपूरम् । कनद्भूतिरुद्राक्षरत्नादिभूषं भजे ... ॥ १०

स्फुरद्व्याघ्रचर्मोत्तरीयोपधानं तुरीयाद्वयात्मानुसन्धानधुर्यम् । तपोयोगिवर्यं कृपोदारचर्यं भजे ... ॥ ११

निजज्योतिषा द्योतयन्तं समस्तं दिविज्योतिषां मंडलं चात्मनांच । भजद्भक्तसौभाग्यसिद्ध्यर्थबीजं भजे ... ॥

सदावासकल्याणपुर्यां निवासं गुरोराज्ञया कुर्वता भूसुरेण । महायोगिवेल्नाडुसिद्धान्तिना यत्कृतंस्तोत्रमिष्टार्थदं तत्पठध्वम् ... ॥ १३

इति श्रीसुब्रह्मण्ययोगिविरचितं श्रीगणेशभुजङ्गस्तोत्रम् ॥

## ॥ अभिलाषाष्टकस्तोत्रम् ॥

एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं सत्यं सत्यं नेह नानास्ति किंचित् । एको रुद्रो नद्वितीयोऽवतस्थे तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम् ॥ १

एकः कर्ता त्वं हि सर्वस्य शम्भो नानारूपो ह्येकरूपो ह्यरूपः । यद्वत्प्रत्यंच्यर्कएकोप्यनेकस्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये ॥ २

रज्जौ सर्पश्शुक्तिकायां च रौप्यं नैरःपूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ । यद्वत्तद्वद्विष्वगेष प्रपञ्चो यस्मिन् ज्ञाते तं प्रपद्ये महेशम् ॥ ३

तोये शैत्यं दाहकत्वं च वह्नौ तापोभानौशीतभानौ प्रसादः । पुष्पे गन्धो दुग्धमध्येच सर्पिर्यत्तच्छम्भो त्वं ततस्त्वां प्रपद्ये ॥ ४

शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रेरघ्राणस्त्वं व्यंघ्रिरायासि दूरात् । व्यक्षः पश्येस्त्वं रसज्ञोप्यजिह्वः कस्त्वां सम्यग्वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये ॥ ५

नो वेद त्वामीशसाक्षाद्विवेदो नोवा विष्णुर्नोविधा-
ताखिलस्य ।नोयोगीन्द्रा नेन्द्रमुख्याश्च देवा भक्तोवेदत्वा-
मतस्त्वां प्रपद्ये ॥ ६

नो ते गोत्रं नापि जन्मापि नाख्या नोवारूपं नैवशीलं
नदेशः । इत्थंभूतोपीश्वरस्त्वं त्रिलोक्यास्सर्वान्कामान्
पूरयेस्तद्भजे त्वाम् ॥ ७

त्वत्तस्सर्वस्त्वं हि सर्वं स्मरारे त्वं गौरीशस्त्वं चन-
ग्रोसि शान्तः । त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा त्वंच बालस्तत्कि-
यत्तन्नास्त्यतस्त्वां नतोस्मि ॥ ८

स्तुत्वेतिभूमौ निपपातविप्रस्सदण्डवद्यावदतीवहृष्टः ।
तावत्सबालोखिलवृद्धिवृद्धः प्रोवाच भूदेववरं वृणीहि ॥
तत उत्थाय हृष्टात्मा मुनिर्विश्वानरःकृती ।
प्रत्यब्रवीत्किमज्ञातं सर्वज्ञस्य तव प्रभो ॥ १०
सर्वान्तरात्मा भगवान् सर्वं सर्वप्रदो भवान् ।
याच्ञां प्रतिनियुङ्क्ते मां किमीशोदैन्यकारिणीम् ॥११
इतिश्रुत्वा वचस्तस्य देवो विश्वानरस्यह ।

शुचेश्शुचिव्रतस्याथ शुचिस्मित्वाऽब्रवीच्छनैः ॥ १२

बालउवाचः—

त्वया शुचे शुचिष्मत्यां योभिलाषः कृतो हृदि ।
अचिरेणैव कालेन न भविष्यत्यसंशयः ॥ १३
तव पुत्रत्वमेष्यामि शुचिष्मत्यां महामते ।
ख्यातो गृहपतिर्नाम्ना शुचिस्सर्वामरप्रियः ॥ १४
अभिलाषाष्टकं पुण्यं स्तोत्रमेतत्त्वयेरितम् ।
अब्दं त्रिकालपठनात्कामदं शिवसन्निधौ ॥ १५
एतत् स्तोत्रस्य पठनं पुत्रपौत्रधनप्रदम् ।
सर्वशान्तिकरं चापि सर्वापत्परिनाशनम् ॥ १६
स्वर्गापवर्गसम्पत्तिकारणं नात्र संशयः ।
प्रातरुत्थाय सुस्नातो लिङ्गमभ्यर्च्य शाम्भवम् ॥ १७
वर्षं जपन्निदं स्तोत्रमपुत्रः पुत्रवान् भवेत् ।
वैशाखे कार्तिकेमासे विशेषनियमैर्युतः ॥ १८
यः पठेत् स्नानसमये स लभेत्सकलं फलम् ।
कार्तिकस्यतु मासस्य प्रसादा दृढमव्ययः ॥ १९

तव पुत्रत्वमेष्यामि यस्त्वत् स्तोत्रं पठिष्यति ।
अभिलाषाष्टकमिदं नदेयं यस्यकस्यचित् ॥ २०
गोपनीयं प्रयत्नेन महावन्ध्या प्रसूतिकृत् ।
स्त्रिया वा पुरुषेणापि नियमालिङ्गसन्निधौ ॥ २१
अब्दं जप्तमिदं स्तोत्रं पुत्रदं नात्र संशयः ।
इत्युक्तवान्तर्दधे बालः सोपि विप्रो गृहङ्गतः ॥ २२

इति अभिलाषाष्टकस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ आत्मपञ्चकम् ॥

नाहं देहो नेन्द्रियाण्यन्तरङ्गं नाहङ्कारः प्राणवर्गो [1]न चाहम् । दारापत्यक्षेत्रवित्तादिदूरस्साक्षी नित्यः प्रत्यगात्मा शिवोऽहम् ॥ १

रज्ज्वज्ञानाद्भाति रज्जुर्यथाहिस्त्वत्माज्ञानादात्मनो

1. बुद्धिः

जीवभावः । आप्तोक्त्या हि भ्रान्तिनाशे स रज्जुर्जीवो नाहं देशिकोक्त्या शिवोऽहम् ॥ २

आभातीदं विश्वमात्मन्यसत्यं सत्यज्ञानानन्दरूपे विमोहात् । निद्रामोहात्स्वप्नवत्तन्न सत्यं शुद्धः पूर्णो नित्य एकश्शिवोहम् ॥ ३

मत्तो नान्यत्किञ्चिदत्रास्ति विश्वं सत्यं बाह्यं वस्तु मायोपकृप्तम् । आदर्शान्तर्भासमानस्य तुल्यं मय्यद्वैते भाति तस्माच्छिवोऽहम् ॥

नाहं जातो न प्रवृद्धो न नष्टो देहस्योक्ताः प्राकृतास्सर्वधर्माः । कर्तृत्वादिश्चिन्मयस्यास्ति नाहंकारस्यैव ह्यात्मनो मे शिवोऽहम् ॥ ५

नाहं जातो जन्ममृत्यू कुतो मे नाहं प्राणः क्षुत्पिपासे कुतो मे । नाहं चित्तं शोकमोहौ कुतो मे नाहं कर्ता बन्धमोक्षौ कुतो मे ॥ ६

इति श्रीमच्छङ्करभगवत्पादाचार्यस्वामिविरचितात्मपञ्चकम् ॥

## ॥ श्रीगणेशार्यामानसिकपूजास्तोत्रम् ॥

शुभकरमिभराजमुखं शुभ्ररदं शूर्पकर्णमरुणाभम् ।
सुन्दरमंघ्रिजिताब्जं चतुर्भुजं सायुधं कलये ॥ १

बिम्बेऽस्मिन्परिशुद्धे देशेकाले तथोचिते भक्त्या ।
पूतात्मा श्रीगणपतिमन्त्रेणावाहयामि विघ्नेशम् ॥ २

इदमिदमासनमुचितं सौवर्णं रत्नखचितमत्युच्चैः ।
तत्र वरसिंहपीठं भक्त्याते कल्पयामि विघ्नेश ॥ ३

गङ्गादिपुण्यसलिलैर्मङ्गलमूर्तेर्गणेशस्य ।
पदयोः पाद्यं कलये करयोरर्घ्यं कुशाब्जरत्नाढ्यम् ॥ ४

अस्त्विदमाचमनीयं जलमानीतं मरुद्वृधा नद्या ।
विघ्नेशते तथान्यन्मधुपर्कं दधिगुडाद्यैश्च ॥ ५

स्नानं विधेहि भगवन्विघ्नेश्वर पुण्यतीर्थेन ।
पञ्चामृतैश्च पावनशङ्खोदकरत्नगन्धफलतोयैः ॥ ६

तन्तुभिरोतप्रोतं राङ्कवसौवर्णपट्टमाञ्जिष्ठैः ।
वस्त्रं गृहाण भगवन्विघ्नेश्वर वातशीतघ्नम् ॥ ७

शुद्धक्षेत्र समुत्थितकार्पासकृतैश्च तन्तुभिर्नवभिः ।
कलितमुपवीतमेतत्सन्ब्रह्मग्रन्थि शाङ्करेरस्तु ॥ ८
मणिमकुटहारमुख्याभरणगणश्रोणभद्रगणनेतुः ।
घृणिभिरपास्तध्वान्तः कारुणिकस्वाङ्गकेष्वस्तु ॥ ९
श्रीगन्धागरुचन्दनमुस्ताभिर्घ्राणतर्पणोगन्धः ।
मृगमदकेसरराङ्क्व घनसारयुतस्तवास्तु गणराज ॥ १०
त्वामर्चयामि रत्नै स्सलिलयवैः कुंकुमाक्तैश्च ।
शुद्धाखण्डिततण्डुलमन्त्राक्षतमुष्टिभिर्गणाधीश ॥ ११
चन्दनगन्धप्रसृमररक्ताक्षतमौक्तिकप्रवाळाद्यैः ।
कुन्दारविन्दमल्ली मन्दारैरर्चयामि विघ्नेशम् ॥ १२
दूर्वायुग्मं शश्वद्गन्धाक्तं तेऽर्पयामि हेरम्ब ।
परिकल्पितपत्राणिच पुष्पाणिच बिल्वपत्रपूर्वाणि ॥ १३
राजीवसुरगजाजीपुन्नागद्रोणचम्पकोपेतैः ।
करवीरकेतकीचयनन्द्यावर्तैः प्रसीद विघ्नेश ॥ १४
सुरभिर्दशाङ्गजन्य स्सघृतस्ते सागरुर्धूपः ।
परिमलिताशः प्रसरत्वङ्गेष्वम्बातनूज हेरम्ब ॥ १५

गोघृतमज्जद्वर्तित्रितयाग्रप्रज्वलत्प्रदीपानाम् ।
दीप्तिर्गणेश चरणं दर्शयतु श्रीकरं मदीयाक्ष्णोः ॥ १६

अमृतादप्यतिमधुरं सव्यञ्जनभक्ष्यभोज्यपानीयं ।
आस्वाद्यमन्नमुत्तममेतन्नैवेद्यमीशपुत्रस्य ॥ १७

गव्यपयोदधितक्रैर्भव्यैः नवनीतघृतमधुद्रव्यैः ।
दिव्यैश्शीतळपरिमळपानीयैस्तृप्तिमेति विघ्नेशः ॥ १८

अतिमृदुळनागवल्ली दळकलितक्रमुकशकलसम्भारम् ।
मौक्तिकसुधयोपेतं ताम्बूलं शक्तियुक्तगणनेतुः ॥ १९

घनसारसारजातीफलपत्रैलालवङ्गमुख्यानि ।
मुखवासकानि भगवन्मदगजराड्वदन ते सन्तु ॥ २०

वनितात्मजातमन्दिरकनकाभरणादिवित्तसर्वस्वम् ।
चिरकालार्जितसुकृतं वरविघ्नेशाय दक्षिणां कलये ॥२१

आरार्तिकैरनेकैराचितचित्रैस्सकर्पूरैः ।
नीराजयामि नित्यं नित्याखण्डप्रकाशविघ्नेशम् ॥ २२

गणपत्युपनिषदादिश्रुतिमन्त्रानुच्चरन्गणेशस्य ।
पदपद्मयोः पुरस्तात्पुष्पाञ्जलिमर्पयामि तद्भक्त्या ॥ २३

गणपतिरूपं ध्यायन्मन्त्रैस्तल्लिङ्गकैर्मनस्यन्तः ।
मारुतरेचकपूरकमार्गस्थस्त्रिः प्रदक्षिणं कलये ॥ २४
श्रुतिशाखिपल्लवाभ्यां स्मृतिमात्रप्रापितार्थिसौख्याभ्याम् ।
गतिजितमत्तगजाभ्यां नतिरस्त्वेषागणेशचरणाभ्याम् ॥
राजीवसोदराभ्यां पूजाभ्यां पुण्यशालिभिस्सर्वैः ।
भजकेष्टसिद्धिकृद्भ्यां निजरतिरम्बानुतांघ्रिभ्याम् ॥ २६
कुलगिरिकूटप्रतिभटकुम्भस्थलकलितरत्नकोटीर ।
कुवलयविटकोरकधर कुर्यामम्बाकुमार ते प्रणतिम् ॥२७
श्रीगणराजाय नमः श्रीपतिवागीशपूज्यचरणाय ।
श्रितजनचिन्तामणये श्रीकण्ठप्रीतिपुत्राय ॥ २८
अपराधकोटिभाजनमपकृष्टं सदुगैरलसं ।
अनुगृह्य क्षमया मामम्बानुत पूर्वजात परिपाहि ॥ २९
धवळातपत्रचामरयुगळी गजरथतुरङ्गमुख्यानि ।
तव कल्पितानि भक्त्या भगवन्नङ्गीकुरुष्व हेरम्ब ॥३०
आन्दोळिकामुदारामारुह्य श्रीगणेश जयविरुदैः ।
अवलोककजनलोचनसाफल्यं सादरं विधेहीश ॥ ३१

जानेनैव तवार्चन माजानभ्रान्त चपलमूढात्मा ।
जाड्यं मदीयमखिलं जहि भगवन्विघ्नराजसुरपूज्य ॥
क्षन्तव्यो मे मन्तुर्यदहं मूढः कृपानिधे भगवन् ।
सर्वज्ञ शर्वनन्दन हन्तव्यो विघ्नराशिरविलम्बम् ॥ ३३
भोजनशयनोत्थान भ्रमणश्रवणेक्षणादिमत्कृत्यम् ।
राजन्विघ्नगणानां पर्यायस्ते सपर्यायाः ॥ ३४
आश्रित्यगुरुमवाप्य श्रुतिवाक्यान्युचितकर्मकृत्वान्ते ।
तत्फलमखिलं तावकपदयुगळायार्पयामि विघ्नेश ॥ ३५
नाहं करोमि कर्ता कारयिता श्रीगणेश्वरः कर्ता ।
नाहं वदामि वक्ता वाचयिता विघ्नराड्वचो यन्मे ॥ ३६
प्रत्यक्परात्मविभेदः प्रत्यस्तमितः प्रसादमाहात्म्यात् ।
प्रकटितशुद्धाद्वैतप्रसन्नवदनप्रभो गणेशस्य ॥ ३७
ध्यायामि किन्नुभक्त्या विघ्नेशं ध्यात्रभिन्नचैतन्यम् ।
आवाहयामि कस्मिन्बिम्बे तं केवलान्वयव्याप्तिम् ॥ ३८
अखिलाधारस्यासनमुपचारः केवलं गणेशस्य ।
पाद्यं जलप्रवाहैः पूरितपातालपादस्य ॥ ३९

यस्याखिलोत्तमार्हस्याघ्यंत्वतिरिक्तमस्ति सङ्कल्प्यम् ।
आचमनीयं रसयतुरखिलरसानां गणेशस्य ॥ ४०
नित्यविनिर्मलचित्सुखसत्यतनोः स्नपनमतदर्हम् ।
व्यक्तानावृतमूर्तेर्वसनं वा विघ्नराजस्य ॥ ४१
[illegible]नुलिप्तगीतं वा कर्मातीतस्य योगिनां नेतुः ।
आदिमरसजीवातोः किंपुनराभरणमम्बिकासूनोः ॥ ४२
निर्लिप्तस्य नसांप्रतमालेपनमखिलपरिमळद्रव्यैः ।
अक्षतनित्यविभूतेरक्षतयोगोपि विघ्ननाथस्य ॥ ४३
पुष्पार्चनं क कार्यं स्वपुष्पतुलितप्रपंचेस्मिन् ।
निर्धूतसर्वसङ्गे धूपः क्वनु धूमकेतुलक्ष्यार्थे ॥ ४४
जगदुद्दीपकचेतनसाम्राज्याखण्डदीप्तिदीप्राय ।
अतिरिक्तदीपकल्पनमपहासापादकं गणेशाय ॥ ४५
अत्तुश्चराचराणां ब्रह्मक्षत्रोदनस्य नैवेद्यम् ।
उपदंशीकृतमृत्योरुपार्जयेत्कः पुमानुमासूनोः ॥ ४६
तृप्तायचतोयादेः प्राप्तामृतभागिने गणेशाय ।
अशनायादिविहीनायास्वाद्यं किं नु कल्प्यमापिपेयम् ॥

आमोदबोधमूर्तें रामोदार्थं किमत्र ताम्बूलम् ।
नीराजनं च किं वा ताराधिपतेजसो गणेशस्य ॥ ४८

मन्त्रप्रस्तारादिमयंत्राक्षरमातृकानि गुणार्थे ।
तन्त्रेच सिद्धिबुध्यो मैंत्रसुमप्रचयरचनमुपचारः ॥ ४९

आकाशवद्विभुत्वादन्तर्बहिरस्ति पूर्णचिन्मोदः ।
अपरिच्छिन्नो गणपतिरस्य कथं कः प्रदक्षिणं कुर्यात् ॥

कलये न मोहमधुना नन्तव्यो नमनकर्तुरन्यश्चेत् ।
कलये नमोह मथ किं गणपतिं रेवाह मस्मि नन्तव्यः ॥

कुत्र गणेशं विसृजेद्यत्र द्रक्ष्यामि लक्ष्यते तत्र ।
पुत्रदिशवस्य तादृशपूजायामक्षमो नूनम् ॥ ५२

नन्वेष विघ्ननेता नित्यं संपूज्यते कथंकारम् ।
निरवयवत्वा दिन्द्रियगोचरभिन्नं कथं पश्येत् ॥ ५३

स्वज्ञप्तिमात्रविषये स्वाकारे निर्विकारचिद्रूपे ।
स्वात्मानुभूतिपूजन मुचितं स्वाभाविकं गणाधीशे ॥५४

आहोस्विदस्तु पूजन मुपचारै र्मानसै र्गणेशस्य ।
अथवा तत्प्रतिपादकमन्त्रैर्बिम्बे तदर्चनं भवतु ॥ ५५

बिम्बमलंकुर्वन्ति प्रतिबिम्बालंकृतीप्सवो यस्मात् ।
जीवप्रियार्थिता चेत्तव मानस गणपतिं भज रे ॥ ५७

अन्तःकरणसमुद्रे चिन्तासन्तानवीचिसन्दोहे ।
मन्तुजलजन्तुदुर्गे चिंतामणि मन्त्रसंस्मृति स्सुमाणिः ॥
रेरेमानससंस्मरगौरीसुतपादपद्ममनवरतम् ।
दूरेतवास्तु दुर्जन दुरहंकारप्रसङ्गसम्पर्कः ॥ ५८

अस्मत्कर्णरसायनमम्बासुत विघ्नराजसच्चरितम् ।
अञ्जनमक्ष्णोर्दिव्यं गुञ्जामणिपुञ्जमञ्जुळो गणराट् ॥
श्रीमत्सिद्धिविनायकपदपद्माभ्यां प्रपञ्चवन्द्याभ्याम् ।
मान्याभ्यां मुनितातिभिर्मङ्गळमस्मन्मनः प्रसादाभ्याम् ॥
यः पठति लिखति पश्यति वेत्तिच जिज्ञासतेहि सविजयते । गणपत्यार्यास्तोत्रं शृणोति विघ्नो न तस्य कार्येषु ॥

इति श्रीसुब्रह्मण्ययोगिविरचितं गणेशार्यालिशत्युद्धृतं
श्रीगणेशार्यामानसपूजास्तोत्रम् ॥

## ॥ अर्धनारीश्वराष्टकम् ॥



अम्भोधर श्यामल कुन्तलायै तटित्प्रभाताम्रजटाधराय । निरीश्वरायै निखिलेश्वराय नमश्शिवायैच नमश्शिवाय ॥ १

प्रदीप्तरत्नोज्वलकुण्डलायै स्फुरन्महापन्नगभूषणाय । शिवप्रियायै च शिवाप्रियाय नमश्शिवायै च नमश्शिवाय ॥ २

मन्दार माला कलितालकायै कपालमालांकितकन्धराय । दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः ... ॥ ३

कस्तूरिका कुंकुमलेपनायै श्मशानभस्माङ्गविलेपनाय । कृतस्मरायै विकृतस्मराय नमश्शिवायै ... ॥ ४

पादारविन्दार्पितहंसकायै पादाब्जराजत्फणिनूपुराय । कलामयायै विकलामयाय नमः ... ॥ ५

प्रपञ्च सृष्टुन्मुख लास्यकायै समस्त संहारक ताण्डवाय । समेक्षणायै विषमेक्षणाय नमः ... ॥ ६

प्रफुल्ल नीलोत्पल लोचनायै विकास पङ्केरुह लोचनाय । जगज्जनन्यै जगदेकपित्रे नमः ... ॥ ७

अन्तर्बहिश्चोर्ध्वमधश्च मध्ये पुरश्च पश्चाच्च विदिक्षुदिक्षु । सर्वं गतायै सकलंगताय नमः ... ॥ ८

उपमन्युकृतं स्तोत्रमर्धनारीश्वराह्वयम् ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि शिवलोके महीयते ॥ ९

इति श्रीउपमन्युविरचितं अर्धनारीश्वराष्टकम् ॥

---

## ॥ चन्द्रमन्त्रः ॥

---

अस्य श्रीसोममहामन्त्रस्य । गौतमऋषिः ॥ गायत्रीछन्दः ॥ सोमो देवता ॥ सां बीजम् । शीं शक्तिः ॥ सूं कीलकम् ॥ सोमग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ सोमाय अङ्गुष्टाभ्यां नमः । निशाकराय तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ क्षीरोदार्णवसम्भवाय मध्यमाभ्यां वषट् ॥ लक्ष्मीसहोदराय अनामिकाभ्यां हुम् ॥ नारकेशाय

कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥ सुधामूर्तये करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ एवंहृदयादिन्यासः ॥ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥ ध्यानम् ॥ जटाधर शिरोरत्नं श्वेतवर्णं निशाकरम् । ध्यायेदमृतसम्भूतं सर्वकामफलप्रदम् ॥ लमित्यादि पञ्चपूजा ॥ मूलमन्त्रः । आप्यायस्व समेतु ते विश्वतस्सोमवृष्णियं । भवावाजस्य संगथे इति मन्त्रः॥

---

## ॥ चन्द्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

श्रीमान् शशधरश्चन्द्रो ताराधीशो निशाकरः ।
सुधानिधिस्सदाराध्य स्सत्पतिस्साधुपूजितः ॥ १
जितेन्द्रियो जगद्योनिः ज्योतिश्चक्रप्रवर्तकः ।
विकर्तनानुजो वीरो विश्वेशो विदुषां पतिः ॥ २
दोषाकरो दुष्टदूरः पुष्टिमान् शिष्टपालकः ।
अष्टमूर्तिप्रियोऽनन्तकष्टदारुकुठारकः ॥ ३

स्वप्रकाशः प्रकाशात्मा शुचरो देवभोजनः ।
कळाधरः कालहेतुः कामकृत्कामदायकः ॥ ४
मृत्युसंहारकामर्त्यो नित्यानुष्ठानदायकः ।
क्षपाकरः क्षीणपापः क्षयवृद्धिसमन्वितः ॥ ५
जैवातृकश्शुचिश्शुभ्रो जयी जयफलप्रदः ।
सुधामयस्सुरस्वामी भक्तानामिष्टदायकः ॥ ६
मुक्तिदो मुक्तिदो भद्रो भक्तदारिद्र्यभञ्जकः ।
सामगानप्रियस्सर्वरक्षकस्सागरोद्भवः ॥ ७
भयान्तकृद्भक्तिगम्यो भवबन्धविमोचकः ।
जगत्प्रकाशकिरणो जगदानन्दकारणः ॥ ८
निस्सपत्नो निराहारो निर्विकारो निरामयः ।
भूच्छायाच्छादितो भव्यो भुवनप्रतिपालकः ॥ ९
सकलार्तिहरस्सौम्य जनकस्साधुवन्दितः ।
सर्वागमज्ञस्सर्वज्ञो सनकादिमुनिस्तुतः ॥ १०
सितच्छत्रध्वजोपेतश्शीताङ्गश्शीतभूषणः ।
श्वेतमाल्याम्बरधर श्श्वेतगन्धानुलेपनः ॥ ११

दशाश्वरथसंरूढो दण्डपाणिर्धनुर्धरः ।
कुन्दपुष्पोज्ज्वलाकारो नयनाब्जसमुद्भवः ॥ १२
आत्रेयगोत्रजोऽत्यन्त विनयःप्रियदायकः ।
करुणारससम्पूर्णः कर्कटप्रभुरव्ययः ॥ १३
चतुरश्रासनारूढ श्चतुरो दिव्यवाहनः ।
विवस्वन्मण्डलाज्ञेय वासो वसुसमृद्धिदः ॥ १४
महेश्वरप्रियो दान्तः मेरुगोत्रप्रदक्षिणः ।
ग्रहमण्डलमध्यस्थो ग्रसितार्को ग्रहाधिपः ॥ १५
द्विजराजो द्युतिलको द्विभुजो द्विजपूजितः ।
औदुम्बर नगावास उदारो रोहिणीपतिः ॥ १६
नित्योदयो मुनिस्तुत्यो नित्यानन्दफलप्रदः ।
सकलाह्लादनकरः पलाश समिधप्रियः ॥ १७

एवं नक्षत्रनाथस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥

## ॥ परमेश्वरस्तुतिसारस्तोत्रम् ॥

त्वमेकश्शुद्धोऽसि त्वयि निगमबाह्यामलमयं प्रपञ्चं पश्यन्ति भ्रमपरवशाः पापनिरताः । बहिस्तेभ्यः कृत्वा स्वपदशरणं मानय विभो गजेन्द्रे दृष्टं ते शरणदवदान्यं स्वपददम् ॥ १

न सृष्टेस्तेहानिर्यदि हि कृपयातोऽ वसि च मां त्वयानेके गुप्ता व्यसनमिति तेस्ति श्रुतिपथे । अतो मामुद्धर्तुं घटय मयि दृष्टिं सुविमलां न रिक्तां मे याञ्चां स्वजनरत कर्तुं भव हरे ॥ २

कदाहं भो स्वामिन्नियतमनसा त्वां हृदि भजन्नभद्रे संसारे ह्यनवरतदुःखेतिविरसः । लभेयं तां शान्तिं परममुनिभिर्या हृदि गता दयां कृत्वा मे त्वं विरत परशान्तिं भव हरे ॥ ३

विधाता चेद्विश्वं सृजति सृजतां मे शुभकृतिं विभुस्त्रेत्पाता मामवतु जनिमृतेर्दुःखजलधेः । हरस्संहर्ता

संहरतु मम शोकं सजनकं यथाहं मुक्तस्स्यां किमपितु यथा ते विदघताम् ॥ ४

अहं ब्रह्मानन्दस्त्वमपिच तदाख्यस्सुविदितस्ततोहं भिन्नो नो कथमपि भ[1]वात्तेश्रुतिदृशा । तथाचेदानीं त्वं त्वयि मम विभेदस्य जननीं स्वमायां संवार्य प्रभव मम भेदं निरसितुम् ॥ ५

कदाहं हे स्वामिन् जनिमृतिमयं दुःखनिबिडं भवं हित्वा सत्येऽनवरतसुखे स्वात्मवपुषि । रमे तस्मिन्नित्यं निखिलमुनयो ब्रह्मरसिका रमन्ते यस्मिंस्ते कृतसकलकृत्या यतिवराः ॥ ६

पठन्त्येके शास्त्रं निगममपरे तत्परतया यजन्त्यन्ये त्वां वै ददति च पदार्थांस्तव हितम् । अहं तु स्वामिंस्ते शरणमगमं संसृतिभयाद्यथा ते प्रीतिस्स्याद्धितकर तथा त्वं कुरु विभो ॥ ७

---

1 वत्तः ।

अहं ज्योतिर्नित्यो गगनमिव तूष्णीस्सुखमयः श्रुतिस्सिद्धोऽद्वैतः कथमपि न भिन्नोस्मि विधुतः । इति ज्ञाते तत्त्वे भवति च परस्संसृतिलयादतस्तत्त्वज्ञानं मयि विघटये त्वं हि कृपया ॥ ८

अनादौ संसारे जनिमृतिमये दुःखितमना मुमुक्षुस्सन्कश्चिद्व्रजति हि गुरुं ज्ञानपरमम् । ततो ज्ञात्वायं वैनुदति न पुनः क्लेशनिवहैर्भजेहं तं देवं भवति च परो यस्य भजनात् ॥ ९

विवेको वैराग्यं नच शमदमाद्यास्त्वयि परे मुमुक्षा मे नास्ति प्रभवति कथं ज्ञानममलम् । अतस्संसाराब्धेस्तरणसरणिं मामुपदिशन् स्वबुद्धिं श्रौतीं मे वितर भगवंस्त्वं हि कृपया ॥ १०

कदाहं भो स्वामिन्निगममतिवेद्यं शिवमयं चिदानन्दं नित्यं श्रुतिहृतपरिच्छेदनिवहम् । त्वदर्थाभिन्नं त्वामभिरम इहात्मन्यविरतं मनीषामेवं मे सफलय वदान्य स्वकृपया ॥ ११

यदर्थं सर्वं वै प्रियमसुधनादि प्रभवति स्वयं नान्यार्थो

हि प्रियइति च वेदे प्रविदितम् । स आत्मा सर्वेषां जनिमृतिमतां वेदगदितस्ततोहं तं वेद्यं सततममलं यामि शरणम् ॥ १२

मया त्यक्तं सर्वं कथमपि भवेत्स्वात्मनि मतिस्त्वदीया माया मां प्रति तु विपरीतं कृतवती । ततोहं किं कुर्यां न हि मम मतिः क्वापि चरति दयां कृत्वा नाथ स्वपदशरणं देहि शिवदम् ॥ १३

नगा दैत्याः कीशा भवजलधिपारं हि गमिता-स्त्वया चान्ये स्वामिन्किमिति समयेस्मिञ्छयितवान् । न हेलां त्वं कुर्या स्त्वयि विहितसर्वे मयि विभो नहि त्वाहं हित्वा किमपि शरणं चान्यमगमम् ॥ १४

अनन्ताद्या विज्ञानगुणजलधे स्ते तमगमन्नतःपारं यायात्तव गुणगणानां कथमयम् । गृणन्यावद्धि त्वा जनिमृतिहरं याति परमां गतिं योगिप्राप्यामिति मनसि [1]दुर्वाहमनवम् ॥ १५

इति श्रीमन्मौक्तिक रामोदासीनशिष्य ब्रह्मानन्दविरचितं परमेश्वरस्तुतिसारस्तोत्रम् ॥

---

1 बुद्ध्वा ।

## ॥ वसिष्ठकृतपरमेश्वरस्तोत्रम् ॥



लिङ्गमूर्तिं शिवं स्तुत्वा गायत्र्या योगमाप्तवान् ।
निर्वाणं परमं ब्रह्म वसिष्ठोन्यश्च शङ्करात् ॥ १

नमः कनकलिङ्गाय वेदलिङ्गाय वै नमः ।
नमः परमलिङ्गाय व्योमलिङ्गाय वैनमः ॥ २

नमःसहस्रलिङ्गाय वह्निलिङ्गाय वै नमः ।
नमः पुराणलिङ्गाय श्रुतिलिङ्गाय वैनमः ॥ ३

नमः पाताळलिङ्गाय ब्रह्मलिङ्गाय वैनमः ।
नमो रहस्यलिंगाय सप्तद्वीपोर्ध्वलिंगिने ॥ ४

नमस्सर्वात्मलिंगाय सर्वलोकाङ्गलिंगिने ।
नमस्त्वव्यक्तलिंगाय बुद्धिलिंगाय वैनमः ॥ ५

नमोहङ्कारलिंगाय भूतलिंगाय वै नमः ।
नम इन्द्रियलिंगाय नमस्तन्मात्रलिंगिने ॥ ६

नमः पुरुषलिंगाय भावलिंगाय वैनमः ॥
नमोरजोऽर्धलिंगाय सत्त्वलिंगाय वैनमः ॥ ७

नमस्ते भवलिंगाय नमस्त्रैगुण्यलिंगिने ।
नमो नागतलिंगाय तेजोलिंगाय वैनमः ॥ ८
नमो वायूर्ध्वलिंगाय श्रुतिलिंगाय वैनमः ।
नमस्तेऽधर्मलिंगाय सामलिंगाय वैनमः ॥ ९
नमो यज्ञाङ्गलिंगाय यज्ञलिंगाय वैनमः ।
नमस्ते तत्त्वलिंगाय देवानुगतलिंगिने ॥ १०
दिश नः परमं योग मपत्यं मत्समं तथा ।
ब्रह्म चैवाक्षयं देव शमं चैवं परं विभो ॥ ११
अक्षयत्वं च वंशस्य धर्मे च मतिमक्षयाम् ॥ *

अग्निः—

वसिष्ठेन स्तुतश्शम्भुस्तुष्टश्श्रीपर्वते पुरा ।
वसिष्ठाय वरं दत्वा तत्रैवान्तरधीयत ॥ १२

इति श्रीमहापुराणे आग्नेये अग्निवसिष्ठसंवादे वसिष्ठकृत परमेश्वरस्तुतिर्नाम सप्तदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥

## ॥ परापूजास्तोत्रम् ॥

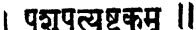
पूर्णस्यावाहनं कुत्र सर्वाधारस्य चासनम् ।
स्वच्छस्य पाद्यमर्घ्यं च शुद्धस्याचमनं कुतः ॥ १
निर्मलस्य कुतस्स्नानं वस्त्रं विश्वोदरस्य च ।
निरालम्बस्योपवीतं पुष्पं निर्वासनस्य च ॥ २
निर्लेपस्य कुतो गन्धो रम्यस्याभरणं कुतः ।
नित्यतृप्तस्य नैवेद्यं ताम्बूलं च कुतो विभोः ॥ ३
प्रदक्षिणाह्यनन्तस्य ह्यद्वयस्य कुतो नतिः ।
वेदवाक्यै रवेद्यस्य कुतस्स्तोत्रं विधीयते ॥ ४
स्वयंप्रकाश[1]रूपस्य कुतो नीराजनं विभोः ।
अन्तर्बहिश्च पूर्णस्य कथमुद्वासनं भवेत् ॥ ५
एवमेव परा पूजा सर्वावस्थासु सर्वदा ।
एकबुद्ध्या तु देवेश विधेया ब्रह्मवित्तमैः ॥ ६

इति श्रीपरापूजास्तोत्रम् ॥

---

1 मानस्य ।

## ॥ पशुपत्यष्टकम् ॥



पशुपतीन्दुपतिं धरणीपतिं भुजगलोकपतिं च सती-पतिम् । प्रणत भक्तजनार्तिहरं भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् ॥ १

न जनको जननी न च सोदरो न तनयो न चभूरि वलं कुलम् । अवति कोपि न कालवशं गतं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ २

मुरजडिण्डिमवाद्य विलक्षणं मधुर पञ्चमनाद विशा-रदम् । प्रमथभूतगणैरपि सेवितं भजत रे ··· ॥ ३

शरणदं सुखदं शरणान्वितं शिवशिवेति शिवेति ब्र(न)तं नृणाम् । अभयदं करुणावरुणालयं भजत रे ॥

नरशिरोरचितं मणिकुण्डलं भुजगहारमुदं वृषभ-ध्वजम् । चितिरजोधवलीकृतविग्रहं भजत रे ···॥ ५

म(ख)दविनाशकरं शशिशेखरं सततमध्वरभाजि-फलप्रदम् । प्रलयदग्धसुरासुरमानवं भजत रे ···॥ ६

कटिं कालात्मजः पातु ऊरू पातु सुरेश्वरः ॥
जानुनी रोहिणीसूनुः पातु जङ्घे फलप्रदः ।
पादौ बाणासनः पातु पातु सौम्योखिलं वपुः ॥
एषोऽपि कवचः पुण्यः सर्वोपद्रवशांतिदः ।
सर्वरोगप्रशमनः सर्वदुःखनिवारकः ॥
आयुरारोग्यशुभदः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः ॥
यः पठेत्कवचं दिव्यं शृणुयाद्वा समाहितः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति ॥

इति बुधकवचः ॥

---

## ॥ बुधग्रहस्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीबुधस्तोत्रमहामन्त्रस्य वसिष्ठऋषिः । त्रिष्टुप् छन्दः । श्रीबुधो देवता । बुधग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । बा मित्यादि षडङ्गन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

बुधश्चतुर्भिर्वरदाभयासिगदा वहन्तं वरदं प्रशान्तम् ।
पीतप्रभं चन्द्रसुतं सुराद्यं सिंहे निषण्णं बुधमाश्रयामि॥

*पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी च चतुर्भुजः ।
पीतध्वजपताकी च रोहिणीगर्भसम्भवः ॥
ईशान्यादिषु देशेषु बाणासन उदङ्मुखः ।
नाथो मगधदेशस्य मन्त्रो मन्त्रार्थतत्ववित् ॥
सुखासनः कर्णिकारो जेत्रश्चात्रेयगोत्रवान् ।
भरद्वाजऋषिप्रख्यै र्ज्योतिर्मण्डलमण्डितः ॥
अधिप्रत्यधिदेवाभ्यामन्यतो ग्रहमण्डले ।
प्रविष्टस्सूक्ष्मरूपेण समस्तवरदस्सुखी ॥
सदा प्रदक्षिणं मेरोः कुर्वाणः कामरूपवान् ।
असिदण्डौच बिभ्राणः सम्प्राप्तसुफलप्रदः ॥
कन्याया मिथुनस्यापि राशेरधिपतिर्द्वयोः ।
मुद्गधान्यप्रदो नित्यं मर्त्यामर्त्यसुरार्चितः ॥

* अत्रस्थलान्तरे द्वितीयान्तपाठो दृश्यते पाठभेदोपि दृश्यते ॥

यस्तु सौम्येन मनसा स्वमात्मानं प्रपूजयेत् ।
तस्य वश्यो भवेन्नित्य सौम्यनामधरो बुधः ।

बुधस्तोत्रमिदं गुह्यं वसिष्ठेनोदितं पुरा ।
दिलीपायच भक्ताय याचमानाय भूभृते ॥
यः पठेदेकवारं वा सर्वाभीष्टमवाप्नुयात् ।
स्तोत्रराजमिदं पुण्यं गुह्याद्गुह्यतमं महत् ॥

एकवारं द्विवारं वा त्रिवारं यः पठेन्नरः ।
तस्यापस्मारकुष्ठादि व्याधिबाधा नविद्यते ॥
सर्वग्रहकृता पीडा पठितेऽस्मिन्न विद्यते ।
कृत्रिमौषधदुर्मन्त्रं कृत्रिमादिनिशाचरैः ॥

यद्यद्भयं भवेत्तत्र पठितेऽस्मिन् नविद्यते ।
प्रतिमा या सुवर्णेन लिखिता तु भुजाष्टका ॥

मुद्गधान्योपरि न्यस्तपीतवस्त्रान्विते घटे ।
विन्यस्य विधिना सम्यक् मासमेकं निरन्तरम् ॥

ये पूजयन्ति ते यान्ति दीर्घमायुः प्रजाधनम् ।
आरोग्यं भस्मगुल्मादि सर्वव्याधिविनाशनम् ॥
यं यं कामयते सम्यक् तत्तदाप्नोत्यसंशयः ॥

इति श्रीस्कान्दे पुराणे बुधस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ बुधमन्त्रः ॥

ओम् अस्य श्रीबुधमहामन्त्रस्य काश्यपऋषिः । त्रिष्टुप्छन्दः । बुधोदेवता । बुधग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । बुधाय अंगुष्ठाभ्यां नमः । सौम्याय तर्जनीभ्यांस्वाहा । सिंहारूढायमध्यमाभ्यां वषट् । चतुर्बाहवे अनामिकाभ्यांहुं गदाधराय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । सोमपुत्त्रायं करतलकरपृष्ठाभ्यांफट् । एवं हृदयादि न्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

सिंहारूढं चतुर्बाहुं खड्गचर्मगदाधरं ।
सोमपुत्रं महासौम्यं ध्यायेत्सर्वार्थसिद्धिदम् ॥

लमित्यादिपञ्चपूजा—

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनमिष्टापूर्तेसꣳसृजेथामयंच ।
पुनःकृण्वꣳस्त्वापितरं युवान मन्वातागꣳसीत्वयि तंतु-
मेतम् ॥ इति मन्त्रः ॥

---

## ॥ बुधाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

बुधो बुधार्चितस्सौम्यस्सौम्यचित्तश्शुभप्रदः ।
दृढव्रतो दृढफल श्श्रुतिजालप्रबोधकः ॥ १
सत्यवासस्सत्यवचाः श्रेयसां पतिरव्ययः ।
सोमजस्सुखदश्श्रीमान् सोमवंशप्रदीपकः ॥ २
वेदविद्वेदतत्त्वज्ञो वेदान्तज्ञानभास्करः ।

विद्याविचक्षणविभुर्विद्वत्प्रीतिकरो बुधः ॥ ३
विश्वानुकूलसञ्चारी विशेषविनयान्वितः ।
विविधागमसारज्ञो वीर्यवद्विगतज्वरः ॥ ४
त्रिवर्गफलदोऽनन्तस्त्रिदशाधिपपूजितः ।
बुद्धिमद्बहुशास्त्रज्ञो बली बन्धविमोचकः ॥ ५
वक्रातिवक्रगमनो वासवो वसुधाधिपः ।
प्रसादवदनो वन्द्यो वरेण्यो वाग्विलक्षणः ॥ ६
सत्यवान् सत्यसङ्कल्पस्सत्यबन्धुस्सदादरः ।
सर्वरोगप्रशमनस्सर्वमृत्यु निवारकः ॥ ७
वाणिज्यनिपुणो वश्यो वाताङ्गी वातरोगहृत् ।
स्थूलस्थैर्यगुणाध्यक्षः स्थूलसूक्ष्मादिकारणः ॥ ८
अप्रकाशः प्रकाशात्मा घनो गगनभूषणः ।
विधिस्तुत्यो विशालाक्षो विद्वज्जनमनोहरः ॥ ९
चारुशीलः स्वप्रकाशश्चपलश्चलितेन्द्रियः ।
उदङ्मुखो मखासक्तो मगधाधिपतिर्हरः ॥ १०

सौम्यवत्सरसञ्जातस्सोमप्रियकरस्सुखी ।
सिंहाधिरूढस्सर्वज्ञश्शिखिवर्णश्शिवंकरः ॥ ११
पीताम्बरः पीतवपुः पीतच्छत्रध्वजान्वितः ।
खड्गचर्मधरः कार्यकर्ता कलुषहारकः ॥ १२
आत्रेयगोत्रजोऽत्यन्तविनयो विश्वपावनः ।
चाम्पेयपुष्पसङ्काश श्चारणश्चारुभूषणः ॥ १३
वीतरागो वीतभयो विशुद्धकनकप्रभः ।
बन्धुप्रियो बन्धुमुक्तो बाणमण्डलसंश्रितः ॥ १४
अर्केशानप्रदेशस्थस्तर्कशास्त्रविशारदः ।
प्रशान्तः प्रीतिसंयुक्तः प्रियकृत्प्रियभाषणः ॥ १५
मेधावी माधवासक्तो मिथुनाधिपतिस्सुधीः ।
कन्याराशिप्रियः कामप्रदो घनफलाश्रयः ॥ १६
बुधस्यैवं प्रकारेण नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।

इति बुधाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ॥



विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया ।
[1]यस्साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमइदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ १

बीजस्यान्तरिवांकुरो जगदिदं प्राङ्निर्विकल्पं पुन-
र्मायाकल्पितदेशकालकलनावैचित्र्यचित्रीकृतम् ।
मायावीविजृम्भयत्यपि महायोगीव यस्स्वेच्छया
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमइदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ २

यस्यैव स्फुरणं सदात्मकमसत्कल्पार्थकं भासते
साक्षात्तत्वमसीति वेदवचसा यो बोधयत्याश्रितान्।
यत्साक्षात्करणाद्भवेन्नपुनरावृत्तिर्भवांभोनिधौ
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमइदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ३

---

1 क्षिप्तक ।

नाच्छिद्रघटोदरस्थितमहादीपप्रभाभास्वरं
ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादिकरणद्वारा बहिस्स्पन्दते ।
जानामीति तमेव भान्तमनुभात्येतत्समस्तं जग-
त्तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमइदं श्रीदक्षिणामूर्तये ।। ४

देहं प्राणमपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं विदुः
स्त्रीबालान्धजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ता भृशंवादिनः ।
मायाशक्तिविलासकल्पितमहाव्यामोहसंहारिणे
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमइदं श्रीदक्षिणामूर्तये ।। ५

राहुग्रस्त दिवाकरेन्दुसदृशो मायासमाच्छादना-
त्सन्मात्रः करणोपसंहरणतो योभूत्सुषुप्तः पुमान् ।
[1]जाग्रत्स्वाप्नमिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ।। ६

बाल्यादिष्वपि जाग्रदादिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि
व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्तस्स्फुरन्तं सदा ।
स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया

1 प्रागस्वाप्स ।

तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमइदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ७

विश्वं पश्यति कार्यकारणतया स्वस्वामिसम्बन्धतः
शिष्याचार्यतया तथैव पितृपुत्राद्यात्मनाभेदतः ।
स्वप्ने जाग्रति वा यएष पुरुषो मायापरिभ्रामित-
स्तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमइदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ८

भूरम्भांस्यनलोऽनिलोम्बरमहर्नाथो हिमांशुःपुमा-
नित्याभाति चराचरात्मकमिदं यस्यैव मूर्त्यष्टकम् ।
नान्यत्किञ्चन विद्यते विमृशतां यस्मात्परस्माद्विभो-
स्तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमइदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ९

सर्वात्मत्वमिति स्फुटीकृतमिदं यस्मादमुष्मिन् स्तवे
तेनास्य श्रवणात्तथार्थमननाद्ध्यानाच्च सङ्कीर्तनात् ।
सर्वात्मत्वमहाविभूतिसहितं स्यादीश्वरत्वं स्वत-
स्सिद्ध्येत्तत्पुनरष्टधा परिणतं चैश्वर्यमव्याहतम् ॥ १०

वटविटपिसमीपे भूमिभागे निषण्णं
सकलमुनिजनानां ज्ञानदातारमारात् ।

त्रिभुवनगुरुमीशं दक्षिणामूर्तिदेवं
जननमरणदुःखच्छेददक्षं नमामि ॥ ११

चित्रं वटतरोर्मूले वृद्धाः शिष्यागुरुर्युवा ।
गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु च्छिन्नसंशयाः ॥

ओं नमः प्रणवार्थाय शुद्धज्ञानैकमूर्तये ।
निर्मलाय प्रशान्ताय दक्षिणामूर्तये नमः ॥ १३

गुरवे सर्वलोकानां भिषजे भवरोगिणाम् ।
निधये सर्वविद्यानां दक्षिणामूर्तये नमः ॥ १४

मौनव्याख्याप्रकटितपरब्रह्मतत्त्वं युवानं
वर्षिष्ठान्ते वसदृषिगणैरावृतं ब्रह्मनिष्ठैः ।
आचार्येन्द्रं करकलितचिन्मुद्रमानन्दरूपं
स्वात्मारामं मुदितवदनं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ १५

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यवर्य श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ॥

## ॥ शनैश्चरमन्त्रः ॥

ओम् अस्य श्री शनैश्चरमहामन्त्रस्य उरुमित्रऋषिः। उष्णिक् छन्दः शनैश्चरो देवता शनैश्चरग्रहप्रसादसिध्यर्थे (शनैश्चरकृतपीडापरिहारार्थे) जपे विनियोगः ॥

शनैश्चराय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः । अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः । सौरये अनामिकाभ्यां नमः । अभयंकराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ऊर्ध्वरोम्णे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान् । चतुर्भुजस्सूर्यसुतः प्रशान्तस्सदास्तु मह्यं वरदः प्रसन्नः ॥

लमित्यादि पञ्च पूजा—

मूलमन्त्रः—शमग्निरग्निभिस्करच्छन्नस्तपतु सूर्यः । शंवातो वात्वरपाअपाश्रेधः ॥

इति शनैश्चरमन्त्रः ॥

## ॥ शनैश्चर कवचः ॥

ओम् अस्य श्रीशनैश्चरकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य काश्यपऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । शनैश्चरो देवता शं बीजं वां शक्तिः यं कीलकं मम शनैश्चरकृतपीडापरिहारार्थे जपे विनियोगः । शां अंगुष्ठाभ्यां नमः । शीं तर्जनीभ्यां नमः । शूं मध्यमाभ्यां नमः । शैं अनामिकाभ्यां नमः । शौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । शः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

चतुर्भुजं शनिं देवं चापतूणीकृपाणकम् ।
वरदं भीमदंष्ट्रं च नीलाङ्गं वरभूषणम् ॥
नीलमाल्यानुलेपं च नीलरत्नैरलंकृतम् ।
ज्वालोर्ध्वमकुटाभासं नीलगृध्ररथावहम् ॥

मेरुं प्रदक्षिणं कृत्वा सर्वलोकभयावहम् ।
कृष्णाम्बरधरं देवं द्विभुजं गृध्रसंस्थितम् ॥
सर्वपीडाहरं नृणां ध्यायेद्ग्रहगणोत्तमम् ।
शनैश्चरशिरोरक्षेन्मुखं भक्तार्तिनाशनः ॥
कर्णौ कृष्णाम्बरः पातु नेत्रे सर्वभयङ्करः ।
कृष्णाङ्गो नासिकां रक्षेत् कर्णौ मे च शिखण्डिजः ॥
भुजौ मे सुभुजः पातु हस्तौ नीलोत्पलप्रभः ।
पातु मे हृदयं कृष्णः कुक्षिं शुष्कोदरस्तथा ॥
कटिं मे विकटः पातु ऊरू मे घोररूपवान् ।
जानुनीं पातु दीर्घो मे जङ्घे मे मङ्गळप्रदः ॥
गुल्फौ गुणाकरः पातु पादौ मे पंगुपादकः ।
सर्वाणि च ममाङ्गानि पातु भास्करनन्दनः ॥
य इदं कवचं दिव्यं सर्वपीडाहरं नृणाम् ।
पठति श्रद्धया युक्तः सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥

इति श्रीपाद्मपुराणे शनैश्चरकवचः ॥

## ॥ शनैश्चरस्तोत्रम् ॥

*अस्य श्री शनैश्चरस्तोत्रमहामन्त्रस्य काश्यप-ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः शनैश्चरो देवता शं बीजम् नं शक्तिः । मं कीलकं मम सकलपीडापरिहारार्थे जपे विनियोगः । शनैश्चराय हृदयाय नमः ॥ मन्दगतये शिरसे स्वाहा । अधोक्षजाय शिखायै वौषट् । सूर्य-पुत्राय कवचाय हुं । शुष्कोदराय नेत्रत्रयायवौषट् । छायासुनन्दनाय अस्त्राय फट् । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

शनैश्चराय शान्ताय सर्वाभीष्टप्रदायिने ।
द्वादशाष्टमजन्मस्थः द्वितीयस्थान एवच ॥
नानालग्नस्थदोषांश्च सर्वान् पश्य मम प्रभो ।
नमोऽर्कपुत्राय शनैश्चराय नीहारवर्णाञ्जनमेचकाय ॥

* इदं स्तोत्रं कोशान्तरे प्रकारान्तरेण संक्षेपतो दृश्यते ॥

श्रुत्वा रहस्यं भव कामदस्त्वं फलप्रदो मे भव सूर्यपुत्र।

मन्त्रः—

त्रियम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
शं नो देवी रभीष्टय आपो भवन्तु
पीतये शं यो रभिस्रवन्तु नः ॥

रघुवंश इति ख्याते राजा दशरथोऽभवत्।
चक्रवर्ती स विज्ञेयः सप्तद्वीपाधिपस्तथा ॥
कृत्तिकान्ते शनौ याते दैवज्ञैर्ज्ञापितो हि सः।
रोहिणीं भेदयित्वा तु शनिर्यास्यति साम्प्रतम् ॥
इत्थं शकटभेदेन सुरासुरभयङ्करम्।
द्वादशाब्दन्तु दुर्भिक्षं भविष्यति सुदारुणम् ॥
देशाश्च नगरग्रामा भयखेदसमन्विताः।
व्रुवन्ति सर्वलोकानां क्षयमेतत्सनातनम् ॥
एवमुक्तस्ततो वाक्यं मन्त्रिभिस्साहि पार्थिवः।
अनुकूलं जनं दृष्ट्वा पौरजानपदादिकम्।

पप्रच्छ प्रयतो राजा वसिष्ठप्रमुखान् ऋषीन् ।
समाधानं किमस्यास्ति ब्रुवन्तु मुनिसत्तमाः ॥

ऋषय ऊचुः—

शनैश्चरेण शकटे तस्मिन् भिन्ने कुतः प्रजाः ।
अयं योगश्चसाध्यस्तु ब्रह्मरुद्रादिभिस्तथा ॥
अथ संचिन्त्य मनसा सहसा पुरुषर्षभः ।
समाधाय धनुर्दिव्यं दिव्यायुधसमन्वितम् ॥
रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्रमण्डलम् ।
सपादयोजनं लङ्घ्यं सूर्यस्योपरिसंस्थितम् ॥
रोहिणीं पृष्ठतः स्थाप्य राजा दशरथः स्थितः ।
रथे तु काञ्चने दिव्ये सर्वरत्नविभूषिते ॥
हंसवर्णहयैर्युक्ते महामेरुसमुच्छ्रिते ।
दीप्यमानमहारत्नविचित्रमकुटोज्ज्वले ॥
बभ्राज स तदाकाशे द्वितीय इव भास्करः ।
आकर्णपूर्णचापेन संहाराख्यमयोजयत् ॥
कृत्तिकान्ते शनिः स्थित्वा प्राविशत्किल रोहिणीम् ।
दृष्ट्वा दशरथं चाग्रे तस्थौ सभ्रुकुटीमुखः ॥

संहाराख्यं शनिं दृष्ट्वा सुरासुरभयंकरम् ।
सहत्वा तं भयात्सौरिः इदं वचनमब्रवीत् ॥
पौरुषं तव राजेन्द्र वरं तापभयङ्करम् ।
वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दन ॥

दशरथ उवाच—

प्रसादं कुरु मे सौरे वरदो यदि मे स्थितः ।
अद्यप्रभृति मे राष्ट्रे पीडा कार्या न कस्यचित् ॥
रोहिणीं भेदयित्वा तु नगन्तव्यं त्वयाशने ।
सरितस्सागरास्सर्वे यावच्चन्द्रार्कमेदिनी ॥
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं नकदाचिद्भविष्यति ।
याचितन्तु मया सौरे नान्यदिच्छामि ते त्वहम् ॥
एवमस्त्विति संप्रोक्तो वरं प्रादात्तु शाश्वतम् ।
प्राप्य चैनं वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा ॥
इमं वरं तु संप्राप्य हृष्टरोमा स पार्थिवः ।
रथोत्तमे धनुः स्थाप्य भूत्वाचैव कृताञ्जलिः ।
ध्यात्वा सरस्वतीं देवीं गणाध्यक्षं सुपूजितम् ।

राजा दशरथस्स्तोत्रं सौरेरिदमथाकरोत् ॥
नमः कृष्णाय नीलाय शिखिखण्डनिभायच ।
नमो निर्मांसदेहाय दीर्घश्मश्रुजटायच ।
नमोविशालनेत्राय शुष्कोदर भयानक ।
नमः पौरुषगात्राय स्थूलरोमाय ते नमः ॥
नमो नित्यं क्षुधार्ताय नित्यतृप्ताय ते नमः ।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने ॥
नमो दीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्र नमोस्तुते ॥
नमस्ते घोररूपाय दुर्निरीक्ष्याय ते नमः ।
नमस्ते सर्वभक्षाय वलीमुख नमोऽस्तु ते ॥
सूर्यपुत्त्र नमस्तेऽस्तु भास्करोभयदायिने ।
अधोदृष्टे नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोस्तु ते ॥
नमो मन्दगते तुभ्यं निष्प्रभाय नमोनमः ।
तपसा ज्ञानदेहाय नित्ययोगरताय च ॥
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु काश्यपात्मजसूनवे ।
तुष्टो ददासि राज्यं त्वं क्रुद्धो हरसि तत्क्षणात् ॥

देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगाः ।
त्वयावलोकितास्सौरे दैन्यमाशुव्रजन्ति ते ॥
ब्रह्मा शक्रो यमश्चैव मुनयस्सप्ततारकाः ।
राज्यभ्रष्टाः पतन्तीह तव दृष्ट्यावलोकिताः ॥
त्वयावलोकितास्तेऽपि नाशं यान्ति समूलतः ।
प्रसादं कुरु मे सौरे प्रणत्वा हि त्वमर्थितः ।
एवं स्तुत स्तदासौरी ग्रहराजो महाबलः ।
अब्रवीच्छनिर्वाक्यं हृष्टरोमा सभास्करः ॥
प्रीतोऽस्मि तव राजेन्द्र स्तोत्रेणानेन सम्प्रति ।
अदेयं वा वरं तुभ्यं प्रीतोऽहं प्रददामि ते ॥
त्वया कृतन्तु मत्स्तोत्रं यः पठेदिह मानवः ।
एककालं द्विकालं वा पीडां मुञ्चामि तस्य वै ॥
मृत्युस्थानगतोवापि जन्मस्थानगतोऽपिवा ।
यः पुमान् श्रद्धया युक्तः शुचिःस्नात्वा समाहितः॥
शमीपत्रैस्समभ्यर्च्य प्रतिमां लोहजामिमां ।
माषोदनन्तिलैर्मिश्रं दद्याल्लोहं तु दक्षिणाम् ॥

कृष्णां गां महिषीं वस्त्रं मा मुद्दिश्य द्विजातये ।
महिने तु विशेषेण स्तोत्रेणानेन पूजयेत् ॥
पूजयित्वा जपेत् स्तोत्रं भुक्त्वा चैवं कृताञ्जलिः ।
तस्य पीडां न चैवाहं करिष्यामि कदाचन ॥
गोचरे जन्मलग्नेवा दशास्वन्तर्दशासु च ।
रक्षामि सततं तस्य पीडाभ्योऽन्यग्रहेषु च ॥
अनेनैव प्रकारेण पीडामुक्तं जगद्भवेत् ।
वरद्वयं यशः प्राप्य राजा रशरथस्थितः ॥
मेने कृतार्थमात्मानं सम्यक् स्तुत्वा शनैश्चरं ।
कोणश्शनैश्चरो मन्दः छायाहृदयनन्दनः ॥
मार्तण्डजस्तथा सौरिः पातङ्गी गृहनायकः ।
अब्राह्मणः क्रूरकर्मा नीलवस्त्राञ्जनद्युतिः ॥
कृष्णो धर्मानुजः शान्तः शुष्कोदरवरप्रदः ।
षोडशैतानि नामानि यः पठेच्च दिने दिने ॥
विषमस्थोऽपि भगवान् सुप्रीतस्तस्य जायते ।
मन्दवारे शुचिः स्नात्वा मिताहारो जितेन्द्रियः ॥

तद्वर्णकुसुमैर्युक्तं सर्वाङ्गं द्विजसत्तमः ।
पूजयित्वान्नपानाद्यैस्तोत्रं यःप्रयतः पठेत् ॥
पुत्रकामो लभेत्पुत्रं धनकामो लभेद्धनं ।
राज्यकामो लभेद्राज्यं जयार्थी विजयीभवेत् ॥
आयुष्कामो लभेदायुः श्रीकामः श्रियमाप्नुयात् ।
यद्यदिच्छति तत्सर्वं भगवान् भक्तवत्सलः ॥
चिन्तितान्यपि कर्माणि ददाति च नसंशयः ।
शनिनात्वभ्यनुज्ञातः स्वस्थानमगमन्नृपः ।
स्वस्थानं सङ्गतो गत्वा प्राप्तकामोऽभवत्तदा ॥

इति हेमाद्रौ दशरथेन कृतं शनैश्चरस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ शन्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

शनैश्चराय शान्ताय सर्वाभीष्टप्रदायिने ।
शरण्याय वरेण्याय सर्वेशाय नमो नमः ॥ १
सौम्याय सुरवन्द्याय सुरलोकविहारिणे ।

सुखासनोपविष्टाय सुन्दराय नमो नमः ॥ २
घनाय घनरूपाय घनाभरणधारिणे ।
घनसारविलेपाय खद्योताय नमो नमः ॥ ३
मन्दाय मन्दचेष्टाय महनीयगुणात्मने ।
मर्त्यपावनपादाय महेशाय नमो नमः ॥ ४
छायापुत्राय शर्वाय शरतूणीरधारिणे ।
चरस्थिरस्वभावाय चञ्चलाय नमो नमः ॥ ५
नीलवर्णाय नित्याय नीलाञ्जननिभाय च ।
नीलाम्बरविभूषाय निश्चलाय नमो नमः ।
वेद्याय विधिरूपाय विरोधाधारभूमये ॥ ६
वेदास्पदस्वभावाय वज्रदेहाय ते नमः ।
वैराग्यदाय वीराय वीतरोगभयाय च ॥ ७
विपत्परम्परेशाय विश्वत्रन्द्याय ते नमः ।
गृध्रवाहाय गूढाय कूर्माङ्गाय कुरूपिणे ॥ ८
कुत्सिताय गुणाढ्याय गोचराय नमो नमः ।
अविद्यामूलनाशाय विद्याविद्यास्वरूपिणे ॥ ९

आयुष्यकारणायापदुद्धर्त्रेच नमो नमः ।
विष्णुभक्ताय वशिने विविधागमवेदिने ॥ १०
विधिस्तुत्याय वन्द्याय विरूपाक्षायते नमः ।
वरिष्ठाय गरिष्ठाय वज्रांकुशधरायच ॥ ११
वरदाभयहस्ताय वामनाय नमो नमः ।
ज्येष्ठापत्नीसमेताय श्रेष्ठायामितभाषिणे ॥ १२
कष्टौघनाशकायार्यपुष्टिदाय नमो नमः ।
स्तुत्याय स्तोत्रगम्याय भक्तिवश्याय भानवे ॥ १३
भानुपुत्राय भव्याय पावनाय नमो नमः ।
धनुर्मण्डलसंस्थाय धनदाय धनुष्मते ॥ १४
तनुप्रकाशदेहाय तामसाय नमो नमः ।
अशेषधनवन्द्याय विशेषफलदायिने ॥ १५
वशीकृतजनेशाय पशूनां पतये नमः ।
खेचराय खगेशाय घननीलाम्बरायच ॥ १६
काठिन्यमानसार्यगणस्तुत्याय ते नमः ।
नलिच्छत्राय नित्याय निर्गुणाय गुणात्मने ॥ १७

निरामयायानिन्द्याय वन्दनीयाय ते नमः ।
धीराय दिव्यदेहाय दीनार्तिहरणायच ॥ १८
दैन्यनाशकरायार्यजनगण्याय ते नमः ।
क्रूराय क्रूरचेष्टाय कामक्रोधधरायच ॥ १९
कळत्रपुत्रशत्रुत्व कारणाय नमो नमः ।
परिपोषितभक्ताय वरभीतिहरायच ॥ २०
भक्तसङ्घमनोभीष्ट फलदाय नमो नमः ।
शनेरष्टोत्तरशतं नाम्नामेवं क्रमात्सदा ॥ २१

इति शन्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ शिवकवचम् ॥

ओं अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य - ऋषभ-योगीश्वर[1]ऋषिः - अनुष्टुप्छन्दः - श्रीसदाशिवरुद्रो

1 ब्रह्मा ।

देवता - ह्रीं शक्तिः - रं कीलकं - श्रीं ह्रीं क्लीं बीजं - श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे विनियोगः ॥

अथ न्यासः—

ओं नमोभगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओं-ह्रां-सर्व-शक्तिधाम्ने ईशानात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः । ओं - नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओं - सं - रिं - नित्यतृप्ति-शक्तिधाम्ने - तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां नमः । ओं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओं - मं - रुं - अनादि शक्तिधाम्ने - अघोरात्मने मध्यमाभ्यां नमः । ओं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओं-शिं-रैं-स्वतन्त्रशक्ति-धाम्ने - वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां नमः । ओं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओं - वां - रौं - अलुप्तशक्ति-धाम्ने - सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यांनमः । ओं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओं - यं - रः - अनादि शक्तिधाम्ने - सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिन्दमम् ।
सहस्रकरमत्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम् ॥ १

अथ ध्यानम्—

अथापरं सर्वपुराणगुह्यं निश्शेषपापौघहरं पवित्रम् ।
जयप्रदं सर्वविपत्प्रमोचनं वक्ष्यामि शैवं कवचं हितायते॥

ऋषभ उवाच—

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम् ।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥ ३

शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः ।
जितेन्द्रियो जितप्राण श्चिन्तये च्छिवमव्ययम् ॥ ४

हृत्पुण्डरीकान्तरसन्निविष्टं स्वतेजसा व्याप्ननभोवकाशम् । अतीन्द्रियं सूक्ष्म मनन्तमाद्यं ध्यायेत्परानन्दमयं महेशम् ॥ ५

ध्यानावधूताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेताः । षडक्षरन्यास समाहितात्मा शैवेन कुर्यात्कवचेन रक्षाम् ॥ ६

मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा संसारकूपे पतितं गभीरे। त्वन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम् ॥ ७

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिः ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा। अणोरणीया नुरुशक्तिरेक स्सईश्वरः पातु भयादशेषात् ॥ ८

यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं पायात्सभूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः। योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति सञ्जीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः ॥ ९

कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः। स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात् ॥ १०

प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः। चतुर्मुख स्तत्पुरुष स्त्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितो रक्षतु मामजस्रम् ॥ ११

कुठार खेटांकुश पाशशूल कपाल[1]ढक्काऽक्षगुणान् दधानः । चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम् ॥ १२

कुन्देन्दुशङ्ख स्फटिकावभासो वेदाक्षमालावरदाभयाङ्कः । त्र्यश्र चतुर्वक्र उरुप्रभावस्सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम् ॥ १३

वराक्षमालाभयटङ्कहस्तस्सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः । त्रिलोचनश्चारु चतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥ १४

वेदाभयेष्टांकुशपाशटङ्क कपाल ढक्काक्षर शूलपाणिः। सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः । १५

मूर्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिः फालं ममाव्यादथ फालनेत्रः । नेत्रे ममाव्याद्भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः ॥ १६

---

1 मालाभ्रिकणान्।

पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः कपोलमव्यात्सततं कपाली । वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः ॥ १७

कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः । दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहु र्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात् ॥ १८

ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी । हेरम्बतातो मम पातु नाभिं पायात्कटिं धूर्जटिरीश्वरो मे ॥ १९

ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात् । जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात्पादौ ममाव्यात्सुरवन्द्यपादः ॥ २०

महेश्वरः पातु दिनादियामे मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः । त्रिलोचनः पातु तृतीययामे वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे ॥ २१

पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे । गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम् ॥ २२

अन्तःस्थितं रक्षतु शङ्करो मां स्थाणुस्सदा पातु बहिः स्थितं माम् । तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदा शिवो रक्षतु मां समन्तात् । २३

तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः पायाद्व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः । वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवश्शयानम् ॥ २४

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः । अरण्यवासादि महाप्रवासे पायान्मृगाव्याध उदारशक्तिः ॥ २५

कल्पान्तकालोल्बण[1] पटुप्रकोप स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः । घोरारिसेनार्णवदुर्निवारमहाभयाद्रक्षतु वीरभद्रः ॥ २६

---

1 टोप ।

पत्त्यश्वमातङ्गघटावरूथसहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम्। अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां छिन्द्यान्मृडो घोरकुठार-धारया ॥ २७

निहन्तु दस्यून्प्रळयानलार्चिर्ज्वलत्त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य। शार्दूल सिंहर्क्ष वृकादि हिंस्रान् सन्त्रासयत्वीश धनुः पिनाकः ॥ २८

दुस्स्वप्न दुश्शकुन दुर्गति दौर्मनस्य दुर्भिक्ष दुर्व्यसन दुस्सह दुर्यशांसि। उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिं व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः ॥ २९

ओं नमोभगवते - सदाशिवाय-सकलतत्त्वात्मकाय - सर्वमन्त्रस्वरूपाय - सर्वयन्त्राधिष्ठिताय सर्वतन्त्रस्वरूपाय - सर्व तत्त्वविदूराय-ब्रह्मरुद्रावतारिणे नीलकण्ठाय-पार्वतीमनोहरप्रियाय - सोमसूर्याग्निलोचनाय - भस्मोद्धूलित विग्रहाय - महामणि मुकुटधारणाय - माणिक्यभूषणाय - सृष्टिस्थितिप्रळयकाल रौद्रावताराय - दक्षाध्वर ध्वंसकाय - महाकालभेदनाय - मूलाधारैकनिल-

याय - तत्त्वातीताय - गङ्गाधराय - सर्वदेवादिदेवाय - षडाश्रयाय - वेदान्तसाराय - त्रिवर्गसाधनायानन्तकोटि ब्रह्माण्डनायकानन्त वासुकि तक्षक कर्कोटक शङ्ख कुळिक पद्म महापद्मेत्यष्ट महानाग कुलभूषणाय - प्रणवस्वरूपाय - चिदाकाशायाकाशदिक्स्वरूपाय - ग्रह-नक्षत्रमालिने - सकलाय - कळङ्करहिताय - सकल-लोकैककर्त्रे - सकललोकभर्त्रे - सकललोकैकसंहर्त्रे - सकललोकैकगुरवे - सकललोकैकसाक्षिणे - सकल-निगमगुह्याय - सकलवेदान्तपारगाय - सकललोकैक वरप्रदाय - सकललोकैकशङ्कराय - शशाङ्कशेखराय - शाश्वत निजावासाय - निराभासाय - निरामयाय - निर्मलाय - निर्लोभाय - निर्मदाय - निश्चिन्ताय - निर-हङ्काराय - निरंकुशाय - निष्कलङ्काय - निर्गुणाय - निष्कामाय - निरुपप्लवाय - निरवद्याय - निरन्तराय - निरान्तकाय[1] - निष्प्रपञ्चाय - निस्सङ्गाय निर्द्वन्द्वाय -

1 रन्तकाय।

निराधाराय - नीरागाय - निष्क्रोधाय - निर्मलाय - निष्पापाय - निर्भयाय - निर्विकल्पाय - निर्भेदाय - निष्क्रियाय - निस्तुलाय - निस्संशयाय - निरञ्जनाय - निरुपमविभवाय - नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय - परमशान्तस्वरूपाय - तेजोरूपाय - तेजोमयाय- जयजय रुद्र महारौद्र भद्रावतार महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वाङ्गखड्गचर्मपाशांकुश डमरु शूल चाप बाण गदा शक्ति भिण्डिवाल तोमर मुसल मुद्गर पाश परिघ भुशुण्डी शतघ्नी चक्रद्यायुध भीषणकर सहस्रमुख दंष्ट्राकराळवदन विकटाट्टहास विस्फारित ब्रह्माण्डमण्डल नागेन्द्रकुण्डल नागेंद्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विश्वरूप विरूपाक्ष विश्वेश्वर वृषभवाहन विश्वतोमुख सर्वतो मां रक्षरक्ष ज्वलज्वल महामृत्युमपमृत्युभयं नाशय नाशय - चोरभय मुत्सादयोत्सादय- विषसर्पभयं शमयशमय - चोरान्मारय मारय - मम

शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय - त्रिशूलेन विदारय विदारय - कुठारेण भिन्धिभिन्धि खड्गेन छिन्धिछिन्धि खट्वाङ्गेन व्यपोथय व्यपोथय - मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय - बाणैस्संताडय सन्ताडय - यक्षरक्षांसि भीषयभीषय - शेषभूतानि विद्रावय विद्रावय - कूष्माण्ड भूतवेताळ मारीगण ब्रह्मराक्षसगणान् सन्त्रासय सन्त्रासय(म)मा मभयं कुरुकुरु - वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय - नरक भयान्मामुद्धरोद्धर सञ्जीवय सञ्जीवय - क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्याययाप्यायय - दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय - शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय - मृत्युञ्जय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्त नमस्ते नमः ॥

ऋषभ उवाच—

इत्येतत्कवचं शैवं परमं व्याहृतं मया ।
सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम् ॥ ३०
यस्सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम् ।
न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भो रतुग्रहात् ॥३१

क्षीणायुः प्राप्तमृत्युर्वा महारोगहतोपि वा।
सद्यस्सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति ॥ ३२
सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम्।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते ॥ ३३
महापातकसङ्घातैर्मुच्यते चोपपातकैः।
देहान्ते मुक्तिमाप्नोति शिववर्मानुभावतः ॥ ३४
त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवच मुत्तमम्।
धारयस्व मया दत्तं सद्यश्श्रेयो ह्यवाप्स्यसि ॥ ३५

सूत उवाच—

इत्युक्त्वा ऋषभो योगी तस्मै पार्थिव सूनवे।
ददौ शङ्खं महारावं खड्गं चारिनिषूदनम् ॥ ३६
पुनश्च भस्म संमन्त्र्य तदङ्गं परितोऽस्पृशत्।
गजानां षट् सहस्रस्य द्विगुणस्य बलं ददौ ॥ ३७
भस्मप्रभावात्संप्राप्त बलैश्वर्य धृतिस्मृतिः।
सराजपुत्र स्सुभृशं शरदर्क इव श्रिया ॥ ३८
तमाह प्राञ्जलिं भूय स्स योगी नृपनन्दनम्।

एष खड्गो मया दत्तस्तपो मन्त्रानुभावितः ॥ ३९
शितधार मिमं खड्गं यस्मै दर्शयसे स्फुटम् ।
स सद्यो म्रियते शत्रु स्साक्षा न्मृत्युरपि स्वयम् ॥४०
[1]अस्य शङ्खस्य निर्ह्रादं ये शृण्वन्ति तवाहिताः ।
ते मूर्छिताः पतिष्यन्ति न्यस्तशस्त्रा विचेतनाः ॥
खड्ग शङ्खाविमौ दिव्यौ परसैन्य विनाशिनौ ।
आत्मसैन्य स्व(स्य)पक्षाणां शौर्यतेजो विवर्धनौ ॥
एतयोश्च प्रभावेन शैवेन कवचेन च ।
द्विषट् सहस्र नागानां बलेन महतापिच ॥ ४३
भस्मधारणसामर्थ्या च्छत्रुसैन्यं विजेष्यसि ।
प्राप्य सिंहासनं पित्र्यं गोप्तासिं पृथिवीमिमाम् ॥४४
इति भद्रायुषं सम्य गनुशास्य समातृकम् ।
ताभ्यां सम्पूजितस्सोथ योगी स्वैरगति र्ययौ ॥४५

इति श्री स्कान्दपुराणे ब्रह्मोत्तरखण्डे श्री शिवकवचस्तोत्र प्रभाववर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥

---

1 एष शङ्खो मया दत्तः तपोमन्त्रानुभावतः ।

## ॥ शिव स्तवराजः ॥

इदं च कवचं प्रोक्तं स्तोत्रं च शृणु शौनक ।
मन्त्रराजः कल्पतरु र्वसिष्ठो दत्तवान् पुरा ॥ १

बाणेश्वर उवाचः—

वन्दे सुराणां सारं च सुरेशं नीललोहितम् ।
योगीश्वरं योगबीजं योगिनां च गुरोर्गुरुम् ॥ २

ज्ञानानन्दं ज्ञानरूपं ज्ञानबीजं सनातनम् ।
तपसां फलदातारं दातारं सर्वसम्पदाम् ॥ ३

तपोरूपं तपोबीजं तपोधनधनं वरम् ।
वरं वरेण्यं वरदमीड्यं सिद्धगणेश्वरैः ॥ ४

कारणं भुक्तिमुक्तीनां नरकार्णवतारणम् ।
आशुतोषं प्रसन्नास्यं करुणामयसागरम् ॥ ५

हिमचन्दन कुन्देन्दु कुमुदाम्भोजसन्निभम् ।
ब्रह्मज्योतिः स्वरूपं च भक्तानुग्रहविग्रहम् ॥ ६

विषयाणां विभेदेन बिभ्रन्तं बहुरूपकम् ।
जलरूप मग्निरूप माकाशरूप मीश्वरम् ॥ ७

वायुरूपं चन्द्ररूपं सूर्यरूपं महत्प्रभम् ।
आत्मनस्त्वपदं दातुं समर्थमवलीलया ॥ ८
भक्तजीवनमीशं च भक्तानुग्रहकारकम् ।
वेदान शक्ता यं स्तोतुं किमहं स्तौमि तं प्रभुम् ॥९
अपरिच्छिन्नमीशानमहो वाङ्मनसोः परम् ।
व्याघ्रचर्माम्बरधरं वृषभस्थं दिगम्बरम् ॥ १०
त्रिशूलपट्टसधरं सस्मितं चन्द्रशेखरम् ।
इत्युक्त्वा स्तवराजेन नित्यं बाणस्सुसंयतः ॥ ११
प्रणमे च्छङ्करं भक्त्या दुर्वासाश्च मुनीश्वरः ।
इदं दत्तं वसिष्ठेन गन्धर्वाय पुरा मुने ॥ १२
कथितं च महास्तोत्रं शूलिनः परमाद्भुतम् ।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं पठेद्भक्त्या च यो नरः ॥१३
स्नानस्य सर्वतीर्थानां फलमाप्नोति निश्चितम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं वर्षमेकं शृणोति यः ॥ १४
अवश्यं मुच्यते रोगाद्व्यासवाक्यमिति श्रुतम् ।
कारागारेऽपि बद्धो यो नैव प्राप्नोति निर्वृतिम् ॥

स्तोत्रं श्रुत्वा मासमेकं मुच्यते बन्धनाद्ध्रुवम् ।
भ्रष्टराज्यो लभेद्राज्यं भक्त्या मासं शृणोति यः ॥
मासं श्रुत्वा संयतश्च लभेद्भ्रष्टधनो धनम् ।
यक्ष्मग्रस्तो वर्षमेक मास्तिको यश्शृणोतिचेत् ॥१७
निश्चितं मुच्यते रोगाच्छङ्करस्य प्रसादतः ।
यश्शृणोति सदा भक्त्या स्तवराजमिमं द्विजः ॥
तस्यासाध्यं त्रिभुवने नास्ति किंचिच्च शौनक ।
कदाचिद्बन्धुविच्छेदो न भवेत्तस्य भारते ॥ १९
अचलं परमैश्वर्यं लभते नात्र संशयः ।
सुसंयतोति भक्त्या च मासमेकं शृणोति यः ॥२०
अभार्यो लभते भार्यां सुविनीतां सतीं वराम् ।
महामूर्खश्च दुर्मेधामासमेकं शृणोति यः ॥ २१
बुद्धिं विद्यां च लभते गुरूपदेशमात्रतः ।
कर्मदुःखी दरिद्रश्च मासं भक्त्या शृणोति यः ॥
ध्रुवं वित्तं भवेत्तस्य शङ्करस्य प्रसादतः ।
इह लोके सुखं भुक्त्वा कृत्वा कीर्तिं सुदुर्लभाम्॥२३

नानाप्रकार धर्मं च यात्यन्ते शङ्करालयम् ।
पार्षदप्रवरो भूत्वा सेवते तत्र शङ्करम् ॥ २४
यश्शृणोति त्रिसन्ध्यं च नित्यं स्तोत्रमनुत्तमम् ॥

इति श्रीब्रह्मवैवर्ते महापुराणे ब्रह्मखण्डे सौतिशौनकसंवादे शिवस्तवराजवर्णनं नाम एकोनविंशोऽध्यायः ॥

---

## ॥ सदाशिवाष्टकम् ॥

पतञ्जलिरुवाच—

सुवर्णपद्मिनीतटान्तदिव्यहर्म्यवासिने सुपर्णवाहनप्रियाय सूर्यकोटितेजसे । अपर्णया विहारिणे फणाधरेन्द्रधारिणे सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शंभवे ॥

सतुङ्ग भङ्ग जह्नुजा सुधांशु खण्ड मौळये पतङ्ग पङ्कजासुहृत्कृपीटयोनिचक्षुषे । भुजङ्गराजमण्डलाय पुण्यशालिबन्धवे सदा नमश्शिवाय ते ॥

चतुर्मुखाननारविन्दवेदगीतभूतये चतुर्भुजानुजाशरीर शोभमानमूर्तये। चतुर्विधार्थदानशौण्ड ताण्डवस्वरूपिणे सदा नमश्शिवाय ते ॥ ३

शरन्निशाकर प्रकाश मन्दहास मञ्जुल धरप्रवाल भासमान वक्त्रमण्डल श्रिये। करस्फुरत्कपालमुक्तरक्त विष्णुपालिने सदा नमश्शिवाय ते ॥ ४

सहस्र पुण्डरीक पूजनैक शून्यदर्शनात्सहस्रनेत्र कल्पितार्चनाच्युताय भक्तितः। सहस्रभानु मण्डल-प्रकाशचक्रदायिने सदा नमश्शिवाय ते ॥ ५

रसारथाय रम्यपत्र भूरथाङ्गपाणये रसाधरेन्द्र चाप शिञ्जिनीकृतानिलाशिने। स्वसारथीकृताजनुन्नवेदरूप-वाजिने सदा नमश्शिवाय ते ॥ ६

अति प्रगल्भ वीरभद्रसिंहनाद गर्जित श्रुतिप्रभीत दक्षयाग भोगिनाक सद्मनाम्। गतिप्रदाय गर्जिताखिल-प्रपञ्चसाक्षिणे सदा नमश्शिवाय ते ॥ ७

मृकण्डसूनु रक्षणावधूतदण्डपाणये सुगन्धमण्डल स्फुरत्प्रभाजितामृतांशवे । अखण्डभोगसम्पदर्थलोक-भावितात्मने सदा नमश्शिवाय ते ॥ ८

मधुरिपुविधि शक्र मुख्यदेवैरपि नियमार्चितपादपङ्क-जाय । कनकगिरिशरासनाय तुभ्यं रजत सभापतये नमश्शिवाय ॥ ९

हालास्यनाथाय महेश्वराय हालाहलालंकृत कन्ध-राय । मीनेक्षणायाः पतये शिवाय नमोनमस्सुन्दर ताण्डवाय ॥ १०

इति श्रीहालास्यमाहात्म्ये पतञ्जलिकृतमिदं सदाशिवाष्टकम् ॥

॥ ॐ ॥



## ॥ श्रीसाम्बसदाशिव भुजङ्गप्रयातस्तोत्रम् ॥

कदावा विरक्तिः कदा वा सुभक्तिः
कदावा महायोगि संसेव्य मुक्तिः ।
हृदाकाशमध्ये सदा संवसन्तं
सदानन्दरूपं शिवं साम्बमीडे ॥ १

सुधीराजहंसैस्सुपुण्यावतंसैः
सुरश्रीसमेतैस्सदाचारपूतैः ।
अदोषैस्सुरुद्राक्षभूषाविशेषै-
रदीनैर्विभूत्यङ्गरागोज्ज्वलाङ्गैः ॥ २

शिवध्यान संसक्त बुद्धान्तरङ्गैः
महाशैवपञ्चाक्षरीमन्त्रसिद्धैः ।
तमोमोचकैः रेचकैः पूरकाद्यैः
समुद्दीपिताधारमुख्याब्जषट्कैः ॥ ३

हठब्रह्मिका राजयोगप्रभावा-
द्धुठत्कुण्डली व्यक्त मुक्तावकाशां ।
सहस्रार पद्मस्थितां पारवारां
सुधामाधुरीं साधुरीत्या पिवद्भिः ॥ ४

सदानन्दकन्दैर्महायोगिवृन्दैः
सदा सेव्यमानं समुज्जृम्भमाणं ।
महापुण्यपाके मनःपुण्डरीके
सदा संवसन्तं चिदानन्दरूपम् ॥ ५

तटित्पुञ्जचञ्चज्जटाजूटवाटी
नटज्जह्नुकन्यातटिन्या समेतं ।
महानर्घ माणिक्यकोटीरहीर-
प्रभापूरितार्धेन्दुरेखावतंसम् ॥ ६

फणाभृन्मणी कुण्डलालोलकर्ण-
द्वयी चारुता दर्पण द्रुण्डभागं ।
सुनेत्राळिकं सादरभ्रूविलासं
समन्दस्मिताऽऽस्यारविन्दं श्रयन्तम् ॥ ७

लसत्पीवरांसद्वयं नीलकण्ठं
महोरस्स्थलं सूक्ष्ममध्यप्रदेशं ।
वल्लिद्योतमानोदरं दिव्यनाभिं
कुठारैणशावांऽचिताभ्यां कराभ्याम् ॥ ८

मुखाब्जैस्स्तुवन्तं कराब्जैर्नमन्तं
विधिं मानयन्तं मुनीन्लालयन्तं ।
गणान्पोषयन्तं मृदूक्तीर्वदन्तं
गुहं चैकदन्तं करेण स्पृशन्तम् ॥ ९

महादेवमन्तर्भजेऽहं भजेऽहं
सदा पार्वतीशं भजेऽहं भजेऽहं ।
सदानन्दरूपं भजेऽहं भजेऽहं
चिदानन्दरूपं भजेऽहं भजेऽहम् ॥ १०

भुजङ्गप्रयातस्तवं साम्बमूर्ते-
रिमं ध्यानगम्यं तदेकाग्रचित्तः ।
पठेद्यस्सुभक्तस्स मर्थः कृतार्थः
सदा तस्य साक्षात्प्रसन्नश्शिवस्स्यात् ॥

इति श्रीशङ्कर भगवत्पाद विरचितं
श्रीसाम्बसदाशिव भुजङ्गप्रयातस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ सूर्यकवचः ॥

---

ओं अस्य श्री आदित्यकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य अगस्त्यो भगवानृषिः । अनुष्टुप्छन्दः । आदित्यो देवता श्रीं बीजं । णीं शक्तिः । सूं कीलकं । मम आदित्यप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ध्यानम्—

जपाकुसुमसङ्काशं द्विभुजं पद्महस्तकम् ।
सिन्दूराम्बरमाल्यं च रक्तगन्धानुलेपनम् ॥

माणिक्यरत्नखचित सर्वाभरणभूषितम् ।
सप्ताश्वरथवाहं तु मेरुं चैव प्रदक्षिणम् ॥
देवासुरवरैर्वन्द्यं घृणिभिः परिसेवितम् ।
ध्यायेत्पठेत्सुवर्णाभं सूर्यस्य कवचं मुदा ॥
घृणिः पातु शिरोदेशे सूर्यः पातु ललाटकम् ।
आदित्यो लोचने पातु श्रुती पातु दिवाकरः ॥
घ्राणं पातु सदा भानुः मुखं पातु सदा रविः ।
जिह्वां पातु जगन्नेत्रः कण्ठं पातु विभावसुः ॥
स्कन्धौ ग्रहपतिः पातु भुजौ पातु प्रभाकरः ।
करावब्जकरः पातु हृदयं पातु नभोमणिः ।
द्वादशात्मा कटिं पातु सविता पातु सक्थिनी ॥
ऊरू पातु सुरश्रेष्ठो जानुनी पातु भास्करः ।
जङ्घे मे पातु मार्तण्डो गुल्फौ पातु त्विषांपतिः ॥
पादौ दिनमणिः पातु पातु भित्रोऽखिलं वपुः ।
आदित्यकवचं पुण्यमभेद्यं वज्रसन्निभम् ॥
सर्वरोगभयादिभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ।

संवत्सरमुपासित्वा साम्राज्यपदवीं लभेत् ॥
अनेकरत्नसंयुक्तं स्वर्णमाणिक्यभूषणम् ।
कल्पवृक्षसमाकीर्णं कदम्बकुसुमप्रियम् ॥
अशेषरोगशान्त्यर्थं ध्यायेदादित्यमण्डलम् ।
सिन्दूरवर्णाय सुमण्डलाय सुवर्णरत्नाभरणाय तुभ्यम् ।
पद्मादिनेत्रे च सुपङ्कजाय ब्रह्मेन्द्रनारायणशङ्कराय ।
संरक्तचूर्णं ससुवर्णतोयं सुकुंकुमाभं सकुशं सपुष्पम् ।
प्रदत्तमादाय च हेमपात्रे प्रशस्तनादं भगवन् प्रसीद ॥

इति श्रीपाद्मपुराणे आदित्यकवचम् ॥

---

## ॥ सूर्यस्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीभगवदादित्यस्तोत्रमहामन्त्रस्य अगस्त्यऋषिः अनुष्टुप्छन्दः । सूर्यनारायणो देवता । सूं बीजं । यं शक्तिः । मं कीलकं । मम आदित्यप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे

विनियोगः । आदित्याय अंगुष्ठाभ्यां नमः । अरारये तर्जनीभ्यां नमः । दिवाकराय मध्यमाभ्यां नमः । प्रभाकराय अनामिकाभ्यां नमः । सहस्रकिरणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । मार्तण्डाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

ध्यायेत्सूर्यमनन्तकोटिकिरणं तेजोमयं भास्करं
भक्तानामभयप्रदं दिनकरं ज्योतिर्मयं शङ्करम् ।
आदित्यं जगदीशमच्युतमजं त्रैलोक्यचूडामणिं
भक्ताभीष्टवरप्रदं दिनमणिं मार्तण्डमाद्यं शुभम् ॥
कालात्मा सर्वभूतात्मा वेदात्मा विश्वतोमुखः ।
जन्ममृत्यु जराव्याधिसंसारभयनाशनः ॥
ब्रह्मस्वरूप उदये मध्याह्ने तु महेश्वरः ।
अस्तकाले स्वयंविष्णुः त्रयीमूर्तिर्दिवाकरः ॥
एकचक्ररथो यस्य दिव्यः कनकभूषितः ।
सोऽयं भवतु नः प्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः ॥

पद्महस्तः परंज्योतिः परेशाय नमो नमः ।
अण्डयोनिर्महासाक्षी आदित्याय नमो नमः ॥
कमलासनदेवेश आदित्याय नमो नमः ।
धर्ममूर्तिर्दयामूर्तिस्तत्वमूर्तिर्नमो नमः ॥
सकलेशाय सूर्याय क्षान्तेशाय नमो नमः ।
क्षयापस्मारगुल्मादि दुर्दोषव्याधिनाशनम् ॥
सर्वज्वरहरं चैव कुक्षिरोगनिवारणम् ।
एतत् स्तोत्रं शिवप्रोक्तं सर्वसिद्धिकरं परम् ।
सर्वसम्पत्करं चैव सर्वाभीष्टप्रदायकम् ॥

इति सूर्यनारायणस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

अरुणाय शरण्याय करुणारससिन्धवे ।
असमानबलायार्तरक्षकाय नमो नमः ॥

आदित्यायादिभूताय अखिलागमवेदिने ।
अच्युतायाखिलज्ञाय अनन्ताय नमो नमः ॥ २
इनाय विश्वरूपाय इज्यायेन्द्राय भानवे ।
इन्दिरामन्दिराप्राय वन्दनीयाय ते नमः ॥ ३
ईशाय सुप्रसन्नाय सुशीलाय सुवर्चसे ।
वसुप्रदाय वसवे वासुदेवाय ते नमः ॥ ४
उज्ज्वलायोग्रूपाय ऊर्ध्वगाय विवस्वते ।
उद्यत्किरणजालाय हृषीकेशाय ते नमः ॥ ५
ऊर्जस्वलाय वीराय निर्जराय जयायच ।
ऊरुद्वयाभावरूपयुक्तसारथये नमः ॥ ६
ऋषिवन्द्याय रुग्घन्त्रे ऋक्षचक्रचराय च ।
ऋजुस्वभावचित्ताय नित्यस्तुत्याय ते नमः ॥ ७
ॠकारवातृकावर्णरूपायोज्ज्वलतेजसे ।
ॠक्षाधिनाथमित्राय पुष्कराक्षाय ते नमः ॥ ८
लुप्तदन्ताय शान्ताय कान्तिदाय घनाय च ।
कनत्कनकभूषाय खद्योताय नमो नमः ॥ ९

द्रुनिताखिलदैत्याय सत्यानन्दस्वरूपिणे ।
अपवर्गप्रदायार्तशरण्याय नमो नमः ॥ १०
एकाकिने भगवते सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे ।
गुणात्मने घृणिभृते बृहते ब्रह्मणे नमः ॥ ११
ऐश्वर्यदाय शर्वाय हरिदश्वाय शौरये ।
दशदिक्सम्प्रकाशाय भक्तवश्याय ते नमः ॥ १२
ओजस्कराय जयिने जगदानन्दहेतवे ।
जन्ममृत्युजराव्याधिवर्जिताय नमो नमः ॥ १३
उच्चस्थानसमारूढ रथस्थायासुरारये ।
कमनीयकरायाब्जवल्लभाय नमो नमः ॥ १४
अन्तर्बहिःप्रकाशाय अचिन्त्यायात्मरूपिणे ।
अच्युतामरेशाय परस्मै ज्योतिषे नमः ॥ १५
अहस्कराय रवये हरये परमात्मने ।
तरुणाय वरेण्याय ग्रहाणां पतये नमः ॥ १६
ओं नमो भास्करायादिमध्यान्तरहिताय च ।
सौख्यप्रदाय सकलजगतां पतये नमः ॥ १७

नमस्सूर्याय कवये नमो नारायणाय च ।
नमो नमः परेशाय तेजोरूपाय ते नमः ॥ १८

ओं श्रीं हिरण्यगर्भाय ओं ह्रीं सम्पत्कराय च ।
ओं ऐं मिष्टार्थदायास्तु प्रसन्नाय नमो नमः ॥ १९

श्रीमते श्रेयसे भक्तकोटिसौख्यप्रदायिने ।
निखिलागमवेद्याय नित्यानन्दाय ते नमः ॥ २०

यो मानवस्सन्ततमर्कमर्चयन्पठेत्प्रभाते विमलेन चेतसा ।
इमानि नामानि च तस्य पुण्यमायुर्धनं धान्यमुपैति
नित्यम् ॥ २१

इमं स्तवं देववरस्य कीर्तये-
च्छृणोति योऽयं सुमनारसमाहितः ।
स मुच्यते शोकदवाग्निसागरा-
ल्लभेतसर्वान्मनसो यथेप्सितान् ॥ २२

इति श्रीमदथर्वणरहस्ये सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

## ॥ व्यपोहनस्तवः ॥

सूतः—

व्यपोहनस्तवं वक्ष्ये सर्वसिद्धिप्रदं शुभं ।
नन्दिनश्च मुखाच्छ्रुत्वा कुमारेण महात्मना ॥ १
व्यासाय कथितं तस्माद्बहुमानेन वैमया ।
नमश्शिवाय शुद्धाय निर्मलाय यशस्विने ॥ २
दुष्टान्तकायसर्वाय भवाय परमात्मने ।
पञ्चवक्त्रो दशभुजो ह्यक्षपञ्चदशैर्युतः ॥ ३
शुद्धस्फटिकसङ्काशस्सर्वाभरणभूषितः ।
सर्वज्ञस्सर्वगश्शान्तस्सर्वोपरि सुसंस्थितः ॥ ४
पद्मासनस्थस्सोमेशः पापमाशु व्यपोहतु ।
ईशानः पुरुषश्चैव अघोरस्सद्यएवच ॥ ५
वामदेवश्च भगवान् पापमाशु व्यपोहतु ।
अनन्तस्सर्वविद्येशस्सर्वज्ञस्सर्वदःप्रभुः ॥ ६

शिवध्यानैकसम्पन्नस्स मे पापं व्यपोहतु ।
सूक्ष्मस्सुरासुरेशानो विश्वेशो गणपूजितः ॥ ७
शिवध्यानैकसम्पन्नस्स मे पापं व्यपोहतु ।
शिवोत्तमो महापूज्यश्शिवध्यानपरायणः ॥ ८
सर्वगस्सर्वदृश्शान्तस्स मे पापं व्यपोहतु ।
एकाक्षो भगवानीशश्शिवार्चनपरायणः ॥ ९
शिवध्यानैकसम्पन्नस्स मे पापं व्यपोहतु ॥
त्रिमूर्तिर्भगवानीशश्शिवभक्तिप्रबोधकः ॥ १०
शिवध्यानैकसम्पन्नस्स मे पापं व्यपोहतु ।
श्रीकण्ठश्श्रीपतिश्श्रीमान् शिवध्यानरतस्सदा ॥११
शिवार्चनरतस्साक्षात्स मे पापं व्यपोहतु ।
शिखण्डी भगवान् शान्तश्शवभस्मानुलेपनः ॥१२
शिवार्चनरतश्श्रीमान् समे पापं व्यपोहतु ।
त्रैलोक्यनमिता देवी सोल्काया पुरातनी ॥ १३
दाक्षायणी महादेवी गौरी हैमवती शुभा ।
एकपर्णाग्रजा सौम्या पाटलावातथैवच ॥ १४

अपर्णावरदादेवी वरदानैकतत्परा ।
उमा सुरहरा साक्षात्कौशिकीवाकपर्दिनी ॥ १५
खट्वाङ्गधारिणी दिव्या कराग्रतरुपल्लवा ।
नैगमेयादिभिर्दिव्यैश्चतुर्भिःपुत्रकैर्वृता ॥ १६
मेनाया नन्दिनीदेवी वारिजावारिजेक्षणा ।
अम्बायावीतशोकस्य नन्दिनश्च महात्मनः ॥ १७
शुभावत्यास्सखी शान्ता पञ्चचूडा वरप्रदा ।
सृष्टयर्थं सर्वभूतानां प्रकृतित्वं गताव्यया ॥ १८
त्रयोविंशतिभिस्तत्वैर्महदाद्यैर्विजृम्भिता ।
लक्ष्म्यादिशक्तिभिर्नित्यं नमितानन्दनन्दिनी ॥ १९
मनोन्मनी महादेवी मायावी मण्डनप्रिया ।
मायययाजगत्सर्वं ब्रह्माद्यं सचराचरम् ॥ २०
क्षोभिनीमोहिनीनित्यं योगिनांहृदिसंस्थिता ।
एकानेकस्थिता लोके इन्दीवरनिभेक्षणा ॥ २१
भक्त्यापरमयानित्यं सर्वदेवैरभिष्टुता ।
गणेन्द्राभोजगर्भेन्द्रयमवित्तेशपूर्वकैः ॥ २२

संस्तुताजननी तेषां सर्वोपद्रवनाशिनी ।
भक्तानामार्तिहाभव्या भवभावविनाशिनी ॥ २३
भुक्तिमुक्तिप्रदा दिव्या भक्तानामप्रयत्नतः ।
सामेसाक्षान्महादेवी पापमाशुव्यपोहतु ॥ २४
चण्डस्सर्वगणेशानो मुखाच्छम्भोर्विनिर्गतः ।
शिवार्चनरतश्श्रीमान् समेपापं व्यपोहतु ॥ २५
शालङ्कायनपुत्रस्तु हलमार्गोत्थितःप्रभुः ।
जामाता मरुतां देवस्सर्वभूतमहेश्वरः ॥ २६
सर्वगस्सर्वदृक्कर्वस्सर्वेशस्सर्वगःप्रभुः ।
सनारायणकैर्देवैस्सेन्द्रचन्द्रदिवाकरैः ॥ २७
सिद्धैश्चयक्षगन्धर्वैर्भूतैर्भूतविधायकैः ।
उरगैर्ऋषिभिश्चैव ब्रह्मणाच महात्मना ॥ २८
स्तुतस्त्रैलोक्यनाथस्तु मुनिरन्तःपुरं स्थितः ।
सर्वदापूजितस्सर्वैर्नन्दी पापं व्यपोहतु ॥ २९
महाकायो महातेजा महादेव इवापरः ।
शिवार्चनरतश्श्रीमान् समे पापं व्यपोहतु ॥ ३०

मेरुमन्दरसङ्काशतटकूटप्रभेदनः ।
ऐरावतादिभिर्दिव्यैर्दिग्गजैश्च सुपूजितः ॥ ३१
सप्तपातालपादश्च सप्तद्वीपोरुजङ्घकः ।
सप्तार्णवांकुशश्चैव सर्वतीर्थोदरशिवः ॥ ३२
आकाशदेहो दिग्बाहुस्सोमसूर्याग्निलोचनः ।
हतासुरमहावृक्षो ब्रह्मविद्यामदोत्कटः ॥ ३३
ब्रह्माद्याधोरणैर्दिव्यैर्योगपाशसमन्वितैः ।
बद्धोहृत्पुण्डरीकाख्यैः स्तंभे वृत्ति निरुध्यच ॥ ३४
नागेन्द्रवक्त्रोयस्साक्षाद्गणकोटिशतैर्वृतः ।
शिवध्यानैकसम्पन्नस्समे पापं व्यपोहतु ॥ ३५
भृङ्गीशःपिङ्गळाक्षोसौभसिताशस्तुदेहयुक् ।
शिवार्चनरतश्श्रीमान् समे पापं व्यपोहतु ॥ ३६
चतुर्भिस्तनुभिर्नित्यं सर्वासुरबर्हणः ।
स्कन्दश्शक्तिधरश्शान्तस्सेनानीश्शिखिवाहनः ॥
देवसेनापतिश्श्रीमान् स मे पापं व्यपोहतु ।
भवश्शर्वस्तथेशानो रुद्रः पशुपतिस्तथा ॥ ३८

उग्रोभीमोमहादेवश्शिवार्चनरतस्सदा ।
एताःपापं व्यपोहंतु मूर्तयः परमेष्ठिनः ॥ ३९
महादेवश्शिवोरुद्रश्शङ्करो नीललोहितः ।
ईशानोविजयो भीमो देवदेवोभवोद्भवः ॥ ४०
कपालीशश्च विज्ञेयो रुद्ररुद्रांशसम्भवाः ।
शिवप्रमाणसम्पन्ना व्यपोहंतु मलंमम ॥ ४१
विकर्तनोविवस्वांश्च मार्तण्डोभास्करोरविः ।
लोकप्रकाशकश्चैव लोकसाक्षी त्रिविक्रमः ॥ ४२
आदित्यश्चतथासूर्यश्शांशुमांश्च दिवाकरः ।
एतेवैद्वादशादित्या व्यपोहंतु मलं मम ॥ ४३
गगनं स्पर्शनं तेजोरसश्चपृथिवी तथा ।
चन्द्रस्सूर्यस्तथात्मा च तनवश्शिवभाषिताः ॥ ४४
पापंव्यपोहंतु मम भयं निर्नाशयंतु मे ।
वासवःपावकश्चैव यमोनिर्ऋतिरेवच ॥ ४५
वरुणोवायुसोमौ च ईशानो भगवान्हरिः ।
पितामहश्च भगवान् शिवध्यानपरायणः ॥ ४६

एतेषापं व्यपोहंतु मनसा कर्मणाकृतं ।
नभस्वान्स्पर्शनो वायुरनिलोमारुतस्तथा ॥ ४७
प्राणः प्राणेशजीवेशौ मारुतश्शिवभाषिताः ।
शिवार्चनरतास्सर्वे व्यपोहंतु मलं मम ॥ ४८
खेचरीचसुचारीच ब्रह्मेशोब्रह्मब्रह्मधीः ।
सुषेणश्शाश्वतः पुष्टस्सुपुष्टश्च महाबलः ॥ ४९
एतेवैचारणाश्शम्भोः पूजयातीवभाविताः ।
व्यपोहंतु मलं सर्वपापचैव मयाकृतम् ॥ ५०
मन्त्रज्ञोमन्त्रवित्प्राज्ञो मन्त्रराट्सिद्धपूजितः ।
सिद्धवित्परमस्सिद्धस्सर्वेसिद्धिप्रदायिनः ॥ ५१
व्यपोहंतु मलं सर्वे सिद्धाश्शिवपदार्चकाः ।
यक्षोयक्षेशधनदो जृम्भकोमणिभद्रकः ॥ ५२
पूर्णभद्रेश्वरो माली शितिकुण्डलिरेवच ।
नरेन्द्रश्चैव यक्षेशा व्यपोहंतु मलंमम ॥ ५३
अनन्तःकुलिकश्चैव वासुकिस्तक्षकस्तथा ।
कर्कोटकोमहापद्मश्शङ्खपालश्चकम्बलः ॥ ५४

शिवप्रणामसम्पन्नाशिवदेहप्रभूषणाः ।
ममपापं व्यपोहंतु विषं स्थावरजङ्गमम् ॥ ५५
वीणाज्ञः किन्नरश्चैव सुरसेनः प्रमर्दनः ।
अतीशयस्स प्रयोगी गीतज्ञश्चैव किन्नराः ॥ ५६
शिवप्रणामसम्पन्ना व्यपोहंतु मलं मम ।
विद्याधरश्च विबुधो विद्याराशिर्विदांवरः ॥ ५७
विबुधोविबुधश्रीमान् कृतज्ञश्च महायशाः ।
एतेविद्याधरास्सर्वे शिवध्यानपरायणाः ॥ ५८
व्यपोहंतु मलं घोरं महादेवप्रसादतः ।
वामदेवो महाजम्भः कालनेमिर्महाबलः ॥ ५९
सुग्रीवोमर्दकश्चैव पिङ्गलोदेवमर्दनः ।
प्रह्लादश्चाप्यनुह्लादस्संह्लादः किलवाष्कलौ ॥ ६०
जम्भः कुम्भश्च मायावी कार्तवीर्यः कृतंजयः ।
एते सुरा महात्मानो महादेवपरायणाः ॥ ६१
व्यपोहंतु भयं घोरमासुरम्भावमेवच ।
गरुत्मान् खगतिश्चैव पक्षिराजोनागमर्दनः ॥ ६२

नागशत्रुर्हिरण्याङ्गो वैनतेयः प्रभञ्जनः ।
नागाशीर्विषनागश्च विष्णुवाहनएवच ॥ ६३
एतेहिरण्यवर्णाभा गरुडा विष्णुवाहनाः ।
नानाभरणसम्पन्ना व्यपोहंतु मलं मम ॥ ६४
अगस्त्यश्चवसिष्ठश्च अङ्गिराभृगुरेवच ।
काश्यपोनारदश्चैव दधीचश्चयवनस्तथा ॥ ६५
उपमन्युस्तथान्ये च ऋषयश्शिवभाविताः ।
शिवार्चनरतास्सर्वे व्यपोहंतु मलंमम ॥ ६६
पितरःपितामहाश्च तथवै प्रपितामहाः ।
आग्निष्वात्ताबर्हिषदस्तथासोमपमातामहादयः ॥ ६७
व्यपोहंतु भयं पापं शिवध्यानपरायणाः ।
लक्ष्मीश्चधरणीचैव गायत्रीच सरस्वती ॥ ६८
उषादुर्गाशचीज्येष्ठा मातरस्सुरपूजिताः ।
देवानांमातरश्चैव गणानां मातरस्तथा ॥ ६९
भूतानां मातरस्सर्वा यत्र या गणमातरः ।
प्रसादाद्देवदेवस्य व्यपोहंतु मलं मम ॥ ७०

ऊर्वशीमेनकाचैव रम्भारतितिलोत्तमाः ।
सुमुखीदुर्मुखीचैव कामुकीकामवर्धिनी ॥ ७१
तथान्यास्सर्वलोकेषु दिव्याश्चाप्सरसस्तदा ।
शिवाय ताण्डवं नित्यंकुर्वन्त्योतीवभाविताः ॥ ७२
देव्यशिवार्चनरता व्यपोहंतु मलंमम ।
अर्कस्सोमोऽङ्गारकश्च बुधश्चैव बृहस्पतिः ॥ ७३
शुक्रश्शनैश्चरश्चैव राहुःकेतुस्तथैवच ।
व्यपोहंतु भयं घोरं ग्रहपीडां शिवार्चकाः ॥ ७४
मेषोवृषोथामिथुनस्तथा कर्कटकश्शुभः ।
सिंहश्चकन्याविपुला तुलावैवृश्चिकस्तथा ॥ ७५
धनुश्चमकरश्चैव कुम्भोमीनस्तथैवच ।
राशयो द्वादशह्येते शिवपूजापरायणाः ॥ ७६
व्यपोहंतु भयं पापं प्रसादात्परमेष्ठिनः ।
अश्विनी भरणीचैव कृत्तिका रोहिणीतथा ॥ ७७
श्रीमन्मृगशिरश्चार्द्रा पुनर्वसुपुष्यसार्पकाः ।
मखावैपूर्वफाल्गुन्य उत्तराफाल्गुनीतथा ॥ ७८

हस्तचित्रातथास्वाती विशाखाचानुराधिका ।
ज्येष्ठामूलंमहाभागा पूर्वाषाढातथैवच ॥ ७९
उत्तराषाढिकाचैव श्रवणंच श्रविष्ठका ।
शतभिषक्पूर्वभद्रा च तथाप्रोष्ठपदातथा ॥ ८०
पौष्णंच देव्यस्सततं व्यपोहंतु मलंमम ।
ज्वरःकुम्भोदरश्चैव शंकुकर्णो महाबलः ॥ ८१
महाकर्णः प्रभातश्च महाभूतप्रमर्दनः ।
श्येनजिच्छिवरूपस्य प्रमथाः प्रीतिवर्धनाः ॥ ८२
कोटिकोटिशतैश्चैव भूतानांमातरस्सदा ।
व्यपोहंतु भयं पापं महादेवप्रसादतः ॥ ८३
शिवध्यानैकसम्पन्नो हिमराडम्बुसन्निभः ।
कुन्देन्दुसदृशाकारः कुम्भकुन्देन्दुभूषणः ॥ ८४
बडबानलशत्रुर्यो बडबामुखभेदनः ।
चतुष्पाद समायुक्तः क्षीरोद इव पाण्डुरः ॥ ८५
रुद्रलोके स्थितो नित्यं रुद्रैस्सार्धं गणेश्वरैः ।
वृषेन्द्रोविश्वदृग्देवो विश्वस्यजगतःपिता ॥ ८६

वृतोनन्दादिभिर्नित्यं मातृभिर्मखमर्दनः ।
शिवार्चनरतो नित्यं समे पापं व्यपोहतु ॥ ८७
गङ्गामाता जगन्माता रुद्रलोके व्यवस्थिता ।
शिवभक्तानुयानन्दा सा मे पापं व्यपोहतु ॥ ८८
भद्राभद्रपदादेवी शिवलोकेव्यवस्थिता ।
मातागवांमहाभागा सामेपापं व्यपोहतु ॥ ८९
सुरभिस्सर्वतोभद्रा सर्वपापप्रणाशिनी ।
रुद्रपूजारता नित्यं सा मे पापं व्यपोहतु ॥ ९०
सुशीलाशीलसम्पन्ना श्रीप्रदा शिवभाविता ।
शिवलोके स्थिता नित्यं सामे पापं व्यपोहतु ॥९१
सुमनासुभगादिव्यसुरूपा सुयशाव्यया ।
रुद्रलोकेस्थितानित्यं सामेपापं व्यपोहतु ॥ ९२
वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञस्सर्वकार्याभिचिन्तकः ।
समस्तगुणसम्पन्नस्सर्वदेवेश्वरात्मजः ॥ ९३
ज्येष्ठस्सर्वेश्वरस्सौम्यो महाविष्णुतनुस्स्वयं ।
आर्यस्सेनापतिस्साक्षाद्रुद्रहनो मखमर्दनः ॥ ९४

ऐरावतगजारूढः कृष्णकुञ्चितमूर्धजः ।
कृष्णाङ्गो रक्तनयनश्शशिपन्नगभूषणः ॥ ९५
भूतैःप्रेतैःपिशाचैश्च कूश्माण्डैश्चसमावृतः ।
शिवार्चनरतस्साक्षात्समे पापं व्यपोहतु ॥ ९६
ब्रह्माणीचैवमाहेशी कौमारीवैष्णवीतथा ।
वाराहीचैवमाहेन्द्री चामुण्डाग्नेयिकातथा । ९७
एतावैमातरस्सर्वास्सर्वलोकप्रपूजिताः ।
योगिनीभिर्महापापं व्यपोहंतु समाहिताः ॥ ९८
वीरभद्रोमहातेजा हिमकुन्देन्दुसन्निभः ।
रुद्रस्यतनयो रौद्रश्शूलासक्तमहाकरः ॥ ९९
सहस्रबाहुस्सर्वज्ञस्सर्वायुधधरस्स्वयं ।
त्रेताग्निनयनो देवस्त्रैलोक्याभयदःप्रभुः ॥ १००
मातृगांरक्षकोनित्यं महावृषभवाहनः ।
त्रैलोक्यनमितश्श्रीमान् शिवपादार्चनेरतः ॥ १०१
यज्ञस्यच शिरश्छेत्ता पूष्णोदन्तविनाशनः ।
व्हेर्हेस्तहरस्साक्षाद्भगनेत्रनिपातनः ॥ १०२

पादांगुष्ठेन सोमाङ्गपेषकः प्रभुसंज्ञिकः ।
उपेन्द्रेन्द्रयमादीनां देवानामङ्गरक्षकः ॥ १०३
सरस्वत्यामहादेव्या नासिकोष्ठावकर्तनः ।
गणेश्वरो यस्सेनानीस्समे पापं व्यपोहतु ॥ १०४
ज्येष्ठावरिष्ठावरदा वराभरणभूषिता ।
महालक्ष्मीर्जगन्माता सामेपापं व्यपोहतु ॥ १०५
महामोहा महाभागा महाभूतगणैर्वृता ।
शिवार्चनरता नित्यं सामेपापं व्यपोहतु ॥ १०६
लक्ष्मीस्सर्वगुणोपेता सर्वलक्षणसंयुता ।
सर्वदा सर्वगा देवी साने पापं व्यपोहतु ॥ १०७
सिंहारूढा महादेवी पार्वत्यास्तनयव्यया ।
विष्णोर्निद्रामहामाया वैष्णवीसुरपूजिता ॥ १०८
त्रिनेत्रवरदा देवी महिषासुरमर्दिनी ।
शिवार्चनरता दुर्गा सामे पापं व्यपोहतु ॥ १०९
ब्रह्माण्डधारका रुद्रास्सर्वलोकप्रपूजिताः ।
सत्याश्चमानसास्सर्वे व्यपोहंतु भयं मम ॥ ११०

भूताःप्रेताः पिशाचाश्च कूश्माण्डगणनायकाः ।
कूश्माण्डकाश्चते पापं व्यपोहंतु समाहिताः ॥
अनेनदेवास्तुत्वातु चान्ते सर्वं समापयेत् ।
प्रणम्यशिरसाभूमौ प्रतिमासं द्विजोत्तमाः ॥ ११२
व्यपोहनस्तवं दिव्यं यःपठेच्छृणुयादपि ।
विधूय सर्वपापानि रुद्रलोके महीयते ॥ ११३
कन्यार्थी लभते कन्यां जयकामो जयं लभेत् ।
धनकामोलभेदर्थं पुत्रकामो बहून्सुतान् ॥ ११४
विद्यार्थीलभतेविद्यां भोगार्थी भोगमाप्नुयात् ।
यान्यान्प्रार्थयतेकामान् मानवश्श्रवणादिह ॥ ११५
तान्सर्वान्शीघ्रमाप्नोति देवानांच प्रियो भवेत् ।
पठ्यमानमिदं पुण्यं यमुद्दिश्यतु पठ्यते ॥ ११६
तस्यरोगानबाधन्ते वातपित्तादिसम्भवाः ।
नाकाले मरणं तस्य न सर्पैरपि दश्यते ॥ ११७
यत्पुण्यंचैवतीर्थानां यज्ञानां चैव यत्फलं ।
दानानां चैव यत्पुण्यं व्रतानांच विशेषतः ॥ ११८

तत्पुण्यंकोटिगुणितं जप्त्वाचाप्नोतिमानवः ।
गोघ्नश्चैव कृतघ्नश्च वीरहाब्रह्महाभवेत् ॥ ११९
शरणागतघाती च मित्रविश्वासघातकः ।
दुष्टः पापसमाचारः मातृहापितृहातथा ॥ १२०
व्यपोह्य सर्वपापानि शिवलोके महीयते । १२०५

इति महापुराणे लैङ्गे पूर्वभागे व्यपोहनस्तवः ॥

---

## ॥ सोमसुन्दराष्टकम् ॥

इन्द्रः—

एकं ब्रह्माद्वितीयं च परिपूर्णं परापरम् ।
इति यो गीयते वेदैस्तं वन्दे सोमसुन्दरम् ॥ १
ज्ञातृज्ञानज्ञेयरूपं विश्वव्याप्यं व्यवस्थितम् ।
यं सर्वैरप्यदृश्यो यस्तं वन्दे सोमसुन्दरम् ॥ २
अश्वमेधादियज्ञैश्च यस्समाराध्यते द्विजैः ।
ददाति च फलं तेषां तं वन्दे सोमसुन्दरम् ॥ ३

यं विदित्वा बुधास्सर्वे कर्मबन्धविवर्जिताः ।
लभन्ते परमां मुक्तिं तं वंदे सोमसुन्दरम् ॥ ४
देवदेवं यमाराध्य मृकण्डुतनयो मुनिः ।
नित्यत्वमगमत्सद्यस्तं वंदे सोमसुन्दरम् ॥ ५
निजनेत्राम्बुजकृतं पूजया परितोष्ययम् ।
श्रीपतिर्लभते चक्रं तं वंदे सोमसुन्दरम् ॥ ६
येन सर्वं जगत्सृष्टं रक्षितं संहृतं क्रमात् ।
तत्वं विज्ञान मानन्दं तं वंदे सोमसुन्दरम् ॥ ७
यस्मात्परं चापरं च किञ्चिद्वस्तु न विद्यते ।
ईश्वरं सर्वभूतानां तं वंदे सोमसुन्दरम् ॥ ८
यस्मै वेदाश्च चत्वारो नमस्यन्त वपुर्धराः ।
ईशानं सर्वविद्यानां तं वंदे सोमसुन्दरम् ॥ ९
यस्य प्रणाममात्रेण सन्ति सर्वाश्च सम्पदः ।
सर्वसिद्धिप्रदं शम्भुं तं वंदे सोमसुन्दरम् ॥ १०
यस्य दर्शनमात्रेण ब्रह्महत्यादि पातकम् ।
अवश्यं नश्यति क्षिप्रं तं वंदे सोमसुन्दरम् ॥ ११

उत्तमाङ्गं च चरणं ब्रह्मणा विष्णुनापिच ।
न दृश्यते यस्य यत्तस्तं वंदे सोमसुन्दरम् ॥ १२

इति हालास्यमाहात्म्ये इन्द्रकृतं श्रीसोमसुन्दराष्टकम् ॥

---

## ॥ हलायुधस्तोत्रम् ॥

विघ्नान्निघ्नन् द्विरदवदनः प्रीतये नोस्तु नित्यं वामेकूटः प्रकटितबृहद्दक्षिणः स्थूलदन्तः । यश्श्रीकण्ठं पितर-मुमयाश्लिष्टवामार्धदेहं दृष्ट्वा नूनं स्वयमपि ददावर्धनारीश्व-रत्वम् । १

श्लाघ्यः पुत्रस्स भवति किल स्वस्य वप्तुस्सकाशा-दुक्तैः कैश्चित्कचिदपि गुणैर्यस्समुत्कर्षरेखां । इत्थं वाञ्छन् पितुरधिकतां पञ्चवक्त्रस्य नूनं षष्ठम्बिभ्रद्वदन-मपरं पातु विश्वं विशाखः ॥ २

एको देवस्स जयति शिवः केवलज्ञानमूर्तिर्देवी साच त्रिभुवनमिदं यद्विभूति प्रपञ्चं । यत्कूटस्थं मिथुनमवि-नाभावसम्बन्धयोगान्मिश्रीभूतं तदखिलजगज्जन्मबीजं नमामि ॥ ३

एकस्रष्टा सकलजगतामादिभूतस्स्वयंभूस्त्राता तेषां त्रिभुवनगुरुर्वामदेवः प्रसिद्धः । यस्तौ द्वावप्यतुल-महिमा संहरत्यन्तकाले कस्तस्यान्यो भवति सदृशश्री-महाकाळमूर्तेः ॥ ४

वक्तुं वाञ्छा हर निरवधित्वन्महिम्नः स्वरूपं चेत-श्चैतत्कतिपय पदज्ञान मात्रावसन्नं । ज्ञात्वैवेदं त्रिनयन मथात्वद्गुणस्तोत्रभक्त्या स्वात्मन्येव स्वयमधिकृतो दृष्टतापट्टबन्धः ॥ ५

वागीशस्त्वंयुगपदखिलज्ञानसम्पत्तियुक्तः का ते तुष्टि-स्तुतिरचनया मादृशस्याल्पबुद्धेः । एवंज्ञात्वा हर विर-मतिस्तोत्र हेतौ हठान्मे भक्त्यावेशात्प्रसरति मुखाद्वा-रती किङ्करोमि ॥ ६

यत्ते तत्वं निरवधिपदं वाङ्मनःपारभूतं ब्रह्मादीना-
मपि हरगिरस्तत्र भग्नः प्रवेष्टुं । अर्वाचीनं यदपरमिदं
पार्वतीवल्लभं ते रूपं भक्त्या वरद तदहं वाग्भिरभ्यर्च-
यामि ॥ ७

अन्यैस्तोत्रं रचितममृतस्यन्दिभिर्वाग्विलासैः फल्गु-
प्रायैः किमिदमियता त्यज्यते मद्वचोभिः । किंवा-
कैश्चित्कनककमलैरर्चितं पादपीठं भक्त्या शम्भो नपु-
नरपरः पूजयत्यर्कपुष्पैः ॥ ८

पन्थाहारौ हरजलमुचां यौ च यौ पङ्कजानां मित्रा
मित्रौ वरद हविषां दाहकग्राहकौ यौ । यौगं धन्य प्रज-
नवहनौ तानहं दृष्टहेतोरष्टौ वन्दे त्रिभुवनतनोर्मूर्तिभेदां-
स्तवैतान् ॥ ९

संसारेस्मिन् ध्रुवमसुलभं मानुषं जन्म लब्ध्वा युष्मा-
नेको भजति सुकृती कश्चिदन्यं च देवं । आरूढोपस्मर-
हरगिरिं रोहणं भाग्ययोगादेको रत्नं कलयति महत्काच-
मन्यच्च फल्गु ॥ १०

योत्वामर्हान् सुगत इति वा भक्तियोगाद्भजन्ते तेभ्यश्शम्भो फलमभिमतं त्वं ददासीति युक्तं । अच्छ- च्छान्तैस्स्वरुचिरचितं नाम किंचिद्गृहीत्वा शीतं पीतं जल- मिह जनैः किं न तृप्तिं करोति ॥ ११

आदित्यादिग्रहपरिकरो याति चायाति नित्यं काल- श्चायं दिवसरजनी पक्षमानर्तुचिह्नः । एतत्सर्वं ननु न घटते प्रेरकत्वं विना त कार्ये चास्मिन्नपुनरपरस्यास्ति सामर्थ्यमेतत् ॥ १२

तस्यागारे गिरिश रमते धेनुवत्कामधेनुः क्रीडावटे विटपिसदृशः कल्पते कल्पवृक्षः । लाक्षारक्षामणि- रिव करे तस्य चिन्तामणिस्स्याद्यस्मिन्सिद्धस्सकृदपि कृपा दृष्टिपातप्रसारः ॥ १३

मौळौ लोलत्त्रिदशतटिनीतोयशीतेऽमृतांशुं कण्ठे क्रूरं कबलित विषश्यामले व्यालराजं । ज्योत्स्नागारे वपुषि बिशदं मिभ्रतो भस्मरागं ज्ञाता सम्यक्त्रिनयनमया योगिभूषा तवैव ॥ १४

धत्ते शोभां घुसृणतिलकस्पर्धि चक्षुर्ललाटे
लग्ना त्रिदशतटिनी मालतीमालिकेव । क्ष्वेळः क्रीडा-
मृगमदमयी पत्रलेखेव कण्ठे श्लाघ्यश्शम्भो स्फुरति
सहजः कोपि भूषाविधिस्ते ॥ १५

दग्धं येन त्रिभुवनमिदं देव दुर्वारधाम्ना दग्धस्सोपि
त्रिनयन भवद्दृष्टिपातेन कामः । युक्तंचैतद्भवति पुरु-
षो यः परस्योपतापी तस्यावश्यं पतति शिरसि क्रोधदंडः
प्रभूणाम् ॥ १६

कस्य क्षेमो भवति बलिना स्पर्धमानस्य सार्धं यस्त्व-
त्कोपाग्निनयन भवच्चक्षुषा वह्नितोभूत् । प्रेम्णादृष्टेऽधर-
किसलये दृष्टवान्यस्स कामी लीलानृत्यच्चतुरवनिता-
भ्रूलतापेक्षणानि ॥ १७

ये दारिद्र्योपहतवपुषो ये च दौर्भाग्यतप्ता येवा शत्रु-
व्यसनविकला ये च मौर्ख्यावतप्ताः । येवा कैश्चित्त्रिनयन
दृढं पीडिता दुःखशोकैस्तेषामेकस्त्वमसि शरणं तर्षिता-
नामिवाम्भः ॥ १८

श्लाघ्यं जन्म श्रुतिपरिणतिः सत्क्रियायां प्रवृत्तिः प्रौढि-
रशास्त्रे ललितमधुरा संस्कृता भारतीच । स्फीतालक्ष्मी-
र्वपुरतिदृढं चन्द्ररेखाङ्कमौळे युष्मत्सेवापदविरहितं सर्व-
मेतत्पलालम् ॥ १९

त्वत्पूजायां कुसुमहरणे धावतः पादयुग्मं यत्पाषाण-
व्रजपरिकरोद्गीर्णरेखाङ्कमासीत् । तत्स्यैवं तदनुचरतो
रुद्रलोकं गतस्य ब्रह्मादीनां मकुटकिरणश्रेणयश्शोण-
यन्ति ॥ २०

एषां युष्मत्प्रतिकृतिगृहं लिप्तता पाणयो ये त्वद्भक्तानां
सलिललुलितैर्गोमयैस्सम्प्रलिप्ताः । तेषामीश त्रिदश-
नगरीनायकत्वं गतानां ते लिप्यन्ते मृगमदरसैः खेच-
रीणां कुचेषु ॥ २१

यस्ते कृत्वा स्नपनममृतैः पञ्चभिश्चन्द्रमौळे पश्चात्कै-
श्चित्कुसुमनिकरैर्मूर्ध्नि बध्नाति मालां । तस्यावश्यं
सकलभुवनैकाधिपत्येऽभिषिक्ते बध्नन्त्यन्ये शिरसि पर-
मैश्वर्यं साम्राज्यपट्टम् ॥ २२

एतच्चित्रं क्वचिदपि मया नैव दृष्टं श्रुतं वा तद्विस्पष्टं कथय किमिदं नाथ कौतूहलं मे । यत्तेभक्त्या हरचरणयोरर्पितं पुष्पमेकं सद्यस्सूते फलमभिमतं कोटिशः कामरूपम् ॥ २३

यस्ते भक्त्या वरद चरणद्वन्द्वमुद्दिश्य दद्यादेकं नीलोत्पलदलमपि त्वत्प्रसादेन नूनं । तत्प्रत्यङ्गं निपतति पुनर्दृष्टतालोलतारैर्दिव्यस्त्रीणां कुवलयदलश्रेणिदीर्घैः कटाक्षैः ॥ २४

कृत्वा मालां घनपरिमळोद्गारिधाराकदम्बै र्यस्ते कंठाभरणपदवीं प्रापयेन्नीलकण्ठ । दिव्यस्त्रीणां विपुलपुलकैर्बाहुभिः कण्ठलग्नैस्तस्यापि त्वं वितरसि चिरं निर्भराश्लेषकण्ठम् ॥ २५

कृत्वा पूजां तव चरणयोरादरादष्टमूर्तेयस्साष्टाङ्गं प्रणमति महीपृष्ठपीठे लुठित्वा । प्रत्यासन्नं क्षिपति पदं प्रीतिबद्धानुरागं तस्योत्सङ्गे लुठति धरणी रेणुचक्रच्छलेन ॥ २६

त्वामुद्दिश्य त्रिनयन जनो यः प्रदीपं ददाति ज्योतिर्ज्वालादलिततिमिरं द्योतितान्तर्निकेतं । तस्मै माया रजनिविलसद्गाढ मोहान्धकार छेदप्रौढं त्वमपि दिशसि ज्ञानमात्मप्रकाशम् ॥ २७

चित्रैर्मालारचितकुसुमैर्धूर्जटे पूजयित्वा यस्तौति त्वां जयजय महादेव देवेति वाचा । सेऽप्यारोहन् हर तव पुरो मौलिबद्धाञ्जलीनां शक्रादीनां स्तुतिविषयतां त्वत्प्रसादात्प्रयाति ॥ २८

भस्मस्नानं वपुषि शिरसि स्वर्धुनीवारिभारं शान्तां मूर्तिं कलयसि करे कार्मुकं युक्तमेतत् । अप्यन्येषां कतिपयपुरस्वामिनां चित्रभूताश्चेष्टा दृष्ट्वा त्रिभुवनपतेः किं महेशस्य न स्युः ॥ २९

त्वामाराध्य त्रिदशपतयो भुञ्जते राज्यलक्ष्मीं भिक्षाभुक्त्वं तदपि च महादेवशब्दैकवाच्यः । नैराशिष्यं वरद परमैश्वर्यकोटिप्रतिष्ठं तच्चेदस्ति त्वयि किमपरैः फल्गुभिश्रीविलासैः ॥ ३०

अस्थिग्रन्थिः पितृवनभवं भस्म भूषाङ्गरागः प्रीतिः प्रेतैस्तदसहचराः फेरवः कोऽत्र दोषः । यस्यैश्वर्यं परमपदवीं प्राप्य विश्रान्तमुच्चैस्तस्य भावा कनकमथवासर्वमेतत्समानम् ॥ ३१

आवासस्ते पितृवनमहि क्रीडनं यानमुक्षा भिक्षापात्रं हर नरशिरः खर्परं नैषदोषः । आराधीयस्त्रिनयन भवत्यल्पसंस्थोऽपिलोकेनिस्त्रैगुण्ये पथिविचरतांकोविधिः को निषेधः ॥ ३२

प्रेतावासः शयनमशनं भैक्षमाशाश्च वासः खट्वाङ्गं च ध्वजमुपहितं त्वस्थि नेपथ्यमङ्गे । यद्यप्येवं तदपि भगवन्नीश्वरेत्यस्य नाम्नो निस्सामान्यस्त्वमसि विषयो नापरः कश्चिदस्ति ॥ ३३

दारुध्याने द्विजपरवधूपप्लवोरेतसाम्नौ हेमस्तन्ध्या नटनमिति ते चेष्टितं नैव दुष्टं । मिथ्याज्ञानोपहतमनसां मार्ग मुल्लङ्घ्य दूरं ये निष्क्रान्तास्त्रिनयन नतान् लोकवादास्स्पृशन्ति ॥ ३४

देवास्सर्वे दधति वपुषा भूषणं हेमरत्नं गुञ्जामात्रं कनकमपि ते नास्ति कर्णे करे वा। मार्गातीतं स्फुरति सहजं यस्य सौन्दर्यमङ्गे तस्याहारेष्वितरजनवन्नादरस्त्यादृणेषु ॥ ३५

त्वं ब्रह्मादित्रिदशगुरुभिः पूजितस्स्वार्थहेतोरित्याम्नायो न खलु भवता प्रार्थितः कश्चिदन्यः। इच्छामात्रात्स्वयमपनयन्त्यग्रता यस्य भावास्तस्यापेक्षा कथमिह भवेदीश्वरस्येतरेषु ॥ ३६

खण्डश्चन्द्रश्शिरसि परशुः खण्डमेवायुधन्ते भिक्षापात्रं द्रुहिणशिरसः खण्डमेकं कपालं। खण्डप्रायस्तव परिकरो यद्यपीत्थं तदापि त्वं सर्वेषां स्मृतिमुपगतस्सर्वसम्पूर्णहेतुः ॥ ३७

पृथ्वीपीठीकृतपदमघस्स्वच्छमाकाशलिङ्गं तारापुष्पैश्शिरसि रचिताभ्यर्चनं चन्द्रचूड। इत्थंभावादवहितधियो ये भवन्तं भजन्ते ते लीयन्ते त्वयि जलनिधौ निम्नगानामिवौघाः ॥ ३८

वाराणस्यां स्फुरति यदिदं देवदेवाविमुक्तं शैवंज्योति-
स्सकलभुवनालोकनादर्शभूतं । कृत्वा तस्मिन्प्रमहसि
पदे क्षेत्रसन्यासयोगं त्वय्यैकत्वं व्रजति पुरुषस्तेजसीव
प्रदीपः ॥ ३९

तत्प्रत्यक्षं सकलभुवनाश्चर्यभूतं विभाति ज्योतिर्लिङ्गं
कनककपिलं श्रीगिरौ व्योम्नि दिव्यं । तत्पश्यन्तश्शिव
सुकृतिनः कृन्तसंसारबन्धास्त्वत्कारुण्याश्चिरगणपद-
प्राप्तिभाजो भवन्ति ॥ ४०

वाचाधीशं हुतवहतनुं शक्तिपाणिं भवन्तं ये
ध्यायन्ति त्रिनयन तमस्तेजसा निर्दहन्तं । गङ्गास्रोत-
स्सदृश विलसद्भ पद्यप्रवाहैस्सद्यस्तेषां प्रसरति मुखा-
द्भारती नात्र चित्रम् ॥ ४१

भास्वज्ज्योतिः किरणमरुणं दक्षिणोद्दिग स्थितं त्वां
ये वीक्षन्ते पुरुषमुदितं ख्यातमादित्यमूर्तिं । ते सर्वत्रा-
प्रतिहतदृशस्सूर्य पर्यन्तलोकं पश्यन्त्यग्रे करतलल्लुठ-
त्कन्दुकस्पष्टरूपम् ॥ ४२

ये ध्यायन्ते स्वहृदि विमलं चित्त्वमात्मैकरूपं विश्वादर्शं प्रसरदभितो भूर्भुवस्स्वस्त्रिकीं । इत्थंगत्या गतिपरिचयात्ते तवैव प्रसादा त्सर्वज्ञ त्वं कलविकरणं शीलयन्तो लभन्ते ॥ ४३

ये त्वां शम्भो हृदयकुहरांभोरुहाभ्यन्तरस्थं ज्ञानं ज्योतिस्तदुपरिवशाद्ब्रीहिशूकाग्रसूक्ष्मं । उद्वीक्षन्ते दृढतरलयात्तेप्युपाधिप्रणाशात्त्वय्यैकत्वं नभसि कलशाकाशवन्निर्विशन्ति ॥ ४४

अर्चिर्विद्युत्प्रभृतिभिरलं मार्ग विश्रामहेतोर्ये गच्छन्ति त्रिनयन पथा देवयानेन केचित् । भक्त्या भोगाननुपमरसान् स्वेच्छया ब्रह्मलोके ते तस्यान्ते पुनरपि शिव त्वन्मयत्वं भजन्ते ॥ ४५

यत्रानन्दःस्फुरति परमज्योति रालोकजन्मा भुज्यन्ते च स्वय मुपनता यत्र दिव्यास्सुभोगाः । यत्रावृत्तिर्नभवति पुनः पञ्चमाध्यप्रसिद्धं तद्वैराज्यं पदमपि शिव प्राप्यते त्वत्प्रसादात् ॥ ४६

त्वय्यात्मानं निहितमखिलैस्त्वद्गुणैस्सम्प्रयुक्तं स्वच्छादर्शे मुखमिव चिरं चेतसा निश्चलेन । ये पश्यंति त्रिनयन मनोवाञ्छितार्थप्रसूतिस्तेषामाविर्भवति तरुधियानेव धर्मस्समाधिः ॥ ४७

ज्ञानज्योति स्सकलजगतां यत्प्रकाशस्वरूपं त्वामात्मानं परिहृतगुणं स्पर्शमीशानमौळे । यत्रैकस्मिन्नवहितधियां योगदृष्टिस्थितानां स्वच्छादर्शे प्रतिफलितवद्विश्वमेतद्विभाति ॥ ४८

भूतंभूतं स्मरणविषयं भावितास्त्वन्तकाले सूक्ष्मं मध्येक्षणमिह तयोर्वर्तमानं वलन्ते । यस्मिन्त्सौख्यं कियदमतयो येन मत्ता मनुष्या युष्मत्सेवां भव भवभयध्वंसिनीं नाद्रियन्ते ॥ ४९

ज्ञानं न स्यात्कथिदपि किञ्च ज्ञेयमन्वर्थशून्यं ज्ञेयं सत्तामपि नलभते ज्ञानवाह्यं कदाचित् । इत्यन्योन्यग्रथितमुभयोर्व्यापकं यत्स्वरूपं तत्ते प्राहुः प्रकृतिपुरुषस्यार्धनारीश्वरत्वम् ॥ ५०

यत्प्रत्यक्षं न भवति नृणामिन्द्रियाणामशक्तिर्यत्संबन्ध-ग्रहण विरहं नानुमेयं कदाचित्। शब्दादीनामपि नविषय-त्वापरोक्षस्वरूपं ज्ञानं ज्योतिर्यदिह परम तत्त्वमध्यात्म-मूर्ते ॥ ५१

त्वामात्मानं वरद परमानन्दबोधस्वरूपं ये बुध्यन्ते विगळित जगद्भेदमायाप्रपञ्चं । रागत्यागात्स्तमित - मनसो देवजीवं तयेव भ्रश्यन्माया निगळनिबिड ग्रन्थ-यस्ते विमुक्ताः ॥ ५२

श्लाघ्यं यत्तत्कृपणमनसां सर्वलोकाधिपत्यं या मृग्यन्ते तरळमतिभिस्सिद्धयश्चाणिमाद्याः । एतत्सर्वं मदनदहन त्वत्पदप्राप्तिभाजां तत्वज्ञानामृतरसजुषां योगिनामन्त-रायः ॥ ५३

आशा वासश्शयनमवनिर्ब्रह्मचर्यं च दीर्घं मौनं दण्डग्रहण मशनं भिक्षया भस्मशौचं । वैराग्यंच त्रिनयन भवतत्वबोधाद्विहीनं तूलदेवद्युपललवनं सर्वमेतद्वि-भाति ॥ ५४

स्थित्वा कालं चिरतरमपि ब्रह्मशक्रादिलोके कर्मच्छेदा-
त्पुनरपिततस्त्यादवश्यं निपातः । एकं नित्यं पदमुपनतं
क्लेशकर्मोर्मिदूरं शैवं योगात्परमसुलभं ज्ञानयोगेन
पुंसाम् ॥ ५५

शुकादीनां क्रतुफलजुषां यत्सुखं नाकलोके तत्की-
टादे र्नरकनिलयस्यापि तुल्यं विभाति । येनैकान्तं न
भवति सुखं कस्यचिन्नास्ति दुःखं द्वन्द्वग्रस्तं त्रिभुवनमिदं
त्वं तु तस्माद्विमुक्तः ॥ ५६

बन्धच्छेदादिह तनुभृतां यत्त्वया साकमैक्यं साचे-
न्मुक्तिरिशव किमनया यातु यद्वान्धकूपं । त्वं मे स्वामी
भवदनुचरश्शर्व यत्सर्वदाहं तद्धि श्लाघ्यं स्ववति पदवीं
कामयन्ते न भृत्याः ॥ ५७

वातोद्धूतस्फुटकमलिनीपत्रतोयोपमाने को विश्वासं
व्रजति चपले जन्मिनो जीविते ऽस्मिन् । शान्तस्त्रीणां प्रिय-
सहचरैर्निर्भरालिङ्गितं मे चेतश्शम्भो स्वपिति न यथा-
तत्प्रसादं कुरुष्व ॥ ५८

त्वन्नेत्राभिर्व्यतिकरमयं प्राक्तनं पुष्पचापं स्मृत्वा नूनं व्यवसितमतिर्वैरनिर्यातनाय । यत्संसक्तं तवचरणयो-र्देवसेवानुरागात्तन्मे चेतः प्रहरति शरैस्त्र्यक्ष तद्रक्ष यत्नात् ॥ ५९

भिक्षापात्रं मृगजमजिनं जीर्णकौपीनमेकं कन्धार-ध्यानिपतितजरज्जीर्णलेशैश्च लब्धी । एतावांस्ते हरपरि-करस्त्वत्प्रसादेन नित्यं भूयाद्भूयस्तव चरणयोर्भूयसी भक्तिरेका ॥ ६०

देवस्तद्भवति भगवन् भर्गसर्गस्य सारं तस्मात्पूर्वं महदिति पदं प्रोक्तमुत्कर्षमाह । माहात्म्यं ते स्मरहर महादेव नाम्नैव लोके दूरारूढं वरद किमहं स्तोत्रमन्य-त्करोमि ॥ ६१

यत्र क्वचिद्भवतु देवमनुष्यतिर्यग्योनौ सकर्मपरि-पाकवशात्प्रसूतिः । तत्र स्थितस्य मम बालमृगाङ्कमौले त्वत्पादभक्तिरचलास्तु भवत्प्रसादात् ॥ ६२

तव चरणसरोजे दत्तमेकं प्रसूनं फलति जलधि-

वेलावेष्टितां भूतधात्रीं । प्रतिदिवससपर्याभक्तिकौतू-
हलानां फलमिदमिति शम्भो शक्यते केन वक्तुम् ॥६३

कालेन नीतस्सर्वोऽपि पुनरावर्तते जनः । महाकालेन
नीतस्य नावृत्तिर्विद्यते पुनः ॥ ६४

अप्येकाक्षरजल्पितैरपि शिशोः प्रीतिर्गुरूणां भवे-
त्तस्मान्मद्वचनं मलीमसमपि स्यात्तुष्टिहेतुस्तव । श्रान्त-
स्त्वद्युगकीर्तनात्किमपि यत्पुण्यं मयोपार्जितं तेन स्या-
ज्जननान्तरेऽपि गिरिश त्वय्येव भक्तिर्मम ॥ ६५

वाग्देवी धृतवल्लकी शतमखो वेणुं दधत्पद्मजस्ताळो-
न्निद्रकरो रमा भगवती गेयप्रयोगान्विता । विष्णु-
स्सान्द्र मृदङ्ग मर्दन पटुर्देवास्समन्तात्स्थितास्सेवन्ते
तमनुप्रदोषसमयं देवं मृडानीपतिम् ॥ ६६

शिवे भक्तिश्शिवे भक्तिश्शिवे भक्तिर्भवेभवे ।
सदाभूयात्सदा भूयात्सदा भूयात्सदा मम ॥

इति हलायुधस्तोत्रम् ॥

## ॥ हाटकेश्वरस्तोत्रम् ॥

ओं नमोस्तु शर्व! शम्भो! त्रिणेत्र! चारुगात्र! त्रैलोक्यनाथ! उमापते! दक्षयज्ञविध्वंसकारक! कामाङ्ग नाशन! घोरपापप्रणाशन! महापुरुष! महोग्रमूर्ते! सर्वसत्त्वक्षयङ्कर! शुभङ्कर! महेश्वर! त्रिशूलधर! स्मरारे! गुहाधामन्! दिग्वासः! महाचन्द्रशेखर! जपाधर! कपालमालाविभूषितशरीर! वामचक्षुःक्षुभित-देव! प्रजाध्यक्षभगाक्षणोः क्षयङ्कर! भीमसेनानाथ! पशुपते! कामाङ्गदाहिन्! चत्वरवासिन्! शिव! महा-देव! ईशान! शङ्कर! भीम! भव! वृषध्वज! कलभ-प्रौढमहानाट्येश्वर! भूतिरत! अविमुक्तक! रुद्र! रुद्रेश्वर! स्थाणो! एकलिङ्ग! कालिन्दीप्रिय! श्रीकण्ठ! नीलकण्ठ! अपराजित! रिपुभयङ्कर! सन्तोषपते! वामदेव अघोर! तत्पुरुष! महाघोर! अघोरमूर्ते! शान्त! सरस्वतीकान्त! सहस्रमूर्ते! महोद्भव! विभो!

कालाग्ने! रुद्र! रौद्र! हर! महीधरप्रिय! सर्वतीर्थाधिवास! हंसकामेश्वरकेदार! अधिपते! परिपूर्ण! मुचुकुन्द! मधुनिवास! कृपाणपाणे! भयङ्कर! विद्याराज! सोमराज! कामराज! महीधरराजकन्याहृदब्जवसते! समुद्रशायिन्! गयामुखगोकर्ण! ब्रह्मयोने! सहस्रवक्त्राक्षिचरण! हाटकेश्वर! नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमः ॥

इति श्रीवामनपुराणे हाटकेश्वरस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ हालास्येशाष्टकम् ॥

कुण्डोदरः—शैलाधीशसुतासहाय सकलाम्नायान्तवेद्य प्रभो शूलोग्राग्र विदारितान्धकसुरारातन्द्रिवक्षस्स्थल। कालातीत कलाविलास कुशल त्रायेत ते सन्ततं हालास्येश कृपाकटाक्षलहरी मामापदामास्पदम् ॥ १

कोलाच्छच्छदरूपमाधवसुरज्यैष्ठ्यातिदूरांघ्रिक नी-

लार्धाङ्ग निवेश निर्जरधुनी भास्वज्जटामण्डल । कैलासाचलवासकार्मुक हरं त्रायेत ते सन्ततं हालास्येश कृपाकटाक्षलहरी मामापदामास्पदम् ॥ २

फालाक्ष प्रभव प्रभञ्जन सख प्रोद्यत्स्फुलिङ्गच्छटातूलानङ्गक चारुसंहनन सन्मीनेक्षणावल्लभ । शैलादिप्रमुखैर्गणैस्तुतगण त्रायेत ते सन्ततं हालास्येश कृपाकटाक्षलहरी मामापदामास्पदम् ॥ ३

मालाकल्पितमालुधान फण सन्माणिक्य भास्वत्तनो मूलाधार जगत्त्रयस्य मुरजिन्नेत्रारविन्दार्चित । साराकार भुजा सहस्र गिरिश त्रायेत ते सन्ततं हालास्येश कृपाकटाक्ष लहरी मामापदा मास्पदम् ॥ ४

बालादित्यसहस्रकोटिसदृशोद्यद्वेगवत्यापगावेलाभूमि विहारनिष्ठविबुधस्रोतस्विनी शेखर । बालावर्ण्य कवित्वभूमि सुखद त्रायेत ते सन्ततं हालास्येश कृपाकटाक्ष लहरी मामापदा मास्पदम् ॥ ५

कीलालावनि पावकानिलनभश्चन्द्रार्क यज्वाकृते की·

लानेक सहस्र संकुलशिखि स्तम्भस्वरूपामित । चोळा-
दीष्ट गृहाङ्गना विभवदा त्रायेत ते सन्ततं हालास्येश
कृपाकटाक्ष लहरी मामापदामास्पदम् ॥ ६

लीलार्थाञ्जलिमेकमेव चरतां साम्राज्यलक्ष्मीप्रद
स्थूलाशेषचराचरात्मकजगत्स्थूणाष्टमूर्ते गुरो । ताला-
ङ्कानुज फल्गुन प्रियकर त्रायेत ते सन्ततं हाला-
स्येश कृपाकटाक्ष लहरी मामापदामास्पदम् ॥ ७

हालास्यागत देवदैत्य मुनि सङ्गीतापदानकणत्तूला-
कोटि मनोहरांघ्रि कमला नन्दापवर्गप्रद । श्रीलीलाकर-
पद्मनाभ वरद त्रायेत ते सन्ततं हालास्येश कृपाकटाक्ष-
लहरी मामापदामास्पदम् ॥ ८

लीलानादरमोहतः कपटतो यद्वा कदम्बाटवी हाला-
स्याधिपतीष्टमष्टकमिदं सर्वेष्टसन्दोहदम् । हालापान-
कलान्विहाय सततं सङ्कीर्तयन्तीह ये ते लाक्षार्द्रपदा-
बलाभिरखिलान् भोगान् लभन्ते सदा ॥ ९

इति श्रीहालास्यमाहात्म्ये कुण्डोदरकृतं श्रीहालास्येशाष्टकम् ॥

॥ श्रीः ॥



## ॥ विष्णुब्रह्मकृत महालिङ्गस्तुतिः ॥

ब्रह्मविष्णू:—

अनादिमल संसार रोगवैद्याय शम्भवे ।
नमश्शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिङ्गमूर्तये ॥ १
आदिमध्यान्तहीनाय स्वभावानलदीप्तये ।
नमश्शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिङ्गमूर्तये ॥ २
प्रळयार्णवसंस्थाय प्रळयोत्पत्तिहेतवे ।

नमश्शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिङ्गमूर्तये ॥ ३
ज्वालामालावृताङ्गाय ज्वलनस्तम्भरूपिणे ।
नमश्शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिङ्गमूर्तये ॥ ४
महादेवाय महते ज्योतिषेऽनन्ततेजसे ।
नमश्शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिङ्गमूर्तये ॥ ५
प्रधान पुरुषेशाय व्योमरूपाय वेधसे ।
नमश्शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिङ्गमूर्तये ॥ ६
निर्विकाराय नित्याय सत्यायामलतेजसे ।
नमश्शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिङ्गमूर्तये ॥ ७
वेदान्तसाररूपाय कालरूपाय धीमते ।
नमश्शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिङ्गमूर्तये ॥ ८
एवं संस्तूयमानस्तु व्यक्तोभूत्वा महेश्वरः ।
भाति देवो महायोगी सूर्यकोटिसमप्रभः ॥ ९
वक्त्रकोटिसहस्रेण प्रसमान इवाम्बरम् ।
सहस्रहस्त चरण स्सोमसूर्याग्निलोचनः ॥ १०
पिनाकपाणिर्भगवान्कृत्तिवासाः पिनाकधृत् ।

व्याळयज्ञोपवीती च मेघदुन्दुभिनिस्वनः ॥ ११
अथोवाच महादेवः प्रीतोहं सुरसत्तमौ ।
पश्यन्तं मां महायोगं भयं सर्वं विमुच्यताम् ॥१२
युवां प्रसूतौ गात्राभ्यां मम पूर्वं सनातनौ ।
अयं महर्षिणे पार्श्वे ब्रह्मा लोककरः परः ॥ १३
वामपार्श्वे च मे विष्णुः पालको हृदये हरः ।
प्रीतोहं युवयो स्सम्यग्वरं दद्मि यथेप्सितम् ॥ १४
एवमुक्त्वाथ मां देवो महादेवस्स्वयं शिवः ।
आलिङ्ग्य देवं ब्रह्माणं प्रसादाभिमुखोऽभवत् ॥१५
ततः प्रहृष्टमनसौ प्रणिपत्य महेश्वरम् ।
ऊचतुः प्रेक्ष्य तद्वक्त्रं नारायण पितामहौ ॥ १६
यदि प्रीतिस्समुत्पन्ना यदि देयो वरश्च नौ ।
भक्तिर्भवतु नौ नित्यं त्वयि देव महेश्वर ॥ १७
ततस्स भगवानीशः प्रहसन्परमेश्वरः ।
उवाच मां महादेवः प्रीतः प्रीतेन चेतसा ॥ १८

ईश्वरः—

प्रळयस्थितिसर्गाणां कर्ता त्वं धरणीधर ।
वत्स विष्णो जगत्सर्वं पालयैतच्चराचरम् ॥ १९
त्रिधा भिन्नोस्म्यहं विष्णो ब्रह्म विष्णु शिवाख्यया ।
सर्गरक्षालयगुणै र्निर्गुणोहं निरञ्जनः ॥ २०
सम्मोहं त्यज भो विष्णो पालयैनं पितामहम् ।
भविष्यत्येष भगवान् तव पुत्रस्सनातनः ॥ २१
अहं भगवतो वक्त्रात्कल्पान्ते रुद्ररूपधृत् ।
शूलपाणि र्भविष्यामि क्रोधजस्तव पुत्रकः ॥ २२
एवमुक्त्वा महादेवो ब्रह्माणं मुनिसत्तमाः ।
अनुगृह्य च मां देवस्तत्रैवान्तरधीयत ॥ २३
ततः प्रभृतिलोकेषु लिङ्गार्चा सुप्रतिष्ठिता ।
लिङ्गं तल्लिङ्गनाद्ब्रह्मन् ब्रह्मणः परमं वपुः ॥ २४
एवं लिङ्गस्य माहात्म्यं भाषितं ते मयानघ ।
एतद्बुध्यन्ति योगज्ञा नदेवा नच वासवः ॥ २५
एतद्धि परमं ज्ञानमव्यक्तं शिवसंज्ञितम् ।

एतत्सूक्ष्ममचिन्त्यं तत्पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥ २६
तस्मै भगवते नित्यं नमस्कारं प्रकुर्महे ।
महादेवाय रुद्राय देवदेवाय लिङ्गिने ॥ २७
नमोवेदरहस्याय नीलकण्ठाय वैनमः ।
विभीषणाय शान्ताय स्थाणवे योगिने नमः ॥ २८
ब्रह्मणे वेदवेद्याय त्रिणेत्राय महीयसे ।
नमोवेदरहस्याय योगगम्याय ते नमः ॥ २९
शङ्कराय महेशाय गिरीशाय शिवायच ।
नमस्कुरुष्व सततं ध्यायस्व मनसा हरम् ॥ ३०
संसारसागरादस्मादचिरादुद्धरिष्यसि ।

सूतः—

एवं स वासुदेवेन व्याहृतो मुनिपुङ्गवः ॥ ३१
जगाम मनसा देव मीशानं विश्वतोमुखम् ।
प्रणम्य शिरसा विष्णुमनुज्ञातो महामुनिः ॥ ३२
जगाम चेप्सितं देवं देवदेवं त्रिलोचनम् ।
यइदं श्रावयेन्नित्यं लिङ्गाध्याय मनुत्तमम् ॥ ३३

शृणुयाद्वा पठेद्वापि सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
श्रुत्वा सकृदपिह्येतत्तपश्चरणमुत्तमम् ॥ ३४
वासुदेवस्य विप्रेन्द्राः पापान्मुच्यन्ति मानवाः ।
जपेद्वाऽहरहर्नित्यं ब्रह्मलोके महीयते ॥ ३५
एवमाह महायोगी कृष्णद्वैपायनः प्रभुः ॥

इति श्रीकूर्मपुराणे ब्रह्मविष्णुकृता श्रीमहालिङ्गस्तुतिः ॥

ॐ

## ॥ तीक्ष्णदंष्ट्रकालभैरवाष्टकम् ॥

तीक्ष्णदंष्ट्रेति प्रार्थनं-भैरवो देवता—

ओं यंयंयं यक्षरूपं दशदिशिविदितं भूमिकंपायमानं संसंसं संहारमूर्तिं शिरमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिंबम् । दंदंदं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं पंपंपं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ १

रंरंरं रक्तवर्णं कटिकटिततनुं तीक्ष्णदंष्ट्राकरालं घं-
घंघं घोषघोषं घघघघ घटितं घर्जरं घोरनादम् । कं-
कंकं कालपाशं धृकधृकधृकितं ज्वालितं कामदाहं ततंतं
दिव्यदेहं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ २

लंलंलं वदंतं ललल ललितं दीर्घजिह्वाकराळं धुं-
धुंधुं धूम्रवर्णं स्फुटविकटमुखं भास्करं भीमरूपम् । रुंरुं-
रुं रुंडमालं रवितम नियतं ताम्रनेत्रं कराळं नंनंनं नग्न-
भूषं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ ३

वंवंवं वायुवेगं नतजनसदयं ब्रह्मपारं परंतं खंखंखं
खड्गहस्तं त्रिभुवनविलयं भास्करं भीमरूपम् । चंचंचं
चलित्वा चलचलचलिताच्चालितं भूमिचक्रं मंमंमं
मायिरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ ४

शंशंशं शङ्खहस्तं शशिकरधवळं मोक्षसम्पूर्णतेजं
मंमंमं महान्तं कुलमकुळकुलं मन्त्रगुप्तं सुनित्यम् । यंयं
यं भूतनाथं किलिकिलिकिलितं वालकेलिप्रधानं अंअंअं
अन्तरिक्षं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ ५

खंखंखं खड्गभेदं विषममृतमयं कालकालं कराळं क्ष्रौंक्ष्रौंक्ष्रौं क्षिप्रवेगं दहदहदहनं तप्तसंदीप्यमानम् । हौंहौंहौं-कारनादं प्रकटितगहनं गर्जितैर्भूमिकंपं वंवंवं वाललीलं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ ६

संसंसं सिद्धियोगं सकलगुणमखं देवदेवं प्रसन्नं पंपंपं पद्मनाभं हरिहरमयनं चन्द्रसूर्याग्निनेत्रम् । ऐंऐं-ऐं ऐश्वर्यनाथं सततभयहरं पूर्वदेव स्वरूपं रौंरौंरौं रौद्र-रूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ ७

हंहंहं हंसयानं हपितकलहकं मुक्तयोगाट्टहासं धंधं-धं नेत्ररूपं शिरमुकुटजटाबन्धबन्धाग्रहस्तम् । टंटंटं टंकारनादं त्रिदशलटलटं कामगर्वापहारं भूंभूंभूं भूतनाथं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ ८

इत्येवं कामयुक्तं प्रपठति नियतं भैरवस्याष्टकं यो निर्विघ्नं दुःखनाशं सुरभयहरणं डाकिनीशाकिनीनाम् । नश्येद्विघ्नव्याघ्रसर्पा हुतवहसलिले राज्यशस्त्रं शून्यं

सर्वा नश्यन्ति दूरं विपद इति भृशं चिन्तनात्सर्व सिद्धिम् ॥ ९

भैरवस्याष्टकमिदं षाण्मासं यः पठेन्नरः ।
स याति परमं स्थानं यत्र देवो महेश्वरः ॥ १०
सिंदूरारुणगात्रं च सर्वजन्मविनिर्मितम् ।
मुकुटाद्यधरं देवं भैरवं प्रणमाम्यहम् ॥ ११

इति तीक्ष्णदंष्ट्र कालभैरवाष्टकम् ॥

---

## ॥ महेश्वरपञ्चरत्नस्तोत्रम् ॥

प्रातस्स्मरामि परमेश्वरवक्त्रपद्मं कालाक्षिकीलपरिशोषित पञ्चबाणम् । भस्मत्रिपुण्ड्ररचितं फणिकुण्डलाढ्यं कुन्देन्दुचन्दन सुधारसमन्दहासम् ॥ १

प्रातर्भजामि परमेश्वर बाहुदण्डान् खट्वाङ्गशूल-

हरिणाहिपिनाकयुक्तान् । गौरीकपोलकुचराङ्कितपत्ररेखान् सौवर्णकङ्कणमणिद्युतिभासमानान् ॥ २

प्रातर्नमामि परमेश्वरपादपद्मं पद्मोद्भवामरमुनीन्द्र-मनोनिवासम् । पद्माक्षनेत्रसरसीरुह पूजनीयं पद्मांकुश-ध्वजसरोरुहलाञ्छनाढ्यम् ॥ ३

प्रातस्स्मरामि परमेश्वरपुण्मूर्तिं कर्पूरकुन्दधवलं गज-चर्मचेलम् । गङ्गाधरं घनकपर्दविभासमानं कात्यायनी-तनुविभूषितवामभागम् ॥ ४

प्रातस्स्मरामि परमेश्वरपुण्यनाम श्रेयःप्रदं सकल-दुःखविनाशहेतुम् । संसारतापशमनं कलिकल्मषघ्नं गोकोटिदानफलदं स्मरणेन पुंसाम् ॥ ५

श्रीपञ्चरत्नानि महेश्वरस्य भक्त्या पठेद्यस्सुगतिः प्रभाते । आयुष्य मारोग्य मनेकभोगान् प्राप्नोति कैवल्य-पदं दुरापम् ॥ ६

इति श्रीमहेश्वरपञ्चरत्नस्तोत्रम् ॥

## ॥ राहुमन्त्रः ॥

ॐम् अस्य श्री राहुमहामन्त्रस्य वामदेवऋषिः । गायत्री छन्दः । राहुर्देवता । राहुग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । धूम्रवर्णाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ कराळवदनाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ खण्डवराय मध्यमाभ्यां नमः ॥ महाशूराय अनामिकाभ्यां नमः ॥ शूलधराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ नीलसिंहासनस्थाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादिन्यासः ॥ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

कराळवदनं खड्गचर्मशूलवरान्वितम् । नीलसिंहासनं ध्यायेद्राहुं तं च प्रशान्तये ॥

लमित्यादि पञ्चपूजा ।

मूलमन्त्रः—

कयानश्चित्र आभुव दूतीसदावृधस्सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥

इति राहुमन्त्रः ॥

## ॥ रत्नद्वयम् ॥

न मेऽस्ति देहेन्द्रियबुद्धियोगो न पुण्यलेशोऽपि न पापलेशः । क्षुधापिपासादि षडूर्मिदूरः सदा विमुक्तोऽस्मि चिदेव केवलः ॥ १

अपाणिपादोऽहमवाग्चक्षुरप्राण एवास्म्यमनाद्य - बुद्धिः । व्योमेव पूर्णोऽस्मि विनिर्मलोऽस्मि सदैकरूपोऽस्मि चिदेव केवलः ॥ २

इति रत्नद्वयम् ॥

## ॥ राहुकवचः ॥

अस्य श्री राहुकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य चन्द्रऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः - राहुर्देवता - नीं बीजम् - ह्रीं शक्तिः - कां कीलकम् - मम राहुग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः - रामित्यादिषडङ्गहृदयादिन्यासः - भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

प्रणमामि सदा राहुं सर्पाकारं किरीटिनम् ।
सैंहिकेयं कराळास्यं भक्तानामभयप्रदम् ॥
राहुं चतुर्भुजं चर्मशूलखड्गवराङ्गिनम् ।
कृष्णाम्बरधरं नीलं कृष्णगन्धानुलेपनम् ॥
गोमेधिकविभूषं च विचित्रमकुटं फणिम् ।
कृष्णसिंहरथारूढं मेरुं चैवाप्रदक्षिणम् ॥
नीलाम्बरश्शिरः पातु ललाटं लोकवन्दितः ।
चक्षुषी पातु मे राहुःश्रोत्रे मेऽर्धशरीरवान् ॥
नासिकां मे कराळास्य श्शूलपाणिर्मुखं मम ।
जिह्वां मे सिंहिकासूनुः कण्ठं मे कष्टनाशनः ॥
भुजङ्गेशो भुजौ पातु नीलमाल्यः करौ मम ।
पातु पक्षौ तमोमूर्तिः पातु नाभिं विधुंतुदः ॥
कटिं मे विकटः पातु ऊरू मेऽसुरपूजितः ।
स्वर्भानुर्जानुनी पातु जङ्घे मे पातु चाव्ययः ।
गुल्फौ ग्रहाधिपः पातु नीलचन्दनभूषितः ।
पादौ नीलाम्बरः पातु सर्वाङ्गं सिंहिकासुतः ॥

राहोरिदं कवचमभीप्सितवस्तुदं यो
भक्त्या पठत्यनुदिनं नियतश्शुचिस्सन् ।
प्राप्नोति कीर्तिमतुलां च श्रियं समृद्धि-
मारोग्यमायुर्विजयावसितप्रसादात् ॥

इति पाद्मे महापुराणे राहुकवचः ॥

---

## ॥ राहुस्तोत्रम् ॥

अस्य श्री राहुस्तोत्रमहामन्त्रस्य वामदेवऋषिः - अनुष्टुप्छन्दः । राहुर्देवता - राहुग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

काश्यपउवाच—

शृण्वन्तु मुनयस्सर्वे राहुप्रीतिकरं स्तवम् ।
सर्वरोगप्रशमनं विषभीतिहरं परम् ॥
सर्वसम्पत्करंचैव गुह्यं स्तोत्रमनुत्तमम् ।
आदरेण प्रवक्ष्यामि सावधानाश्च शृण्वत ॥

राहुस्सूर्यरिपुश्चैव विषज्वालाधृताननः ।
सुधांशुवैरी श्यामात्मा विष्णुचक्राहितो बली ॥
भुजगेशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः क्रूरकर्मा ग्रहाधिपः ।
द्वादशैतानि नामानि नित्यं यो नियतः पठेत् ॥
जप्त्वातु प्रतिमां चैव सीसजां माषसंस्थिताम् ।
नीलगन्धाक्षतैः पुष्पैर्भक्त्या सम्पूज्य यत्नतः ॥
वह्निमण्डल मानीय दूर्वान्नाज्याहुतीः क्रमात् ।
तन्मन्त्रेणैव जुहुया द्यावदष्टोत्तरं शतम् ॥
हुत्वा चैवतु यो नित्यं प्रार्थयेद्राहुनायकम् ।
राहो करालवदन रविचन्द्र भयङ्कर ॥
तमोरूप नमस्तुभ्यं प्रसादं कुरु सर्वदा ।
सम्प्राप्यैवं ग्रहेशं तं स्तोत्रं यः प्रयतः पठेत् ॥
राहुः प्रीतमनास्तस्य चाष्टमस्थानगोऽपिवा ।
विषान्नजनिता भीतिर्महारोगस्त्वचिन्तितः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति नष्टराज्यमुपैतिच ।
इति तद्वचनं श्रुत्वा स्तोत्रेणानेन सुव्रतः ॥

स्तुत्वा ग्रहेशं स्वर्भानुं सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥

एवं पठेदनुदिनं स्तवराजमेनं
राहुः प्रसन्नहृदयो विजितेन्द्रियो यः ।
आरोग्यमायुरखिलांश्च मनोरथार्थान्
सम्प्राप्नुवन्ति विषमाश्च ग्रहाः प्रसन्नाः ॥

इति राहुस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ रुद्रस्तुतिः ॥

नमो देवाय महते देवदेवाय शूलिने ।
त्र्यम्बकाय त्रिणेत्राय योगिनां पतये नमः ॥ १
नमोस्तु देवदेवाय महादेवाय वेधसे ।
शम्भवे स्थाणवे नित्यं शिवाय परमात्मने ॥ २
नमस्सोमाय रुद्राय महावासाय हेतवे ।
प्रपद्येऽहं विरूपाक्षं शरण्यं ब्रह्मचारिणम् ॥ ३
महादेवं महायोगमीशानं त्वम्बिकापतिम् ।

योगिनां योगदाकारं योगमायासमाहृतम् ॥ ४
योगिनां गुरुमाचार्यं योगगम्यं सनातनम् ।
ससारतारण रुद्र ब्रह्माणं ब्रह्मणोऽधिपम् ॥ ५
शाश्वतं सवरं शान्तं ब्रह्माणं ब्राह्मणप्रियम् ।
कपर्दिनं कळामूर्तिममूर्तिममरेश्वरम् ॥ ६
एकमूर्तिं महामूर्तिं वेदवेद्यं सतां गतिम् ।
नीलकण्ठं विश्वमूर्तिं व्यापिनं विश्वरेतसम् ॥ ७
कालाग्निं कालदहनं कामिनं कामनाशनम् ।
नमामि गिरिशं देवं चन्द्रावयवभूषणम् ॥ ८
त्रिलोचनं लेलिहानमादित्यं परमेष्ठिनम् ।
उग्रं पशुपतिं भीमं भास्करं तमसः परम् ॥ ९

इति श्रीकूर्मपुराणे व्यासोक्ता रुद्रस्तुतिः ॥

## ॥ रुद्रकवचम् ॥

अस्य श्रीरुद्रकवचस्तोत्र महामन्त्रस्य-दुर्वासाऋषिः-अनुष्टुप्छन्दः - त्र्यम्बकरुद्रो देवता - ओं बीजं - ह्रीं शक्तिः - क्रों - कीलकं - मम मनोभीष्टसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः - ह्रामित्यादि षड्दीर्घषडङ्गन्यासः ॥

ध्यानम्—

शान्तं पद्मासनस्थं·····नमामि ॥

दुर्वासा उवाचः—

प्रणम्य शिरसा देवं स्वयम्भुं परमेश्वरम् ।
एकं सर्वगतं देवं सर्वदेवमयं विभुम् ॥ १
रुद्रवर्मं प्रवक्ष्यामि अङ्गप्राणस्य रक्षणे ।
अहोरात्रमयं देवं रक्षार्थं निर्मितं पुरा ॥ २
रुद्रो मे चाग्रतः पातु पातु पार्श्वौ हरस्तथा ।
शिरो मे ईश्वरः पातु ललाटं नीललोहितः ॥ ३
नेत्रयोरुयम्बकः पातु मुखं पातु महेश्वरः ।
कर्णयोः पातु मे शम्भुर्नासिकायां सदाशिवः ॥ ४
वागीशः पातु मे जिह्वामोष्ठौ पात्वम्बिकापतिः ।

श्रीकण्ठः पातु मे ग्रीवां बाहूंश्चैव पिनाकधृत् ॥ ५
हृदयं मे महादेव ईश्वरोऽव्यात् स्तनान्तरम् ।
नाभिं कटिं सवक्षश्च पातु शर्व उमापतिः ॥ ६
बाहुमध्यान्तरं चैव सूक्ष्मरूपःसदाशिवः ।
सर्वं रक्षतु सर्वेशो गात्राणि च यथाक्रमम् ॥ ७
वज्रशक्तिधरं चैव पाशाङ्कुशधरं तथा ।
गण्डशूलधरं नित्यं रक्षतु त्रिदशेश्वरः ॥ ८
प्रस्थानेषु पदे चैव वृक्षमूले नदीतटे ।
सन्ध्यायां राजभवने विरूपाक्षस्तु पातु माम् ॥ ९
शीतोष्णादथ कालेषु तुहिनद्रुमकण्टके ।
निर्मनुष्येऽसमे मार्गे त्राहि मां वृषभध्वज ॥ १०
इत्येतद्रुद्रकवचं पवित्रं पापनाशनम् ।
महादेवप्रसादेन दुर्वासो मुनिकल्पितम् ॥ ११
ममाख्यातं समासेन न भयं विंदति क्वचित् ।
प्राप्नोति परमारोग्यं पुण्यमायुष्यवर्धनम् ॥ १२
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।

कन्यार्थी लभते कन्यां न भयं विंदते क्वचित् ॥१३
अपुत्रो लभते पुत्रं मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ।
त्राहि त्राहि महादेव त्राहित्राहि त्रयीमय ॥ १४
त्राहि मां पार्वतीनाथ त्राहि मां त्रिपुरान्तक ।
पाशं खट्वाङ्गदिव्यास्त्रं त्रिशूलं रुद्रमेवच ॥ १५
नमस्करोमि देवेश त्राहि मां जगदीश्वर ।
शत्रुमध्ये सभामध्ये ग्राममध्ये गृहान्तरे ॥ १६
गमनागगने चैव त्राहि मां भक्तवत्सल ।
त्वं चित्तं त्वं मानसं च त्वं बुद्धिस्त्वं परायणम् ॥
कर्मणा मनसा चैव त्वं बुद्धिश्च यथा सदा ।
ज्वरभयं छिंधि सर्वज्वरभयं छिंधि ग्रहभयं छिंधि ।
सर्वशत्रून्निवर्त्यापि सर्वव्याधिनिवारणम् ।
अस्य रुद्रलोकं स गच्छति श्रीरुद्रलोकं स गच्छ-
त्योन्नम इति ॥

इति श्री स्कान्दपुराणे दुर्वासःप्रोक्तं श्री रुद्रकवचम्
समाप्तम् ॥

## ॥ ब्रह्मादिदेवकृतमहादेवस्तुतिः ॥

देवाः—

नमो भवाय शर्वाय रुद्राय वरदाय च ।
पशूनां पतये नित्यमुग्राय च कपर्दिने ॥ १
महादेवाय भीमाय त्र्यम्बकाय विदाम्पते ।
ईश्वराय भगघ्नाय नमस्त्वन्धकघातिने ॥ २
नीलग्रीवाय भीमाय वेधसां पतये नमः ।
कुमारशत्रुविघ्नाय कुमारजननाय च ॥ ३
विलोहिताय धूम्राय धराय ऋथनाय च ।
नित्यं नीलशिखण्डाय शूलिने दिव्यशालिने ॥ ४
उरगाय सुनेत्राय हिरण्यवसुरेतसे ।
अचिन्त्यायाम्बिकाभर्त्रे सर्वदेवस्तुताय च ॥ ५
वृषध्वजाय चण्डाय जटिने ब्रह्मचारिणा ।
तप्यमानाय सलिले ब्रह्मण्यायाजिताय च ॥ ६
विश्वात्मने विश्वसृजे विश्वमावृत्य तिष्ठते ।
नमोऽस्तु दिव्यसेव्याय प्रभवे सर्वसम्पदाम् ॥ ७

अभिगम्याय काम्याय सव्यापाराय सर्वदा ।
भक्तानुकम्पिने तुभ्यं दिश मे जन्मनो गतिम् ॥ ८

इति श्रीमत्स्यपुराणे ब्रह्मादिदेवकृत महादेवस्तुतिः ॥

---

## ॥ श्री शिवात्मार्पणस्तुतिः ॥

श्रीमद्राजमहेन्द्रदिव्यनिलयं सम्प्राप्य नित्यं बुधान्
त्रातुं नैजदयाविलोकनसुधामावर्षयं कान्तिम् ।
चातुर्वर्गिकसस्यजं फलमदात्तेषां सदा पातु मा-
मापन्नं समृकण्डुजेश्वरसमाख्यो दैवचूडामणिः ॥ १

कस्ते वेद्धुं प्रभवति परं देवदेवप्रभावं
यस्मादित्थं विविधरचनासृष्टिरेषा बभूव ।
भक्तिग्राह्यस्त्वमिति तदपि त्वामहं भक्तिमात्र-
स्तोतुं वांछाम्यतिमहदिदं साहसं मे सहस्व ॥ २

क्षित्यादीनामवयववतां निश्चितं जन्म तावत्
तन्नास्त्येषः कचन कलितं कर्त्रधिष्ठानहीनम् ।

नाधिष्ठातुं प्रभवति जडो नाप्यनीशश्च भाव-
स्तस्मादाद्यस्त्वमसि जगतामेव जाने विधातः ॥ ३
इन्द्रं मित्रं वरुणमनलं पद्मजं विष्णुमीशं
प्राहुस्ते ते परमशिव ते मायया मोहितास्ताः ।
नेत्रैस्साकं सकलमपि यच्छक्तिलेशे समाप्तं
सत्वं देवश्श्रुतिषु विदितश्शम्भुरित्यादिदेवः ॥ ४
आनन्दाब्धेः कमपिच घनीभावमास्थाय रूपं
शक्त्या सार्धं परममुमया शाश्वतं भोगमृच्छन् ।
अध्वातीते शुचिदिवसकृत्कोटिदीप्ते कपर्दि-
न्नाद्ये स्थाने विहरसि सदा सेव्यमानो गणेशैः ॥५
त्वं वेदान्तैर्विविधमहिमा गीयसे विश्वनेतः
त्वं विप्राद्यैरदं निखिलैरिज्यसे कर्मभिस्त्वैः ।
त्वं द्रष्टानुश्रविकविषयानन्दमात्राद्वितृष्णै-
रन्तर्ग्रन्थिं प्रविलयकृते चिन्त्यसे योगिवृन्दैः ॥ ६
ध्यायंतस्त्वां कतिचन भवं दुस्तरं निस्तरन्ति
त्वत्पादाब्जं विधिवदितरे नित्यमाराधयन्तः ।

अन्ये वर्णाश्रमविधिरताः पालयन्तस्त्वदाज्ञां
सर्वं हित्वा भवजलनिधावेष मज्जामि घोरे ॥ ७
उत्पद्यापि स्मरहर महत्युत्तमानां कुलेऽस्मि-
न्नास्वाद्य त्वन्महिमजलधेरप्यहं शीकराणून् ।
त्वत्पादार्चाविमुखहृदयश्चापलादिन्द्रियाणां
व्यग्रस्तुच्छेष्वहह जननं व्यर्थयाम्येष पापः ॥ ८
अर्कद्रोणप्रभृति कुसुमैरर्चनं ते विधेयं
प्राप्यं तेन स्मरहर फलं मोक्षसाम्राज्यलक्ष्मीः ।
एतज्जानन्नपि शिवशिव व्यर्थयन् कालमात्म-
न्नात्मद्रोही करणविवशो भूयसाधः पतामि ॥ ९
किंवा कुर्वे विषमविषयस्वैरिणा वैरिणाहं
बद्धस्त्वामिन्वपुषि हृदयग्रन्थिना साकमस्मिन् ।
उक्षगादर्प ज्वर भर जुषा साकमेकत्र नद्ध-
श्श्राम्यद्वत्स स्मरहरयुगे धावता किं करोति ॥ १०
नाहं रोद्धुं करणनिचयं दुर्णयं पारयामि
स्मारंस्मारं जनिपथरुजं नाथ सीदामि भीत्या ।

किंवा कुर्वे किमु वद भजे क्वाद्य गच्छामि हन्त
त्वत्पादाब्जप्रपदनमृते नैव पश्याम्युपायम् ॥ ११
उल्लंघ्याज्ञामुडुपतिकलाचूड ते विश्ववन्द्यां
त्यक्ताचारः पशुवदधुना मुक्तलज्जश्चरामि ।
एवं नानाविधभवतिप्राप्तदीर्घापराधः
क्लेशांभोधिं कथमहमृते त्वत्प्रसादात्तरेयम् ॥ १२
क्षाम्यस्येव त्वमिह करुणासागरः कृत्स्नभाग-
रसंसारोत्थं गिरिश न भयं प्रार्थनादैन्यमात्रात् ।
अद्याप्येवं प्रतिकलमहं व्यक्तमागःसहस्रं
कुर्वन्मूर्खः कथमिह तथा निस्त्रपः प्रार्थयेयम् ॥ १३
सर्वं हर्तुं प्रभवति जनस्संसृतिप्राप्तमाग-
श्चेतश्चानु प्रशमसमये त्वत्पदाब्जे निधाय ।
तस्मिन्काले यदि मम मनो नाथ दोषत्रयार्तं
प्रज्ञाहीनं पुरहर भवेत्तत्कथं मे घटेत ॥ १४
प्राणोत्क्रांति व्यतिकरदलत्संधिबन्धे शरीरे
प्रेमावेशप्रसरदमिताक्रन्दिते बन्धुवर्गे ।

अन्तः प्रज्ञामपि शिव भजन्नन्तरायैरनंतै-
राविद्धोऽहं त्वयि कथमिमामर्पयिष्यामि बुद्धिम् ॥
अद्यैव त्वत्पदनलिनयोरर्पयाम्यन्तरात्म-
न्नात्मानं मे सदुपरिकरैरद्रिकन्याधिनाथ ।
नाहं वेद्मि तव शिवपदं न क्रिया योगचर्या
कर्तुं शक्नोम्यनितरगतिः केवलं त्वां प्रपद्ये ॥ १६
यस्स्रष्टारं निखिलजगतां निर्ममे पूर्वमीश-
स्तन्वे वेदानधिगतकलान्यश्च साकं पुराणैः ।
तं त्वामाद्यं गुरुमहमसावात्मबुद्धिप्रकाशं
संसारार्तश्शरणमधुना पार्वतीशं प्रपद्ये ॥ १७
ब्रह्मादीन्यस्स्मरहर पशून्मोहपाशेन बद्ध्वा
सर्वानेकश्चिदचिदधिपः कारयत्यात्मकृत्यम् ।
यश्चैतेषु स्वपदशरणान्विद्यया मोचयित्वा
सान्द्रानन्दं गमयति परं धाम तं त्वां प्रपद्ये ॥१८
ध्यातो यत्नाद्विजितकरणैर्यो गिभिर्यो विमुक्तैः
तेभ्यः प्राणोत्क्रमणसमये सन्निधायात्मनैव ।

तद्वाचष्टे भवभयहरं तारकं ब्रह्मदेव-
स्तं सेवेऽहं गिरिश सततं ब्रह्मविद्यागुरुं त्वाम् ॥१९
दासोऽस्मीति त्वयि शिव वचो नित्यसिद्धं हि वेदा
ब्रह्मेन्द्राद्यास्तदपिच जगुर्निर्मितिस्संभ्रमामि ।
नास्त्येवान्यत्किमपि मम् ते नाथ विज्ञापनीयं
कारुण्यान्मे शरणवरणं दीनवृत्तेर्गृहाण ॥ २०
ब्रह्मोपेन्द्रप्रभृतिभिरपि स्वेप्सितप्रार्थनाय
स्वामिन्नग्रेचिरमवसरस्तोषयद्भिः प्रतीक्ष्यः ।
प्रागेव त्वां यदिह शरणं प्रार्थ्यते कीटकल्प-
स्तद्विश्वाधीश्वर तव कृपामेव विश्वस्य दीने ॥ २१
कर्मज्ञानप्रचयमखिलं दुष्करं नाथ पश्य-
न्पापासक्तं हृदयमपि चापारयन् सन्निरोद्धुम् ।
संसाराख्ये पुरहर महत्यन्धकूपे विषीदन्
हस्तालम्बप्रपदनमिदं प्राप्यते निर्भयोऽस्मि ॥ २२
त्वामेवैकं हृतजनिपथं पातमस्मिन् प्रपञ्चं
मत्वा जन्मप्रचयजलधेर्बिभ्यतः पारशून्यात् ।

यत्ते धन्यास्सुरवरमुखं दक्षिणं संश्रयन्ति
क्लिष्टं घोरे चिरमिह भवे तेन मां पाहि नित्यम् ॥२३
एकोऽसि त्वं शिव जनिमतामीश्वरो बन्धमुक्त्योः
क्लेशाङ्गारावलिषु लुठतः का गतिस्त्वां विना मे ।
तस्मादस्मिन्निह पशुपते घोरदुःखप्रवाहे
खिन्नं दैन्याकरमिति भवे तेन मां पाहि नित्यम् ॥
यो देवानां प्रथममशिवद्रावको भक्तिभाजां
पूर्वं विश्वाधिकशतधृतिं जायमानं महर्षिः ।
दृष्ट्वा पश्यत्सकलजगतीसृष्टिसामर्थ्यदात्र्या
स त्वं ग्रन्थिप्रविलयकृते विद्यया योजयास्मान् ॥
क्षन्तव्यं वा निखिलमपि मे भूतभावि व्यळीकं
दुर्व्यापारप्रवणमथवा शिक्षणीयं मनो मे ।
नत्वेवार्त्या निरतिशयया त्वत्पदाब्जं प्रपद्य
त्वद्विन्यस्ताखिलभरममुं युक्तमीश प्रहातुम् ॥ २६
यद्याकाशं शुभतममजाचर्मवद्वेष्टयेयु-
र्दुःखस्यान्तं तदपि पुरुषस्त्वामविज्ञाय नैति ।

विज्ञानं च त्वयि शिव ऋते त्वत्प्रसादान्न लभ्यं
तद्दुःखार्तः कमिह शरणं यामि दैवं त्वदन्यम् ॥
किं गूढार्थैरकृतकवचो गुंभनैः किं पुराणै-
स्तन्त्राद्यैर्वा परुषमतिभिर्दुर्निरीक्ष्यैकमत्यैः ।
किंवा शास्त्रैरफलकलहोल्लासमात्रप्रधानै-
र्विद्याविद्येश्वरकृतधिया केवलं त्वत्प्रसादः ॥ २८
पापिष्ठोऽहं विषयचपलस्सन्ततद्रोहकारी
कार्पण्यैकस्थिरनिवसतिः पुण्यगन्धानभिज्ञः ।
यद्यप्येवं तदपि शरणं त्वत्पदाब्जप्रपन्नं
नैनं दीनं पुरहर तवोपेक्षितुं नाथ युक्तम् ॥ २९
आलोच्यैवं यदि मयि भवान् नाथ दोषाननन्ता-
नस्मत्पादाश्रयणपदवीं नार्हतीति क्षिपेन्माम् ।
अद्यैवैनं शरणविरहाद्विद्धि भीत्यैव नष्टं
ग्रामो गृह्णात्यहिततनयं किन्नु मात्रा निरस्तम् ॥ ३०
सर्वज्ञस्त्वं निरवधिकृपासागरः पूर्णशक्तिः
कस्मादेवं न गणयसि मामापदब्धौ निमग्नम् ।

एकं पापात्मकमपि रुजा सर्वतोऽत्यन्तदीनं
जन्तुं यद्युद्धरसि शिव कस्तावतातिप्रसङ्गः ॥ ३१
अत्यन्तार्तिव्यथितमगतिं देव मामुद्धरेति
श्रुण्णो मार्गस्तव शिव पुरा केनवा नाथ नायम् ।
कामालम्बे बत तदधिकां प्रार्थनारीतिमन्यां
त्रायस्वैनं सपदि कृपया वस्तुतत्त्वं विचिन्त्य ॥ ३२
एतावन्तं भ्रमणनिचयं प्रापितोऽयं वराक-
स्त्रान्तस्त्वामिन्नगतिरधुना मोचनीयस्त्वयाहम् ।
कृत्याकृत्यव्यपगतमतिर्दीनशाखामृगोऽयं
सन्ताड्यैनं दशनविकृतिं पश्यतस्ते फलं किम् ॥
माता तातस्सुत इति समाबध्य मां मोहपाशै-
रापात्यैनं भवजलनिधावाः किमीश त्वयात्तम् ।
एतावन्तं समयमियतीमार्तिमापादितेऽस्मि-
न्कळ्याणी ते किमिति न कृपा कापि मे भाग्यरेखा ॥
भुंक्ते गुप्तं बत सुखनिधिं तात साधारणं त्वं
भिक्षावृत्तिं परमभिनयन्मायया मां विभज्य ।

मर्यादायास्सकलजगतां नायकस्स्थापकश्चे-
द्युक्तं किं तद्वद विभजनं योजय स्वात्मना माम् ॥
नत्वा जन्म प्रचयजलधेरुद्धरामीति चेद्धी-
र्वास्तां तन्मे भवतु च जनिर्यत्रकुत्रापि जातौ ।
त्वद्भक्तानामनितरसखैः पादधूलीकिशोरै-
रारब्धं मे भवतु भगवन् भावि सर्वं शरीरम् ॥३६
कीटा नागास्तरव इति ते किं न सन्ति स्थलेषु
त्वत्पादाम्भोरुहपरिमळोल्लासि मन्दानिलेषु ।
तेष्वेकं मां सृज पुनरमुं नाथ दीनार्तिहारि-
न्नातोपन्ते दृढ भवमहाङ्गारनद्यां लुठन्तम् ॥ ३७
कण्ठे कालस्फुरदसुकलावेशसक्तावलोक-
व्यग्रोद्यद्व्यसनसकल स्निग्ध रुद्रोपकण्ठे ।
अन्तस्तोत्रै रवधि रहितामार्तिमापद्यमानोऽ-
प्यङ्घ्रिद्वन्द्वे तव निविशता मन्तरात्मन्ममात्मा॥ ३८
चारु स्मेरानन सरसिजं चन्द्ररेखावतंसं
फुल्लन्मल्ली वकुल कळिका दाम सौभाग्य चोरम् ।

अन्तः पश्यान्यचलसुतया रत्नपीठे निषण्णं
लोकातीतं वरद सततं रूपमप्राकृतं ते ॥ ३९
अन्तर्बाष्पाकुलितनयनानन्तरङ्गानपश्य-
न्नग्रे घोरं रुदितबहुलं कातराणामशृण्वन् ।
अप्युत्क्रान्तिश्रममगणयन्नन्तकाले कपर्दि-
न्नङ्गिद्वन्द्वे तव निविशतामन्तरात्मन्ममात्मा ॥
स्वप्ने वापि स्वरसविगलद्दिव्यपंकेरुहाभं
पश्येयं किं तव पशुपते पादपद्मं कदाचित् ।
काहं पापः क तव चरणालोकभाग्यं तथापि
प्रत्याशां मे घटयतु पुनर्विश्रुता तेऽनुकम्पा ॥ ४१
भिक्षावृत्तिं चर पितृवने भूतसङ्गैस्सहेदं
विज्ञातं ते चरितमखिलं विश्वपालिन् कपालिन् ।
आवैकुण्ठ द्रुहिणमुखरप्राणिनामीश्वरस्त्वं
नाथ स्वप्नेऽप्यहमिह न ते पादपद्मं त्यजामि ॥ ४२
आलेपनं भसितमावसतिश्चमशान-
मस्थीनि ते सततमाभरणानि सन्तु ।

निर्णेतुमीश सकलश्रुतिपारसिद्ध-
मैश्वर्यमम्बुजभवोऽपि न च क्षमस्ते ॥ ४३
विविधमपि गुणौघं वेदयन्त्यर्थवादाः
परिमितविभवानां पामराणां सुराणाम् ।
तनुहिमकरमौळे तावतां तत्परत्वे
कतिकति जगदीशाः कल्पिता नो भवेयुः ॥ ४४
बलमबलममीषां बल्वजानां विचिन्त्यं
कथमपि शिवकाल क्षेपमात्रप्रधानैः ।
निखिलमपि रहस्यं नाथ निष्कृष्य साक्षा-
त्सरसिजभवमुख्यैस्साधितं नः प्रमाणम् ॥ ४५
विहर पितृवने वा विश्वपार पुरे वा
रजितगिरितले वा रत्नसानुस्थले वा ।
दिश भवदुपकण्ठे देहि मे भृत्यभावं
परमशिव तव श्रीपादुकावाहकानाम् ॥ ४६
न किंचिन्मे चेतस्स्पृहयति भणीयं त्रिभुवने
सुखं वा दुःखं वा भवतु भुवि यद्भावि भगवन् ।

समुन्मीलत्पाथोरुहकुहरसौभाग्यविमुखे
पदद्वन्द्वे चेतः परिचयमुपेयात्तव सदा ॥ ४७
उदरभरणमात्रं साध्यमुद्दिश्य नीचे-
ष्वसकृदुपनिबद्धामाहितोच्छिष्टभावाम् ।
अहमिह नुतिभङ्गीमर्पयित्वोपहारं
तव चरणसरोजे तात जातोऽपराधी ॥ ४८
सर्वं सदाशिव सहस्व ममापराधं
मग्नं समुद्धर महत्यमुनापदब्धौ ।
सर्वात्मना तव पदाम्बुजमेव दीन-
स्वामिन्ननन्यगतिकश्शरणं प्रपद्ये ॥ ४९
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः परिजनाः प्राणाश्शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधि स्स्तोत्राणि सर्वा गिरः
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥
आत्मार्पणस्तुतिरियं भगवन्निबद्धा
यद्यप्यनन्यमनसा न मया तथापि ।

वाचापि केवलमयं शरणं वृणीते
दीनो वराकइति रक्ष कृपानिधे माम् ॥ ५१
अप्पय्यदीक्षितेन प्राक्प्रणीतात्मार्पणस्तुतिः ।
कविना लक्ष्मणेनांध्रीकृता पद्यैः पदैरिह ॥ ५२

इति श्री अप्पय्यदीक्षितकृता शिवात्मार्पणस्तुतिः ॥

---

## ॥ बृहस्पतिस्तोत्रम् ॥

श्रीभगवानुवाचः—

बृहस्पतिस्सुराचार्यो दयावान् शुभलक्षणः ।
लोकत्रयगुरुश्श्रीमान् सर्वज्ञस्सर्वकोविदः ॥
सर्वेशः सर्वदाभीष्टः सर्वजित् सर्वपूजितः ।
अक्रोधनो मुनिश्रेष्ठो नीतिकर्ता गुरुः पिता ॥
विश्वात्मा विश्वकर्ता च विश्वयोनिरयोनिजः ।
भूर्भुवस्सुवरोंचैव भर्ता चैव महाबलः ॥
पञ्चविंशतिनामानि पुण्यानि नियतात्मना ।

नन्दगोपगृहासीनविष्णुना कीर्तितानि वै ॥
प्रातरुत्थाय पठितास्ऽवर्तयेत्सुसमाहितः ।
विपरीतोऽपि भगवान् प्रीतस्तस्य बृहस्पतिः ।
यश्शृणोति गुरुस्तोत्रं चिरञ्जीवी नसंशयः ।
गोसहस्रफलं तस्य विष्णुर्वचनमब्रवीत् ॥
बृहस्पतिकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति ॥

इति श्रीविष्णुधर्मोत्तरपुराणे बृहस्पतिस्तोत्रम् ॥

## ॥ बृहस्पत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

गुरुर्गुणवरो गोप्ता गोचरो गोपतिप्रियः ।
गुणी गुणवतां श्रेष्ठो गुरूणां गुरुरव्ययः ॥
जेता जयन्तो जयदो जीवोऽनन्तो जयावहः ।
आङ्गिरसोऽध्वरासक्तो विविक्तोऽध्वरकृत्परः ॥
वाचस्पतिर्वशी वश्यो वरिष्ठो वाग्विचक्षणः ।
चित्तशुद्धिकरश्श्रीमान् चैत्रश्चित्रशिखण्डिजः ॥

बृहद्रथो बृहद्भानुः बृहस्पतिरभीष्टदः ।
सुराचार्यस्सुराराध्यस्सुरकार्यहितङ्करः ॥
गीर्वाणपोषको धन्यो गीष्पतिर्गिरिशोऽनघः ।
धीवरो धिषणो दिव्यभूषणो देवपूजितः ॥
धनुर्धरो दैत्यहन्ता दयासारो दयाकरः ।
दारिद्र्यनाशको धन्यो दक्षिणायनसम्भवः ॥
धनुर्मीनाधिपो देवो धनुर्बाणधरो हरिः ।
आङ्गीरसाब्दसञ्जात आङ्गीरसकुलोद्भवः ॥
सिन्धुदेशाधिपो धीमांस्वर्णवर्णश्चतुर्भुजः ।
हेमाङ्गदो हेमवपुर्हेमभूषणभूषितः ॥
पुष्यनाथः पुष्यरागमणिमण्डनमण्डितः ।
काशपुष्पसमानाभः कलिदोषनिवारकः ॥
इन्द्राधिदेवो देवेशो देवताभीष्टदायकः ।
असमानबलस्सत्त्वगुणसम्पद्विभासुरः ॥
भूसुराभीष्टदो भूरियशाः पुण्यविवर्धनः ।

*इतः प्रभृति षट्श्लोकाः अन्यत्र न सन्ति अयमधिकः पाठः ।

धर्मरूपो धनाध्यक्षो धनदो धर्मपालनः ॥
सर्ववेदार्थतत्वज्ञस्सर्वापद्विनिवारकः ।
सर्वपापप्रशमनस्त्वमतानुगतामरः ॥
ऋग्वेदपारगो ऋक्षराशिमार्गप्रचारकः ।
सदानन्दस्सत्यसन्धस्सत्यसङ्कल्पमानसः ॥
सर्वागमज्ञस्सर्वज्ञो सर्ववेदान्तविद्वरः ।
ब्रह्मपुत्रो ब्राह्मणेशो ब्रह्मविद्याविशारदः ॥
समानाधिकनिर्मुक्तस्सर्वलोकवशंवदः ।
ससुरासुरगन्धर्ववन्दितस्सत्यभाषणः ॥
नमस्सुरेन्द्रवन्द्याय देवाचार्याय ते नमः ।
नमस्तेऽनन्तसामर्थ्यवेदसिद्धान्तपारग ॥
सदानन्द नमस्तेऽस्तु नमः पीडाहराय च ।
नमो वाचस्पते तुभ्यं नमस्ते पीतवाससे ॥
नमोऽद्वितीयरूपाय लम्बकूर्चाय ते नमः ।
नमः प्रहृष्टनेत्राय विप्राणां पतये ननः ॥
नमो भार्गवशिष्याय विपन्नहितकारिणे ।

नमस्ते सुरसैन्यानां विपत्तित्राणहेतवे ॥
बृहस्पतिस्सुराचार्यो दयावान् शुभलक्षणः ।
लोकत्रयगुरुःश्रीमान् सर्वपरसर्वतोविभुः ॥
सर्वेशस्सर्वदाहृष्टस्सर्वगस्सर्वपूजितः ।
अक्रोधनो मुनिश्रेष्ठो नीतिकर्ता जगत्पिता ॥
विश्वात्मा विश्वकर्ता च विश्वयोनिरयोनिजः ।
भूर्भुवोधनदाता च भर्ता जीवो महाबलः ॥
बृहस्पतिः काश्यपेयो दयावान् शुभलक्षणः ।
अभीष्टफलदः श्रीमान् शुभग्रह नमोस्तु ते ॥
बृहस्पतिस्सुराचार्यो देवासुरसुपूजितः ।
आंगिरसो दानवारिश्च सुरमन्त्री पुरोहितः ॥
कालज्ञः कालकृद्वेत्ता चित्तगश्च प्रजापतिः ।
विष्णुः कृष्णस्तथा सूक्ष्मः प्रतिदेवोज्ज्वलग्रहः ॥

इति बृहस्पत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ उमामहेश्वरस्तोत्रम् ॥

नमश्शिवाभ्यां नवयौवनाभ्यां परस्पराश्लिष्टवपु-
र्धराभ्याम् । नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्यां नमोनमश्शङ्कर-
पार्वतीभ्याम् ॥ १

नमश्शिवाभ्यां सरसोत्सवाभ्यां नमस्कृताभीष्टवर-
प्रदाभ्याम् । नारायणेनार्चितपादुकाभ्यां नमोनमश्शङ्कर-
पार्वतीभ्याम् ॥ २

नमश्शिवाभ्यां वृषवाहनाभ्यां विरिञ्चि विष्ण्विन्द्र-
सुपूजिताभ्याम् । विभूतिपाटीर विलेपनाभ्यां नमो···॥

नमश्शिवाभ्यां जगदीश्वराभ्यां जगत्पतिभ्यां जय-
विग्रहाभ्यां । जम्भारिमुख्यैरभिनन्दिताभ्यां नमो ···॥

नमश्शिवाभ्यां परमौषधाभ्यां पञ्चाक्षरीपञ्जररञ्जि-
ताभ्यां । प्रपञ्च सृष्टि स्थिति संहृताभ्यां नमो ··· ॥

नमश्शिवाभ्यामतिसुन्दराभ्यामत्यन्तमासक्तहृदम्बु - जाभ्याम् । अशेषलोकैकहितङ्कराभ्यां नमो ...॥ ६

नमश्शिवाभ्यां कलिनाशनाभ्यां कंकाळकल्याण- वपुर्धराभ्याम् । कैलासशैलस्थितदेवताभ्यां नमो...॥

नमश्शिवाभ्यामशुभापहाभ्यामशेषलोकैकविशेषि - ताभ्यां । अकुण्ठिताभ्यां स्मृतिसम्भृताभ्यां नमो ...॥

नमश्शिवाभ्यां रथवाहनाभ्यां रवीन्दुवैश्वानरलो - चनाभ्याम् । राकाशशाङ्काभमुखाम्बुजाभ्यां नमो...॥

नमश्शिवाभ्यां जटिलं धराभ्यां जरामृतिभ्यां च विवर्जिताभ्याम् । जनार्दनाब्जोद्भवपूजिताभ्यां नमो ...

नमश्शिवाभ्यां विषमेक्षणाभ्यां बिल्वच्छदा मल्लिक- दामभृद्भ्याम् । शोभावती शान्तवतीश्वराभ्यां नमो ...

नमश्शिवाभ्यां पशुपालकाभ्यां जगत्त्रयीरक्षणबद्ध- हृद्भ्याम् । समस्तदेवासुरपूजिताभ्यां नमोनमश्शङ्कर- पार्वतीभ्याम् ॥ १२

स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं शिवपार्वतीभ्यां भक्त्या पठन् द्वादशकं नरो यः । स सर्वसौभाग्यफलानि भुङ्क्ते शतायुरन्ते शिवलोकमेति ॥ १२

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यवर्य श्रीमच्छङ्कर-भगवत्पादाचार्यविरचितमुमामहेश्वरस्तोत्रम् ॥

---

## ॥ सङ्गिलकृतोमामहेश्वराष्टकम् ॥

पितामहशिरश्छेदप्रवीणकरपल्लव ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमोनमः ॥ १
निशुंभशुम्भप्रमुखदैत्यशिक्षणदक्षिणे ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं महेश्वरि ॥ २
शैलराजस्य जामातश्शाशिरेखावतंसक ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं महेश्वर ॥ ३
शैलराजात्मजे मातश्शातकुम्भनिभप्रभे ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं महेश्वर ॥ ४

भूतनाथ पुरारातें भुजङ्गभृतभूषण ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं महेश्वर ॥ ५
पादप्रणतभक्तानां पारिजातगुणाधिके ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं महेश्वरि ॥ ६
हालास्येश दयामूर्ते हालाहललसद्गळ ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं महेश्वर ॥ ७
नितम्बिनि महेशस्य कदम्बवननायिके ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं महेश्वरि ॥ ८

इति श्रीहालास्यमाहात्म्ये सङ्किलकृत मुमामहेश्वराष्टकम् ॥

---

## ॥ बृहस्पतिमन्त्रः ॥

अस्य श्रीबृहस्पतिमहामन्त्रस्य, गृत्समदऋषिः जगतीच्छन्दः । बृहस्पतिर्देवता । बृहस्पतिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । बृहस्पतये अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

वाक्पतये तर्जनीभ्यां नमः । गीर्वाणवन्दिताय मध्यमाभ्यां नमः । वरदाय अनामिकाभ्यां नमः । सुराचार्याय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । कमण्डलुधराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

वराक्षमालां दण्डं च कमण्डलुधरं विभुम् ।
पुष्परागाङ्कितं पीतं वरदं भावयेद्गुरुम् ॥

लमित्यादिपञ्चपूजा । मूलमन्त्रः—

बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदय च्छवसर्त प्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥

इति मन्त्रः ॥

इति बृहस्पतिमन्त्रः ।

## ॥ बृहस्पतिकवचः ॥

अस्य श्रीबृहस्पतिकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । बृहस्पतिर्देवता । अं बीजं । श्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकं । मम बृहस्पतिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । गां अंगुष्ठाभ्यां नमः । गीं तर्जनीभ्यां नमः । गूं मध्यमाभ्यां नमः । गैं अनामिकाभ्यां नमः । गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

तप्तकाञ्चनवर्णाभं चतुर्भुजसमन्वितम् ।
दण्डाक्षसूत्रमालां च कमण्डलुवरान्वितम् ॥
*पीताम्बरधरं देवं पीतगन्धानुलेपनम् ।
पुष्परागमयं भूष्णुं विचित्रमकुटोज्ज्वलम् ॥

* अन्यत्र पाठभेदो दृश्यते ।

स्वर्णाश्वरथमारूढं पीतध्वजसुशोभितम् ।
मेरुं प्रदक्षिणं कृत्वा गुरुदेवं समर्चयेत् ॥
अभीष्टवरदं देवं सर्वज्ञं सुरपूजितम् ॥
सर्वकार्यार्थसिद्ध्यर्थं प्रणमामि गुरुं सदा ॥

बृहस्पतिश्शिरः पातु ललाटं पातु मे गुरुः ।
करौ सुरगुरुः पातु नेत्रे मेऽभीष्टदायकः ॥
नासां पातु सुराचार्यो जिह्वां मे वेदपारगः ।
मुखं मे पातु सर्वज्ञो भुजौ पातु शुभप्रदः ॥
करौ वज्रधरः पातु पक्षौ मे पातु गीष्पतिः ।
स्तनौ मे पातु वागीशः कुक्षिं मे शुभलक्षणः ॥
नाभिं पातु सुनीतिज्ञः कटिं मे पातु सर्वदः ।
ऊरू मे पातु पुण्यात्मा जङ्घे मे ज्ञानदः प्रभुः ॥
पादौ मे पातु विश्वात्मा सर्वाङ्गं सर्वदा गुरुः ।
इदं कवचं दिव्यं त्रिसन्ध्यासु पठेन्नरः ॥

सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ।
सर्वत्र पूज्यो भवति वाक्पतेश्च प्रसादतः ॥

इति ब्रह्मवैवर्तपुराणे उत्तरखण्डे बृहस्पतिकवचः ।

---

## ॥ ब्रह्माण्डविजयकवचम् ॥

---

नारद उवाचः—

शिवस्य कवचं ब्रूहि मत्स्यराजेन यद्धृतम् ।
नारायण महाभाग श्रोतुं कौतूहलं मम ॥ १

नारायण उवाचः—

कवचं शृणु विप्रेन्द्र शङ्करस्य महात्मनः ।
ब्रह्माण्डविजयं नाम सर्वावयवरक्षणम् ॥ २
पुरा दुर्वाससा दत्तं मत्स्यराजाय धीमते ।
दत्त्वा षडक्षरं मन्त्रं सर्वपापप्रणाशनम् ॥ ३
स्थिते च कवचे देहे नास्ति मृत्युश्च जीविनाम् ।
अस्त्रे शस्त्रे जले वह्नौ सिद्धिश्चेन्नास्ति संशयः ॥ ४

यद्धृत्वा पठनाद्ब्राणाशिशवत्वं प्राप लीलया ।
बभूव शिवतुल्यश्च यद्धृत्वा नन्दिकेश्वरः ॥ ५
वीरश्रेष्ठो वीरभद्रो बभूव धारणाद्यतः ।
त्रैलोक्यविजयी राजा हिरण्यकशिपुस्स्वयम् ॥ ६
हिरण्याक्षश्च विजयी बभूव धारणाद्यतः ।
यद्धृत्वा पठनात्सिद्धो दुर्वासा विश्वपूजितः ॥ ७
त्रैगिषव्यो महायोगी पठनाद्धारणाद्यतः ।
यद्धृत्वा वामदेवश्च देवलश्च्यवनस्स्वयम् ॥ ८
अगस्त्यश्च पुलस्त्यश्च बभूव विश्वपूजितः ।
ओं नमः शिवायेति च मस्तकं मे सदाऽवतु ॥ ९
ओं नमः शिवायेति स्वाहा फालं सदाऽवतु ।
ओं ह्रीं श्रीं क्लीं शिवायेति स्वाहानेत्रे सदाऽवतु ॥
ओं ह्रीं श्रीं हुं शिवायेति नमो मे पातु नासिकां ।
ओं नमः शिवाय शान्ताय स्वाहा कण्ठं सदाऽवतु ॥
ओं ह्रीं श्रीं हुं संहारकर्त्रे स्वाहा कर्णौ सदाऽवतु ।
ओं ह्रीं श्रीं पञ्चवक्त्राय स्वाहा दन्तं सदाऽवतु ॥१२

ओं ह्रीं श्रीं महेश्वराय स्वाहा चाधरं पातु मे सदा ।
ओं ह्रीं श्रीं ह्रीं त्रिणेत्राय स्वाहा केशान् सदावतु ॥
ओं ह्रीं श्रीं ऐं महादेवाय स्वाहा वक्त्रं सदाऽवतु ।
ओं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं रुद्राय स्वाहा नाभिं सदाऽवतु ॥
ओं ह्रीं ऐं श्रीं ईश्वराय स्वाहा पृष्ठं सदाऽवतु ।
ओं ह्रीं ह्रीं मृत्युञ्जयाय स्वाहा भ्रूश्च सदाऽवतु ॥
ओं ह्रीं श्रीं ह्रीं ईशानाय स्वाहा पार्श्वं सदाऽवतु ।
ओं ह्रीं ईश्वराय स्वाहा उदरं पातु मे सदा ॥ १६
ओं ह्रीं ह्रीं मृत्युञ्जयाय स्वाहा बाहून्सदाऽवतु ।
ओं ह्रीं श्रीं ह्रीं ईश्वराय स्वाहा पातु करौ मम ॥१७
ओं महेश्वराय रुद्राय नितम्बं पातु मे सदा ।
ओं ह्रीं श्रीं भूतनाथाय स्वाहा पादौ सदाऽवतु ॥
ओं सर्वेश्वराय सर्वाय स्वाहा सर्वं सदाऽवतु ।
प्राच्यां मां पातु भूतेश आग्नेय्यां पातु शङ्करः ॥
दक्षिणे पातु मां रुद्रो नैऋत्यां स्थाणुरेवच ।
पश्चिमे खण्डपरशुर्वायव्यां चन्द्रशेखरः ॥ २०

उत्तरे गिरिशः पातु ऐशान्यां ईश्वरस्स्वयम् ।
ऊर्ध्वं मृडस्सदा पातु अधो मृत्युञ्जयस्स्वयम् ॥
जले स्थले चान्तरिक्षे स्वप्ने जागरणे सदा ।
पिनाकी पातु मां प्रीत्या भक्तं सद्भक्तवत्सलः ॥
इति ते कथितं वत्स कवचं परमाद्भुतम् ।
दशलक्षजपेनैव सिद्धिर्भवति निश्चितम् ॥ २३
यदि स्यात्सिद्धकवचो रुद्रतुल्यो भवेद्ध्रुवम् ।
तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥
कवचं काण्वशाखोक्तमतिगोप्यं सुदुर्लभम् ।
अश्वमेधसहस्राणि राजसूयशतानि च ॥ २५
सर्वाणि कवचस्यास्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।
कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥ २६
सर्वज्ञस्सर्वसिद्धीशो मनोयायी भवेद्ध्रुवम् ।
इदं कवचमध्यात्वा भजेद्यश्शङ्करं प्रभुम् ॥ २७
शतलक्षप्रजप्तोऽपि न मन्त्रस्सिद्धिदायकः ॥

इति श्रीब्रह्मवैवर्ते महापुराणे ब्रह्माण्डविजयकवचप्रभाव-
वर्णनं नाम पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥

## ॥ केतुमन्त्रः ॥

ओं अस्य श्री केतुमहामन्त्रस्य मयच्छन्दऋषिः । गायत्रीछन्दः ॥ केतुर्देवता । केतुग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । धूम्रवर्णाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ द्विबाहवे तर्जनीभ्यां नमः । केतवे मध्यमाभ्यां नमः । विकृताननाय अनामिकाभ्यां नमः । गृध्रासनाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । लम्बकाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

धूम्रवर्णं द्विबाहुं च केतुं च विकृताननम् ।
गृध्रासनगतं नित्यं ध्यायेत्सर्वफलाप्तये ॥

लमित्यादि पञ्चपूजा-मूलमन्त्रः—

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥

इति केतुमन्त्रः ॥

## ॥ केतु कवचः ॥

अस्य श्री केतुकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य पुरन्दर ऋषिः । अनुष्टुपू छन्दः । केतुर्देवता । मम केतुग्रह-प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ रामित्यादि षडङ्गहृद-यादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

धूम्रवर्णं ध्वजाकारं द्विभुजं वरदाङ्गदम् ।
चित्राम्बरधरं केतुं चित्रगन्धानुलेपनम् ॥
वैडूर्याभरणं चैव वेडूर्यमकुटं फणिं ।
चित्रं कपाधिकरसं मेरुं चैवाप्रदक्षिणम् ॥
केतुं कराळवदनं चित्रवर्णं किरीटिनम् ।
प्रणमामि सदा देवं ध्वजाकारं ग्रहेश्वरम् ॥
चित्रवर्णशिरः पातु फालं मे धूम्रवर्णकः ।
पातु नेत्रे पिङ्गाक्षः श्रुती मे रक्तलोचनः ॥
घ्राणं पातु सुवर्णाभो द्विभुजं सिंहिकासुतः ।
पातु कण्ठं च मे केतुः स्कन्धौ पातु ग्रहाधिपः ॥

बाहू पातु सुरश्रेष्ठः कुक्षिं पातु महोरगः ।
सिंहासनः कटिं पातु मध्यं पातु महासुरः ॥
ऊरू पातु महाशीर्षो जानुनी च प्रकोपनः ।
पातु पादौ च मे रौद्रः सर्वाङ्गं रविमर्दकः ॥
इदं च कवचं दिव्यं सर्वरोगविनाशनम् ।
सर्वदुःखविनाशं च सत्यमेतन्न संशयः ॥

इति पाद्मे पुराणे केतुकवचः ॥

---

## ॥ केतुस्तोत्रम् ॥

ओम् अस्य श्री केतुस्तोत्रमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः । केतुर्देवता केतुग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

गौतम उवाच—

मुनीन्द्र सूततत्त्वज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।
केतुग्रहोपतप्तानां ब्रह्मणा कीर्तितं पुरा ॥

एकः कराळवदनो द्वितीयो रक्तलोचनः ।
तृतीयः पिङ्गलाक्षश्च चतुर्थोऽपि विदाहकः ॥
पञ्चमः कपिलाक्षश्च षष्ठः कालाग्निसन्निभः ।
सप्तमो हिमगर्भश्च धूम्रवर्णोऽष्टमस्तथा ॥
नवमः पापकण्ठश्च दशमो नरपीडकः ।
एकादशस्तु श्रीकण्ठो वनमालाविभूषणः ॥
द्वादशैते महाक्रूराः सर्वोपद्रवकारकाः ।
पीड्येते सर्वकालेषु दिवाकरनिशाकरौ ॥
कलशे नीलवर्णाभे प्रभाकरनिशाकरौ ।
निक्षिप्य ये तु पद्कोणे पद्मे चाष्टदळे क्रमात् ॥
केतुं कराळवदनं सर्वलोकभयंकरम् ।
प्रतिमां वस्त्रसंयुक्तां चित्रां चैव प्रदापयेत् ॥
दानेनानेन सुप्रीता भवेयुः सुखदायिनः ।
वत्सरं प्रयताभूत्वा पूजयन्ति नरोत्तमाः ॥
मूलमष्टोत्तरशतं ये जपंति नरोत्तमाः ।
तेषां केतुप्रसादेन न कदाचिद्भयं भवेत् ॥

इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे वामदेवसंवादे केतुस्तोत्रं ॥

## ॥ नवग्रहस्तोत्रम् ॥

### ॥ सूर्यमन्त्रः ॥

ओम् अस्य श्रीसूर्यमहामन्त्रस्य हिरण्यस्तूप ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः ॥ सूर्योदेवता । ह्रीं बीजं णीं शक्तिः । सूं कीलकं मम सूर्यग्रहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । सूर्याय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । तेजोमूर्तये तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ वरदाय मध्यमाभ्यां वषट् । हंसाय अनामिकाभ्यां हुं । शान्ताय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । कर्मसाक्षिणे करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

द्विभुजं पद्महस्तं च वरदं मुकुटान्वितम् ।
ध्यायेद्दिवाकरं देवं सर्वाभीष्टप्रदायकम् ॥

लमित्यादि पञ्चपूजा—

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि । हं आकाशात्मने पुष्पं समर्पयामि । यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि । वं

अमृतात्मने अमृतोपहार नैवेद्यं समर्पयामि । सं सर्वात्मने सर्वोपचारान्समर्पयामि ॥ आ (सत्येन) कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेन आदेवोयाति भुवनानि पश्यन् । इति मन्त्रः ॥

इति सूर्यमन्त्रः ॥

---

## ॥ सूर्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

सङ्कल्प्य—

अस्य श्रीसूर्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य । आदित्योपासक श्रीसूर्यवर्चाऋषिः । श्रीमदादित्यनारायणो देवता। ब्रह्मवर्चस्विता मूलमिति बीजम् । सर्वपापविनाशक इति शक्तिः । अग्निश्च जातवेदाश्चेति परमो मन्त्रः ।

हृद्रोगहारीति कीलकम् । निषङ्गी कवचीत्यस्त्रम् । भक्तरक्षणतत्पर इति कवचम् । श्रीमदादित्यप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ आदित्योदितिदेवइत्यंगुष्ठाभ्यां नमः। मन्त्रोयन्त्रं तथा क्षेत्रमिति तर्जनीभ्यां स्वाहा । गायत्री वल्लभः प्रांशुरिति मध्यमाभ्यां वौषट् । छन्दोमय शास्त्रमय इत्यनामिकाभ्यां हुम् । सुब्रह्मण्यश्च सूरीन्द्र इति कनिष्ठिकाभ्यां वषट् । सुरभूसुर दत्तार्घ्य गुह्यास्त्रग्रहणेतरइति करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । हृदयादिन्यासं च एवं कुर्यात् ॥

ध्येयस्सदासवितृमण्डलमध्यवर्तीति ध्यानम्—

आदित्यस्त्वादिदेवोऽयं भास्करो भुवनाशनः ।
विश्वमूर्तिर्विश्वनेता चिन्मूर्तिश्चिन्तितार्थदः ॥

इति त्रिवारं पठेत्—

ततस्सहस्रनामपारायणं कृत्वा । उत्तरन्यासं कृत्वा आदित्यायार्पयेत् ॥

मण्डलस्य च विस्तारं नमस्कारविधिं ततः ।
पूजाक्रमविशेषेण श्रुत्वा पुनरभाषत ॥

सूर्यवर्चोऽवाच—

भगवन् सर्वतत्त्वज्ञ सर्वकर्मप्रवर्तक ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानां श्रोतुमिच्छाम्यहं रवेः ॥

बृहस्पतिरुवाच—

सूर्यवर्चः! शृणु परं सूर्यस्य च महात्मनः ।
उत्तमं नामसाहस्रं यत्तमस्ते निकृन्तति ॥
बृहस्पतिस्तभगवानित्युक्त्वा सूर्यवर्चसम् ।
ध्यात्वा नारायणं देवं भानुपण्डलमध्यगम् ॥
ओमित्युच्चैरुपक्रम्य प्रोवाच भगवान् गुरुः ॥
ओं आदित्यश्चादिदेवोऽयं भास्करो भुवनाशनः ।
विश्वमूर्तिर्विश्वनेता चिन्मूर्तिश्चिन्तितार्थदः ॥ १
सद्योजातो वामदेवस्सर्वपापविनाशकः ।
वेद्यो वैद्यस्सदायोगी विश्वकर्मा विभावसुः ॥ २
विरिञ्चिर्विश्रुतात्मा च विश्वसर्गप्रवर्तकः ।

विद्यात्मा विषयज्ञश्च विश्वात्मा विश्वपापहा ॥ ३
विदुषामीश्वरो विद्वान्विश्वनेता विशेषवित् ।
वीरहा विषयशून्यो वालखिल्यादिवन्दितः ॥ ४
वामनो वरदः प्रांशुर्वासुदेवस्सनातनः ।
वालखिल्यपुरोगश्च वारिदो वसुमान्वसुः ॥ ५
वरेण्यो वसुदेवश्च वसुरेता वसुप्रदः ।
वायुर्वाचस्पतिर्विश्वं विष्णुर्विश्वामरेश्वरः ॥ ६
ओङ्कारश्च वषट्कारो सोमग्रहपुरोगमः ।
ग्रहनक्षत्रमाली च शिशुमारशरीरवान् ॥ ७
शरण्यश्शङ्करश्शम्भुः कालात्मा कान्तिवर्धनः ।
कामदेवः कामहर्ता विराड्वीरासनस्थितः ॥ ८
विस्तारभूमा भूतेशो विश्वगुप्तनुरीश्वरः ।
मन्देहरिपुरिन्दुश्च विन्दुस्सुन्दरविग्रहः ॥ ९
सामगानप्रियस्साधुस्सत्यसन्धस्सदाशिवः ।
समात्मासन्धिरव्यक्तं साम्बस्सारसवर्धनः ॥ १०
सूद सूक्ष्मस्सूक्ष्मकायस्सूक्ष्मदृक्सुदृगव्ययः ।

रथाङ्गहेतिरभ्योजवर्धनस्सर्वसम्मतः ॥ ११
वज्रभृद्वत्सलो वाग्मी वागीशो वायुवाहनः ।
धर्मात्मा धर्मशत्रुश्च कर्मसाक्षी परन्तपः ॥ १२
पञ्चाननः पञ्चमूर्तिः पञ्चाङ्गी पापभञ्जनः ।
पराशरः पुण्यमूर्तिः पुरुहूतानुजः परः ॥ १३
सनात्सर्वं सहस्सर्वस्सर्वगस्सर्वपोषकः ।
सप्ताश्वस्सप्तरज्जुश्च सप्तैधास्सप्तसारथिः ॥ १४
सप्तप्रियस्सप्तदोग्धा मुञ्जिकेशो मुरान्तकः ।
मुकरगुद्धरमुभाचारस्सर्वबीजमनायकः ॥ १५
कर्ता विकर्ता गहनो कारणं करणं महत् ।
अकुण्ठविक्रमश्शौरि र्वैकुण्ठो भगवान्भवः ॥ १६
भानुर्हंस स्सहस्रांशु स्तपनस्सविता पिता ।
जातुकर्णो जयी ज्यायान् मीनाङ्गी सिंहपालकः ॥
एकोऽनस्सप्तनीचश्च पद्मपतिर्मानवल्लभः ।
ऋतुस्सुदर्शनः कालः कुञ्जराननपूजितः ॥ १८
द्विजो द्विजश्शुचिर्धीरः श्रीमान् मूर्तित्रयात्मकः ।

शिवंकरः श्रीभूतेश सिन्धुरुद्वैश्रवा हरिः ॥ १९
पद्मप्रबोधकः पद्मी पद्मगर्भः प्रभाकरः ।
अह्नां प्रभुर्दिनमणिर्दैतेयकुलमृत्युकृत् ॥ २०
कळा काष्ठा मुहूर्तात्मा दिनरात्रिशरीरवान् ।
पद्मापतिः परंधाम परमात्मा परायणम् ॥ २१
निर्दानं नित्यमद्वैतं केवलं मुक्तिकारणम् ।
सर्वभूतशरीरस्थं चैतन्यं ब्रह्मनिर्गुणम् ॥ २२
एको नैकः कृतिरशान्तिर्मतिर्बुद्धिर्धृतिस्स्मृतिः ।
मन्त्रो यन्त्रं तथाक्षेत्रं क्षेत्रज्ञोऽक्षरसंज्ञिकः ॥ २३
इन्द्रियाणामधिष्ठाता तत्त्वं तत्पुरुषाग्रणीः ।
अमायी मायिनामध्यो लोकस्वामी स्वराड्गुरुः ॥
प्राणदः प्रणवः प्राणो प्राप्तिसाधनमम्बरम् ।
जगन्मित्रं पवित्रं च देवानामपि दैवतम् ॥ २५
सिन्धुनिद्राद्धिरण्याङ्गो सैंहिकेय विशोधितः ।
विपुवच्चायनं कान्तिश्चन्द्रोत्पत्त्ययनं ग्रहः ॥ २६
दिगीशो देवबृन्देशो नक्षत्रेशो धनेश्वरः ।

सूर्यवर्चोमसूरिराद्यमूर्यपतिरुमाधवः ॥ २७
विभाकरो द्वादशात्मा कपिलः कपिशिक्षकः ।
कपितातः कपिः पिङ्गः पंगुकालपिता हरः ॥ २८
विविक्तसागरसेतुस्तमस्तमरथो रथी ।
मेरुप्रभस्सुमेरुश्च धुवधुवरवो भवः ॥ २९
सहस्रप्रग्रहो धन्वी मेधावी श्रुतिसागरः ।
भिषक्पिता भिषक्सारो भैषजं भवरोगहृत् ॥ ३०
जन्मादिदशास्त्रयेनिश्च विज्ञानं ज्ञानमेव च ।
ज्ञाता ज्ञेयं स्फुटस्फूर्तिरनीशो नाहविर्नृपः ॥ ३१
अविच्छिन्नान्वयश्शास्ता रामो राजीवलोचनः ।
गायत्रीवल्लभः प्रांशुर्गेयो गाता गुणार्णवः ॥ ३२
सत्यमेधास्समाम्नायस्सन्धाता कश्यपात्मजः ।
सर्वधर्ममयस्साक्षी विस्फूर्ज निलयोऽनलः ॥ ३३
चिरन्तनश्चिरात्मा च वैशाखशिखिवाहनः ।
अश्वत्थः कुशनाभश्च साम्राज्यं जगदीश्वरः ॥ ३४
दीप्तमूर्तिर्महामूर्ति स्सुतपाः क्रतुभुक्पशुः ।

यज्वा जाज्वल्यदेहश्च शत्रुमण्डलखण्डनः ॥ ३५
शरारुध्वंसकश्शास्ता शास्त्रयोनिर्निरञ्जनः ।
अनिन्द्यो निन्द्यविध्वंसी विश्वामित्रवरप्रदः ॥ ३६
विध्यर्थबोधको भानुर्विन्ध्यवाथी प्लवङ्गमः ।
तत्पदार्थोऽहंपदार्थस्तत्त्वमस्यर्थबोधकः ॥ ३७
तएते त्वमहं देव यक्षरक्षोभयङ्करः ।
मृत्युञ्जयः पाकभेदी सुषुम्ना तालशोभितः ॥ ३८
सहस्रारम्बुजारूढो कर्णिकामध्यमण्टपः ।
गुहाशयश्शिवस्स्थाणुर्गोप्ता गणपतिर्गिरिः ॥
गोमूर्तिस्सर्वदेवात्मा सर्वसन्ध्याप्रवर्तकः ।
ज्योतिष्मानिन्द्रशर्मा च चिदानन्दो दिगम्बरः ॥
किरीटी कवची खड्गी शङ्खी शार्ङ्गी च पद्मकः ।
वेत्री शूली निषङ्गी च तापनस्तपतां वरः ॥ ४१
शङ्करश्चारुसर्वाङ्गस्सर्ववन्धविमोचकः ।
महात्मा चारुसर्वाङ्गस्सर्वभूषणभूषितः ॥ ४२
भक्तेप्सितार्थसन्धानकल्पवृक्षः कुलोत्पतिः ।

बन्धूककुसुमप्रख्यस्सर्वशास्त्रभृतां वरः ॥ ४३
ब्रह्मण्यो ब्राह्मणो ब्राह्मी राजर्षिरमितप्रभः ।
सनातनवरस्सोमस्सर्वतन्त्रावलम्बनः ॥ ४४
महापातालसम्मान्यो मानिनामग्रणीर्महान् ।
सिद्धार्थकृत्सिद्धगुह्यः सिद्धानामुत्तमा गतिः ॥ ४५
लोकनाथो विभानाथो माठरो मधुवल्लभः ।
तीक्ष्णांशुस्तीर्थगर्भश्च श्वेतलोहितवाहनः ॥ ४६
कर्म कर्मविदां नेता सदावरणमण्डलः ।
सहस्रगुरनन्तात्मा विशिष्टशिष्टपोषकः ॥ ४७
दिव्यमूर्तिर्देवसिंहो दिविषत्प्रवरो दमः ।
विशालाक्षश्रीमूर्तिर्विश्वम्भर विभावसुः ॥ ४८
मूर्धन्यदिष्टदायी च कृतिचिन्तानिवर्तकः ।
गन्धर्वगणगोप्ता च वस्वादिगणवन्दितः ॥ ४९
गृहपो ग्रहनेता च ग्रन्थिबन्धविभञ्जनः ।
ग्रसिष्णुर्ग्रहगोप्ता च ग्राही ग्राह्य शरीरभाः ॥ ५०
तपस्वी तापसश्शोच्यो तरणिर्द्युमणिर्मणिः ।

चिन्तामणिर्दिनमणिर्ज्योतिर्मणिरजेश्वरः ॥ ५१
छन्दोमयश्शास्त्रमयस्सर्वकान्तिखनिर्मनुः ।
अनूरुसारथिः पीलो पैप्पलो त्रिविलोचनः ॥ ५२
त्रिशिखी ब्राह्मणमयो ज्योतिरिसद्धान्तबोधनः ।
त्रिनामा त्रिशरीरश्च त्रिकाण्डश्चण्डदीधितिः ॥ ५३
मुक्तिद्वारं मुनिवरो महोरस्को महामनाः ।
अन्नपात्रप्रदाता च विष्णुचिन्तापरः पुमान् ॥५४
आपदामपहर्ता च रोगकाण्डदवानलः ।
निवृत्तात्मा समावृत्तो चक्षुरिन्द्रियदेवता ॥ ५५
तपोमयस्तप्ततनुः पूषापूषादिवन्दितः ।
सर्वजन्तुशरण्यश्च बह्वृचो बहुदायकः ॥ ५६
कृष्णात्मा कमनीयश्च सर्ववेदविभागकृत् ।
कर्णो विकर्णः कान्तश्च बहुभोजी बहुप्रियः ॥ ५७
दक्षिणो दक्षिणामूर्तिर्दयावान् दम्भवर्जितः ।
सद्भूतिः कोशगः कोशी सर्वसिद्धिपरायणः ॥ ५८
शिवदेहश्शिवात्मा च शिवदेहश्शिवप्रदः ।

वाराणसीवासपरो हंसतीर्थप्रवर्तकः ॥ ५९
सूर्यलिङ्गप्रतिष्ठाता सोमकान्तिर्विवर्धनः ।
सुग्रहस्सुखदस्सूक्ष्मस्त्वरस्त्वरित एव च ॥ ६०
संख्यावान्सर्वसंसारे सूरिः परपुरञ्जयः ।
कृतागमः कृतविधिः कृतशास्त्रः कृताह्निकः ॥ ६१
राजा राजद्वितीयश्च ग्रहराजः प्रमाणवित् ।
बाडवो बाडवामूलं हव्यं कव्यं पितृप्रियः ॥ ६२
समाधिवेत्ता सारार्थस्सारदक्षारदाप्रियः ।
रक्तपुष्पार्चनीयश्च रक्तगन्धाक्षतप्रियः ॥ ६३
परार्ध्यार्घ्यः पूर्णकान्तिः कृततत्त्वार्थनिर्णयः ।
निखिलप्राणनिलयो नित्यमेरुप्रदक्षिणः ॥ ६४
पूर्णः पूर्णयिता पूज्यः परमान्नकृतादरः ।
परहिंसादिरहितो गुरुमूर्तिर्गतिप्रदः ॥ ६५
गोपालो लोकपालश्च सत्रस्सर्वस्वमच्युतः ।
मरुदीशो मरुच्चक्रमित्रो हृत्तापनाशकः ॥ ६६
हृद्रोगहारी कौमारी हरिमादिविनाशकः ।

उत्तरां दिवमारूढो हरिद्रः कोकनायकः ॥ ६७
ह्रीं बीजमध्यनिलयो नवनाथविवर्धनः ।
योगिनीवन्द्यचरणो बलिग्रहणतत्परः ॥ ६८
नित्यकल्याणनिलयो कल्याणाचलसेवकः ।
कल्याणदानः कल्यात्माऽत्युग्रो रिपुभयङ्करः ॥ ६९
भूतिकृद्भूतिभृद्भूतिर्भूतभावनपूर्वजः ।
त्रियुगश्च त्रिपृष्ठश्च त्रिपान्मूर्तित्रयात्मकः ॥ ७०
सर्वविघ्नविनाशी च सर्वबन्धविमोचकः ।
त्रिशिरास्त्रिप्रलम्बश्च त्रिदंष्ट्रस्त्रिचतुर्गतिः ॥ ७१
कुजमित्रं पितृपतिः पितृकारक एव च ।
शुभाङ्गो लोकसारङ्गसारङ्गोऽरुणसारथिः ॥ ७२
पुण्यश्लोकः पुण्यदायी पुण्यकारी पुरातनः ।
विजयो विष्णुराजश्च विष्णुरातो भवादिहृत् ॥ ७३
वदान्यश्च विराड्रूपी विद्यानाथो विधिर्विधुः ।
प्रशस्तगुणसिंधुश्च बन्धुर्वेदान्तवेदिनाम् ॥ ७४
तत्त्वार्थमाता ताम्राश्वस्तरुणस्तटिदुज्वलः ।

तीर्णदुःखस्तीव्रवेगो चन्दनद्युतिरात्मवान् ॥ ७५
अर्कपर्णरुजानतोषी वीतिहोत्रादिदैवतः ।
एकाक्षश्चैकचक्रश्च स्वतेजोभास्स्वयंप्रभः ॥ ७६
परागतिः पिण्डजानामण्डजानां भयावहः ।
क्रूरव्रतः क्रूरकल्पो तामसः परवीरहा ॥ ७७
षट्पल्लव विधानज्ञ षष्ट्पल्लव वरप्रदः ।
श्रुतिपादपसञ्चारी कोकिलः कमलाश्रयः ॥ ७८
कुष्ठव्याधिविनाशी च दुष्टपीडानिबर्हणः ।
धृतपद्मद्वयो योद्धा तेजोमण्डलमध्यगः ॥ ७९
सर्वाधिव्याधिशमनो सर्वतापाळितापनः ।
सर्वसाक्षी सदुदयः स्वाष्ट्राक्षर्यधिदेवता ॥ ८०
स्फोटादिदोषहारी च गुल्मदुःखप्रभञ्जनः ।
योजनार्बुदसञ्चारी सालोक्यादिप्रदः पिता ॥ ८१
खेटः कृपीटदायी च नम्रो नळिनवल्लभः ।
कान्तिप्रसन्नः कौवेरः श्रीवक्षाः श्रीनिकेतनः ॥ ८२
अरुणोऽरुणकेतुश्च युद्धप्रेतगतिप्रदः ।

संज्ञा मनोनुकूलश्च महेन्द्रकृतपूजनः ॥ ८३
गरुडाग्रजसूतश्च सख्याळिसुहृदूर्मिकृत् ।
गोधूमधान्यनाथश्च वर्तुलाकारमण्डलः ॥ ८४
रुद्रप्रत्यधिदेवश्च हस्तनक्षत्रनायकः ।
गुञ्जापुञ्जप्रतीकाशः पवित्रीकृतवृत्रहा ॥ ८५
काळिंदीजनकश्चैव गोब्राह्मणहिते रतः ।
इन्द्रो वृद्धश्रवाः पूषा विश्ववेदाः प्रजापतिः ॥ ८६
अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च बाध्वश्वो रश्मिपालकः ।
मरीच्यात्मा भुवनसूरद्रोही पुत्रदायकः ॥ ८७
महानाम्नीव्रतहितो महामानोपराक्षसः ।
आदित्योऽदितिदेवश्च दितिदेवो दिवस्पतिः ॥ ८८
व्योमसंदर्शविमानस्थो सुमृडीकम्सरोविभुः ।
स्मृतिप्रत्यक्षमैतिह्यमनुमानं विधायकः ॥ ८९
सतैस्सर्वैस्समाविष्टोऽणुर्महानधिवत्सरः ।
पटरोविक्षिधः पिंगः प्रदर्शोचोपदर्शकः ॥ ९०
नानामुखश्चैव शीर्षो ऋतुलक्षणलक्षितः ।

शुक्लात्मा दक्षिणः पक्षः कृष्णात्मा वामपक्षकः॥ ९१
अहोद्यौर्विपुरूपी च विश्वावनविशेषवित् ।
अपशुश्चापशुघ्नश्च नपशुः पशुपालकः ॥ ९२
संवत्सरप्रियतमः प्रत्यक्षज्ञेयमण्डलः ।
षड्ग्रमस्सप्तयात्रो विनादीचाभिधावकः ॥ ९३
षष्टिवत्सरसार्ष्टिकश्च प्रैषकृत्प्रथमस्स्मृतः ।
अघोरक्षस्सदोनादी वाक्प्रयोजक एवच ॥ ९४
संवत्सरीणः कर्मफलपाप्तापीत इवोज्वलः ।
कनकोज्वलवासाश्च अहतांबर एवच ॥ ९५
कपर्दी विशिखश्चैव वातवान्मरुतां मुखम् ।
क्षपणो योत्स्यमानश्च हेमचक्षुरकोपनः ॥ ९६
अपध्वस्तश्च सन्नद्धस्सहदृग्जीवनप्रदः ।
न देवो न मनुष्यश्च नाग्निर्नेन्द्रो न मारुतः ॥ ९७
नोपमो रुद्रधन्वा च कर्मब्रह्मप्रपञ्चकः ।
ऋतुभिस्सन्नुतस्स्वामी सर्वकामयुगव्ययः ॥ ९८
आरोग्यस्थानभा भ्राजः पटरस्थानभा अपि ।

सप्तसूर्यार्पितश्चैव कश्यपो मेघमोचकः ॥ ९९
वात्स्यायनः पञ्चकर्णो सप्तहोताच ऋक्पतिः ।
तस्थिवाञ्जगदात्मा च वैशम्पायन एवच ॥ १००
अनम्भा अम्भसां मूल मग्निर्वायुपरायणम् ।
कश्यपस्यातिथिश्चैव सिद्धागमन एवच ॥ १०१
नम उक्तिप्रियः पुण्यो अजिराप्रभुरेव च ।
नर्यापाः पंक्तिराधाश्च विसर्पी नीललोहितः ॥१०२
नीलार्चिः पीतकार्चिश्च वायुरेकादशात्मकः ।
वासुकिर्वैद्युतश्चैव रजतः पुरुषादिकः ॥ १०३
नासत्य जनकश्चैव शाम्बरश्चापपूरुषः ।
सुब्रह्मण्यश्च सूरीन्द्रो गौतमः कौशिकीपतिः ॥
अग्निश्च जातवेदाश्च सहोजा अजिराप्रभुः ।
कः किंकं तत्सत्यमन्नममृतो जीव एवच ॥ १०५
व्ययजन्मानुजन्मोऽग्रस्सप्तसप्तकदृष्टिभाक् ।
भानुर्विधुश्च भौमश्च चन्द्रसूनुश्च गीष्पतिः ॥ १०६
उशना सूर्यसूनुश्च तमःकेतुस्तथाद्रिभृत् ।

अर्धप्रहारो गुळिको यमकण्टक एवच ॥ १०७
कारको मारकश्चापि पोषकस्तोषकस्तथा ।
पश्चाङ्गुलः पुरोलुप्तः पार्श्वलुप्तस्तथैवच ॥ १०८
आकाशग्रहसंसेव्यो धूमकेतुविजृम्भणः ।
भूकम्पनादिहेतुश्च रक्तवृष्टिविधायकः ॥ १०९
गर्जन् पर्जन्यरूपी च दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
निर्जराराध्यचरणो जरामरणवर्जितः ॥ ११०
वियद्गमनजङ्घालो वीतिहोत्रसमप्रभः ।
विरिञ्चिगर्भसम्भूतो विषव्याळविनाशकृत् ॥
श्रीवृष्टिकीर्तिसन्दायी नमतां नमनप्रियः ।
वेदाध्ययनसम्पन्नो वेदान्तेषु च निष्ठितः ॥ ११२
शब्दशास्त्रप्रणेता च शब्दब्रह्ममयः परः ।
अर्थब्रह्ममयोऽर्थार्थी स्वार्थिनामर्थदायकः ॥ ११३
जप्ययज्ञस्तपोयज्ञो दानयज्ञस्तथैवच ।
स्वाध्याययज्ञो धर्मज्ञो नीतिज्ञो विज्ञएवच ॥ ११४
गुहाशायी गुहाभेदी साक्षान्मन्मथमन्मथः ।

मञ्जुदेहो मञ्जुकान्तिर्महिमातिशयोज्वलः ॥ ११५
मित्रविन्दावन्द्यपादो मुनिवृन्दावने हितः ।
ब्रह्मचारी सुमेधाश्च ऊर्ध्वरेतास्तपोमयः ॥ ११६
ऐंकारनिलयो वाग्मी वागर्थप्रद एवच ।
ह्रींकारनिलयो मायी इन्द्रजालादितत्त्ववित् ॥११७
श्रींकार निलयश्रीमान् धनदो धनवर्धनः ।
श्रीचक्रराजनिलयः श्रीदेवीकर्णभूषणम् ॥ ११८
क्लींकारमध्यनिलयः कामराजवशंकरः ।
सौःशक्तिसहितो ज्ञानदानदक्षः प्रकाशकः॥ ११९
परमात्मान्तरात्मा च जीवात्मा च नियामकः ।
हृदयग्रन्थिभेत्ता च सर्वसंशयनाशनः ॥ १२०
ब्रह्मव्याख्याननिपुणो यज्ञदीक्षायुरन्धरः ।
दौर्भाग्यतूलवातूलो जराध्वान्तनिवर्तकः ॥ १२१
द्वैतमोहविनाशी च भेदवादिविभेदनः ।
वीरभद्रमतध्वंसी वीराराध्यनिबर्हणः ॥ १२२
कापालिमतकोपी च मीमांसान्यायतत्परः ।

कार्तान्तिकवरस्सर्व कार्तान्तिकपरायणः ॥ १२३
जङ्गमाजङ्गममयो जानकीपूजितः पुरा।
इक्ष्वाकुवंशनाथश्च इन्दिरास्थान सुन्दरः ॥ १२४
विद्याविनयविज्ञान त्रयीताण्डवमण्टपः ।
रामचन्द्रकुलाम्भोधिः कामिनीकामदायकः ॥ १२५
सङ्गीतशास्त्रनिपुणः स्वरविद्याप्रवर्तकः ।
राजग्रहोधिकारी च राजराजेश्वरीप्रियः ॥ १२६
राज्यं भोज्यं च साम्राज्यं वैराज्यं राज्यमेवच ।
गौः पञ्चगव्यं सद्धात्मा चान्द्रायणफलप्रदः ॥१२७
कृच्छ्रादिफलदायी च दारिद्र्यभयनाशनः ।
दुःखार्णवोत्तारकश्च दुरितव्रातखण्डनः ॥ १२८
ब्रह्महत्यादिविध्वंसी भ्रूणहत्यानिबर्हणः ।
गुरुद्रोहादिशमनो मातृगामिवधोद्यतः ॥ १२९
पञ्चास्त्रशस्त्रमेघालि जंझावातो झषादिकः ।
चित्रगुर्दानशौण्डश्च सिंहसंहननो युवा ॥ १३०
वैधव्यबाधाशमनो विधवानां गतिप्रदः ।

रजोदोषविनाशी च कृतपक्कान्नगर्हणः ॥ १३१
पट्टाभिषिक्तभक्ताळिर्दुष्टमत्तेभकेसरी ।
अनर्गळगतिर्गूढो गोमतीतीरपुण्यकृत् ॥ १३२
जरायुदोषहारी च पूर्णायुर्योगकारकः ।
भक्ताब्जपूर्णचन्द्रश्च धर्ममार्गप्रवर्तकः ॥ १३३
सौवर्गसुखहेतुश्च निरयध्वंसदीक्षितः ।
भ्रमन्मण्डलसंस्थानो भ्रान्तिपित्तादि रोगहृत् ॥
मेहादिरोगशमनो पाण्डुक्षयविनाशनः ।
पापवेताळमन्त्रज्ञो पापकृज्जनदुर्लभः ॥ १३५
ज्वरादिदोषदूरश्च विज्वरीकृतभूसुरः ।
मोक्षनिश्रेणिकासाक्षी दाक्षायण्यादि सेवकः ॥
भावुको भद्रकरुणमश्विनीपुष्करोज्वलः ।
प्रशस्तवान्निस्तुलन प्रबन्धशतकल्पनः ॥ १३७
भूनेता भूधरो भोगी भाग्यदायी भवप्रियः ।
कर्मन्दी वललः क्षीबः पशुपालोऽश्वपालकः ॥
शनिपीडाविनाशी च कृत्यादोषनिबर्हणः ।

आभिचारिकविध्वंसी गदावनदवानलः ॥ १३९
जपपूजार्चनरतो नारायणपदं परम् ।
पापपाषाणदलन टङ्कीकृत करावलिः ॥ १४०
मोक्षलक्ष्मीकवाटश्च मातृकावर्णमण्डनः ।
अकारादिक्षकारान्त वर्णमाला विभूषणः ॥ १४१
अनुस्वारादिसंख्यात्मा स्वरो व्यञ्जनएवच ।
सर्वार्थदस्सर्वकर्मसर्वकार्यप्रकाशकः ॥ १४२
पञ्चविंशतितत्वस्थः पञ्चब्रह्मसमुद्भवः ।
पारमार्थिकसन्दायी पंग्वादिगतिदायकः ॥ १४३
सफलीकृत पूजार्थो विफलीकृतदुष्कृतिः ।
श्रुतिस्मृतिसमाम्नात स्मार्तकर्मप्रकाशकः ॥ १४४
यज्ञोपवीतधारी च याज्ञवल्क्यादिवन्दितः ।
सुषुम्नायोगमध्यस्थो लम्बिकायोगसाधनः ॥ १४५
सालम्बनोद्दीपनादिक्रियाबीजं महामनुः ।
कल्पातिशायिसङ्कल्पो विकल्पविधिवर्जितः ॥
अनल्पमूर्तिरस्वात्मा स्वात्मानन्दविधायकः ।

आत्मानात्मविवेकज्ञो निरावरणबोधनः ॥ १४७
निदानभूतस्तत्त्वानां नित्यकल्याणसुन्दरः ।
शान्तरक्षणनिर्निद्रः श्रुतिस्मृतिशुभद्रुमः ॥ १४८
आलापीकृतवेदाङ्गो मालालंकृतकन्धरः ।
रुद्राक्षकङ्कणलसत्करो रुद्रजपप्रियः ॥ १४९
सदाशिवपरब्रह्मस्थानं श्रीशम्भुविग्रहः ।
मूलाधाराम्बुजारूढो दहराकाशमध्यगः ॥ १५०
सहस्राराम्बुजारूढो ज्ञानडोलाविलासवान् ।
वेलोल्लङ्घनसामर्थ्यो वेत्ता निर्वृतिदायकः ॥ १५१
सुरभूसुरदत्तार्घ्यः शुद्धाम्बुग्रहणे रतः ।
ब्रह्मवर्चस्विताभूलं ब्रह्मश्रीसूर्यविग्रहः ॥ १५२
इति नामानि गौणानि भास्करस्य महात्मनः ।
कानिचिद्वर्णितान्यत्र देवस्यानन्तरूपिणः ॥ १५३
सूर्यवर्चः कृतार्थोसि त्वमद्य नहि संशयः ।
दिव्यानामपि यन्नाम्नां सहस्रमनुकीर्तितम् ॥ १५४
एतस्य श्रवणादेव कीर्तनाज्जीवकोटयः ।

तरन्ति दुस्तरं घोरं संसारं नात्र संशयः ॥ १५५
यश्शृणोति सदा नाम्नां सहस्रं भास्करस्य च ।
विद्याकामो लभेद्विद्यामर्थार्थी सार्थको भवेत् ॥
अनपत्यो लभेत्पुत्रमराजा राज्यमाप्नुयात् ।
गृहपीडा विनश्यन्ति नश्यन्ति ब्रह्मराक्षसाः॥१५७
आरोग्यमाप्नुयाद्रोगी कामी कामानवाप्नुयात् ।
किमत्र बहुनोक्तेन सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥ १५८
धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनं सर्वसम्मतम् ।
श्रुतिस्मृतिपुराणादि सारार्थकृतनिर्णयम् ॥ १५९
नाम्नां सहस्रं यो भक्त्या पठेन्नियतमानसः ।
सिध्यन्ति सर्वधर्मार्थास्तस्य नैवात्र संशयः ॥ १६०

विश्वावसुरुवाच—

नारायण नमस्तेऽस्तु भानुमण्डलमध्यगः ।
कर्मणामपि धर्माणां साक्षित्वं ब्रह्मनिर्मलम् ॥१६१
अनन्तोऽनन्तनामा च श्रीमान् लोकत्रयेश्वरः ।
विभूतिः केन वा ज्ञेया ज्योतिषामयनस्य च॥१६२

गन्धर्वाऊचुः—

सूर्यआत्मास्य जगतस्तस्थुषश्च त्वमेवहि ।
त्वामृते नहि पश्यामो जन्तूनां शरणं कलौ ॥

वालखिल्याऊचुः—

यः कर्मसाक्षी विदुषां वरेण्यं भर्गश्च सूते सविता जगच्च ।
यो वृष्टिदायी तपनश्च पुष्टिदस्तमेव देवं गतिमामनाम ॥

वैखानसाऊचुः—

कलाश्चेन्दोः कलास्सर्वाः कलाभिश्च प्रपञ्चिताः ।
तमेव कलयामोद्य चक्षुषो रतिदैवतम् ॥ १६५

वैष्णवा ऊचुः—

नारायणाश्रयो मर्त्यो नारायणपरायणः ।
सर्वत्र विजयी भूयात्सएव सविता स्वयम् ॥१६६

रुद्रगणाऊचुः—

अष्टमूर्तेरियं मूर्तिरेका दीप्तित्रयी यतः ।
एनं भजाम लोकेशं भानुमण्डलमध्यगम् ॥ १६७

श्रीसूतः—

बृहस्पतिस्सुराचार्यः कृपया परया मुदा ।
सूर्यवर्चसमित्युक्त्वा विरराम॥मिति स्वयम् ॥ १६८
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानहमेतन्महर्षयः ! ।
भवन्तस्सर्वधर्मार्थसिद्ध्यै नित्यं पठन्त्विदम् ॥१६९

इति श्रीस्कान्दपुराणे सूर्यसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

---

## ॥ श्रीगुरुभुजङ्गस्तोत्रम् ॥

सदेकं परं केवलं निर्विकारं
निराकार मानन्दमात्रं पवित्रम् ।
स्वयंज्योतिरव्यक्तमाकाशकल्पं
श्रुतिर्ब्रह्म यत्प्राह तस्मै नमस्ते ॥ १

य एकोऽपि मायावशात्सर्वहेतु-
स्वसृष्टेषु विश्वेषु विष्वक्प्रयेशात् ।

श्रुतौ जीवइत्युच्यते केवलात्मा
तुरीयाय शुद्धाय तस्मै नमस्ते ॥ २
न यत्स्यादिह द्रष्टृ विज्ञातृ चान्य-
त्क्वचित्स्यात्परं द्रष्टृ विज्ञातृ वा यत् ।
समस्तासु बुद्धिष्वनुस्यूतमेकं
नमो ब्रह्मणे जीवरूपाय तस्मै ॥ ३
मुखादर्पणे दृश्यमानो न भिन्नो
मुखाभास एवं चिदाभास ईशः ।
चितो नैव भिन्नोऽस्ति मायास्थितो यः
परेशाय तस्मै नमः केवलाय ॥ ४
यथा सूर्य एकः स्थितस्तोयपात्रे-
ष्वनेकेषु यो निर्विकारस्तथात्मा ।
स्थितस्त्वीयबुद्धिष्वनेकासु नित्य-
श्चिदेकस्वरूपाय तस्मै नमस्ते ॥ ५
स्थितोऽनेकबुद्धिष्वयं जीव एको
विभुःकारणैकत्वतो नात्र नाना ।

इति त्यक्तसर्वैषणापीवयस्य-
प्रसादाद्विजानन्ति तस्मै नमस्ते ॥ ६

मुखैः पञ्चभिर्भोग्यवस्तूनि भुङ्क्ते
ह्यभोक्तापि बुद्धिस्थितो बुद्धितुल्यः ।
करोतीव कर्माण्यकर्माऽपि यो वै
विचित्राय तस्मै नमस्तेऽस्तु नित्यम् ॥ ७

चिदाभास एवात्र कर्तेव भाति
स्वरूपापरिज्ञानतो यस्य मानम् ।
स्वबुद्धेरियं कर्तृभोक्तृस्वरूपा
मृषासंसृतिर्वै नमस्तेऽस्तु नित्यम् ॥ ८

चिदाभासचैतन्यबुद्धिर्विविच्या-
त्र विज्ञाय संसारपन्था द्विमुक्तः ।
य एत द्विवेकावधिं स्वस्य मेने
समस्तं च संसारमस्मै नमस्ते ॥ ९

न कस्यापि संसारलेशोऽपि कश्चि-
त्सकर्तृत्वभोक्तृत्वरूपो हि मिथ्या ।

समस्तोऽप्ययं यत्स्वरूपाविवेका-
न्नमस्ते सदा नित्यमुक्ताय तस्मै ॥ १०
जडा बुद्धिरात्मा परो निर्विकार-
श्चिदाभास एकोपि मिथ्यैव जीवः ।
य एतद्विवेकी स्वतो नित्यमुक्त-
स्सदा निर्विकाराय तस्मै नमस्ते ॥ ११
चिदाभास एकोऽव्ययः कारणस्थो
य ईशस्सएवाह कार्यस्थितस्सन् ।
अभूज्जीवसंज्ञस्स एको हि जीव-
स्स भिन्नो न यस्मान्नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥१२
यदज्ञानतो जीवनानात्वमाहु-
र्महामायया मोहिता वाददक्षाः ।
विवेकी वदत्येकमेवात्र जीवं
परित्यक्तवादो नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ १३
चिदाभास एकोथ नानेति सर्वे
विमुह्यन्ति वेदान्तिनोऽप्यन्यभक्त्या ।

तथाप्येकएवेति धीदार्ढ्यदाता
य आत्मा स्वभक्तस्य तस्मै नमस्ते ॥ १४
मुखादर्शयोरेकएवैकतायां
मुखाभास एवं चिदाभास एकः ।
स्वतो ब्रह्मबिंबैक्यमायैक्यतोऽयं
यदंशोऽखिलेशो नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ १५
श्रुतिर्ह्येकतां ब्रह्मणो व्यक्तिनूनं
सजातीयभेदादिशून्यं ततोऽत्र ।
स्वमायैकताप्यस्य युक्त्यापि सिद्धा
नमस्ते सदैकस्वरूपाय तस्मै ॥ १६
न मायाबहुत्वं तदा तत्प्रतिष्ठा
अनेकेश्वरासंभवेयुर्हि नैतत् ।
क्वचिद्युज्यते यस्य मायाऽप्यनेका
नमस्ते जगद्धेतुभूताय तस्मै ॥ १७
न मायां विना यस्य कर्तृत्वमस्ति
प्रवेशोऽपि तस्मात्समस्तं मृषैव ।

महामायिने निर्विकाराय तस्मै
नमो ब्रह्मरूपाय शुद्धाय तुभ्यम् ॥ १८
य आत्मा दृगेवा नदृश्यं त्वनात्मा
विवेकाद्वयोरात्मदृष्टिस्सदृश्ये ।
विनष्टेऽद्वये तादृशि स्वस्वरूपे
नमस्ते दृगात्मस्वरूपाय तस्मै ॥ १९
न दृङ् निर्विकारस्स्वमाया जडेयं
दृगाभास एको मृषैवेति यस्य ।
जगत्कर्तृता तात्त्विकी नास्ति तस्मै
नमः केवला कर्तृरूपा च तुभ्यम् ॥ २०
अमाय्येव मायी विभुश्शुद्ध आत्मा
सृजत्यत्त्यवत्यैकदानन्दपूर्णः ।
न मायां विना सृष्टृता साक्षिता वा
विशुद्धात्मनो यस्य तस्मै नमस्ते ॥ २१
चिदाभास एवाखिलोपाधिनिष्ठ-
स्समस्तैकसाक्षी सजीवेशसंज्ञः ।

चिदंशोऽखिलात्मा न भिन्नोऽस्ति यस्मा-
न्नमस्ते विशुद्धात्मरूपाय तस्मै ॥ २२
अहं सच्चिदानन्द आत्मैव शुद्धो
विमुक्तोऽस्मि वेदान्तवाक्यार्थबोधात् ।
इति स्वस्वरूपं विजानाति विद्वान्
परं यत्परेभ्योऽपि तस्मै नमस्ते ॥ २३
स्वमायापरिभ्रान्तचित्ता अजस्रं
परागेवस्तु पश्यन्ति न प्रत्यगर्थम् ।
मुमुक्षुस्तु यं पश्यति प्रत्यगर्थं
परब्रह्मरूपाय तस्मै नमस्ते ॥ २४
उपास्यो य ईशोऽस्त्वहं तस्य ईशा-
त्सकुर्वेव नैनं भजत्यत्र योस्मात् ।
विवेकी सएवाहमस्मीत्युपास्ते
यमात्मानमीशं नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ २५
भयं भेददृष्टेर्द्वितीयाद्वयुत्थं वै
महान्तो नभेदं प्रपश्यन्ति तस्मात् ।

यद्ज्ञानतो दृश्यते भेदएवं
भिदा मोहहन्त्रे नमस्तेस्तु तस्मै ॥ २६
विरिंचेन्द्र सूर्याग्निरुद्रेन्दुविष्णू-
न्प्रकल्प्यैक एवाद्वयःसर्वसाक्षी ।
जगच्चक्रविभ्रान्तिकर्ता य आत्मा
न दृश्येत केनापि तस्मै नमस्ते ॥ २७
जगज्जाग्रति स्थूलमेतत्समानं
मनोवासितं स्वप्न आनन्दनिद्राम् ।
सुषुप्तौ स्वमेवाभिपश्यन्मुदास्ते
तुरीयो यआत्मा नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ २८
समस्तादपि स्थूलसूक्ष्माच्छरीरा-
त्परः कारणाच्चान्यआत्मा समीपे ।
य एको विदूरेऽपि तिष्ठन् जनानां
महिम्नि स्वकीये च तस्मै नमस्ते ॥ २९
यमाश्रित्य नास्तीति चास्तीति वेदे
प्रवृत्तो विरुद्धोऽपि वादोऽखिलात्मा ।

नमस्तेऽङ्घ्रिपाण्यादिहीनाय नित्यं
सनस्तांघ्रिपाण्यादियुक्ताय तस्मै ॥ ३०
अणोरप्यणीयांसमात्मानमेकं
महान्तं महद्भस्तुनश्चेतनेभ्यः ।
परं चेतनं नित्यतो वेद नित्यं
यमेवेह विद्वान् नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ३१
यदानन्दलेशोपभोगेन सर्वे
सदानन्दिनस्सम्भवंत्यत्र तस्मै ।
सदानन्दसन्दोहपूर्णार्णवाय
प्रसन्नाय तुभ्यं नमः केवलाय ॥ ३२
यमुत्सृज्य मर्त्या भजन्त्यन्यदेवा
न तेषां विमुक्तिः फलं किन्तु तुच्छम् ।
श्वपुच्छं गृहीत्वा तरिष्यन्ति के वा
समुद्रं ह्यपारं नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ३३
यथा विध्युपान्तौ फलं दास्यतीश-
स्तथा विष्णु रुद्रेन्द्रवह्न्याद्युपान्तौ ।

फलं दास्यति ब्रह्म यद्धीशसंज्ञ
स्स्वकर्मानुसारं नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ३४
न यद्ब्रह्म मोक्षप्रदं स्यात्कदाचि-
द्विनैवैव मुक्तिप्रदं ज्ञानमेकम् ।
न मोक्षो कृतः कर्मणातः कृतेन
प्रपन्नार्तिहन्त्रे नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ३५
इदं नेति नेतीत्यमूर्तं च मूर्तं
निरस्यैव सर्वं जगद्दृश्यमेतत् ।
निषेधावधि ब्रह्म यच्छिष्यते वै
मनोवागगम्याय तस्मै नमस्ते ॥ ३६
परित्यज्य यस्तस्य सम्यग्विचारं
प्रवर्तेत यस्तीर्थयात्राजपादौ ।
करस्थान्नमुत्सृज्य लेडीति हस्तं
न यस्योदयस्तस्य तस्मै नमस्ते ॥ ३७
न चेत्प्राणवर्गेष्वयं स्याज्जडत्वा
त्कथं प्राणनाडीक्रियाकारितैषाम् ।

अतो यस्य सिद्धास्तिता युक्तितोऽपि
प्रपञ्चप्रकाशाय तस्मै नमस्ते ॥ ३८
भयं यद्विदां नास्ति मृत्युश्च नूनं
बिभेत्येव वाव्यादि सर्वंच यस्मात् ।
शरीरेऽहमित्यत्र बुद्धेर्भयं स्या-
न्नमस्तेऽभयायाशरीराय तस्मै ॥ ३९
गुरौ भक्तियुक्तैरिहैवेश्वरो य-
स्सुविज्ञेय आत्माऽन्यथा शब्दकोट्या ।
अविज्ञेय एकस्स्वबुद्धिस्थितोऽपि
प्रियायाखिलेभ्योऽपि तस्मै नमस्ते ॥ ४०
समस्तात्प्रियो देहएवाक्षमस्या-
त्प्रियप्राणएवाक्षतोऽपि प्रियेतः ।
प्रियः प्रत्यगात्मैव भोक्ता परो य-
स्स्वतोतिप्रियायेह तस्मै नमस्ते ॥ ४१
प्रियादात्मनोऽन्यन्न विद्येत किंचि-
त्तत्किंचित्कारणान्नैव भिद्येत कार्यम् ।

य आत्मा समस्तस्य हेतुर्नमस्ते
निदानाय सर्वस्य दृश्यस्य तस्मै ॥ ४२
समस्तं जगत्कारणान्नैव भिन्नं
समस्तात्मनः केवलाद्द्वितीयात् ।
परब्रह्मणो व्याकृतेशाच्च यस्मा-
न्नमस्ते क्षरायाक्षरायापि तस्मै ॥ ४३
यतः कारणान्नेह कार्यं विभिन्नं
ततो बृंहणं नैव भिन्नं जगत्स्यात् ।
समस्तं जगद्ब्रह्म तच्चास्मि विद्वा-
नुपास्ते यमेकं नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ४४
यथा मृद्विकारो मृदो नैव भिन्न-
स्तथा चिद्विकारश्चितो नैव भिन्नः ।
अतस्सर्वमेतच्चिदेवेति विद्वा-
न्विजानाति यद्ब्रह्म तस्मै नमस्ते ॥ ४५
जगद्यस्य सर्वं शरीरं जगन्न
प्रमातृप्रमाणप्रमेयात्मको यः ।

समस्तान्तरायाखिलेशाय तस्मै
नमस्सच्चिदानन्दरूपाय तुभ्यम् ॥ ४६
विदुर्यं न सर्वेऽपि यो वेत्ति सर्वं
समस्तेषु भूतेषु तिष्ठंस्त्वयं यः ।
समस्तान्तरः प्रेरयत्येव सर्वा-
न्नमस्ते समस्तान्तरेशाय तस्मै ॥ ४७
न देहेन्द्रियप्राणधीभूतवृन्दं
न संसार्यहं किंतु चिन्मात्रमेकम् ।
परं चापरं ब्रह्म विद्याद्वितीयं
तदस्तीति यद्वेद तस्मै नमस्ते ॥ ४८
यथा स्वप्नदृष्टाश्वहस्त्यादि मिथ्या
तथा सर्वमेतज्जगद्भाति मिथ्या ।
अधिष्ठानमात्रं जगद्दृष्टि सत्यं
द्वितीयं च यद्ब्रह्म तस्मै नमस्ते ॥ ४९
परा चापरा यस्य माया द्वितीयं
जगत्कर्तृतामक्रियस्यातनोति ।

स्वतो द्रष्टृदृश्यातरिक्ताय तस्मै
नमः केवलायाव्ययायात्मनस्तु ॥ ५०
विशुद्धात्मतत्त्वापरिज्ञानमूलं
विशेषावभासं सुखित्वादिरूपम् ।
विशुद्धात्मतत्त्वे परिज्ञातएतत्
क्वचिन्नास्ति यस्मिन् नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥
न हि स्वक्परिज्ञानतस्सर्वभानं
क्वचिद्विद्यते सर्पता कल्पिता स्यात् ।
तथाकल्पितं सर्वमेतच्च यस्मि-
न्नमस्ते समस्तावभासाय तस्मै ॥ ५२
सुषुप्तौ न संसारलेशोऽस्ति कश्चि-
त्प्रबोधेऽखिलाहंकृतौ दृश्यते यम् ।
अतोऽहंकृतेरेव संसार इत्थं
न वै संसृतिर्यस्य तस्मै नमस्ते ॥ ५३
न शास्ता न शिष्यो न शास्त्रं न विश्वं
न शाक्तं च शैवं मतं वैष्णवं वा ।

सुषुप्तौ तदानीं यदस्त्यात्ममात्रं
स्वतो निष्प्रपञ्चाय तस्मै नमस्ते ॥ ५४
जडानां प्रवृत्तिः स्वतो नास्ति यस्मा-
द्विभोश्चेतनात्वात्प्रवृत्तिः प्रवृत्ता ।
मनःप्राणदेहेन्द्रियव्याकृतानां
नमस्ते चिदात्मस्वरूपाय तस्मै ॥ ५५
मनःप्राणदेहेन्द्रियव्याकृतानि
स्वतः काष्ठतुल्यानि यत्सन्निधानात् ।
स्वयं चेतनानीव भांत्येव मोहा-
ज्जडेभ्यः परो यो नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ५६
बहिर्बुध्यते प्राणिबुद्धिः पदार्था-
न्नयं बुध्यते प्राणनाथं स्वसंस्थम् ।
समस्तान्तरात्मानमेकं च तस्मै
नमस्ते विरिंचादिधीबोधयित्रे ॥ ५७
परं यत्स्वरूपं विदुर्नापि देवाः
कुतोऽन्येमनुष्यादयो बाह्यचित्ताः ।

तदेवाहमस्मीति भक्तास्त्वजस्रं
भजन्त्यद्वितीयं नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ५८
समस्तेषु देहेषु सूर्येऽपि तिष्ठ-
न्य एकोऽखिलात्मा समस्तैकसाक्षी ।
सएवाहमस्मीति वेदान्तविद्भिः
सदोपास्यतत्त्वाय तस्मै नमस्ते ॥ ५९
अहंविश्वतस्तेजसः प्राज्ञरूपो
विराट्सूत्रमायेशरूपान्न भिन्नः ।
उपाधौ विभिन्नेऽपि किंत्वस्मि सोऽहं
यमेवं भजन्वेद तस्मै नमस्ते ॥ ६०
समस्तानि कर्माणि सन्त्यज्य विद्वां-
स्तदेवाहमस्मीत्युपास्ते ह्यजस्रम् ।
यदेवाह सर्वागमांत्यैकवेद्यं
नमस्तेऽनिशं चिन्तनीयाय तस्मै ॥ ६१
न कृत्या कृतेः प्रत्यवायः क्वचित्स्या-
दभावात्कथंभाव उत्पत्स्यतेच ।

अहं प्रत्यवायीति कृत्वा कृते स्या-
मयं यस्य मोहा न्नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ६२
अधर्मोऽयमेवायमेवात्र धर्मो
भवेदित्ययं मोहएवाखिलानाम् ।
यदज्ञानिनां प्रत्यवायप्रदं स्या-
त्कचिन्नद्वयाभावो नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ६३
अधर्मं जहत्स्वं विहाय प्रशान्ता
भजंत्यत्र नूनं स्वरूपं यदीयम् ।
स्वरूपं विचार्यामृतेरासुषुप्ते-
र्नमस्तेऽस्तु तस्मै विमुक्तिप्रदाय ॥ ६४
नवै बद्धता मुक्तता वा कदाचि-
त्कचिन्नित्यमुक्तस्य किंचात्मनोऽतः ।
बहिश्चेतसोऽन्तश्च गत्यागती ते
नमश्चित्तविक्षेपहर्त्रेऽस्तु तस्मै ॥ ६५
यथा क्षीणचित्तस्तथैवात्मनिष्ठः
पुमान्नित्यमुक्तो भवेदद्वितीयः ।

यथा चेतसो क्षीणता यत्प्रसादा-
त्तथा त्वत्प्रसादाय तस्मै नमस्ते ॥ ६६
प्रसन्ने त्वयि प्राणिनां किन्न लभ्यं
परस्त्वत्प्रसादान्न लाभोऽस्ति कश्चित् ।
बुधोतोऽनिशं यत्प्रसादाभिकांक्षी
नमस्ते प्रसन्न प्रसन्नाय तस्मै ॥ ६७
पृथिव्यादियुक्ताः परब्रह्मनिष्ठा
न मुख्या भवंत्यत्र जन्मास्ति तेषाम् ।
निरस्ताखिलोपाधिनिष्ठो हि मुख्यो
न यस्येह जन्मास्ति तस्मै नमस्ते ॥ ६८
न मुख्यं सुषुप्तेरधिष्ठानतोऽन्य-
त्सुषुप्तेरधिष्ठानमात्रं हि मुख्यम् ।
यदज्ञानतो दृग्बलाकिलेत-
न्नृपाद्वेद चैवं नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ६९
विरिंचादिलोकादिहावृत्तिरस्ति
क्वचिद्यात्मलोकादनावृत्तिरस्मात् ।

ध्रुवो ह्यात्मलोको ध्रुवानात्मलोका-
त्परो योऽस्ति चैको नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥
परं वेद सन्मात्रमुद्दालकेन
स्वपित्रोपदिष्टो यदा श्वेतकेतुः ।
यमात्मानमात्मस्थमव्यक्तमेतं
नमस्तेऽनिशं सत्स्वरूपाय तस्मै ॥ ७१
भृगुर्वेद पित्रोपदिष्टोन्तरेव
प्रकृष्टः परब्रह्मरूपात्मलोकम् ।
अनन्ताद्वयानन्दविज्ञानसत्यं
यमेकं विशुद्धाय तस्मै नमस्ते ॥ ७२
विहायैव कोशात्परं पञ्चवेद-
स्वरूपं यदानन्दकोशस्य पुच्छम् ।
मुमुक्षुस्सुपुत्रैरभिष्ठानमेकं
सदात्मस्वरूपाय तस्मै नमस्ते ॥ ७३
अनन्तानि शास्त्राण्यधीत्यापि विद्वा-
न्नदुःखेतरो नारदोऽनात्मवित्त्वात् ।

ऋषिर्मानसाद्वेद यं शोकहत्यै
नमस्ते सुखैघाय तस्मै विभूम्ने. ७४
ऋषेर्याज्ञवल्क्याद्विदेहो महात्मा .
यदेवाभयं ब्रह्म सम्यग्विदित्वा ।
स्वमेवाभयं तद्ध्रुवभूद्वेदवेद्यं
समस्ताभयाप्याय तस्मै नमस्ते ।। ७५
विदित्वात्र भूमा नमे नश्चिदेऽस्ति
प्रवाच्यं किमु प्राणवित्पापनाशे ।
अतः प्राणविद्यामनादृत्य विद्वा-
नुपास्ते यमीशं नमस्तेऽस्तु तस्मै ।। ७६
अजस्रान्नदानं परित्यज्य जान-
श्रुतेरैक्यवन्ध्यागमाद्धंसवाक्यात् ।
सखे प्राणवित्प्राणउत्कर्षवांस्त-
त्परोऽस्माद्य आत्मा नमस्तेऽस्तु तस्मै ।।
रवींद्वग्नितेजो जगद्भासकं चे-
न्न तस्यापि चित्सन्निधानं न तत्स्यत् ।

न यत्सन्निधानं विना किंचिदस्ति
कचिद्वस्तु तस्मै नमो ज्योतिषे च ॥ ७८
परं ज्योतिषां ज्योतिरात्माख्यमेत-
द्वदीद्वादिबुध्यादिविद्योतकं यत् ।
विदित्वैव नूनं नरो ब्राह्मणस्या-
दमर्त्यश्च तस्मै नमस्त्वात्मने ते ॥ ७९
यथाश्वत्थवृक्षे स्वदेहे च तुल्यं
स्वमेवाब्रवीद्वासुदेवोऽर्जुनाय ।
तथा यस्य साम्यं विजानाति विद्वान्
नमस्ते समस्तात्मरूपाय तस्मै ॥ ८०
द्विजे पुल्कसे हस्तिनि स्वे शरीरे
समस्सात्त्विके राजसे तामसे च ।
य आत्मा गुणस्तैरसंस्पृष्टईशो
नमस्ते सदानिष्कलङ्काय तस्मै ॥ ८१
यमाश्चर्यवद्वक्ति कश्चिच्छृणोति
प्रशान्तस्तु जानाति न ह्यप्रशान्तः ।

विदित्वापि साक्षात्करोत्यत्र नान्य-
श्चिदस्मीति दिक्ष्याय तस्मै नमस्ते ॥ ८२
पती देवदैत्यौघयोः पद्मजाद्यं
चतुर्वारमाकर्णयन्तौ तथापि ।
न जानाति कश्चित्तयोर्वेद चान्यो
ह्यतो दुर्वितर्काय तस्मै नमस्ते ॥ ८३
शरीरेन्द्रिय प्राणविज्ञानशून्ये-
ष्विहैकैकमात्मेति दृप्ता वदंति ।
तथा बुद्धिसम्यग्विचारासमर्था
यदज्ञानमोहाय तस्मै नमस्ते ॥ ८४
अनेकत्वकर्तृत्वभोक्तृत्वधर्मै-
रस्स आत्मा विभुश्चिद्गुणश्चेति केचित् ।
न कर्तैव भोक्ता क्वचिच्चेति चान्ये
यदज्ञा वदन्तीह तस्मै नमस्ते ॥ ८५
अनेकात्मकाप्रेरकोन्यो नहीश
स्विति प्राहुरेकेन चास्तीति चान्ये ।

विवादास्पदं नैव मायाविना यो
नमस्तेऽस्तु तस्मै विवादात्पराय ॥ ८६
विवादो निवर्तेत यस्य प्रसादा-
त्स्वरूपप्रकाशे जगद्भावनस्य ।
निवृत्ते विवादे पुनर्नैव लोके
भ्रमन्त्यद्वितीयाय तस्मै नमस्ते ॥ ८७
विभुं चित्तनिष्ठं यदंगुष्ठमात्रं
पुराणं पुमांसं वदन्त्यत्र वेदाः ।
जनानां हृदंगुष्ठमात्रं यतोऽस्मा-
दनङ्गुष्ठमात्राय तस्मै नमस्ते ॥ ८८
भ्रुवोर्मध्यमेवाविमुक्तं मुनीनां
महाक्षेत्रमित्यत्र बुद्धेश्श्रुतेश्च ।
न वा वारणासीं पुरीं गन्तुमिच्छे-
त्स्वरूपे स्थितो यस्य तस्मै नमस्ते ॥ ८९
शरीरे यथाहंमतिस्सर्वजन्तो-
स्तथा मुक्तिबुद्धिश्च काशीमृतेर्वा ।

स्वरूपं प्रकाशं विना यस्य मुक्ति-
र्न वै सम्भवेत्कापि तस्मै नमस्ते ॥ ९०

स्वरूपप्रकाशैकहेतुर्हि यस्य
प्रकृष्टागमान्तार्थसम्यग्विचारः ।
अतो यत्प्रकाशाय वेदान्तनिष्ठो-
ऽनिशं स्याद्विवेकी नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥९१

वदन्तश्च रुद्रादयोऽस्यात्मतत्त्वं
न जानन्त्यतः केऽपि वेदान्तनिष्ठाः ।
ततस्तानिहोत्सृज्य वेदांतनिष्ठो
भवेद्यत्प्रबोधाय तस्मै नमस्ते ॥ ९२

सुरेन्द्रो विदित्वैव यस्य स्वरूपं
समस्तादघाद्वृत्रहत्यादिरूपात् ।
विमुक्तो हि वेदान्तनिष्ठो मुदास्ते
निरस्याभिमानं नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ९३

यदीयं स्वरूपं विचार्यैव तिष्ठन्
सदा वन्दनीयोऽमरैरिन्द्रमुख्यैः ।

विशुद्धो ह्ययं देववन्द्यत्वयोग्य-
स्सवै चित्स्वरूपो नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ९४
स्वयं शुद्धएवान्यशुद्धिं ददाति
कचिन्नह्यशुद्धोऽन्यशुद्धिप्रदस्स्यात् ।
स्मृतश्शुद्धिदस्सर्वजन्तोर्यआत्मा
विशुद्धः पवित्राय तस्मै नमस्ते ॥ ९५
सकृत्संस्मृतश्चेत्समस्तं च पापं
दहत्यग्निवद्यस्त्विहात्यन्तदीप्तः ।
चिदेवाहमित्येव बुद्धौ प्रवेशः
स्वदीप्तिर्नमस्तेऽस्तु तस्मै महिम्ने ॥ ९६
न हि स्नानदानादिना पापनाशः
कुतस्संस्कृतिः कापि नश्येत्कदापि ।
विना यत् स्मृतिं स्मृत्युपायं च मुक्त्वा
स्मरत्पापहन्त्रे नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ ९७
अनात्मन्यहन्ताभिमानं निरस्य
स्वरूपप्रकाशस्ततस्सर्वपापम् ।

न संस्कृत्य नात्माश्रयं स्याद्विनष्टं
स्मृतेर्यत्प्रकाशे तु तस्मै नमस्ते ॥ ९८
अनाकर्ण्य वेदान्तभाष्यं समग्रं
न कस्यापि यत् स्मृत्युपायोऽस्ति कश्चित् ।
अतस्तच्चिकित्सा ततो यस्य जाता
नमस्ते दयालुस्वरूपाय तस्मै ॥ ९९
समस्तागमान्तानिह व्याचिकीर्षु-
स्स्वयं शङ्कराचार्यरूपावतीर्णः ।
कृतव्याससूत्रादिभाष्यो य आत्मा
स्वरूपैक्यधीराय तस्मै नमस्ते ॥ १००
चतुर्भिः प्रशान्तैस्स्वशिष्यैर्युतस्सन्
भुवं पर्यटन्नात्मनिष्ठोऽखिलात्मा ।
स भाष्यप्रचारं सदा कारयन् यो
विभात्यद्वितीयाय तस्मै नमस्ते ॥ १०१
विराट् सूत्रमायेशतुर्यस्वरूपैः
क्रमात्तोटकाचार्यनामादिसंज्ञैः ।

चतुर्व्यूहवेषैस्स्वशिष्यैर्युताया-
द्वयायात्मने ते नमो निर्गुणाय ॥ १०२
अजं कर्मठं विश्वरूपं विदित्वा
तुरीयाश्रमं चाथ तस्मै प्रदत्वा ।
व्यधादृश्यशृङ्गाश्रमे शारदार्चां
परं तत्त्वरक्षाय तस्मै नमस्ते ॥ १०३
य आचार्यभाष्याण्यधीत्यैव भक्त्या
लभन्ते निजानन्दमात्मस्वरूपम् ।
गुरुस्तैरयं वन्द्य आत्मात्मविद्भि-
स्ततस्सर्ववन्द्याय तस्मै नमस्ते ॥ १०४
नमश्शङ्कराचार्य तुभ्यं पुरस्ता-
न्नमः पृष्ठतः पार्श्वतश्चाथ ऊर्ध्वम् ।
नमस्सर्वतस्सर्वरूपाय तस्मै
विशुद्धात्मने ब्रह्मणे ते नमस्ते ॥ १०५
अहं जीवबुद्ध्या तवैवास्मि दासो
ह्यहं जीवबुध्यास्मि ते नैकदेशः ।

त्वमेवास्म्यहं त्वात्मबुद्ध्या तथापि
प्रसीदान्वहं देहबुद्ध्या नमस्ते ॥ १०६
सभाष्यार्थआशु स्फुरत्यन्तिकाले
चिदाभासचैतन्यदृक्त्वप्रसादात् ।
गतिर्नान्यथा मे समस्तापराधं
क्षमस्वाखिलात्मन्नमस्तेऽस्तु नित्यम् ॥
नमो भाष्यवृन्दाय भाष्योपदेष्ट्रे
नमो भाष्यकृद्भ्यो नमो भाष्यविद्भ्यः ।
नमो भाष्यवृन्दार्थभूताय भूम्ने
विशुद्धात्मने ब्रह्मणेऽस्मै परस्मै ॥ १०८
शतोर्ध्वाष्टकश्लोकमेतद्भुजङ्ग-
प्रयातं पठेद्योऽत्र भक्त्या त्वदीयम् ।
चिदाभास चिद्रूपमेकं स्मरन्स्व-
स्वरूपेण नूनं नमस्तेऽस्तु तस्मै ॥ १०९
भुजङ्गप्रयातार्थमत्यन्तभक्त्या
सकृद्वा स्मरेत्प्रत्यहं श्रीगुरोर्यः ।

निरस्तान्धकारस्य आनन्दरूपं
व्रजत्यच्युतं त्वां त्वदीय प्रसादात्। ११०
अहं ब्रह्मभूत्वापि नेति भ्रमोऽभू-
त्तदीय स्वरूपावबोधात्पुरा मे।
गुरो त्वत्प्रसादाद्विमुक्तोऽहमस्मि
चिदाभास चिद्रूप आत्मा विशुद्धः ॥१११
अतो बुद्धिमांस्त्वत्प्रसादाय नित्यं
भुजङ्गप्रयातं पठेद्वा तदर्थम्।
स्मरेद्वा गुरो ते प्रणम्यैव भूय-
श्चिदाभासचिद्रूपमेकं परं तत् ॥ ११२
मुनींद्रैः पुराणैरनुध्येयमीशं
विरिंचादिभिस्सर्वदेवैश्च वन्द्यम्।
कथं त्वामहं स्तोतुमिच्छन् भवन्तं
वा साधयेन्नेह किं किं महेश ॥ ११३
कृपा ते कृपाळो विमुग्धं विशुद्धं
करोतीह मूकं च वाचालमीशम्।

अतस्त्वत्कृपावैभवेनैवमेत-
त्कृतं मे क्षमस्वाखिलात्मन् नमस्ते ॥११४

इति श्री शङ्कराचार्यनाम प्रकाशक तदीय विग्रह-
भूषणायमान भुजङ्ग प्रयातश्रवण मननानिदि-
ध्यासनादिना तदीयानुग्रह गृहीत तदीय-
विग्रहाः पुरुषा आनन्दपूर्णा भवन्ति
श्री गुरुभुजङ्गस्तोत्रं समाप्तम् ॥

---

## ॥ मार्कण्डेयकृत शिवस्तोत्रम् ॥

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृङ्गनिकेतनं
शिञ्जिनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलसायकम् ।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ १

पञ्चपादपपुष्पगन्धिपदांबुजद्वयशोभितं
फाललोचन जातपावक दग्धमन्मथ विग्रहम् ।

भस्मदग्धकळेबरं भवनाशनं भवमव्ययं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ २
मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं
पङ्कजासन पद्मलोचन पूजितांघ्रिसरोरुहम् ।
देवसिंधुतरङ्गशीकरसिक्तशीतजटाधरं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ३
कुण्डलीकृतकुण्डलेश्वरकुण्डलं वृषवाहनं
नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम् ।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं मदनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ४
यक्षराजसखं भगाक्षहरं भुजङ्गविभूषणं
शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकळेबरम् ।
क्ष्वेळनीलगळं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ५
भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं
दक्षयज्ञ विनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ।

मुक्तिमुक्तिफलप्रदं सकलाघसङ्घनिबर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ६
भक्तवत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं
सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम् ।
सोमवारिनभोहुताशन सोमपाद्यखिलाकृतिं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥ ७
विश्वसृष्टि विधायकं पुनरेव पालनतत्परं
संहरन्तमपि प्रपञ्चमशेषलोकनिवासिनम् ।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृतं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ८
संसारसर्पदष्टानां जन्तूनामविवेकिनाम् ।
चन्द्रशेखरपादाब्जस्मरणं परमौषधम् ॥ ९
रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठ मुमापतिम् ।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति ॥१०
कालकण्ठं कलामूर्तिं कालाग्निं कालनाशनम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥

अनन्तमव्ययं शान्त मक्षमालाधरं हरम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥ ३
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम् ।
नमामि शिरसा देवं किंनो मृत्युः करिष्यति ॥ ४
देवदेवं जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥ ५
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारणम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥ ६
गङ्गाधरं शशिधरं शङ्करं शूलपाणिनम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥ ७
भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गं नागाभरणभूषितम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥ ८
मार्कण्डेयकृतं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
तस्य मृत्युभयं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ९
शिवेशान महादेव वामदेव सदाशिव ।
कल्पायुर्देहि मे पूर्णं यावदायुररोगताम् ॥ १०

इति श्री मार्कण्डेयकृत शिवस्तोत्रम् ॥

## ॥ पार्थिवलिङ्ग पूजाविधिः ॥

शिवप्रणीते - मेरुतन्त्रे - १७५ पुटे
पार्थिवलिङ्गपूजाविधिरुच्यते ॥

ईश्वर उवाच—

उद्धाराय च साधूनां महाकालाज्ञया मया ।
कथितं चिरजीविभ्यः पार्थिवं लिङ्गपूजनम् ॥ १

तद्विधिं सम्प्रवक्ष्यामि देवाः शृण्वन्तु सादरं ।
इह लोके परत्रापि सिद्धिः करतले स्थिता ॥ २

तत्र पार्थिवलिङ्गानां पूजने स्यादयं विधिः ।
स्नात्वा नित्यं विधानादौ गच्छेच्छुद्धां भुवं सुधीः ॥

स्थानाष्टके स्थिता या मृत्सा च सर्वार्थसिद्धिदा ।
शमीगर्भाश्वत्थमूले नदीकूले च निर्जने ॥ ४

पर्वताग्रे च तीर्थे च गोष्ठे वा तुलसीवने ।
वटाधस्तात्तत्र भूमिं मन्त्रयेत्प्रार्थयेदिति ॥ ५

विप्राणां वैदिकेनैव मन्त्रेणाराधनं वरम् ।
यो वैदिकमनादृत्य स्मार्तकर्म तथैव च ॥ ६
अन्यत्समाचरेन्मर्त्यः न स कर्मफलं लभेत् ॥

युगभेदेन लिङ्गभेदः ॥

कृते रत्नमयं लिङ्गं त्रेतायां हेमसम्भवम् ।
द्वापरे पारदं श्रेष्ठं पार्थिवं तु कलौ युगे ॥ १
यथा लब्धोपचारैश्च भक्तिश्रद्धासमन्वितः ।
पूजयेत्पार्थिवं लिङ्गं शास्त्रोक्तविधिना नरः ॥ २
पञ्चसूत्रविचारं च पार्थिवेन विचारयेत् ।
यथा कथंचिद्विधिना रमणीयं प्रकल्पयेत् ॥ ३

वर्णभेदेन मृत्तिकामाह ॥

विप्राणां मृत्तिका श्वेता क्षत्रियाणां तथारुणा ।
विशां पीता च शूद्राणां कृष्णा वा लभ्यते यथा॥१
ततः पूजासमाप्तौ तु दद्यात्पुष्पाञ्जलित्रयम् ।
जपं पञ्चाक्षरस्यापि कुर्यादष्टोत्तरं शतम् ॥ २

एवमर्पयतः पुंसः पार्थिवं लिङ्गमुत्तमम् ।
मासमात्रेण सिद्धिस्स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥ ३
अकृत्वा पार्थिवं लिङ्गं योऽन्यदेवं प्रपूजयेत् ।
वृथा भवति सा पूजा स्नानदानादिकाः क्रियाः॥४

अत्रैव काम्यभेदेन विषये लिङ्गभेदेन फलविशेषमाह ॥
अप्रकृतत्वा न्नाल लिख्यते ॥

---

## ॥ पार्थिवलिङ्गपूजाप्रयोगः ॥

आचम्य - प्राणानायम्य - एवं···प्रीत्यर्थं । अस्य श्रीपार्थिवाख्यस्य विद्यायाः - ब्रह्माऋषिः - कामदुघा देवता - गायत्रीछन्दः - ओं ह्रीं ह्रीं बीजं - ह्रीं शक्तिः - नमः कीलकं अभीप्सितार्थसिध्यर्थे पार्थिवलिङ्गपूजने विनियोगः ॥

अथ करन्यासः—

१ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय - सर्वज्ञाय - अंगु ।
२ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय - सर्वतृप्ताय - तर्जनी ।

३ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय - नित्यमलुप्तशक्तये - मध्य ।

४ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय - सर्वज्ञानशक्तये - अना ।

५ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय - नित्यानन्दशक्तये - कनि ।

६ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय-अनन्तशक्ति शिवाय करत ।

अथ हृदयादिन्यासः—

१ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय - सर्वज्ञाय - हृदयाय नमः ।

२ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय - सर्वतृप्ताय - शिरसे स्वाहा ।

३ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय - नित्यमलुप्तशक्तये - शिखा-यैवषट्

४ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय सर्वज्ञानशक्तये-कवचाय हुं ।

५ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय - नित्यानन्दशक्तये - नेत्र-त्रयाय वौषट् ।

६ ओं ह्रीं ह्रौं ओं शिवाय अनन्तशक्तिशिवाय - अस्त्राय फट् ।

ओं भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

अथ ध्यानम्—

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा रमन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥
वन्दे महेशं सुरसिद्धसेवितं देवाङ्गनागीतसुनृत्यतुष्टम् ।
पर्यङ्कगं शैलसुतासमेतं कल्पद्रुमारण्यगतं प्रसन्नम् ॥ २
ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुवरमृगाभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

अथ लमित्यादि पञ्चपूजां गुरुपूजां च कृत्वा । मन्त्रोपदेष्टारं मनसा संस्मृत्य प्रणमेत् ॥

अथ मनुः—

ओं ह्रौं ह्रीं हूं ओं नमश्शिवाय पारिजाताय प्रसन्नाय स्वाहा । एकविंशतिवर्णकमिमं मन्त्रं प्रत्यहमष्टोत्तरशतं कुर्यात् ॥

पश्चादुक्तप्रकारेण शुद्धां मृत्तिकां सद्योजातेन गृहीत्वा ॥

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवेभवे नातिभवस्व मां भवोद्भवाय नमः । इति मृत्तिकां गृहीत्वा ॥

वामदेवेन जलं संयोज्य शर्करारहितां मर्दयेत् ॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नम स्सर्व भूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

अघोरेति मन्त्रेणांगुष्ठादधिकं सुन्दरं सुश्लक्ष्णं लिङ्गं कृत्वा विभूत्या परिमृजेत् ॥

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्य स्सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

(भूम्यां षट्कोणं विलिख्य तदुपरि पीठं निधाय कुशानास्तीर्य तदुपरि लिङ्गं संस्थाप्य [1]पाशुपतेन शतवारमभिमन्त्र्य [2]प्रासादपरा [3]परा प्रासादबीजाभ्यां प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तत्पुरुषेण पूजां समाचरेत् ॥)

तत्पुरुषाय विद्म हे महादेवाय धीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचोदयात् । ओं ह्रौं ह्रीं जूं सः । शिवाय नमः । आवाहनं समर्पयामि ॥ १ ॥

तत्पुरु···त् ॥ ओं ह्रौं ह्रीं जूं सः । शिवाय नमः । आसनं समर्पयामि ॥ २ ॥

(सर्वत्राखण्डधवळाक्षतान् श्वेततिलान् श्वेतपुष्पान् गृह्णीयात्)

तत्पुरु···त् ॥ शिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि॥ ३

तत्पुरु···त् ॥ शिवाय नमः । अर्घ्यं समर्पयामि॥४

---

1 ओं पशुपतयेनमः आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हिं क्षं सः। 2 द्रूंसौः(:)म्। 3 सद्यौः(:)म्।

तत्पुरु...त् ॥ शिवाय नमः । आचमनीयं समर्पयामि ॥ ५ ॥

तत्पुरुषाय...त् ॥ शिवाय नमः । स्नानं समर्पयामि ॥ ६ ॥

ओं नमश्शम्भवेच मयो भवेच नमश्शंकराय च मयस्कराय च नमश्शिवाय च शिवतराय च । एवमष्टाविंशतिवारं पयसा शुद्धोदकेन वा स्नपयेत् । स्नानानन्तरं शुद्धाचमनीयं दद्यात् । भवायेत्यष्टभिर्मन्त्रैः स्नानाङ्गतर्पणं कुर्यात् ॥ ७ ॥

१ भवं देवं तर्पयामि ।
२ शर्वं देवं तर्पयामि ।
३ ईशानं देवं तर्पयामि ।
४ पशुपतिं देवं तर्पयामि ।
५ रुद्रं देवं तर्पयामि ।
६ उग्रं देवं तर्पयामि ।
७ भीमं देवं तर्पयामि ।

८ महान्तं देवं तर्पयामि। इति तर्पणं कुर्यात् ॥

तत्पुरुषाय विद्महेमहादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः-प्रचोदयात् ॥ ओं ह्रौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥ ८ ॥

तत्पुरु···त् ॥ शिवाय नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ ९ ॥

तत्पुरु···त् ॥ शिवाय नमः गन्धं समर्पयामि ॥

तत्पुरु···त्. शिवाय नमः । पुष्पाणि समर्पयामि॥

(द्रोणपुष्पैश्च पूजयेत्)

१. ओं निधनपतये नमः
२. ओं निधनपतान्तिकाय नमः
३. ओं ऊर्ध्वाय नमः
४. ओं ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः
५. ओं हिरण्याय नमः
६. ओं हिरण्यलिङ्गाय नमः
७. ओं सुवर्णाय नमः

(काकेन्दुपुष्पैः पूजयेत्)

८. ओं सुवर्णलिङ्गाय नमः
९. ओं दिव्याय नमः
१०. ओं दिव्यलिङ्गाय नमः
११. ओं भवाय नमः
१२. ओं भवलिङ्गाय नमः
१३. ओं शर्वाय नमः
१४. ओं शर्वलिङ्गाय नमः
१५. ओं शिवाय प्रमः
१६. ओं शिवलिङ्गाय नमः
१७. ओं ज्वलाय नमः
१८. ओं ज्वललिङ्गाय नमः
१९. ओं आत्मने नमः
२०. ओं आत्मलिङ्गाय नमः
२१. ओं परमाय नमः
२२. ओं परमलिङ्गाय तमः

(एवं संपूजयेत्)

ओं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तं नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ओं ह्रौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः। धूपं समर्पयामि ॥ १२ ॥

तत्पुरु...त् ॥ ओं शिवाय नमः । दीपं समर्पयामि ॥ धूपदीपानन्तरं शुद्धाचमनीयं समर्पयामि ॥

अथ नैवेद्यम्—

ओं तत्पुरु...त् ॥ ओं शिवाय नमः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् । सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि । अमृतमस्तु । अमृतोपस्तरणमसि । ओं शिवाय नमः । गुडं । (शर्करं यथासम्भवं) निवेदयामि । ओं प्राणाय स्वाहा । ओं अपानाय स्वाहा । ओं व्यानाय स्वाहा । ओं उदानाय स्वाहा । ओं समानाय स्वाहा । मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि । उत्तरापोशनं समर्पयामि । हस्तौ प्रक्षाळयामि । पादौ प्रक्षाळयामि । शुद्धाचमनीयं समर्पयामि ॥

ओं तत्पुरु...त् ॥ ओं शिवाय नमः । ताम्बूलं समर्पयामि । ताम्बूलानन्तरं शुद्धाचमनीयं समर्पयामि ॥ १५

ओं तत्पुरु...त् ॥ ओं शिवाय नमः । नीराजनं समर्पयामि । नीराजनानन्तरं शुद्धाचमनीयं समर्पयामि ॥ १६

ओं तत्पुरु...त् ॥ ओं शिवाय नमः । बिल्वं बिल्वपत्रं वा अखण्डाक्षतान्वा गृहीत्वा ॥ १७

अलिङ्गलिङ्गरूपाय रूपातीताय वै नमः ।
त्वं माता सर्वलोकानां त्वमेव जगतः पिता ।
त्वं त्राता सुहृन्मित्रं त्वं प्रियश्शिवरूपधृक् ॥
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ।
उग्राय यजमानाय नमस्ते कर्मयोगिने ॥
ओंकाराय नमस्तुभ्यं धर्मगोवाहनाय च ।
पार्थिवस्य च लिंगस्य यन्मया पूजनं कृतम् ॥
अनेन भगवान्रुद्रः वांछितार्थं प्रयच्छतु ॥

इति संप्रार्थ्य लिंगस्य पुरतः बिल्वाक्षतान् समर्पयेत् ॥

(पूर्जातेऽष्टोत्तरशतं जपेन्मंत्रमनन्यधीः)

अस्य श्रीप्रणवपंचाक्षरीमहामंत्रस्य । वामदेवऋषिः सांबसदाशिवो देवता । ओं बीजं । नमश्शक्तिः । शिवाय इति कीलकं मम सांबसदाशिवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ओं अङ्गु...ओं हृदयाय नमः
नं तर्ज...नं शिरसे स्वाहा
मं मध्य...मं शिखायै वषट्
शिं अना...शिं कवचाय हुं
हिं कनिष्ठि...हिं नेत्रत्रयाय वौषट्
यं करतल...यं अस्त्रायफट्
ओं भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

अथ ध्यानम्—

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं शुद्धस्फटिकसंनिभं ।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयञ्च नागयज्ञोपवीतिनम् ॥
अमृतेनाऽप्लुतं दिव्यं दिव्यभोगसमन्वितं ।
वन्दे महेश्वरं देवं वांछितार्थप्रदं वरम् ॥

ॐमित्यादि पञ्चपूजां गुरुपूजां च कुर्यात्—

अथ मनुः ॥ ओं ह्रौं ह्रीं जूं सः ह्रस्रौम् स्ह्रौं (:) म् ओं नमश्शिवाय एवमष्टोत्तरशतजपं कुर्यात् ॥

पूजासाद्गुण्यार्थं बिल्वपत्राक्षतश्वेततिलैरष्टमूर्तिं मूर्तिपतींश्च तर्पयेत् ॥

अष्टमूर्तयः—

भवश्शर्वस्तथेशान स्तुर्यः पशुपतिर्मतः ।
रुद्रोग्रभीममहतस्त्वष्टौ ते परिकीर्तिताः ॥ १

अष्टमूर्तिपतयः—

क्षित्यप्तेजोऽनिलाकाश यजमानेन्दुभास्कराः ।
द्वितीयान्तैस्तर्पयामि बिल्वपत्रैर्जलाक्षतैः ॥ २

तर्पणक्रमः - बिल्वाक्षतान्गृहीत्वा—

१. भवं देवं तर्पयामि
२. शर्वं देवं तर्पयामि
३. ईशानं देवं तर्पयामि

४. पशुपतिं देवं तर्पयामि
५. रुद्रं देवं तर्पयामि
६. उग्रं देवं तर्पयामि
७. भीमं देवं तर्पयामि
८. महान्तं देवं तर्पयामि.
१. क्षितिमूर्तिपतिं तर्पयामि
२. अम्मूर्तिपतिं तर्पयामि
३. तेजोमूर्तिपतिं तर्पयामि
४. अनिलमूर्तिपतिं तर्पयामि
५. आकाशमूर्तिपतिं तर्पयामि
६. यजमानमूर्तिपति तर्पयामि
७. इन्दुमूर्तिपतिं तर्पयामि
८. भास्करमूर्तिपतिं तर्पयामि

एवं तर्पयेत्—

पश्चादनन्यमनसा महादेवं संस्मृत्य ईशानेति मन्त्रेण लिङ्गमादाय वामहस्ते निधाय । दक्षिणहस्ता-

नामिकाङ्गुष्ठमध्यमांगुलिभिरभिमन्त्र्य । मुखसममुद्धृत्य उच्चैर्महादेवेति त्रिवारमुच्चार्य पश्चान्मूर्ध्नि समं नीत्वा ॥ "ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मशिवो मे अस्तु सदाशिवों" इत्युच्चार्य लिङ्गं विसृजेत् । बिल्वं शिखायां गन्धाक्षतान् भ्रूमध्ये प्रसादभावनया गृहीयात् । शेषं शुद्ध प्रदेशे परित्यजेत् ॥

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमोनमः । इति नमस्कारान् समर्पयेत् ॥

हरिः ओम् तत्सत् ॥

इति श्रीशिवाशिव संवादात्मके मेरुतन्त्रे पार्थिवपूजा ॥

विधिवर्णनं नाम नवमः प्रकाशः—

मेरुतन्त्रोक्तानुसारेण । श्री. दै. कोटीश्वरशर्मणा ग्रथितः । पार्थिवपूजाविधिस्समाप्तः ॥

---

## ॥ विशेषांशाः ॥

चातुर्वर्ण्यस्याप्यधिकारो विद्यते । ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रोवाप्यनुलोमजः । पूजयेत्सततं लिङ्गं तत्तन्मंत्रेण सादरं ॥ १ ॥ विलोमजानामप्यस्ति ॥

विलोमजानां पूजार्थं मन्त्रोऽयं परिकीर्तितः ।

" भवाय भवनाशाय महादेवाय धीमहि । उग्राय चोग्रनाशाय शर्वाय शशिमौलिने " ॥

१. ऋणविमुक्तार्थी—

एकं लिङ्गं प्रतिदिनं षोडशैरुपचारकैः ।

पूजयेद्वै द्रोणपुष्पैर्घृतमेव समर्पयेत् । एवं शतदिनं सर्वऋणान्मुक्तिः प्रजायते ॥

२. पुत्रार्थीः—

लिङ्गद्वयं प्रतिदिनं षोडशैरुपचारकैः ।

पुष्पाणि मल्लिकायास्तु नैवेद्यार्थं गुडस्स्मृतः । दिनानां त्रिशतं कुर्यादयुतं पुत्रमाप्नुयात् ॥ अयुतं जपविषयम् ॥

३. कन्या, विवाहाभिलाषिणी :—

दिनं प्रतित्रयं कृत्वा षोडशैरुपचारकैः ।
करञ्जपुष्पैः कर्पूरं नैवेद्यं सम्प्रदर्शयेत् । दिनानां पञ्चशतकं कन्या भवति शोभना ॥

४. विवाहार्थीपुमान् :—

चतुष्टयं प्रतिदिनं षोडशैरुपचारकैः ।
पूजयेद्यवनैवेद्यं पुष्पाणि चम्पकस्यतु । दिनं पञ्चशतं कृत्वा विवाहो जायते ध्रुवम् ॥

५. कलहनिवारणार्थी :—

षट्षड्वकुळपुष्पैश्च नैवेद्यं क्षौद्रमेवच ।
महतः कलहान्मुक्ति र्दिनानां स्याच्छतत्रयात् ॥

६. तीर्थाभिलाषी, देवताभिलाषी :—

सप्तप्रतिदिनं पुष्पै श्शतपत्रैःप्रपूजयेत् ।
दध्योदनं च नैवेद्यं दिनपञ्चशतैर्युतम् । उद्दिश्य मनसि यत्तीर्थं तद्भवेद्देवतापि च ॥

७. महाविद्यागमाभिलाषी :—

यस्तु प्रतिदिनं चाष्टबिल्ववत्रैः समर्चयेत् ।

नैवेद्यं तत्र लड्डूका उपचाराश्च षोडश । शतत्रय-दिनं कृत्वा महाविद्यागमो भवेत् ॥

८. ऋणमुक्तः धनार्थीः—

नवप्रतिदिनं कृत्वा नैवेद्यं पञ्चमासकम् ।
ब(क)नुपुष्पैश्च पूजा स्याद्दृणमुक्तो धनी भवेत् ॥

९. दूरदेशगंतस्य दर्शनाभिलाषीः—

दश प्रतिदिनं वर्ष मेकं काचनपुष्पकैः ।
नैवेद्यार्थमपूपास्युः दूरदेशागमो भवेत् ॥

१०. नवरत्नाभिलाषीः—

एकादश प्रतिदिनं नैवेद्यं पञ्चखाद्यकम् ।

पुष्पाणि करवीरस्य काञ्चनं रजतादिकम् । मुक्ताफल प्रवाळादि यदिष्टं प्राप्नुयाच्च तत् ॥

" सञ्जाते च मनोरथे " उद्यापनं च कुर्यात् ॥

तत्क्रमः—

कुर्याल्लिङ्गं तु सौवर्णं रौप्यं ताम्रमथापिवा ।
वित्तशाठ्यं न कुर्वीत तत्प्रमाणेन निर्मितम् ॥
महाशैवाख्य योगोऽयमार्द्रासोमश्चतुर्दशी ।

द्वयोर्योगे शैवयोग एकस्मिन्तु शिवं दिनम् ॥
महायोगेऽनन्तफलं बहुळं शैवयोगके ।
यथोक्तं शिवयोगे तु फलं प्राप्नोति मानवः ॥
उपोष्य प्रथमे चाह्नि सम्पूज्य परमेश्वरम् ।
आचार्यं ब्राह्मणांश्चापि होमार्थं वृणुयात्ततः ॥
गणेशमम्बां सम्पूज्य शिवं संस्थाप्य पूजयेत् ।
प्राग्प्रतिष्ठापूर्वं तु वह्निस्थापनमाचरेत् ॥
आचार्यमृत्विजैश्चापि वरयेद्दक्षिणादिना ।
यत्संख्याकं यजेल्लिङ्गं तन्मितं होममाचरेत् ॥
आयुष्कामो घृतैस्तत्र धनार्थीवापि पायसैः ।
तिलाज्याभ्यांचरेद्धोम मेतद्विघ्नं यदर्थयेत् ॥
रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतवाद्य पुरस्सरम् ।
तर्पणं मार्जनं कुर्या त्ततो ब्राह्मणभोजनम् ॥
वटुकानां कुमारीणां गणं सान्विकतुष्टये ।
पुनर्लिङ्गं पूजयित्वा दद्यात्तं गुरवे पुनः ॥
वस्त्रालङ्करणाद्यैश्च गुरुं यत्नेन तोषयेत् ।

दक्षिणां भूयसीं दत्वा सुहृद्भि स्सह भोजनम् ॥
यथा कुर्यादिति प्रोक्तं लिङ्गस्योद्यापनं परम् ।
विधिः प्रोक्तः पार्थिवानां सर्वकामप्रपूरकः ।
उद्यापनेन कथितः किमन्यत् श्रोतुमिच्छसि ॥

---

## ॥ शनैश्चरसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीशनैश्चरसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य - काश्यपऋषिः - अनुष्टुप्छन्दः - शनैश्चरो देवता - शं बीजम् - नं शक्तिः - मं कीलकम् - शनैश्चरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः - मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः - अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः - सौरये अनामिकाभ्यां नमः - उष्णोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः - छायात्मजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । शनैश्चराय हृदयाय नमः । मन्दगतये शिरसे स्वाहा -

अधोक्षजाय शिखायै वषट् सौरये कवचाय हुम् - शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट् छायात्मजाय अस्त्राय फट् । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्—

चापासनो गृध्रधरस्तु नीलः
प्रत्यङ्मुखः काश्यपगोत्रजातः ।
सशूलचापेषुगदाधरोऽव्यात्
सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च शौरिः ॥ १

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी
गृध्रासनस्थो विकृताननश्च ।
केयूरहारादि विभूषिताङ्ग
रसदाऽस्तु मे मन्दगतिः प्रसन्नः ॥ २

ओम् ॥ अमिताभाष्यघहरः अशेषदुरितापहः ।
अघोररूपोऽतिदीर्घकायोऽशेषभयानकः ॥ १

अनन्तो अन्नदाताचाश्वत्थमूलजपे प्रियः ।
अतिसम्पत्प्रदोऽमोघः अन्यस्तुत्या प्रकोपितः ॥ २

अपराजितोऽद्वितीयः अतितेजोऽभयप्रदः ।
अष्टमस्थोऽञ्जननिभः अखिलात्मार्कनन्दनः ॥ ३
अतिदारुण अक्षोभ्यः अप्सरोभिः प्रपूजितः ।
अभीष्टफलदोऽरिष्टप्रथनोऽरपूँजितः ॥ ४
अनुग्राह्यो अप्रमेयपराक्रमविभीषणः ।
असाध्ययोगो अखिलदोषघ्नः अपराकृतः ॥ ५
अप्रमेयोऽतिसुखदः अमराधिपपूजितः ।
अवलोकात् सर्वनाशः अश्वत्थामद्विरायुधः ॥ ६
अपराध सहिष्णुश्च अश्वत्थाम सुपूजितः ।
अनन्तपुण्यफलदो अतृप्तोऽतिबलोपिच ॥ ७
अवलोकात् सर्वबन्धः अक्षीणकरुणानिधिः ।
अविद्यामूलनाशश्च अक्षय्यफलदायकः ॥ ८
आनन्दपरिपूर्णश्च आयुष्कारक एवच ।
आश्रितेष्टार्थवरदः आधिव्याधिहरोपिच ॥ ९
आनन्दमय आनन्दकरो आयुध धारकः ।
आत्मचक्राधिकारी च आत्मस्तुत्य परायणः ॥ १०

आयुष्करो आनुपूर्व्यः आत्मायत्तजगत्त्रयः ।
आत्मनामजपप्रीतः आत्माधिकफलप्रदः ॥ ११
आदित्यसम्भवो आर्तिभञ्जनो आत्मरक्षकः ।
आपद्बान्धव आनन्दरूपो आयुःप्रदोपिच ॥ १२
आकर्णपूर्णचापश्च आत्मोद्दिष्टद्विजप्रदः ।
आनुकूल्यो आत्मरूप प्रतिमादानसुप्रियः ॥ १३
आत्मारामो आदिदेवो आपन्नार्तिविनाशनः ।
इन्दिरार्चितपादश्च इन्द्रभोगफलप्रदः ॥ १४
इन्द्रदेवस्वरूपश्च इष्टेष्टवरदायकः ।
इष्टापूर्तिप्रदो इन्दुमतीष्टवरदायकः ॥ १५
इन्दिरारमणः प्रीतः इन्द्रवंशनृपार्चितः ।
इहामुत्रेष्टफलदः इन्दिरारमणार्चितः ॥ १६
ईप्सितो ईश्वरप्रीतः ईषणात्रयवर्जितः ।
उमास्वरूप उद्बोध्यः उशनो उत्सवप्रियः ॥ १७
उमादेव्यार्चनप्रीतः उच्चस्थोच्चफलप्रदः ।
उरुप्रकाशो उच्चस्थ योगदः उरुपराक्रमः ॥ १८

ऊर्ध्वलोकादिसञ्चारी ऊर्ध्वलोकादिनायकः ।
ऊर्जस्वी ऊनपादश्च ऋकाराक्षरपूजितः ॥ १९
ऋषिप्रोक्त पुराणज्ञः ऋषिभिः परिपूजितः ।
ऋग्वेदवन्द्यो ऋभूषी ऋजुमार्गप्रवर्तकः ॥ २०
लुलितोद्धारको लूतभवपाशप्रभञ्जनः ।
लृकाररूपको लब्धधर्ममार्गप्रवर्तकः ॥ २१
एकाधिपत्यसाम्राज्यप्रदो एनौघनाशनः ।
एकपाद्येक एकोनविंशतिन्यासभुक्तिदः ॥ २२
एकोनविंशतिवर्षदृशो एगाङ्कपूजितः ।
ऐश्वर्यफलदो ऐन्द्र ऐरावतसुपूजितः ॥ २३
ओंकार जपसुप्रीतः ओंकार परिपूजितः ।
ओंकारबीजो औदार्यहस्तो औन्नत्यदायकः ॥ २४
औदार्यगुण औदार्य शीलो औषधकारकः ।
करपङ्कजसन्नद्धधनुश्च करुणानिधिः ॥ २५
कालः कठिनचित्तश्च कालमेघसमप्रभः ।
किरीटी कर्मकृत्कारयिता कालसहोदरः ॥ २६

कालाम्बरः काकवाहः कर्मठः काश्यपान्वयः ।
कालचक्रप्रभेदी च कालरूपी च कारणः ॥ २७
कारिमूर्तिः कालभर्ता किरीटमकुटोज्वलः ।
कार्यकारणकालज्ञः काञ्चनाभरथान्वितः ॥ २८
कालदंष्ट्रः क्रोधरूपः कराळी कृष्णकेतनः ।
कालात्मा कालकर्ता च कृतान्तः कृष्णगोप्रियः ॥
कालाग्निरुद्ररूपश्च काश्यपात्मजसम्भवः ।
कृष्णवर्णहयश्चैव कृष्णगोक्षीर सुप्रियः ॥ ३०
कृष्णगोघृत सुप्रीतः कृष्णगोदधिषुप्रियः ।
कृष्णगावैक चित्तश्च कृष्णगोदान सुप्रियः ॥ ३१
कृष्णगोदत्तहृदयः कृष्णगोरक्षणप्रियः ।
कृष्णगोग्रास चित्तस्य सर्वपीडानिवारकः ॥ ३२
कृष्णगोदान शान्तस्य सर्वशान्तफलप्रदः ।
कृष्णगोस्नान कामस्य गङ्गास्नानफलप्रदः ॥ ३३
कृष्णगोरक्षणस्याशु सर्वाभीष्टफलप्रदः ।
कृष्णगाव प्रियश्चैव कपिलापशुषु प्रियः ॥ ३४

कपिलाक्षीरपानस्य सोमपानफलप्रदः ।
कपिलादानसुप्रीतः कपिलाज्य हुतप्रियः ॥ ३५
कृष्णश्च कृत्तिकान्तस्थः कृष्णगोवत्ससुप्रियः ।
कृष्णमाल्याम्बरधरः कृष्णवर्णतनूरुहः ॥ ३६
कृष्णकेतुः कृशकृष्ण देहः कृष्णाम्बरप्रियः ।
क्रूरचेष्टः क्रूरभावः क्रूरदंष्ट्रः कुरूपि च ॥ ३७
कमलापति संसेव्यः कमलोद्भवपूजितः ।
कामितार्थप्रदः कामधेनु पूजन सुप्रियः ॥ ३८
कामधेनुसमाराध्यः कृपायुषविवर्धनः ।
कामधेन्वैकचित्तश्च कृपराज सुपूजितः ॥ ३९
कामदोग्धा च कुद्रश्च कुरुवंशसुपूजितः ।
कृष्णाङ्गमहिषीदोग्धा कृष्णेन कृतपूजितः ॥ ४०
कृष्णाङ्गमहिषीदानप्रियः कोणस्थ एवच ।
कृष्णाङ्गमहिषीदानलोलुपः कामपूजितः ॥ ४१
क्रूरावलोकनात्सर्वनाशःकृष्णाङ्गदप्रियः ।
खद्योतः खण्डनः खड्गधरः खेचरपूजितः ॥ ४२

खरांशुतनयश्चैव खगानां पतिवाहनः ।
गोसवासक्तहृदयः गोचरस्थान दोषहृत् ॥ ४३
गृहराज्यधिपश्चैव गृहराज महाबलः ।
गृध्रवाहो गृहपतिः गोचरो गानलोलुपः ॥ ४४
घोरघर्मो घनतमो घर्मीघनकृपान्वितः ।
घननीलाम्बरधरो ङादिवर्ण सुसंज्ञितः ॥ ४५
चक्रवर्तिसमाराध्यः चन्द्रमत्या समर्चितः ।
चन्द्रमत्यार्तिहारी च चराचर सुखप्रदः ॥ ४६
चतुर्भुजश्चापहस्तः चराचरहितप्रदः ।
छायापुत्रः छत्रधरः छायादेवीसुतस्तथा ॥ ४७
जयप्रदो जगन्नीलो जपतां सर्वसिद्धिदः ।
जपाविध्वस्तविमुखो जम्भारिपरिपूजितः ॥ ४८
जम्भारिवन्द्यो जयदो जगज्जनमनोहरः ।
जगत्त्रय प्रकुपितो जगत्त्राणपरायणः ॥ ४९
जयो जयप्रदश्चैव जगदानन्दकारकः ।
ज्योतिश्च ज्योतिषां श्रेष्ठो ज्योतिश्शास्त्रप्रवर्तकः ॥

झर्झरीकृत देहश्च झल्लरीवाद्य सुप्रियः ।
ज्ञानमूर्तिर्ज्ञानगम्यो ज्ञानी ज्ञानमहानिधिः ॥ ५१
ज्ञानप्रबोधकश्चैव ज्ञानदृष्ट्यावलोकितः ।
टङ्कितास्खिल लोकश्च टङ्कितैन स्तमोरविः ॥ ५२
टङ्कारकारकश्चैव टिंकृतोटाम्भदप्रियः ।
ठकारमय सर्वस्वः ठकारकृतपूजितः ॥ ५३
डक्कावाद्यप्रीतिकरः डमडुमरुकप्रियः ।
डम्बरप्रभवों डम्भः डक्कानाद प्रियङ्करः ॥ ५४
डाकिनी शाकिनी भूत सर्वोपद्रवकारकः ।
डाकिनीशाकिनी भूतसर्वोपद्रवनाशकः ॥ ५५
ढकाररूपो डाम्भीको णकार जपसुप्रियः ।
णकारमयमन्त्रार्थः णकारैक शिरोमणिः ॥ ५६
णकारवचनानन्दः णकार करुणामयः ।
णकारमय सर्वस्वः णकारैक परायणः ॥ ५७
तर्जनीधृतमुद्रश्च तपसां फलदायकः ।
त्रिविक्रम सुतश्चैव त्रयीमयवपुर्धरः ॥ ५८

तपस्वी तपसादग्धदेहः ताम्राधरस्तथा ।
त्रिकालवेदितव्यश्च त्रिकाल मतितोषितः ॥ ५९
तुलोच्चयः त्रासकरः तिलतैलप्रियस्तथा ।
तिलान्नसन्तुष्टमनाः तिलदानप्रियस्तथा ॥ ६०
तिलभक्ष्यप्रियश्चैव तिलचूर्णप्रियस्तथा ।
तिलखण्डप्रियश्चैव तिलापूपप्रियस्तथा ॥ ६१
तिलहोमप्रियश्चैव तापत्रयनिवारकः ।
तिलतर्पणसन्तुष्टः तिलतैलान्नतोषितः ॥ ६२
तिलैकदत्तहृदयः तेजस्वी तेजसान्निधिः ।
तेजसादित्यसङ्काशः तेजोमयवपुर्धरः ॥ ६३
तत्त्वज्ञः तत्त्वगस्तीव्रः तपोरूपः तपोमयः ।
तुष्टिदस्तुष्टिकृत्स्तीक्ष्णः त्रिमूर्तिः त्रिगुणात्मकः ॥
तिलदीपप्रियश्चैव तस्य पीडानिवारकः ।
तिलोत्तमा मेनकादि नर्तनप्रियएवच ॥ ६५
त्रिभागमष्टवर्गश्च स्थूलरोमा स्थिरस्तथा ।
स्थितः स्थायी स्थापकश्च स्थूलसूक्ष्म प्रदर्शकः ॥ ६६

दशरथार्चितपादश्च दशरथस्तोत्रतोषितः ।
दशरथप्रार्थनाकृत्त दुर्भिक्ष विनिवारकः ॥ ६७
दशरथप्रार्थनाकृत्त वरद्वयप्रदायकः ।
दशरथस्वात्मदर्शी च दशरथाभीष्टदायकः ॥ ६८
दोर्भिर्धनुर्धरश्चैव दीर्घश्मश्रुजटाधरः ।
दशरथस्तोत्रवरदः दशरथाभीप्सितप्रदः ॥ ६९
दशरथस्तोत्र संतुष्टः दशरथेन सुपूजितः।
द्वादशाष्टमजन्मस्थो देवपुङ्गवपूजितः ॥ ७०
देवदानवदर्पघ्नो दिनं प्रतिमुनिस्तुतः ।
द्वादशस्थो द्वादशात्मा सुतो द्वादशनामभृत् ॥ ७१
द्वितीयस्थो द्वादशार्कसूनुः दैवज्ञपूजितः ।
दैवज्ञ चित्तवासी च दमयन्त्यासुपूजितः ॥ ७२
द्वादशाब्दन्तु दुर्भिक्षकारी दुस्स्वप्ननाशनः ।
दुराराध्यो दुराधर्षः दमयन्तीवरप्रदः ॥ ७३
दुष्टदूरो दुराचारशमनो दोषवर्जितः ।
दुस्सहो दोषहंता च दुर्लभो दुर्गमस्तथा ॥ ७४

दुःखप्रदो दुःखहन्ता दीप्तरञ्जितदिङ्मुखः ।
दीप्यमानमुखांभोजः दमयन्त्याशिवप्रदः ॥ ७५
दुर्निरीक्ष्यो दृष्टमात्रदैत्यमण्डलनाशकः ।
द्विजदानैकनिरतो द्विजाराधनतत्परः ॥ ७६
द्विजसर्वार्तिहारी च द्विजराजसमर्चितः ।
द्विजदानैकचित्तश्च द्विजराजप्रियङ्करः ॥ ७७
द्विजो द्विजप्रियश्चैव द्विजराजेष्टदायकः ।
द्विजरूपो द्विजश्रेष्ठः दोषदुस्सहोऽपि च ॥ ७८
देवादिदेवो देवेशो देवराजसुपूजितः ।
देवराजेष्टवरदो देवराजप्रियङ्करः ॥ ७९
देवादिवन्दितो दिव्यतनुर्देवशिखामणिः ।
देवगानप्रियश्चैव देवदेशिकपुङ्गवः ॥ ८०
द्विजात्मजसमाराध्यः ध्येयो धर्मी धनुर्धरः ।
धनुष्मान् धनदाता च धर्मधर्मविवर्जितः ॥ ८१
धर्मरूपो धनुर्दिव्यो धर्मशास्त्रात्मचेतनः ।
धर्मराजप्रियकरो धर्मराजस्सुपूजितः ॥ ८२

धर्मराजेष्टवरदो धर्माभीष्टफलप्रदः ।
नित्यतृप्तस्वभावश्च नित्यकर्मरतस्तथा ॥ ८३
निजपीडार्तिहारी च निजभक्तेष्टदायकः ।
निर्मांसदेहो नीलश्च निजस्तोत्रबहुप्रियः ॥ ८४
नळस्तोत्रप्रियश्चैव नळराजसुपूजितः ।
नक्षत्रमण्डलगतो नमतां प्रियकारकः ॥ ८५
नित्यार्चितपदाम्भोजो निजाज्ञापरिपालकः ।
नवग्रहवरो नीलवपुर्नळकरार्चितः ॥ ८६
नळप्रियानन्दितश्च नळक्षेत्रनिवासकः ।
नळपाकप्रियश्चैव नळापद्भञ्जनक्षमः ॥ ८७
नळसर्वार्तिहारी च नळेनात्मारपूजितः ।
निपाटवी निवासश्च नळाभीष्टवरप्रदः ॥ ८८
नळतीर्थसकृत्स्नानसर्वपीडानिवारकः ।
नळेशदर्शनस्याशु साम्राज्यपदवीप्रदः ॥ ८९
नक्षत्रराश्यधिपश्च नीलध्वजविराजितः ।
नित्ययोगरतश्चैव नवरत्न विभूषितः ॥ ९०

नवधाभज्यदेहश्च नवीकृत जगत्त्रयः ।
नवग्रहाधिपश्चैव नवाक्षरजपप्रियः ॥ ९१
नवात्मा नवचक्रात्मा नवतत्त्वाधिपस्तथा ।
नवो द्रवप्रियश्चैव नवधान्यप्रियस्तथा ॥ ९२
निष्कण्टको निस्पृहश्च निरपेक्षो निरामयः ।
नागराजार्चितपदो नागराजप्रियंकरः ॥ ९३
नागराजेष्टवरदो नागाभरणभूषितः ।
नागेन्द्रगाननिरतः नानाभरणभूषितः ॥ ९४
नवमित्रस्वरूपश्च नानाश्चर्यविधायकः ।
नानाद्वीपाधिकर्ता च नानालिपिसमावृतः ॥ ९५
नानारूपजगत्स्रष्टा नानारूपजनाश्रयः ।
नानालोकाधिपश्चैव नानाभाषाप्रियस्तथा ॥ ९६
नानारूपाधिकारी च नवरत्नप्रियस्तथा ।
नानाविचित्रवेषाढ्यः नानाचित्रविधायकः ॥ ९७
नीलजीमूतसङ्काशो नीलमेघसमप्रभः ।
नीलाञ्जनचयप्रख्यः नीलवस्त्रधरप्रियः ॥ ९८

नीचभाषाप्रचारज्ञो नीचे स्वल्पफलप्रदः ।
नानागमविधानज्ञो नानानृपसमावृतः ॥ ९९
नानावर्णाकृतिश्चैव नानावर्णस्वरार्तवः ।
नागलोकान्तवासी च नक्षत्रत्रयसंयुतः ॥ १००
नभादिलोकसम्भूतो नामस्तोत्रबहुप्रियः ।
नामपारायणप्रीतो नामार्चनवरप्रदः ॥ १०१
नामस्तोत्रैकचित्तश्च नानारोगार्तिभञ्जनः ।
नवग्रहसमाराध्य नवग्रहभयापहः ॥ १०२
नवग्रह सुसम्पूज्यो नानावेदसुरक्षकः ।
नवग्रहाधिराजश्च नवग्रहजपप्रियः ॥ १०३
नवग्रहमयज्योतिः नवग्रहवरप्रदः ।
नवग्रहाणामधिपो नवग्रहसुपीडितः ॥ १०४
नवग्रहाधीश्वरश्च नवमाणिक्यशोभितः ।
परमात्मा परब्रह्मा परमैश्वर्यकारणः ॥ १०५
प्रपन्नभयहारी च प्रमत्तासुरशिक्षकः ।
ग्रासहस्तः पंगुपादो प्रकाशात्मा प्रतापवान् ॥१०६

पावनः परिशुद्धात्मा पुत्रपौत्रप्रवर्धनः ।
प्रसन्नात्मा सर्वसुखदः प्रसन्नेक्षण एव च ॥ १०७
प्राजापत्यः प्रियकरः प्रणतेप्सितराज्यदः ।
प्रजानां जीवहेतुश्च प्राणिनां परिपालकः ॥ १०८
प्राणरूपी प्राणधारी प्रजानां हितकारकः ।
प्राज्ञः प्रशान्तः प्रज्ञावान् प्रजारक्षणदीक्षितः ॥
प्रावृषेण्यः प्राणकारी प्रसन्नोत्सववन्दितः ।
प्रज्ञानिवासहेतुश्च पुरुषार्थैकसाधनः ॥ ११०
प्रजाकरः प्रानुकूल्यः पिङ्गलाक्षः प्रसन्नधीः ।
प्रपञ्चात्मा प्रसविता पुराणपुरुषोत्तमः ॥ १११
पुराणपुरुषश्चैव पुरुहूतः प्रपञ्चधृत् ।
प्रतिष्ठितः प्रीतिकरः प्रियकारी प्रयोजनः ॥ ११२
प्रीतिमान् प्रवरस्तुत्यः पुरुरवसमर्चितः ।
प्रपञ्चकारी पुण्यश्च पुरुहूतसमर्चितः ॥ ११३
पाण्डवादिसुसंसेव्यः प्रणवः पुरुषार्थदः ।
पयोदसमवर्णश्च पाण्डुपुत्रार्तिभञ्जनः ॥ ११४

पाण्डुपुत्रेष्टदाता च पाण्डवानां हितङ्करः ।
पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥ ११५
पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वारिष्टनिवारकः ।
पाण्डुपुत्राद्यर्चितश्च पूर्वजश्च प्रपञ्चभृत् ॥ ११६
परचक्रप्रभेदी च पाण्डवेषु वरप्रदः ।
परब्रह्मस्वरूपश्च पराज्ञापरिवर्जितः ॥ ११७
परात्परः पाशहन्ता परमाणुः प्रपञ्चकृत् ।
पातङ्गी पुरुषाकारः परशम्भुसमुद्भवः ॥ ११८
प्रसन्नात्सर्वसुखदः प्रपञ्चोद्भवसम्भवः ।
प्रसन्नःपरमोदारः पराहङ्कारभञ्जनः ॥ ११९
परः परमकारुण्यः परब्रह्ममयस्तथा ।
प्रपन्नभयहारी च प्रणतार्तिहरस्तथा ॥ १२०
प्रसादकृत् प्रपञ्चश्च पराशक्तिसमुद्भवः ।
प्रदानपावनश्चैव प्रशांतात्मा प्रभाकरः ॥ १२१
प्रपञ्चात्मा प्रपञ्चोपशमनः पृथिवीपतिः ।
परशुरामसमाराध्यः परशुरामवरप्रदः ॥ १२२

परशुरामचिरंजीविप्रदः परमपावनः ।
परमहंसस्वरूपश्च परमहंससमूपूजितः ॥ १२३
पञ्चनक्षत्राधिपश्च पञ्चनक्षत्रसेवितः ।
प्रपञ्चरक्षितश्चैव प्रपञ्चस्य भयङ्करः ॥ १२४
फलदानप्रियश्चैव फलहस्तः फलप्रदः ।
फलाभिषेकप्रियश्च फल्गुनस्य वरप्रदः ॥ १२५
फुटच्छमित पापौघः फल्गुनेन प्रपूजितः ।
फणिराजप्रियश्चैव फुल्लांबुजविलोचनः ॥ १२६
बलिप्रियो बली बभ्रुः ब्रह्मविष्ण्वीशशक्रेशकृत् ।
ब्रह्मविष्ण्वीशरूपश्च ब्रह्मशक्रादिदुर्लभः ॥ १२७
बासदष्ट्यां प्रमेयांगो बिभ्रत्कवचकुण्डलः ।
बहुश्रुतो बहुमतिः ब्रह्मण्यो ब्राह्मणप्रियः ॥ १२८
बलप्रमथनो ब्रह्मा बहुरूपो बहुप्रदः ।
बालार्कद्युतिमान्बालो बृहद्वक्षो बृहत्तनुः ॥ १२९
ब्रह्माण्डभेदकृच्चैव भक्तसर्वार्थसाधकः ।
भव्यो भोक्ता भीतिकृच्च भक्तानुग्रहकारकः ॥१३०

भीषणो भैक्षकारी च भूसुरादिसुपूजितः ।
भोगभाग्यप्रदश्चैव भस्मीकृतजगत्त्रयः ॥ १३१
भयानको भानुसूनुः भूतिभूषितविग्रहः ।
भास्वद्व्रतो भक्तिमतां सुलभो भ्रुकुटीमुखः ॥१३२
भवभूतगणैस्तुत्यो भूतसंघसमावृतः ।
भ्राजिष्णुर्भगवान् भीमो भक्ताभीष्टवरप्रदः ॥
भवभक्तैकचित्तश्च भक्तिगीतस्तवोन्मुखः ।
भूतसंतोषकारी च भक्तानां चित्तशोधकः ॥ १३४
भक्तिगम्यो भयहरो भावज्ञो भक्तसुप्रियः ।
भूतिदो भूतिकृत् भोज्यो भूतात्मा भुवनेश्वरः ॥
मन्दो मन्दगतिश्चैव मासमेव प्रपूजितः ।
मुचुकुन्द समाराध्यो मुचुकुन्दवरप्रदः ॥ १३६
मुचुकुन्दार्चितपदो महारूपो महायशाः ।
महाभोगी महायोगी महाकायो महाप्रभुः ॥ १३७
महेशो महदैश्वर्यो मन्दारकुसुमप्रियः ।
महाऋतुर्महामानी महाधीरो महाजयः ॥ १३८

महावीरो महाशान्तो मण्डलस्थो महाद्युतिः ।
महासुतो महोदारो महनीयो महोदयः ॥ १३९
मैथिलीवरदायी च मार्तण्डस्य द्वितीयजः ।
मैथिलीप्रार्थनाकृन्न दशकण्ठशिरापहृत् ॥ १४०
मरामरहराराध्यो महेन्द्रादिसुरार्चितः ।
महारथो महावेगो मणिरत्नविभूषितः ॥ १४१
मेषनीचो महाघोरो महासौरिर्मनुप्रियः ।
महादीर्घो महाग्रासो महदैश्वर्यदायकः ॥ १४२
महाशुष्को महारौद्रो मुक्तिमार्गप्रदर्शकः ।
मकरकुम्भाधिपश्चैव मृकण्डुतनयार्चितः ॥ १४३
मन्त्राधिष्ठानरूपश्च मल्लिकाकुसुमप्रियः ।
महामन्त्रस्वरूपश्च महायन्त्रस्थितस्तथा ॥ १४४
महाप्रकाशदिव्यात्मा महादेवप्रियस्तथा ।
महाबलिसमाराध्यो महर्षिगणपूजितः ॥ १४५
मन्दचारि महामायी माषदानप्रियस्तथा ।
माषोदनप्रीतिचित्तो महाशक्तिर्महागुणः ॥ १४६

यशस्करो योगदाता यज्ञाङ्गोऽपि युगन्धरः ।
योगी योग्यश्च याम्यश्च योगरूपी युगाधिपः ॥१४७
यज्ञभृद्यजमानश्च योगो योगविदां वरः ।
यक्षराक्षसवेताळ कूष्माण्डादिप्रपूजितः ॥ १४८
यमप्रत्यधिदेवश्च युगपत् भोगदायकः ।
योगप्रियो योगयुक्तो यज्ञरूपो युगान्तकृत् ॥१४९
रघुवंशसमाराध्यो रौद्रो रौद्राकृतिस्तथा ।
रघुनन्दनसञ्जापो रघुप्रोक्तजपप्रियः ॥ १५०
रौद्ररूपी रथारूढो राघवेष्टवरप्रदः ।
रथी रौद्राधिकारी च राघवेण सपूजितः ॥ १५१
रोषात्सर्वस्वहारी च राघवेण सुपूजितः ।
राशिद्वयाधिपश्चैव रघुभिः परिपूजितः ॥ १५२
राज्यभूपाकरश्चैव राजराजेन्द्रवन्दितः ।
रत्नकेयूरभूषाढ्यो रमानन्दनवन्दितः ॥ १५३
रघुपौरुषसन्तुष्टो रघुस्तोत्रबहुप्रियः ।
रघुवंशनृपैः पूज्यो रणन्मञ्जीरनूपुरः ॥ १५४

रविनन्दनराजेन्द्रो रघुवंशप्रियस्तथा ।
लोहजप्रतिमादानप्रियो लावण्यविग्रहः ॥ १५५
लोकचूडामणिश्चैव लक्ष्मीवाणीस्तुतिप्रियः ।
लोकरक्षो लोकशिक्षो लोकलोचनरञ्जितः ॥ १५६
लोकाध्यक्षः लोकवन्द्यो लक्ष्मणाग्रजपूजितः ।
वेदवेद्यो वज्रदेहो वज्रांकुशधरस्तथा ॥ १५७
विश्ववन्द्यो विरूपाक्षो विमलाङ्गविराजितः ।
विश्वस्थो वायसारूढो विशेषसुखकारकः ॥ १५८
विश्वरूपी विश्वगोप्ता विभावसुसुतस्तथा ।
विप्रप्रियो विप्ररूपो विप्राराधनतत्परः ॥ १५९
विशालनेत्रो विशिखो विप्रदानबहुप्रियः ।
विश्वसृष्टिसमुद्भूतो वैश्वानरसमद्युतिः ॥ १६०
विष्णुर्विरिंचिर्विश्वेशो विश्वकर्ता विशाम्पतिः ।
विराडाधारचक्रस्थो विश्वमुन्विश्वभावनः ॥ १६१
विश्वव्यापारहेतुश्च वक्रक्रूरविवर्जितः ।
विश्वोद्भवो विश्वकर्मा विश्वसृष्टिविधायकः ॥ १६२

विश्वमूलनिवासी च विश्वचित्रविधायकः ।
विश्वाधारविलासी च व्यासेन कृतपूजितः ॥
विभीषणेष्टवरदो वाञ्छितार्थप्रदायकः ।
विभीषणसमाराध्यो विशेषसुखदायकः ॥ १६४
विषमव्ययाष्टजन्मस्थोऽप्येकादशफलप्रदः ।
वासवात्मजसुप्रीतो वसुदो वासवार्चितः ॥ १६५
विश्वत्राणैकनिरतो वाङ्मनोतीतविग्रहः ।
विराण्मन्दिरमूलस्थो वल्लीमुखसुखप्रदः ॥ १६६
विपाशो विगतातङ्को विकल्पपरिवर्जितः ।
वरिष्ठो वरदो वन्द्यो विचित्राङ्गो विरोचनः ॥
शुष्कोदरः शुक्लवपुः शान्तरूपी शनैश्चरः ।
शूली शरण्यः शान्तश्च शिवायाप्रियङ्करः ॥१६८
शिवभक्तिमतां श्रेष्ठः शूलपाणिरशुचिप्रियः ।
श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञः श्रुतिजालप्रबोधकः ॥ १६९
श्रुतिपारगसम्पूज्यः श्रुतिश्रवणलोलुपः ।
श्रुत्यन्तर्गतमर्मज्ञः श्रुत्येष्टवरदायकः ॥ १७०

श्रुतिरूपः श्रुतिप्रीतः श्रुतीप्सितफलप्रदः ।
श्रुचिश्रुतःशान्तमूर्तिः श्रुतिःश्रवणकीर्तनः ॥ १७१
शमीमूलनिवासी च शमीकृतफलप्रदः ।
शमीकृतमहाघोरः शरणागतवत्सलः ॥ १७२
शमीतरुस्वरूपश्च शिवमन्त्रज्ञमुक्तिदः ।
शिवागमैकनिलयः शिवमन्त्रजपप्रियः ॥ १७३
शमीपत्रप्रियश्चैव शमीपर्णसमर्चितः ।
शतोपनिषदस्तुत्यो शान्त्यादिगुणभूषितः ॥ १७४
शान्त्यादिषड्गुणोपेतः शङ्खवाद्यप्रियस्तथा ।
श्यामरक्तसितज्योतिः शुद्धपञ्चाक्षरप्रियः ॥ १७५
श्रीहालास्यक्षेत्रवासी श्रीमान् शक्तिधरस्तथा ।
षोडशद्वयसम्पूर्णलक्षणः षण्मुखप्रियः ॥ १७६
षड्गुणैश्वर्यसंयुक्तः षडङ्गावरणोज्वलः ।
षडक्षरस्वरूपश्च षट्चक्रोपरिसंस्थितः ॥ १७७
षोडशीषोडशान्तश्च षट्लक्ष्यव्यक्तमूर्तिमान् ।
षड्भावरहितश्चैव षडङ्गश्रुतिपारगः ॥ १७८

षट्कोणमध्यनिलयः षट्छास्त्रस्मृतिपारगः ।
स्वर्णेन्द्रनीलमकुटः सर्वाभीष्टप्रदायकः ॥ १७९
सर्वात्मा सर्वदोषघ्नः सर्वगर्वप्रभञ्जनः ।
समस्तलोकाभयदः सर्वदोषाङ्गनाशकः ॥ १८०
समस्तभक्तसुखदः सर्वदोषनिवर्तकः ।
सर्वनाशक्षमस्सौम्यः सर्वक्लेशनिवारकः ॥ १८१
सर्वात्मा सर्वदा तुष्टः सर्वपीडानिवारकः ।
सर्वरूपी सर्वकर्मा सर्वज्ञः सर्वकारकः ॥ १८२
सुकृती सुलभश्चैव सर्वाभीष्टफलप्रदः ।
सूर्यात्मजस्सदा तुष्टः सूर्यवंशप्रदीपनः ॥ १८३
सप्तद्वीपाधिपश्चैव सुरासुरभयङ्करः ।
सर्वसंक्षोभहारी च सर्वलोकहितं करः ॥ १८४
सर्वौदार्यस्वभावश्च सन्तोषात्सकलेष्टदः ।
समस्तऋषिभिस्तुत्यः समस्तगणपावृतः ॥ १८५
समस्तगणसंसेव्यः सर्वारिष्टविनाशनः ।
सर्वसौख्यप्रदाता च सर्वव्याकुलनाशनः ॥ १८६

सर्वसंक्षोभहारी च सर्वारिष्टफलप्रदः ।
सर्वव्याधिप्रशमनः सर्वमृत्युनिवारकः ॥ १८७
सर्वानुकूलकारी च सौन्दर्यमृदुभाषितः ।
सौराष्ट्रदेशोद्भवश्च स्वक्षेत्रेष्टवरप्रदः ॥ १८८
सोमयाजि समाराध्यः सीताभीष्टवरप्रदः ।
सुखाननोपविष्टश्च सद्यःपीडानिवारकः ॥ १८९
सौदामिनीसन्निभश्च सर्वानुल्लङ्घ्य शासनः ।
सूर्यमण्डलसञ्चारी संहाराख्यनियोजितः ॥ १९०
सर्वलोकक्षयकरः सर्वारिष्टविधायकः ।
सर्वव्याकुलकारी च सहस्रजपसुप्रियः ॥ १९१
सुखासनोपविष्टश्च संहाराख्यप्रदर्शितः ।
सर्वालङ्कारसंयुक्त कृष्णिगोदानसुप्रियः ॥ १९२
सुप्रसन्नस्सुरश्रेष्ठः सुघोषः सुखदस्सुहृत् ।
सिद्धार्थः सिद्धिसङ्कल्पः सर्वज्ञस्सर्वदस्सुखी ॥
सुग्रीवस्सुधृतिस्सारस्सुकुमारस्सुलोचनः ।
सुव्यक्तस्सच्चिदानन्दः सुवीरस्सुजनाश्रयः ॥ १९४

हरिश्चन्द्रसमाराध्यो हेयोपादेयवर्जितः ।
हरिश्चन्द्रेष्टवरदो हंसमन्त्रादि संस्तुतः ॥ १९५
हंसवाहसमाराध्यो हंसवाहवरप्रदः ।
हृद्यो हृष्टो हरिसखो हंसो हंसगतिर्हविः ॥ १९६
हिरण्यवर्णो हितकृद्धर्षदो हेमभूषणः ।
हविर्होता हंसगतिर्हंसमन्त्रादिसंस्तुतः ॥ १९७
हनूमदर्चितपदो हलधृत् पूजितस्सदा ।
क्षेमदः क्षेमकृत्क्षेम्यः क्षेत्रज्ञः क्षामवर्जितः ॥१९८
क्षुद्रघ्नः क्षान्तिदः क्षेमः क्षितिभूषः क्षमाश्रयः ।
क्षमाधरः क्षयद्वारो नाम्नामष्टसहस्रकम् ॥ १९९
वाक्येनैकेन वक्ष्यामि वाञ्छितार्थं प्रयच्छति ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नियमेन जपेत्सुधीः ॥ २००

शनैश्चर सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

## ॥ गणेशाक्षरमालिकास्तोत्रम् ॥

सिद्धिविनायक सिद्धिविनायक
सिद्धिविनायक पालय मां शुभ ॥

अगजाप्रियसुत वारणपतिमुख
षण्मुखसोदर भुवनपते शुभ सि ··· ॥ १

आगमशतनुत मारितदितिसुत
मारारिप्रिय मन्दगते शुभ सि ··· ॥ २

इज्याध्ययन मुखाखिलसत्कृति-
परिशुद्धान्तःकरणगते शुभ सि ··· ॥ ३

ईर्ष्यारोषकषायितमानस
दूर्जनदूरपदाम्बुरुह शुभ सि ··· ॥ ४

उत्तमतर सत्फलदानोद्यत
वलरिपुपूजित शूलिसुत शुभ सि ··· ॥ ५

ऊहापोहविशारदसंयमि-
वर्गकृताभय हुंडिविभो शुभ सि ... ॥ ६
ऋद्धिसुखाभयविश्राणनजनि-
ताकुलकीर्तिचयैकनिधे शुभ सि ... ॥ ७
ऋ(ॠ)क्षाक्षरतति भर्त्सितदुर्गत-
वित्तविनाशन विघ्नपते शुभ सि ... ॥ ८
लुप्तजगद्भय दिव्यगदायुध
पोषितदीनजनामितभ शुभ सि ... ॥ ९
ॡतातन्तु सरूपजगच्चय
निर्मितिदक्ष दृगन्तविभो शुभ सि ... ॥ १०
एणाङ्कार्धविभूषितमस्तक
लंबोदरगज दैत्यरिपो शुभ सि ... ॥ ११
ऐश्वर्याष्टकनियत निकेतन
पुंड्रेक्षूज्वल दिव्यकर शुभ सि ... ॥ १२
ओतं प्रोतमिदं हि जगत्त्वयि
सूत्र्यहिवत्परिपूर्णसुखे शुभ सि ... ॥ १३

औदास्यम्मयि विघ्नतमःकुल-
मार्ताण्डप्रभमारचय शुभ सि ... ॥ १४
अंघ्रियुगे तव सन्ततसद्गति-
मातनु विधत्स्व गणेश मम शुभ सि ... ॥१५
आश्वस्तनगृह दारसुद्भव-
बन्धं विगळय मे त्वरया शुभ सि ... ॥ १६
कमनीयामितशोणिमदीधिति
मन्ध्याभीकृतदिग्वलय शुभ सि ... ॥ १७
खिंडितभण्ड सहोदरनिर्मित
विघ्नशिलामल शीलगुरो शुभ सि ... ॥ १८
गन्धर्वामरकिन्नरनरगण-
पूजितसज्जन दिव्यनिधे शुभ सि ... ॥ १९
घुमघुमिताखिलविष्टपदिव्यम-
दस्रुतिराजितगण्डयुग शुभ सि ... ॥ २०
जरतत्वात्मिक वेददळाम्बुज
मध्यगतरुणारुणभतनो शुभ सि ... ॥ २१

चञ्चलघोणसमुद्भूतपीतो-
ज्झितजलपूरित वारिनिधे शुभ सि ... ॥२२
छायासहचरकोटिसुभास्वर
निखिलगुणाकर सन्मतिद शुभ सि ... ॥२३
जम्भारिप्रमुखामरपुष्कर
दिवसकरांकुशकरवरद शुभ सि ... ॥ २४
झंझानिलमद दूरीकृतचण-
कर्णानिलधूताभ्रचय शुभ सि ... ॥ २५
ज्ञप्तिसदानन्दात्मक निजवर-
रदभान्यत्कृत शीतकर शुभ सि ... ॥ २६
टंकायुधवर मस्तकखण्डन-
यत्नविचित्रित भीतिसुर शुभ सि ... ॥ २७
ठान्ताब्जालय वदनालोका-
विस्तरकामेश्यादयित शुभ सि ... ॥ २८
डोळायितरविशीतांशुमण्डल
ताळातोषित सांध्यनट शुभ सि ... ॥ २९

ढक्कावादन तुष्टागमगण-
बृंहित शिक्षितलोकतते शुभ सि ... ॥ ३०
णांततदर्थपदार्थमहार्थद
पाल्य मां करुणालय भो शुभ सि ... ॥३१
तूलोपम विभ्रामित भूधर
निश्वासानिल लोकपते शुभ सि ... ॥ ३२
थार्णवजलतति फूत्कृतिविशदित
मणिवरभास्वरिताण्डचय शुभ सि ... ॥ ३३
दरवर्णात्ममनूत्तमशीलिवि-
तीर्णदुरापपुमर्थतते शुभ सि ... ॥ ३४
धर्मैकप्रिय धार्मिकतारक
मोदकभक्षण नित्यरत शुभ सि ... ॥ ३५
नानालोक निवासि मनोरथ
लतिकामाधव दृक्प्रसर शुभ सि ... ॥ ३६
परमाश्चर्यानुपममनोहर
विहरणपोषित लोकतते शुभ सि ... ॥ ३७

फालविलोचन फणिवरभूषण
फलतितर्पितकामिचय शुभ सि ... ॥ ३८
बालेन्दूज्वल फाललसच्छुचि
तिर्यक्पुण्ड्रावलिलक्षित शुभ सि ... ॥ ३९
भगणाभामित मणिवरभूषित
भस्मोद्धूलित चारुतनो शुभ सि ... ॥ ४०
मूषिकवाहन मुनिजनपोषग
मूर्तामूर्तोपाङ्गगत शुभ सि ... ॥ ४१
यमुनवारि विहारि समर्चित
यातायात क्लेशहर शुभ सि ... ॥ ४२
रतिपतिपूजित लावण्याकर
राकेन्दूज्वलनखराळे शुभ सि ... ॥ ४३
लवणरसानन्तरजलनिधिवर
सुमणिद्वीपान्तरसदन शुभ सि ... ॥ ४४
वाराणस्यावासकुतूहल
चिंतामणिसाक्ष्याद्यभिध शुभ सि ... ॥ ४५

शङ्करतोषित दमयन्त्यर्चित
राघवपूजित रतिवरद शुभ सि ... ॥ ४६
षड्गुणरत्नाकर लम्बोदर
वीजापूर प्रियसुमुख शुभ सि ... ॥ ४७
सर्वकृतिप्रथमार्चित गौतम-
पत्नीसेवित यमिकुलप शुभ सि ... ॥ ४८
हेरम्बाश्रितपालन चामर-
कर्णसुजम्बूफलभक्ष शुभ सि ... ॥ ४९
लक्ष्मीपतिमहिताकुलविक्रम
रोहिततातात्रिखिलवरद शुभ सि ... ॥ ५०
क्षेमं कुरु जगतामखिलार्थद-
वेङ्कटसुब्रह्मण्यनुत शुभ सि ... ॥ ५१
इत्थमियं पणवर्णमणिस्रक्
सिद्धिगणाधिप पदकमले शुभ सि ... ॥ ५२
निहिता येन नया स्तोष्यन्त्या-
प्यन्त्यखिलार्थाः स्वरयाते शुभ सि ...॥ ५३

गणेशाक्षरमालिकास्तोत्रं समाप्तम् ॥

## ॥ सुब्रह्मण्याक्षरमालिकास्तोत्रम् ॥

शरवणभव गुह शरवणभव गुह
शरवणभव गुह पाहि गुरो गुह ॥
अखिलजगज्जनि पालन निलयन
कारण सत्सुख विद्धन भो गुह (शर) ॥ १
आगम निगदित मङ्गळ गुणगण
आदिपुरुषपुरुहूत सुपूजित (शर) २
इभवदनानुज शुभ समुदययुत
विभवकरम्बित विभुपद जृम्भित (शर) ३
ईतिभयापह नीतिनयावह
गीतिकलाखिलरीतिविशारद (शर) ४
उपपतिरिव कृतवल्लीसङ्गम-
कुपित वनेचरपतिहृदयङ्गम (शर) ५
ऊर्जितशासनमार्जितभूषण
स्फूर्जथुघोषण धूर्जटितोषण (शर) ६

ऋषिगणविगणितचरणकमलयुत
ऋजुसरणि चरित महद्वनमहित (शर) ७
ॠकाराक्षररूप पुरातन
राकाचन्द्र निकाश षडानन (शर) ८
ऌकाररूपोपकारसुनिरत
विकाररहितापकारसुविरत (शर) ९
ॡकारकृति शोकापोहन
केकारवयुत केकि विनोदन (शर) १०
एडकवाहन मूढ विमोहन
ऊढसमभुवन सोढ सदकरण (शर) ११
ऐलबिलादिदिगीशबलावृत
कैलासाचललीलालालस (शर) १२
ओजोरेजित तेजोराजित
आजिविराजदरात्यपराजित (शर) १३
औपनिषदपरमात्मपदोदित
औपाधिकविग्रहतामुपगत (शर) १४

अंहोनाशन रंहोगाहन
ब्रह्मोद्बोधन सिद्धोन्मेषण (शर) १५
अस्तविशस्त समस्त महासुर
हस्त सतत धृत शक्तिभृतामर (शर) १६
करुणाविग्रह कलितानुग्रह
कटुमतिदुर्ग्रह पटुयतिसुग्रह (शर) १७
खण्डितचण्ड महासुर मण्डल-
मण्डित निबिड श्यामळ कुन्तल (शर) १८
गङ्गासम्भव गिरिशतनूभव
रङ्गपुरोभव तुङ्गकुचाधव (शर) १९
घनवाहनमुख सुरवरवन्दित
घननादोदित शिखिनटनन्दित (शर) २०
ङ्वमानधनुर्मौर्विरवरत
पवमानघृत व्यजनकृति मुदित (शर) २१
चरणायुध धर करुणा वृतिहर
तरुणा कृतिवर करुणासागर (शर) २२

छेदित तारक भेदित पातक
खेदित घातक वाञ्छित दायक (शर) २३
जलजनिभनयन खलमनुज मथन
बलिदनुज मदन कलिकलुष शमन (शर) २४
झषकेतन सम वृषकेतनरम
मिषचेतनयम वृषकारिसुगम (शर) २५
ज्ञातागमचय धूताघनिचय
वीतषडरिरय गीतगुणोदय (शर) २६
टङ्कारागत कङ्कात्ताहित
झङ्काराढ्यालङ्कारावृत (शर) २७
ठाकृति राजित हाटक कुण्डल
स्वाकृतिरेजित घोटक मण्डल (शर) २८
डिम्भाकृतियुत रम्भानटरत
जम्भारिविनुत कुम्भोद्भवनुत (शर) २९
ढक्कारवकृत धिक्काराहित
दिक्कालामित हिक्कादिरहित (शर) ३०

णकारतरुसुम निकाररतिदम
णकारयुतमनुजपविहितागम (शर) ३१
तापत्रयहर कालत्रयचर
लोकत्रयधर वर्गत्रयकर (शर) ३२
स्थिरपददायक सुरवरनायक
निरसितसायक निरुपमगायक (शर) ३३
दान्तदयापर कान्तकळेबर
भ्रान्तं मां तर शान्तहृदयवर (शर) ३४
धीरोदात्त गुणोत्तर जित्वर
धीरोपासित वित्तमहत्तर (शर) ३५
नववीराहित सवयो विहसित
भवरोगावृतमनुजजिहासित (शर) ३६
पुष्करमालाभासितविग्रह
पुण्यपरायण विहितपरिग्रह (शर) ३७
फाललसन्मृगमदतिलकोज्वल
कलिमलतूल सुवातूलातुल (शर) ३८

वन्दीकृतसुरवृन्दानन्दन
वन्दारु मनुज मन्दारद्रुम (शर) ३९
भवतागमितः कारागारं
प्रणवाविदितश्चतुरास्योरम् (शर) ४०
महनीय महावाक्योद्बोधित
कमनीय महामकुटोद्भूषित (शर) ४१
योगिहृदय सरसीरुहभास्वर
योगाधीश्वर भोगविकस्वर (शर) ४२
रक्षोशिक्षणकृत्य विचक्षण
रक्षणदक्ष कटाक्ष निरीक्षण (शर) ४३
लोलदुकूलाञ्चलपादाञ्चल
बाल कुतूहल लीलापेशल (शर) ४४
वलवैरिसुताचरितापहसित
लवलीतिमता भवतो वनिता (शर) ४५
शूलायुधधर कालायुतहर
मालायुतभर हेलायुतकर (शर) ४६

षट्कोणस्थित षट्तारकसुत
षड्भावरहित षड्ऊर्मिघातक (शर) ४७

सुब्रह्मण्योमिति निगमान्तो
वदति भवन्तं प्रणवपदार्थम् (शर) ४८

हारावळियुतकाराहृतसुर
धारातहय नियुत नियुतरथ (शर) ४९

लळितकरकमल लुळितवरवलय
दळितासुरचय मिळितामरचय (शर) ५०

क्षणभंगुरजगदुपपादनचण
वेदविनिश्चित तत्व जनावन (शर) ५१

नीलकण्ठकृत वर्णमालिका
प्रीतये भवतु पार्वतीभुवः ॥

सुब्रह्मण्याक्षरमालिकास्तोत्रं समाप्तम् ॥

———

## ॥ परमशिवाक्षरमालिकास्तोत्रम् ॥

साम्बसदाशिव साम्बसदाशिव
साम्बसदाशिव साम्बशिव हर ॥

अद्भुतविग्रह अमराधीश्वर
अगणित गुणगण अमृतशिव हर सा ... ॥

आनन्दामृत आश्रितरक्षक
आत्मानन्द महेशशिव हर सा ... ॥ २

इन्दुकलाधर इन्द्रादिप्रिय
सुन्दररूप सुरेशशिव हर सा ... ॥ ३

ईश सुरेश महेश जनप्रिय
केशवसेवितकीर्तिशिव हर सा ... ॥ ४

उरगादिप्रिय भूषणशङ्कर
नरकविनाश नटेशशिव हर सा ... ॥ ५

ऊर्जितदानवनाश परात्पर
आर्जित पापविनाश शिव हर सा ... ॥ ६

ऋग्वेदश्रुति मौळि विभूषण
रविचन्द्राग्नित्रिणेत्र शिव हर सा ... ॥ ७

ऋषनामादि प्रपञ्च विलक्षण
तापनिवारण तत्वशिव हर सा ... ॥ ८
लिंगस्वरूप सभेश बुधप्रिये
मङ्गळमूर्ति महेशशिव हर सा ... ॥ ९
लूताधीश्वर रूपप्रियशिव
वेदान्तप्रिय वेद्यशिव हर सा ... ॥ १०
एकानेक सर्वेशजनप्रिय
भोगादिप्रिय पूर्णशिव हर सा ... ॥ ११
ऐश्वर्यार्चित चिन्मय चिद्घन
सच्चिदानन्द महेशशिव हर सा ... ॥ १२
ओंकाराधिप उरग विभूषण
ह्रींकारप्रिय ईशशिव हर सा ... ॥ १३
औरस लालित अन्तकनाशन
गौरीश सहित गिरीश शिव हर सा ... ॥
अम्बरवास चिदम्बर नायक
तुम्बुरु नारद सेव्यशिव हर सा ... ॥ १५

आहारप्रिय आदिगिरीश्वर
भोगादिप्रिय पूर्णशिव हर सा ... ॥ १६
कमलासनवर कैलासाधिप
करुणासागर शान्तशिव हर सा ... ॥ १७
खड्गशूलमृगटङ्कधनुर्धर
विक्रमरूप विशेषशिव हर सा ... ॥ १८
गङ्गागिरिजावल्लभगुणहित
शङ्कर सर्वजनेश शिव हर सा ... ॥ १९
घातकभञ्जन पातकनाशन
बोधस्वरूप पूर्णशिव हर सा ... ॥ २०
ङान्तस्वरूपानन्दवनाश्रय
वेदवेदान्त स्वरूपशिव हर सा ... ॥ २१
चण्डविनाशन सकलजनप्रिय
मण्डलाधीश महेशशिव हर सा ... ॥ २२
छत्रकिरीटसुकुण्डलादिप्रिय
पुत्रप्रिय भुवनेशशिव हर सा ... ॥ २३

जन्मजरामरणादिविनाशन
कल्मषविरहितकाशशिव हर सा ... ॥ २४
झङ्काराश्रित भृङ्गिरिटीश्वर
ओंकारेश विश्वेश शिव हर सा ... ॥ २५
ज्ञानाज्ञानविनाशक निर्मल
दीनजनप्रिय दीप्तशिव हर सा ... ॥ २६
टङ्कार्यावृत धारणसत्वर
किङ्करसेव्य किरीटशिव हर सा ... ॥ २७
ठङ्कस्वरूप सहस्रकरोत्तम
वागीश्वर वरदेव शिव हर सा ... ॥ २८
डम्भविनाशन दाडिमभूषण
अम्बरवास चिदेकशिव हर सा ... ॥ २९
ढंढं डमरुक धरणीनिश्चल
दुण्डिविनायक सेव्यशिव हर सा ... ॥ ३०
नळिनविलोचन नटनमहोहर
अळिकुलभूषण अमृतशिव हर सा ... ॥

तत्त्वमस्यादि वाक्यार्थस्वरूप
नित्यसुरूप निजेशशिव हर सा ... ॥ ३२
स्थावरजङ्गम भुवन विलक्षण
व्यापकवरमुनिसेव्यशिव हर सा ... ३३
दन्तिविनाशन नळिनमनोहर
चन्दनलेपन चरणशिव हर सा ... ॥ ३४
धरणीधरधर धवळ विभासित
दानाधिपसख वरदशिव हर सा ... ॥ ३५
नानामणिगणभूषण निर्गुण
नतजनपोषण नाथशिव हर सा ... ॥ ३६
पार्वतिनायक पन्नगभूषण
परमानन्द परेशशिव हर सा ... ॥ ३७
फालविलोचन भानुकोटिप्रभ
हालाहलधर अमृतशिव हर सा ... ॥ ३८
बन्धविमोचन धृतचर्माम्बर
स्कन्दादिप्रिय कनकशिव हर सा ... ॥ ३९

भस्मविलेपन भवभयभञ्जन
विस्मयरूप विशेषशिव हर सा ... ॥ ४०
मन्मथनाशन मधुरानाथक
चर्मविभूषण साक्षिशिव हर सा ... ॥ ४१
यतिजनहृदय निवासित ईश्वर
विधि विष्ण्वादि सुरेशशिव हर सा ... ॥
रामेश्वर रमणीय मुखाम्बुज
सोमेश्वर सुकृतेशशिव हर सा ... ॥ ४३
लङ्काधीश्वर सेवित सुखकर
लावण्यामृत लसितशिव हर सा ... ॥ ४४
वनजाननवर वासुकि भूषण
वनमालादि विभूषशिव हर सा ... ॥ ४५
शान्तिस्वरूपातिप्रियसुन्दर
कान्तिमतिप्रिय काशि शिव हर ... ॥ ४६
षण्मुखजनक सुरेन्द्र मुनिप्रिय
षाड्गुण्यादि समेतशिव हर सा ... ॥ ४७

संसारार्णवनाशन शाश्वत
साधुहृदिप्रियवास शिव हर सा ... ॥ ४८
हरपुरुषोत्तम आनन्दामृत
मुरारिपुसेव्य मृडेशशिव हर सा ... ॥ ४९
च्यालितभक्तजनेश निजेश्वर
कालिनटेश्वर कामशिव हर सा ... ॥ ५०
क्षररूपादि प्रियान्वित सुन्दर
साक्षिजगत्त्रय स्वामिशिव हर सा ... ॥ ५१
शङ्करनारायण तीर्थप्रिय
शिवगङ्गातीर सुवासशिव हर सा ... ॥

परमशिवाक्षरमालिकास्तोत्रं समाप्तम् ॥

## ॥ ओं श्रीसुब्रह्मण्यप्रसन्नमालामन्त्राः ॥

॥ निर्गुण अर्पणम् ॥

सर्वं ओं तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ ओं तत्सत् ब्रह्मणे नमः ॥ ओं श्रीगुरवे नमः ॥ ओं शान्तिः । ओं शान्तिः । ओं शान्तिः ॥

ध्यानम्—

महाम्भोधितीरे महापापचोरे
मुनीन्द्रानुकूले सुगन्धाख्यशैले ।
गुहायां वसन्तं स्वभासा लसन्तं
जनार्तिं हरन्तं श्रयामो गुहं तम् ॥

ओं नमो भगवते रुद्रकुमाराय षडाननाय शक्तिहस्ताय अष्टादशलोचनाय शिखामणिभिरलंकृताय क्रौञ्चगिरिमर्दनाय तारिकासुरमारणाय ओं श्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं हुं फट् स्वाहा ।

ओं नमो भगवते गौरीसुताय अघोररूपाय उग्ररूपाय आकाशस्वरूपाय शरवणभवाय शक्तिशूलगदापरशुहस्ताय पाशाङ्कुशतोमरबाणमुसलधराय अनेकशस्त्रालंकृताय ओं श्रीसुब्रह्मण्याय हारनूपुरकेयूर कनककुण्डलमेखलाद्यनेक सर्वाभरणालंकृताय सदानन्दशरीराय सकलरुद्रगणसेविताय सर्वलोकवशङ्कराय सकलभूतगणसेविताय ओं रं नं ळं स्कन्दरूपाय सकलमन्त्रगणसेविताय गङ्गापुत्राय शाकिनी-डाकिनी-भूत-प्रेत-पिशाच—गणसेविताय असुरकुलनाशनाय ओं श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं हुं फट् स्वाहा। २

ओं नमो भगवते तेजोरूपाय भूतग्रह प्रेतग्रह पिशाचग्रह यक्षग्रह राक्षसग्रह भेताळग्रह भैरवग्रह असुरग्रह सर्वग्रहान् आकर्षय आकर्षय बन्धय बन्धय सन्त्रासय सन्त्रासय आर्भाटय आर्भाटय छेदय छेदय शोषय शोषय बलेन प्रहरय प्रहरय सर्वग्रहान् मारय मारय ओं श्रीं क्लीं ह्रीं परमन्त्र परतन्त्र परयन्त्र पर-

विद्या बन्धनाय आत्ममन्त्र आत्मतन्त्र आत्मयन्त्र आत्मविद्याप्रकटनाय परविद्याच्छेदनाय आत्मविद्यास्थापनाय ओं श्रीं ह्रीं हुं फट् स्वाहा । ३

ओं नमो भगवते महाबलपराक्रमाय मां रक्ष रक्ष ओं आवेशय आवेशय ओं शरवणभवाय ओं श्रीं ह्रीं सौः ऐं सर्वग्रहान् मम वशीकरं कुरु कुरु सर्वग्रहं छिन्धि छिन्धि सर्वग्रहं मोहय मोहय आकर्षय आकर्षय आवेशय आवेशय उच्चाटय उच्चाटय सर्वग्रहान् मम वशीकरं कुरु कुरु ओं सौः रं ळं एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पञ्चमज्वर षष्ठमज्वर सप्तमज्वर अष्टमज्वर नवमज्वर महाविषमज्वर सन्निपातज्वर ब्रह्मज्वर विष्णुज्वर यक्षज्वर सकलज्वरहतं कुरु कुरु समस्तज्वरं उच्चाटय उच्चाटय भेदेन प्रहरय प्रहरय ओं श्रीं ह्रीं हुं फट् स्वाहा । ४

ओं नमो भगवते द्वादशभुजाय तक्षकानन्त-कार्कोटक शङ्ख महाशङ्ख पद्म महापद्म वासुकीगुळिक महागुळि-

कादीन् समस्तविषं नाशय नाशय उच्चाटय उच्चाटय राजवश्यं भूतवश्यं अस्त्रवश्यं पुरुषवश्यं मृगसर्पवश्यं सर्ववशीकरं कुरु कुरु जपेन मां रक्ष रक्ष ओं शरवणभव ओं श्रीं ह्रीं वशीकरं कुरु कुरु ओं शरवणभव ओं ऐं आकर्षय आकर्षय ओं स्तम्भय स्तम्भय ओं शरवणभव ओं सम्मोहय सम्मोहय ओं शरवणभव ओं रं मारय मारय ओं शरवणभव ओं जं ळं उच्चाटय उच्चाटय ओं शरवणभव ओं श्रीं विद्वेषय विद्वेषय वात-पित्त-श्लेष्मादिव्याधीन् नाशय नाशय सर्वशत्रून् हन हन सर्व दुष्टान् सन्त्रासय सन्त्रासय मम साधून् पालय पालय मां रक्ष रक्ष अग्निमुखं जलमुखं बालमुखं सिंह-मुखं व्याघ्रमुखं सर्पमुखं सेनामुखं स्तम्भय स्तम्भय बन्धय बन्धय शोषय शोषय मोहय मोहय श्रींबलम् छेदय छेदय बन्धय बन्धय जपेन प्रहरय प्रहरय ओं श्रीं ह्रीं ह्रीं हुं फट् स्वाहा ५

ओं नमो भगवते महाबलपराक्रमाय कालभैरव-कपालभैरव - क्रोधभैरव - उद्दण्डभैरव - मार्तण्डभैरव - संहारभैरव समस्तभैरवान् उच्चाटय उच्चाटय बन्धय बन्धय जपेन प्रहरय प्रहरय ओं श्रीं त्रोटय त्रोटय ओं नं दीपय दीपय ओं ईं सन्तापय सन्तापय ओं श्रीं उन्मत्तय उन्मत्तय ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ईं ळं सौः पाशुपतास्त्र-नारायणास्त्र-सुब्रह्मण्यास्त्र इन्द्रास्त्र-आग्नेयास्त्र-ब्रह्मास्त्र-याम्यास्त्र-वारुणास्त्र - वायव्यास्त्र-कुबेरास्त्र ईशानास्त्र-अन्धकारास्त्र-गन्धर्वास्त्र-असुरास्त्र-गरुडास्त्र-सर्पास्त्र-पर्वतास्त्र-अश्वास्त्र-गजास्त्र - सिंहास्त्र-मोहनास्त्र - भैरवास्त्र-मायास्त्र-सर्वास्त्रान् नाशय नाशय भक्षय भक्षय उच्चाटय उच्चाटय ओं श्रीं क्लीं ह्रीं चित्ररोग श्वेतरोग-कुष्ठरोग-अपस्माररोग-पक्षरोग-बहुमूत्ररोग-प्रमेह-ग्रन्थिरोग-महोदर-रक्तक्षय-सर्वरोग-श्वेतकुष्ठ - पाण्डुरोग-अतिसार-रोग-मूत्रकृच्छ्रगुल्मरोग-सर्वरोगान् हन हन उच्चाटय

उच्चाटय सर्वरोगान् नाशय नाशय ओं ळं सौः हुं फट् स्वाहा ।

मक्षिका - मशका - मत्कुणा-पिपीलिका - मूषिका - मार्जाला-श्येन-गृध्र-वायस दुष्टपक्षिदोषान् नाशय नाशय दुष्टजन्तून् नाशय नाशय ओं श्रीं ऐं क्ष्रौं ह्रीं ईं नं ळं सौः शरवणभव हुं फट् स्वाहा ।

इति श्रीमत्कुमारतन्त्रे हयग्रीव अगस्त्यसंवादे शतमिति पटलं नाम ओं श्रीसुब्रह्मण्य प्रसन्नमालातन्त्रं सम्पूर्णम् ।

ओं शान्तिः । ओं शान्तिः । ओं शान्तिः ॥

## ॥ गुहपञ्चरत्नम् ॥

ओङ्कारनगरस्थं तं निगमान्तवनेश्वरम् ।
नित्यमेकं शिवं शान्तं वन्दे गुहं उमासुतम् ॥ १

वाचामगोचरं स्कन्दं चिदुद्यानविहारिणम् ।
गुरुमूर्तिं महेशानं वन्दे गुहं उमासुतम् ॥ २

सच्चिदानन्दरूपेशं संसारध्वान्तदीपकम् ।
(ओं श्रीं) सुब्रह्मण्यं अनाद्यन्तं वन्दे गुहं उमासुतम् ॥
स्वामिनाथं दयासिन्धुं भवाब्धेः तारकं प्रभुम् ।
निष्कळङ्कं गुणातीतं वन्दे गुहं उमासुतम् ॥ ४
निराकारं निराधारं निर्विकारं निरामयम् ।
निर्द्वन्द्वं च निरालम्बं वन्दे गुहं उमासुतम् ॥ ५

## ॥ शक्तिस्तुतिः ॥

शक्ते भजे त्वां जगतो जनित्रीं
सुखस्य दात्रीं प्रणतार्तिहंत्रीम् ।
नमो नमस्ते गुह हस्त भूषे
भूयो नमस्ते हृदि सन्निधत्स्व ॥

## ॥ श्रीवल्लीस्तुतिः ॥

श्यामां पङ्कजसंस्थितां मणिलसत्ताटङ्ककर्णोज्वलां
सव्ये लम्बकरां किरीटमकुटां तुङ्गस्तनीं कञ्चुकाम् ।

वामे पङ्कजधारिणीं शरवणोद्भूतस्य सव्ये स्थितां
गुञ्जामाल्यधरां प्रवाळवदनां वल्लीश्वरीं भावयेत् ॥

## ॥ श्री देवसैना स्तुतिः ॥

पीतामुत्पलधारिणीं शशिनिभां दिव्याम्बरालंकृतां
वामे लम्बकरां महेन्द्रतनयां मन्दारमालान्विताम् ।
देवैरर्चितपादपद्मयुगळां सेनानि वामे स्थितां
दिव्यां दिव्यविभूषणां द्विनयनां देवीं त्रिभङ्गीं भजे ॥

## ॥ जय घोषगद्यम् ॥

सकल सुर मुनि बृन्द समभ्यर्च्यमान मञ्जुळ चरणारविन्द - अनन्त सूर्य काम तेजो विकास - भुवन-मोहनसौन्दर्यदिव्यमङ्गळविग्रह-परमानन्दतात्पर्यानुसन्धानमौनिहृत्पद्मभृङ्ग-अष्टाङ्गयोगसंयुक्तषडाधारतत्त्वचैतन्य-सहस्रदळसिंहासनारूढपरमसारप्रवाहफेनद्युतिमन्दहास-कमलवक्त्र-समस्तभुवनचक्रप्रतिष्ठापककृपाकटाक्षशील - ऋग्यजुस्साम अथर्व सन्नुत कृपाविलास-नित्यानन्द

साक्षात्कार निर्मल निरामय निरञ्जन निर्गुण निर्विकल्प निराश्रय महावाक्यतत्त्व सिद्धान्त स्वरूप-हे परमहंस-ओं श्री वल्ली देवसेना समेत-श्रीगृध्रशिखरिवास - रमणीयसौधविराजितवसुतातपुरसंरक्षणदेव - ओं श्री कार्तिकेय-ओं श्री सुब्रह्मण्यों जयजय-विजयी भव ॥

## ॥ प्रार्थना ॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ।
गो ब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥

## ॥ आत्मसमर्पणम् ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

## ॥ सगुण अर्पणम् ॥

सर्वं भगवान् ओं श्री सुब्रह्मण्यः सुप्रीतः सुप्रसन्नः वरदो भवतु ॥

## ॥ गुरुस्तुतिः ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरु र्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

शुभमस्तु ॥

## ॥ श्री शिवपदमणिमाला ॥

शिवेति द्वौ वर्णौ परपदनयद्धंसगरुतौ
तटौ संसाराब्धेर्निजविषयबोधांकुरदले ।
श्रुतेरन्तर्गोपायितपररहस्यौ हृदि चरौ-
घरट्टग्रावाणौ भवविटपिबीजौघदलने ॥ १
शिवेति द्वौ वर्णौ जननविजयस्तम्भकलशौ
दुरन्तान्तर्ध्वान्तप्रमथनशुभादानमिहिरौ ।

महायात्राध्वन्यप्रमुखजनताकञ्चुकिवरा
मरुज्झम्पायेतां कृतफलनवाम्भोदमथने ॥ २
शिवेति द्वौ वर्णौ शिवमवदतां चैव वसुधा-
मुभाभ्यां वर्णाभ्यां रथरथिकयोराद्यकलनात् ।
ततस्तर्वशेषः परिकर इहान्यत्किमपि नो-
क्त चाहं क त्वं वा क परमिदमूह्यं बुधगणैः ॥ ३
शिवेति द्वौ वर्णावि‍ह परसुखादानचतुरौ
क्रमोच्चाराद्धातो र्विनिमयवशादर्थघटने ।
रहस्यार्थो ह्येष प्रकटयति नाम्नि क्षितिरथं
प्रजानामानन्दं किमिति न विदुर्मूढधिषणाः ॥ ४
शिवेति द्वौ वर्णौ यजुषि तु चतुर्थ्येकवचनो
नमः पूर्वो मन्त्रस्समजनि जनिध्वंसहतये ।
तथापि प्रज्ञान्धाः जननमृतिनक्राहिजटिले
अपत्यं त्वेतच्चित्रं भवजलचिपङ्के शिवशिव ॥ ५
शिवेति द्वौ वर्णौ भजत भजदानन्दजनकौ
भुवो भर्ता भूत्वा स तु भवति मुक्तेरपि तथा ।

उभाभ्यां वर्णाभ्यामधिगमयतार्थं विनिमयात्
ववर्णो भूभारं दिशति हि शिकारः परपदम् ॥ ६
शिवेति द्वौ वर्णौ द्विवचनकृतद्वन्द्वकलना-
द्भवन्तौ गूढार्थं भगवदनुबन्धान्वितधियः ।
नकश्चिन्मन्त्रश्च प्रथयति तदर्थानुगमनं
ततोयं सर्वासु श्रुतिषु जयघण्टा विजयते ॥ ७
शिवेति द्वौ वर्णौ प्रथममभिधायानुगुणतः
अथो मेसन्धानाद्गतिरिति च सन्धाय पठथ ।
वकारो बध्नाति त्यजति ननु तत्काल इहवः
किमर्थं संसारे पतथ जपतेमं मनुवरम् ॥ ८
शिवेति द्वौ वर्णौ चरमपदविश्लेषयुता-
वहंशब्दोच्चाराद्भवति खलु वर्णत्रयमनुः ।
इमं प्राणायामैः पठथ हठयोगादिभिरलं
भवेदात्मेशैक्यं करवदरतुल्यं बुधवराः ॥ ९
शिवेति द्वौ वर्णौ मम कनकरत्नायुषकथा
सुधाभोगा भोगा मनुजपतपोध्यानविधयः ।

प्रधामेधाबोधस्मृतिरतिगतिप्राप्तिनिधयः
भवेतां प्रारब्धप्रमथनशुभादानचतुरौ ॥ १०
शिवेति द्वौ वर्णौ प्रतिसरधरौ मुक्तिजनने
जनुर्लक्षाकोटिप्रमथनपरावित्यसदृशौ ।
कियन्तो विस्रस्ता जगति जनका मज्जननतः
स्मृतिं जज्ञे चित्तं शिवशिव कदाप्यस्तु न जनुः ॥
शिवेति द्वौ वर्णाविह जनुषि लब्धौ किल मया
पुरा गङ्गा स्नाता ननु किमु कृतं चाध्वरशतम् ।
जडस्यैवं किं स्याज्जनककृतमाद्यं खलु तपः
कुमारो मे स्यादित्यनुमितमिदं तद्धि परमम् ॥ १२
शिवेति द्वौ वर्णौ शिवशिव कदा नो पठितवान्
पुरा नोचेत्किंस्वित् जठरपिठरीसंस्थितिरियम् ।
क शम्भोर्नामोक्तिः क जननकथा चण्डकिरणे
तपत्यभ्रेऽदभ्रे भ्रमणमिह किंस्याद्धि तमसः ॥ १३
शिवेति द्वौ वर्णौ निरतदुरितध्वंसनपरौ
अयत्नाद्यस्यास्तां सगतिसकृदास्यान्तरगतौ ।

न तस्याप्याशास्यस्सुरकुलधुरीणस्य निलयः
न धातुस्तस्यासीत्पितुरपि स सर्वस्य जनकः ॥१४
शिवेति द्वौ वर्णौ जगति समवायस्तदपरं
निमित्तं वर्णानां श्रुतिपथरहस्यं निगदितम् ।
नचेदित्थं सृष्टौ परिकर इहान्योस्ति यदि कः
शिवे सर्वाद्वैते न किमपिच वस्तु प्रथयति ॥ १५
शिवेति द्वौ वर्णौ वचसि मनसि ध्वस्तदुरितौ
प्रहृत्यान्तर्ध्वान्तं मिहिरशशिनोरशक्तिमघनाम् ।
प्रहस्येवाभीतस्तदुचिततमोच्छेदनपदे
समासे नो षष्ठे विकसति तृतीयैव सुकरा ॥ १६
शिवेति द्वौ वर्णौ भुवनभवजाताण्डघटना
पटिष्ठे चोर्ध्वाधस्पुटपटुतरा खर्परयुगे ।
शिवो लिङ्गं सर्वं तदुदरगतं स्याद्धि निगम-
स्तथावादी सत्यं वदति खलु तत्केन भवति ॥ १७
शिवेति द्वौ वर्णौ भज यज शिवार्धाङ्गवपुषं
त्यजासन्तं मार्गं व्रज शिवपुरीं मुक्तिनिलयम् ।

नचेदेतौ वर्णौ नभज यज दैवान्यममुतः
त्यज श्रौतं मार्गं व्रज निरयमिच्छैव सुखदा ॥ १८
शिवेति द्वौ वर्णौ पठति समहान् धातृविषये
पलायध्वं यूयं भवत भयभीता यमभटाः ।
पतन्त्यासंसारभ्रमण परितापप्रमथन-
प्रचण्डास्तस्याग्रे प्रमथपतिविक्षारसभराः ॥ १९
शिवेति द्वौ वर्णौ मम विमलजन्मावनिरुहः
फले द्वे तत्रैकं जनयति रुचीः पायसमयीः ।
फलत्येकं सर्पिर्द्वयमपि समग्रं रसनतः
त्वरत्येकास्वादेन मतिरुचितासीद्विकलने ॥ २०
शिवेति द्वौ वर्णौ पठसि हठयोगादिभिरलं
किमुद्दिश्यात्मानं व्यथयसि वृथाभ्रान्तिरफला ।
करस्थे श्रीखण्डे मृगयसि हि मुस्तासिकतले
जडादेशःकां कां दिशति विपदं नो शिवशिव ॥
शिवेति द्वौ वर्णौ भज यदि शिवं वाञ्छति भवान्
न चेदेतन्नैव श्रुतिसमयसिद्धान्तमवदम् ।

विना हेतोः कार्यं न घटपटतन्तून्घटमृदो
न जानीषे किंवा शिवविरहितो नाप्स्यति शिवम् ॥
शिवेति द्वौ वर्णौ परमशिवकारुण्यजलधेः
स्थिरीकृत्य स्वान्ते मम विमलभावं कुरु सदा ।
चरेयं सर्वं ते निरुपमनिरातङ्कमहसां
ज्वलज्ज्वालज्योतिर्ज्वलितमिदमासीज्जगदहो ॥ २३
शिवेति द्वौ वर्णौ वदवदरसज्ञे बुधगणाः
भवन्तीं तन्नाम्नीमभिदधतु चैवं यदि न चेत् ।
न योगं रूढिं वा भजसि खलु डित्थादितुलना
भवेद्वैवी शक्तिस्त्वयि विफलिता स्याद्धि चिनुहि ॥
शिवेति द्वौ वर्णौ जगति खलु नेत्रद्वयमिदं
बहिश्चक्षुर्द्वन्द्वं नहि दिशति वस्तु व्यवहितम् ।
इदं बाह्याभ्यन्तस्स्फुटविमलविज्ञानविभवं
गरीयस्त्वोच्चारादिशति खलु नेत्रं समधिकम् ॥ २५
शिवेति द्वौ वर्णौ वदनसदनौ यस्य महतः
तदीयं पादाब्जं रघुपतिपदाब्जं प्रहसति ।
न तच्चित्रं तस्मिन्परमपुरुषार्थप्रदरजो
व्रजालाने मौनेर्दिशति किल संसारपतनम् ॥ २६

शिवेति द्वौ वर्णौ सकृदवशमुच्चारणबलात्
दिशेतां साम्राज्यं पुरमथनते मुक्तिनिलयम् ।
नचेत्तस्यैवान्तःकिमिव निवसेदान्तरगृहा-
विहारे लोलस्त्रिदमुदवहन्मे दृढपदम् ॥ २७

शिवेति द्वौ वर्णौ क्षितिजलशिखिस्पर्शनविय-
द्विवस्वच्छीतांशुप्रथमपुरुषैरष्टभिरिदम् ।
ततं विश्वं पश्चाद्वदति इति मत्वा सुखमहो
नरःप्रोज्झन्सर्वं किमिति न पिबेत्तन्मधुरसम् ॥ २८

शिवेति द्वौ वर्णौ प्रकटितानेजद्वन्द्वविधया
जगन्मातापित्रोर्मिथुनमदधतां श्रुतिपथे ।
जनास्तन्माय्यान्तरतचरतावश्यमवनौ
पितृभ्यां नैवान्यत्परमपदसम्प्राप्तिविभवे ॥ २९

शिवेति द्वौ वर्णौ रसिकरसनारङ्गचतुरौ
मनोधर्माधर्माभ्यसनगजकण्ठीरवशिशू ।
वपुःकार्याकार्यव्यसनहरिणव्याघ्रकलभौ
विनोदं तन्वातां किमिह मम कालापनयने ॥ ३०

शिवेति द्वौ वर्णौ जगति वशधातुप्रकटिता-
विति प्रोचुः केचिद्ध्रुवमिति तदीयास्त्वचतुराः ।

शिवात्सूत्रोद्धारस्तदनु खलु धात्वर्थविवृतिः
कथं पौर्वापर्यं वदत विबुधास्संशयमिदम् ॥ ३१
शिवेति द्वौ वर्णौ गुरुमुखत एष्यन्नहरहः
जपिष्यत्याशास्यं न खलु तदयं पूर्णहृदयः ।
इति प्राचीनास्ते शिवपदमुपेत्य स्थितिमिताः
किमुद्दिश्याजापिः त्वमिहहि स एवासि भगवान् ॥
शिवेति द्वौ वर्णौ मनुरयमभिन्नस्वर हलां
विभेदाश्चत्वारः फलितपुरुषार्थाश्श्रुतिमताः ।
नचैकस्मिन्मन्त्रे सकलपुरुषार्थप्रतिगतिः
किमर्थं भ्रान्त्यान्यन्मनुधिषणया बिभ्रत धुरम् ॥३३
शिवेति द्वौ वर्णौ मधुरिमगरिम्णा मधुरसे
पयःपूरे कुत्सां नपरमपरङ्किंजनयताम् ।
जहन्नाहारे सुरपुरि सदा गाङ्गसलिलं
पिबन्को वारीप्सां भजति सरसः पल्वलजले ॥
शिवेति द्वौ वर्णौ परमपद मां पाहि पदयो-
र्मिलित्वादावन्ते युगमभवदष्टाक्षरमनुः ।
परस्सर्वाद्वैतप्रथितनिजसाम्राज्यविभवैः
... ... ... ... ३५

शिवेति द्वौ वर्णौ मम वपुषि सर्वाङ्गकवचौ
परंसव्यासव्यप्रसरण पटिष्ठाम्बिकवरौ ।
उभावन्तर्बाह्याहितमदकोदण्डतिलकौ
भृशं स्यातां मोक्षश्रियमवसरे दातुमुदितौ ॥ ३६

शिवपदादधिको न परो मनुः
शिवपदादधिका न परागतिः ।
शिवपदादधिकं न परम्पदं
शिवपदादधिकं नहि शासनम् ॥ ३७

शिवस्त्राता शिवो दाता शिवो माता शिवः पिता ।
शिवएव हि मे सर्वं शिवादन्यं न वेद्म्यहम् ॥

शिवपदमणिमालां ये तु कैवल्यमूलां
दधति पठनमात्राद्ब्रह्मिछवाधीनचित्ताः ।
भवति खलु भवानी भर्गयोराजधानी
प्रथमविहृतिवाटी भानुभूतेश्चपेटी ॥ ३९

शिवो लिङ्गमुमैवाङ्गमनया सहितस्तथा ।
तयोस्सम्बन्ध इत्येवं पदत्रयमुपास्महे ॥ ४०

शिवपदमणिमाला समाप्ता ॥

Printed at the Vavilla Press Madras—21.- 1955.